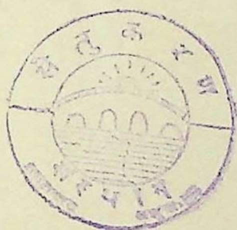




250

❀ श्रीसद्गुरुवे नमः ❀

सर्व मानव समाज के लिये हितकर सच्चा मंत्र
जीवन मुक्ति की सच्ची डगर और
शान्ति सुख का भंडार

सद्ग्रन्थ

बैराग्य अमृत जीवन

लेखक व प्रकाशक

ज्ञान बैराग्यादि रहस्य के संयुक्त सर्व सद्गुण सम्पन्न,

पारखनिष्ठ सद्गुरू 'श्री नरायण साहिब'

का चरण किंकर

संत शरण दास।

स्थान- नवा, पोष्ट-पकड़ी,

जिला-बस्ती।

प्रथम संस्करण १००० | मूल्य रु० २०.०० | सम्वत् २०१६ सन् १९६२

॥ सर्व देवों के आदि श्रेष्ट देव श्री सद्गुर देवाय नमों नमः ॥

सर्व चैतन्य जीव नर शरीर धारियों के लिए

यह अमर अजर औ परम सुन्दर आदेश पारख महा मन्त्र

हे हमारे अमर स्थल मुक्त चैतन्य भूमिका के पथिक वा चाहक जन, यह वही श्रेष्ठ अमर आदेश मन्त्र है, कि जो चार वेद छा शास्त्र, अठारह पुराण, नौ ब्याकर्ण, चौदह विद्या, आदि आदि औरों बहुतेक स्मृतियों को, औ कुरान, पुरान इजीलों कों, और २ सर्व मत पन्थों को, औ समस्त भूमण्डल के विचारों को शोध शोध कर, और कर्म, योग, उपासना, ज्ञान, विज्ञान, आदिकों को अपने परख दृष्टि से सम्पूर्णतया मथन कर, औ शोध बोध छान बीन कर जिसको आप विश्वविख्यात, परम प्रवीण, परम पुज्य परमश्रेष्ट जीवन मुक्त श्री सद् गुरु श्री कबीर साहेब जी; अपनी स्वयं अनुभव स्वतः दृष्ठि से सच्ची कसौटी पूर्ण परीक्षा करके सर्वो के सत्यसार मूल मन्त्रों औ मोक्ष व मुक्त पद को निकालाकर बीजक में अमर पारख शैली द्वारा सर्व नर जीवों के कल्याण पद दर्शाया है। यह सदग्रन्थ भी उन्हीं श्री पारखी गुरु के रहस्यों की व्याख्या व पद है। हे प्रिय यह सत्य सार पारख सर्व मन्त्रों में श्रेष्ट मन्त्र है। तिसे जप कर इस जगत से पार हो जावो

॥ सोरठा ॥

मिला अटल सम्राज, गुरू नरायण के दया।
खिला अचल शुभ साज, धनि२ महिमा आपकी ॥१॥
बढो बढ़ो हे बीर, खानि बानि खय कार क।
चढ़ो चढ़ो हे धीर, सींढ़ी मुक्ती का सरल ॥२॥

॥ पारख परिचय ॥ शब्द ॥ १ ॥

मुक्त देश पारखपद बांका, बढ़े चलो हो बढ़े चले हो
है प्रत्यक्ष भवतरक नाका, बढ़े चलोहो बढ़े चलोहो।टेक।

लोक लाज कुल मान बड़ाई,छोड़ि गुरू पद प्रेम बढ़ाई
फिर नहिं बढ़े रोग जग वाका, बढ़ेचलो हो बढ़ेचलो हो
रहैं सदा गुरु संत कि ऐना, मनोधार में कभी बहैंना
काल जाल को डर नहिं ताका, बढ़े चलो हो २ ॥२॥
गहै सदा सच्चा पद असली, रहै जहाँ पारखपद अदली
सीढ़ी सरल मुक्ति की टांका, चढ़े चलो हो २ ॥३॥
सांचा न्यायपरख गुरुसेवे, सत्य रहनि गहि मुक्ती लेवे
तीनलोक पटतर नहिं जाका, बढ़े चलो हो २ ॥४॥
देयबितायस्वतःसेजीवन, पारख अम्मृतनिशदिनपीवन
निकलि जाय जग ब्रह्म सड़ाका, बढ़े चलो हो २॥५॥
स्वयं अखंड अमरपद अपना,जक्त ब्रह्मद्वै जाल प्रखना
फेरि फेरि पारख की सांका, दले चलो हो २ ॥६॥
गहि२ बलपारखगुरुवरकी रहनि गहनि पारखप्रभुवरकी
निज स्वरुप निज राज निजाका, बढ़े चलो हो२ ॥७॥
संत शरणपद अमरपायकर,संतचरणअवगहो आयकर
जन्म मरण टुटि जाय तड़ाका, बढ़े चलो हो२ ॥८॥

॥ श्री सद्गुरु की दयादृष्टि ॥

धन्य धन्य हे श्री सद्गुरुदेव जी, मैं आपके सद्गुणों को, और करुँणामय परम स्वभावों को क्या वर्णन करूँ। अहो आप ऐसे महांन, सर्व हंस सद्-गुणोंसे निधान, मन इन्द्रियों पर बिजई, परम वैराग्य वान, सर्व प्रकार से अति सह धीर्यवान, किसी के कटु बाणियों पर नहिं आप करते ध्यान समता और सजगता से हर वक्त रहते हो, सावधान सदा एक रस द्रिष्टी और पारख पुष्टी में निरन्तर प्रयत्नवान, हम सब दीन गरीब जीवों को भी दिये हो, सत्य अमर पद्में ठहरान हे परम परिच्छक, हम सबों को सर्व तर्फ से आप ही हो रच्छक—इस तरह हर प्रकार हंस पारखी पर्म मुक्त शोभा संयुक्त, हे सन्त गुरु-वर सरकार। आपसे मेरा बार २ नमस्कार वा त्रय-वार 'साहेब बन्दगी' ३—हे यों तो आप हर तरह बन्दनीय बन्दना करने योग्य हैं ही। परन्तु हे हमारे श्री सद्गुरुदेव जी श्री नरायण साहिब। और आप समान, सर्व श्री पारखी सद्गुरु सन्त जन आपही सबने महान कृपा की नजर—इस एक मुझ तुच्छ, हीन, दीन, मलीन, पर फेर दिये हो, जिससे कि यह महा, दीन, गरीब, भिच्छुक भी आपके चरण शरण

में आ पड़ा है। अब अन्तिम यही आशा है कि हे प्रभू मात्र अपना ही अवलम्ब देकर, इस दुखालय संसार से इस दाक को पार कीजिए—

॥ इस सद्ग्रंथ में मुख्य सहारा ॥

आप महान सतपुरुष संत, तथा भक्त सज्जनों को मालुम हो, कि यह सद्ग्रंथ के होने में, मुख्यतर आप श्री पारखी सद्गुरू संतों के, असीम कृपा द्रिष्टि का ही फल है। और इस दास में तो कोइ प्रकार से शक्ती समरथ है नहीं इससे सब कुछ आप ही हो, परंतु इसमें हर एक प्रकार से सहायक और हर तरिहन से स्वर्चिंछत करने में, आप सद्गुरु "श्री नारायणसाहिब" का ही महानता, वा उत्तमता है। यानी इस सद्ग्रंथ के, छपाने आदि के बारे में, हर तरह से सहायक आप ही हैं। इसलिये हे सद्गुरु साहेब, यह आपका ही दिया हुआ सब आसिरवाद व प्रसाद, है अब आप ही के चरणकमलमें समर्पण करता हूँ। सो इसे स्वीकार कीजिये। और इस अति दीन दासानुदास सन्त शरण दास का रक्षा करते हुए, अपने शरण में लीजीये —

यही आपसे अन्तिम निवेदन है—

॥ सद्‌ग्रन्थ पढ़ने का ढँग और ग्रन्थ का सारंश ॥

हर सम्मयक के ज्ञाता, आप सन्त तथा उत्तम भक्त सज्जन जन से विशेष क्या कहें, क्योंकि आप तो यथायोग्य और उचित-अनुचित का सब समस्या जानते ही हो। क्योंकि आप तो—

॥ चौपाई ॥

करिहहु जहाँ माग जस होई, भल अन्भल लखि कै सब कोई।
सब कर जेहि बिधि होय भलाई, कहब आप तस निर्णय लाई१
सोंचि समुझि सब करिहो कामा, सब के हितय २ की जामा।
सोइ उपाय कहवो भल नीके, शांति होंहिं जेहि से सब जीके।२
सब प्रसंग कहिहो जस जहवां, जेहि लायक जस वरणन यहवां।
तेहिते कुछ नहि कहत आप से, गुण निधान हो रहित तापसे ३
आपसे बहुत काह समझावैं, जानन हार जनईया हावैं।
जइसन पात्र जहाँ पर लखिहो, तइसन न्याय तहाँ पर भखिहो४

इसलिये बिशेशतह उन व्यक्तियों के लिये कहता हूँ। कि जिन्हे उत्तम मध्यम कनिष्ट की पुर्ण परिक्छा नही है। देखो प्यारे भाइयों जरा इस हमारे बचन पर आप सब टुक गौर करलो। तो सब प्रकार से आप ही के परम सुख कर बचन है। देखो प्यारे भाय इस सद्‌ ग्रंथ में जितने प्रसंग हैं, वह हर एक

प्राणियों के लिये अमृत प्याला ही है। यानी सबके दुख संकट व कंटक को हरण करने वाला है। और हर प्रकार सुख शांति देने वाला है। इसलिये साधक श्रेणी बिरक्त गृहस्त से लेकर, ऊँच, नीच सर्व भ्रातावों तथा मा बहनों से यही कहना है कि जी जान से इन अमृत बचनों को अपनावो और सुखी होवो। परन्तु साधारण पाठकों से यही थोड़ा कहना है कि इस ग्रंथ में आये हुये प्रसंगों को, जब पढ़ा जाय, तब जो प्रसंग जेहि लायक तथा जैसा श्रोता जन हों, उन्हें वही प्रसंग पढ़ कर सुनाया जाय। जैसे कि भूले हुए को, अनादि अज्ञानता, भूलों पर बिचार, दूसरा प्रसंग सुना कर समझाईये? जैसे कि—भूला तो भूला, बहुरि के चेतना और संतो ऐसी भूल जग माहीं, जाते जिव मिथ्या में जाहीं। ताते भूल तजो, गुरुदेव भजो, बस होव दुखन से पारा। और मन मति में भटके हुए को, तीसरा प्रसंग–मन रंग का सुनाईये—जैसे कि ई मन चंचल ई मन चोर, ई मन शुद्ध ठगहार। मन मन करते सुर नर मुनि जहड़े मन के लक्ष दुवार—तथा ता मन को चीन्हो मोरे भाई, तन छूटे मन कहाँ समाई॥ इस प्रकार मन के

अटपट चालो को परख२ कर शांति होना चाहिये। और गुरु भक्ति से रहित प्राणियों को, चौथा प्रसंग गुरु भक्ति का सुझाईये। यानी जो सच्चे जीवन मुक्त श्री पारखी सद्गुरु के शरण रहित होकर और जगह२ भटके पड़े हैं, उनके लिये यह अवलम्ब देना, जैसे कि—तेहि साहेब के लागहु साथा, दुइ दुख मेटि कै होहु सनाथा, औ सेवा साधन मन कर्म ते, यथा भक्ति उर धार—इस प्रकार सांचे गुरु की भक्ति करना ? और राग मोह में गड़े हुए को, पंचम प्रसंग तथा समस्त स्त्री पुरुषों के लिये परम हितैषी विचार सप्तम प्रसंग में, परखिये प्रखाईये और नारी जनों को, परम सुन्दर, अमृत शिक्षा—अष्टम प्रसंग में लखाईये एवं तो—जग बैराग्य अमुल्य है। जाहि प्राप्ति सब धूरि। गुरु दया निज भाग्य बस, गहै कोई बर शूर। उत्तम मध्यम कनिष्ट जो, सबही हितके साध। निज२ श्रेणी से चले करते दुख को बाध॥ इस तरह हरएक नरीनारको बैराग्य भक्तिकरना। औ सर्ब दुख द्वन्द से मुक्त होना चाहिये और शांति के लिये, छट्ठम और नव्वम प्रसंग को भलो भांति से मनन करना चाहिये; और सब दुर्गुणों से रहित होना

चाहिये। जैसे कि--सकलो दुरमति दूर करु, अच्छा जनम बनाव। काग गवन गति छाड़ि कै, हंस गौन चलि आव॥ आपा तज हरि भजै, नष शिष तजै बिकार। सब जीवन से निरबैर रहै, साधु मता है सार। और भी--जहँ तक तन का भोग है, शुद्ध रीत से भोग। बिदेह मोच्छ हो जीव की, काटि अनादी रोग॥ पहिले जानि स्वरूप को, पाछे बन्धन चीन्ह। दोनों की अनुभव भई, तबै मोक्ष लखि लीन्ह॥ पूरा अनुभव मोच्छ को, तबही लखै ठेकान। बिना यथारथ बोध के, कैसे तेहि पहिचान॥ इसलिये--यथार्थ समझ मैं देह नहिं, देह दृषय जड़ रूप। पारख मोर स्वरूप है, सबसे भिन्न भनूप॥ तन निर्बाहिक काज हित, सत संगति सद् ग्रन्थ। बोध शांति हित शब्द लै, छोड़ि कुबच सद्‌पन्थ॥ एवं गुरुपद में डटकर शान्ति होना चाहिये--और अन्त में सर्व प्राणियों को, यह अवश्य जानना जरूरी है। हम सब चेतन जीव अजर अमर अविनाशी हैं, परन्तु मन मानिन्दी कर्म, वासना बस चारो खानियों में भ्रमते आ रहे हैं। और सकल आशा बासना त्याग हो जाने पर हम मुक्त ही हैं, इसको पक्का २ ठीक २ तौर से जानना चाहिये। तहां संच्छेप में दसस्म प्रसंग में मनन करना चाहिये। जैसे कि—

अजर अमर चेतन सद सारा, स्वतः शांति निर्मल मल न्यारा ॥ पर निज करतब करि निज भूला, कौन कल्पना कीच कबूला ।५। यहि ते कर्म बासना घेरे, युगन २ दुख सहत अनेरे ॥ चारि खानि भरमत धरि देहा, निज स्वरूप बिन बिकल सदेहा ।६। पारख गुरू बिना दुख पाया, खानि बानि बिच शांति न आया ।

इसी से सद्‌गुरु कहते हैं—

साहु चोर चीन्हे नहीं, अन्धा मति का हीन । पारख बिना बिनाश है, कर बिचार होहु भीन ॥ जिभ्भा को तो बन्द दे, बहु बोलन निरवार । पारखी से संग करु, गुरु मुख शब्द विचार ॥

एवं हर हालत से सबको चाहिए अपने चेतन स्वरूप को पहिचानना, और मनोमय कर्म बासना बस चव खानि में भरमना, औ कर्म बासना त्याग से मुक्त होना, यह भली भांति से न्याय पूर्वक जानना चाहिये । तबहीं सर्व दुख द्वन्द छूटकर शांति हो जायँगे ।—पारख पद स्थिर सदा, जहां न जग का फन्द । जाहि प्राप्ति तेहि भास नशि मिटिगा संसृत धन्ध ॥

एक बोल बोलिए सद्‌गुरु श्री पारखी संत की जय ।

क्षमा चाहता हूँ

आप सर्वोत्तम साधक श्रीमान सन्तों से और

सर्व भक्त सज्जन प्रेमी भाविक जनों से मेरा निवेदन है कि जैसे प्यासे लोग, टेढ़ मेढ़ नदी का ना ख्याल कर मात्र जल को ग्रहण कर लेते हैं। और जैसे भूखे लोग स्वाद का लक्ष छोड़ कर छुधा निवारण कर लेते हैं। तैसे आप सबों से यही बिनय है, कि इस मेरे टेढ़े मेढ़े टूटे-फूटे शब्दों पर न ध्यान देकर मात्र इसका मुख्य सार निर्णय ग्रहण कर लीजिये। क्यों कि इसमें कोई विद्वता वा चतुरता है नहीं कि इसमें कोई गल्तियां न हो, यों तो हर तरह से बिगड़े हुए को भी सुधार-सुधार कर सम्हार लीजिये। क्योंकि—

॥ छन्द ॥

जिमि बालकों के बात पर माता पिता नहि रूठते।
सब तरह सहि सहि उसी के रक्ष ही मे जूटते॥
तिमि एक बालक जानकर हम नीचके इस बैन पर।
हे श्रेष्ट पितु माता मेरे कीजै क्षमा इ अबैन पर॥
यक जानि बाल गवाँर आप सम्हार रक्षा कीजीये।
सब भूल चूक बिसारि आप सवांरि सच्चा लीजिये॥
हे सद्गुरू हे सन्त सज्जन आप से कर जोर कर।
इससंत शरण कि त्रूटियाँ क्षमिलेव अपने ओर कर।
सब तरह अन्जान जानि के आप श्रेष्ट सम्हारि ए।
कर बद्ध चहता हूँ क्षमा सुनि आप लेयँ हमारि ए॥

आप श्री मान सन्त–और भक्त सज्जनो को मालुम हो कि हर तरह प्रयत्न करते हुए भी कर्मचारी आदि के सम्हारते हुए भी, इस ग्रन्थ में बहुतेक गल्तियाँ रह गई हैं। तहाँ एक सो सगसठि–पेज मे आया हुआ छन्दमे टेक के नीचे+परम परकाश है। ८। इस प्रकार सुधार कर पढ़ लीजै और कुछ गल्ती को नीचे दो पांती शुद्ध अशुद्ध करके लिख दिया गया है, उसे सुधार कर आप सब क्षमा करते हुए पढ़ने का कष्ट करेंगे, मुझै आशा इस बात पर है कि जबश्रेष्ट सज्जनजन एक दूसरेके मारगालियाँ तक सह कर सुधारते हैं, तब इस मेरे गलतियों को क्यो न सुधारैंगे। अवश्वय–अवश्य आप सब क्षमा करके सुधारने का कृपा करैंगे यही मेरा प्रार्थना है।

शुद्धि पत्र

अशुद्ध	पंक्ति	शुद्ध	नम्बर
तही	५	नही	७६
इसका	४	इसको	२६८
चउंक	६	छउंक	२६४
त्रप	५	त्रय	३३७
चेयन	८	चेतन	३५०
आत	३	आप	३६५
दव	४	देव	४०६
नमा	१	नमो	४४७
मला	१८	मेला	४८५
भस	१४	भैंस	४८६
चाह	४	चाहे	४८९
ह	१	है	४६१
जाच	१०	जाचैं	४६५

❀ श्री सद्गुरु वे नमः ❀

सद्ग्रन्थ बैराग्य अमृत जीवन की सूची पत्र

पहिला प्रसंग

चौथा प्रसंग गुरु भक्ति की लक्षण

॥ पंचम प्रसंग-वैराग्य का अंग ॥

छठठम प्रसंग पारख प्रकाश मोक्ष स्वराजय

सप्तम प्रसंग स्त्री-पुरुषों के लिये वैराग्य

अष्टम प्रसंग नारि जनो के हित शिच्छा

नवम प्रसंग, मन माया पर विजय, चैतन्य सरकार का मुक्ती की साज और अन्तिम स्थित का रहस्य बरणन

दस्सम प्रसंग श्री चैतन्य राम पर कर्म फल निश्चय

सदग्रन्थ बैराग्य अमृत जीवन की सूचीपत्र समाप्त।

श्री सद्‌गुरुदेव से बिनय

धन्य श्री गुरु देव मेरे, हर लिये दुसह दुख सारी है।
हम खानिबानिमे बहुतजरे, पर कियेसही सुखकारी है॥
चेरा बन कर मन इन्द्रीका, क्या सहा न आफत भारी है
घेरा पर कर चव खानी का, जा जरा मैं पारी पारी है
बन रहा न कहते हाल कुछू, सब जानत आप जनैया हो
तव चरण बार मैं बार झुकूँ, मम कारज आपबनैया हो
हे दीन दयालु दया सागर, कर जोर बिनय मैं करता हूँ
हे कृप सिंधुगुरुसुखआगर, पद्‌कमलसदंय शिरधरता हूँ
रच्छक दाता तुमहीमेरे, इस जक्त मध्यलखि पाया हूँ
कोई न दिखाता है हेरे, इस हेतु तेरे ढिग आया हूँ
अबकरलीजै निजचरणबीच, जगका नहिंहमें सहारा है
अबभरदीजै निजस्वतःमुक्ति, जगमेनहिंआव दुबारा है
कुछलायक तो मैं अहूँ नहीं, स्वारथ परमारथ कामो में
सदगुण रहनी कुछ गहूँनहीं, जिव अकारथ जातबेकामोमे
सबतरह दुरगुणी हूँ स्वामी, सदगुन कोई नहि मेरे है
हूँकुटिल बहुत कमबख्त पतित, पर पड़ा चरणअबतेरे है

जो ख्यालकरोमम अवगुणको,तो कहांठिकाना मेरा है
हो दयाल हरोमम दुरगुण को,यहि बिनयसुनानामेराहै
पापाचारी अत्याचारी, कोइ ऐगुण मुझमें कमी नहीं
हा हायसर्व कुछभरा हिये,दुष्गुण को मुझमें गमी नहीं
इतना काफी इतना पापी, कुछ बयां नही कह जाता है
हूँ नमक हरामी खल कामी, नर्की गामी दिखलाता है
सब पाप तापसे भरारहा, पर ध्यान आपनहिं कीन्हे हो
हे पतित उधारक गुरुवरजी, करि छमाआप लै लीन्हे हो
उल्टीपुल्टी अतिबुद्धिमेरी, पर समर्थआप सम्हार लिये
जग नईया मेरी डूब रही, पर समर्थ आप ने पार किये
धनिधन्य नरायण बोधकजी, धनिधन्य गुरूवरसंत सभी
धनिधन्यसकलसतसज्जनजन, धनिधन्यसत्यसतपंथसभी
सदगुण धारी सब धन्यधन्य, धनिधन्य२ सदग्रन्थों को
शुभसाजमुक्ति कोधन्यधन्य भ्रमनाशकियो भ्रमपंथोंको
इस संतशरणका काज आज, सब पूर कर दिये आपीने
खानीबानीका आशभाश, सब, दूर कर दिये आपीने ।१।

॥ बिनय के अन्तरगत, एक छन्द ॥

ऐसा कुटिल कम बखत हूँ, हमसम पतितको और है टे०
काम क्रोध हंकार सब दुरगुण मेरे तन मे' भरा ॥

शुद्ध गुण औ सत कर्म, मनमे नहीं रंचक जरा ॥
खानी औ बानी में पड़ा, निज पद से मैं त्रिरुभौर हैं ॥
ऐसा कुटिल कमबख्त हूँ, हम सम पतितको और है ॥१॥
अभिमान शान गुमान में, दिन रैन में जरता अहूँ ॥
पल भर न जीमे चैन है, बिषयों में नित लिप्टा रहूँ ॥
मैं चाहना को हो बसी, बिषयों में जाता दौर है ॥
चंचलके घेरा में रहूँ, हम सम पतितको और है ॥२॥
छल बल अनेको कर रहा, मैं देह मे सुख मानकर ॥
नित मानकी ख्वाहिश रखूँ, सुख भोगको सत जानकर ॥
बेहाल इन्द्री मनके बश, पाता नहीं ठिक ठौर है।
ऐसाकुटिल कमबख्त हूँ, हम सम पतितको और है ३
पांचो बिषय सुख नीदमे, बेहोश हो मैं सो रहा ॥
उन त्तणिक सुखकेवास्ते, जीवन अमोल ये खो रहा॥
आखिरमे सब छुटि जायगा, तब भी न करता गौर है॥
ऐसा कुटिल कमबख्त हूँ हम सम पतित को और है ४
मल मुत्र हाड़ औ चाम से जो बना यह देंहहै ॥
हर वक्त बहता है नरक, जिसमे किया मैं नेह है ॥
ऐसा अपावन नर्क, करता साफ भंगी तौर है ॥
निश वारका ठेंका यही, हम सम पतितको और है ५

ऐसी बनी बिपरीत बुद्धी, जो कहा जाता नहीं ॥
सुख हेत बिषयों मे जरूँ, पर अब सहा जाता नहीं ॥
तिस पर भी बिषयों तर्फ ही, जाजा उठाता कौर है ॥
पथ्थर पड़ाहै अक्ल पर, हम सम पतित को और है ६
राग द्वेष इर्षा जलन में, दिन गवांता हूँ सदा ॥
अज्ञान का तो घर बना, सब जिव सताता हूँ सदा ॥
सुख चाहता सबसे रहूँ, पर कर रहा कुछ और है ॥
बेशील वो बेपिर बना, हम सम पतित को और है ७
सब जीव मेरे सम अहैं, पर कर रहा मैं वार है
कोटिशः मम अक्ल पर, धिक्कार हैं धिक्कार है।
को बेहया है मेरे सम, करता और का तोर है ॥
ऐसा कुटिल कमबख्त हूँ, हम सम पतित को और है।
झूठा ठगी औ धुर्त बाजी, चोरी चुगुली भावता ॥
नाना तरह मन भावना के, चक्र में ही धावता।
मन इन्द्री नीची नीच में, लेजा करें कूठौर है ॥
ऐसा कुटिल कमबख्त हूँ, हमसम पतितको और है॥६॥
भूला अनादी काल से, करिके बिकारी कर्म है।
बिषयों में धंसते जा रहा, तब भी न लाता शर्म है॥
जो धधकती बिष अग्नि है, जा जा जरूँ तिस ठौर है।
दुखहीमे सुख करि मानता,हमसम पतितको और है १७

भोगा अनन्तों कष्ट है, जब से जनम जग में लिया।
सुकृत कमाया कुछ नहीं, बोया जहर का नित बिया॥
सत संग भक्ती से रहित, करता और का और है।
बहता बिषय के धार मे हम सम पतितको और है ११
सुख चाहना हरदम करूँ, पर हेरता बिष भोग मे।
इससे दुखै दुख सह रहा, रहता हमेशा शोग में॥
निज ख्याल कुछ करता नहीं, जाता बिषय मे पौर है।
ऐसा कुटिल कमबख्त हूँ हम सम पतितको और है १२
युग युगसे भोगा भोगको,पर शांति सुख पाया नहीं।
मन इन्द्रियों में नित बहा, संतोष उर लाया नहीं॥
बहता सदा फिर फिर वहीं, दुख चाहना जो भौंर है।
ऐसा कम अक्ली है मेरा हमसमपतितको और है १३
नाना तरह का दुःख मैं सहते रहा ऐसे सदा।
हा हाय रो रो कष्ट मे, मरते रहा ऐसे सदा॥
पाकर बहुत भारी बिपति को मुर्झता हीये हिये।
इतने म अचानक आय कर, श्री सदगुरू दर्शन दिये॥
देखा प्रभू सनमुख खड़े, झट जाय चरणों में परा।
अम्मृत पारख शांति दे, मम शीश पे पंजा धरा॥
बिष नीद में सोता रहा, गुरुवर जगाये आय कर।
आसक्त हो रोता रहा, प्रभुवर बचाये आयकर १५

नीच जग से खींच कर, निज देश दर्शाये मुझे।
शुद्ध सादा संत को, सद्‌ भेष पहिराये मुझे॥
मुक्ति का रस्ता सरल मे, आप ने हमको दिया।
सारी अपूर्ण पुर्ण करि, सब चुर्ण बन्धन कर दिया॥१६॥
कैसा अहो मैं जीव, चारो, खानि में दुखिया रहा।
पर हां स्वरूपको भूल कर, बिस्यांध हो सुखिया रहा॥
सद गुरु दयालु जब मिले, तबहीं लखाये जाल को।
निज रूपका परिचय दिये, दुख हर लिये उर सालको॥
धन्य पारख धीर जो, भव पीर हरता जीव को।
खानी वो बानी चीर पद स्थीर करता जीव को॥
अनुमान कलपित और भरमिक फन्द है संसार का।
तिनसे पृथक परत्यक्ष, मुक्तो देश गुरुटकसारका॥१८॥
टकसार पारख के बिना, जिव मुक्त कैसे होयगा।
आखिर अपाने भास मे भासिक बेचारा रोयगा॥
पर भास तजने के लिए, कर पारखी से मेल तूं।
तिनके इशारा से जगत सब, जान लेगा खेल तूं॥१६॥
सो खेल को दे ठेल बन, अलबेल पारख बास कर।
जाल झांई संधि काल, कराल सकलो नाश कर॥
जब गुरू पारख दया से, बन गया यह स्थिती।
तब हे जनईया जान तेरा, हो गया अब मुक्ति भी॥२०॥

श्री सद्गुरु के दया, सारा सुफल पुरसार्थं भय ।
जो लालसा दिल में रहा, सो पुर्ण सारा कार्य भय ॥
अब मुक्त अपने देश पारख मे, सदंय विश्राम है ।
जग बंध फांसी नश गया, फिन्से नहीं इल्जाम है ॥२१॥
धन्य यह कब्बीर पारख, ज्ञान का, अहसान है ।
जिसको गहे से जीव का, छूटा सकल अरमान है ॥
अब तो सदा कर जोर, मेरी बिनय बारम्बार है ।
हे प्रभू इस जीव को दीन्हे अचल पद सार है ॥२२॥
धन्य बोधक देव को जो सब लखाये भेद हैं ।
एक एक प्रखाय कर, बन्धन किये सब छेद हैं ॥
संत शरण बहता रहा, तिसको किनारे कर दिये ।
भक्ती विवेक बैराग्य दे, सब हंस रहनी भर दिये ॥२३॥
हे प्रभू हरदम बिनय, कर जोरि कै है नाथ से ।
करिये कृपा दृष्टी दयानिधि, एक दीन अनाथ पे ॥
यों ही दया द्रिष्टी बनी, हरदम रहे इस दीन पर ।
सब तर्फ से रच्छा करो, हम हीन खीन मलीनपर ॥२४॥

प्रार्थना श्री गुरु देव से

मेरी अरज हे गुरुवर, है आप के चरन में ।
एकी गरज हे गुरुवर, रहैं आप के शरनमे ॥ टेक ॥

भूला अनादि से हूँ, खानी वो बानी बन मे ॥
हो हो लचार गुरुवर, दुख अति जनम मरनमे ॥१॥
जो जो मिले सहायक करते मदत उसी मे ॥
जिसमें न शांति च्चण हो, जीवन बितै जरनमे ॥२॥
घुघुची कि आश मे पड़ि, कंचन गवां दिया सब ॥
तजि तख्त भूप होकर, टुकड़ा किया घरन मे ॥३॥
ऐसी दसा हुआ है, जिमि बाल लाल फेंकै ॥
तिमि माल लाल तजि के, भूला जगत नरन मे ॥
गुरु जौहरी मिले जब, तब लाल को प्रखाये ॥
दीन्हे सबुद्धि धन सब, कीन्हा हृदय मनन में ॥५॥
दै दिव्य द्रिष्टि भारी, आशा कलह निवारी ॥
गुरुवर सहाय कारी, भवसिंधु के तरन मे ॥६॥
गुरुवर दयाल के सम, जग मे न आन कोई ॥
हैं बीर धीर बलिया, त्रय ताप के हरन मे ॥७॥
गुरु संत हो खेवइया, बहती मेरी है नइया ॥
आशा यही पुरावो, बासा दिजै परख में ॥८॥

॥ दूसरा प्रार्थना ॥

उपकार आप का हे गुरुवर, क्या ब्यॉं करूँ २ ।
सुख सार आप का हे गुरुवर, क्या ब्यॉं करूँ २ ।टेक।

राजा परजा नरनारी जो, कर्ता धर्ता अति भारी जो
दुखटार आप सा के गुरुवर, क्या ब्यां करूँ २ ।१।
सबजगतभुलभ्रमअन्हियारी, गुरुपरखबिनानहिउजियारी
पद सार आप का असगुरुवर क्या व्याँ करूँ २ ।२।
दुनियांदुखसागरदीख रहा, लखि संतशरणयहलीखरहा
लखि कार आप का हे गुरुवर, शिर न्यां करूँ २ ।३।
जग रिस्ता छूटे गरज नहीं, तन दिखता टूटे हरज नही
दरकार आप से हे गुरुवर, यहि बयां करूँ २ ।४।

॥ चौपाई ॥

संतगुरू समको उपकारी, जगतजाल परखावत सारी
जिनके संग संगही करते, जक्त ब्रह्म दुविधा द्वै जरते
अमृत बचन सुमतभ्रमभागे, स्वयंस्वतः पारखमें लागे
बेदःकुरानपुरानमेभटका, परनहिनाश, होयजिवखटका १
पर सबखटका मिटैझटाका, गहैअगरपारख पद बांका
यहितेगुरू संतकी उपमा, जक्त ब्रह्मनहिंकोई मुलुकमा
धनि२सन्तगुरुसतसज्जन, जासुकृपा दुखसकलोगंज्जन
धनि२ धन्य२ गुरुदेवा, अमर मुक्तितुम्हरी प्रभुसेवा २

॥ सोरठा ॥

धनि २ गुरुवर संत, तुम समान जग ना कोई
महिमा कहे न अन्त, यहि ते चरणन शिर धरूं १

॥ अपनी परिचय और निवेदन ॥

जिस प्रकार से इस संसार में कोई बावला हो या महां पागल हो कर, अपना धन धाम औ आराम छोड़ कर गली-गली इधर उधर ठोकरें खाता फिरता हो,यों तो सबदुरदशा सहता है। फिरतो वह सर्व सुख छोड़ कर घुर बिनिया, यानी घूरों का दाना बीन-बीन कर खाता है, और नाना तरह का दुख द्वन्द सहा करता है। बस इसी परकारसे हम भी अनादि काल से इस मनोमय के मतंग में पड़कर, महांन बावला के सरीखा अतियंत पीड़ित रहा। यानी अपना सच्चा धन धाम आराम, छोड़ नाम भूलकर, इधर उधर चारो खानियों में दर २ ठोकरें खाता था, तहां धन कहिते जो अजर अमर अखँड अबिनासी ही अपना चैतन्य, वही धन है, और धाम कहिये जो स्वंयम स्वतः अटल अपना पारख तख्त खाश निज स्वरूप को, सो वही सर्व से बढ़ कर श्रेष्ट धाम है। और आराम कहिये जो सकल पिन्ड ब्रह्मांड की आशा बासना को त्याग कर, औ सर्व हंस रहनी रहस्य लच्छण के संयुक्त एक रस पक्का ठहराव बना

कर आप उसी पर अड़ें रहना, एवं जीवन मुक्त दशा में संतुष्ट होकर बिराजना, और अपने पद पर हर घड़ी शांति रहना, वही आराम है? सो ऐसा महांन अविचल पद छोड़ कर, एवं इस संसार के बिषय में पड़ कर, यानी यही पंच शब्द शर्पश रूप रस गंध बिषय के धार में गोता लगाता था। और घुरबिनिया कहिये, छणिक सुख जो पांचो विषय का भोग है, उसीके लिये रातदिन परिश्रम कर कर के तड़ फड़ाना वही ही प्रत्यक्षमें घूरका दाना बीनना है। यों तो इस संसार आसार में पड़ कर, मैं हीन दीन दरिद्र होकर दुसह दुखमय में अपना जीवन बिताता था—तहाँ इस हमारे बारमे जैसा२ दुख हुआ, और श्री गुरुदेव से मिल कर शांति सुख हुआ उसका सही २ प्रत्यक्ष प्रमाण आगे के दृष्टाँत औ सिधान्तों द्वारा ही साफ २ जाहोर होता है, जिसको कि भाविक जन देख कर जान ही लेवेंगे, उसी का ही आगे बर्णन है।

॥ दृष्टांत ॥

एक दुखद पुर नाम का शहर था, उस शहर में एक महा दरिद्र दीन जीव था और वह धन के लिये

या धन बिना बहुत ही दुखी था, उस महान दरिद्री दुःख में वह व्याकुल रहा करता था, और वह धन के उपार्जन में बड़ा २ उपाय औ हिकमत करता, परन्तु नाना युक्ति करते उसे धन नहीं प्राप्त हुआ, यानी वह दरिद्र धन के लिये बहुत से राजा बाबुवों का आश्रय लिया, कि जिससे दरिद्रता दूर होवे, परन्तु उसका दरिद्रता नहीं गया। वह बेचारा दरिद्र, धन के फिक्र में इधर उधर नाना प्रकार का उपाय किया, यहाँ तक को सब की गुलामी भी किया, पर उसका दरिद्र पन नहीं मिटा। किसी प्रकार उसका दरिद्रपना ना मिटने के वजह से वह बहुत ही बेजार होकर अफसोस करके पछताता था कि इतने में संयोग वस एक बहुत भारी धन्नयाड सेठिया उसको मिल गये, वह अति दरिद्र दुखिया, उन धनाढ्य सेठिया को देखते ही अर्जी किया, कि मैं एक महा दरिद्र हूँ, और बहुत दुखी हूँ। ताते आप से मेरी अर्जी है कि दया करके आप यह मेरा दरिद्र पना मिटा दीजिये, फिर तो जैसा आप राय देंगे वैसे ही मैं करूँगा या वैसे ही रहूँगा, पर यह दरिद्र पन हरण कर देंय तो हमारे

ऊपर आप का बड़ा कृपा होगा, इस प्रकार नम्र दीन बचन को सुन कर वो सेठिया का हृदय करुणा से पिघल गया, और आप दया से भर गये, तब उस दरिद्र से कहने लगे की अच्छा जो तुम्हारा ऐसा अर्जी है, तो लो मैं यह एक पारस मणी तुम्हे दियें देता हूँ, और देखो इसको हिफाजत से रखियेगा फिर तो तुम्हें कोई प्रकार की कमी या दरिद्री नहीं सतायेगी, और अब किसी से धन के लिये याचना नहीं करनो पड़ैगी। यानी ऐसा ए महान धन का स्वरूप है की इसके सेवन से दरिद्री नहीं सता सक्तो है, मात्र इसका प्रयत्न करते रहने से, फिर तो अब तुम्हें किसी से दीन नहीं बनना पड़ैगा, बस तुम सिर्फ इतना ही करो की इस पारस मणी को सम्भालो कि तुम्हारी सारी दरिद्रपन छूट कर सुखी औ स्वतंत्र ही हो जावोगे, परन्तु इस बात का हर हमेशा ख्याल रखना की कभी इस पारस मणि को भूलना नहीं, जैसे कि इस अमुल्य धन पारस मणि को कहीं भूल कर गाफिल ना होना, हर वक्त जी-जान से सजग सावधान रहना। बस इसी प्रकार से जतन करते

रहने से कभी दरिद्रता नहीं सतायेगी, और हर समय अमना चैन से सुखी हो जावोगे, फिर किसी हालत में तुम्हे दरिद्री नहीं सता सक्ती है। इस प्रकार से उस महान धन्नाड का बचन सुन कर वह दरिद्र अति खुसियाली हुआ और पारस मणीको लेकर सुखी हुआ औ उसका दरिद्रता सब जाता रहा ? एवं उन सेठिया का उपकार मनाते हुए सुखमय से जीवन गुजारने लगा, हे हमारे प्रिय मित्र सुज्ञ जन, जैसे वह महा दरिद्र ने हर घड़ी दुःखों से व्याकुल था, परन्तु जब वे महान सेठिया का दीदार वा दर्श हुआ, और मणी पाया तब से उसका सारा दरिद्रता रूप संकट छूट ही गया, और वह आजाद सुखी हो गया—यों तो हे भात्रिक जनो अब आप सब बिचार से देखें, कि इस दृष्टांत के अनुसार ही, यह संसार दुसह दुःखों से घिरा हुआ है। ताते इस संसार ही का नाम दुखद पुर शहर है, तहां सद ज्ञान बिचार से हीन एक यह जीव ही दुखी औ महा दरिद्र दीन है, यों तो मैं भी पारख बिचार रूपी धन बिना, अनादीकाल से और इसी जीवन में भी बहुत दुखी था, अन्डज पिन्डज आदि चार खानियों के अंदर में नाना प्रकार से दुःख

ही दुःख मे पड़ा था, तहां चारो तर्फ से कष्ट ही कष्ट पाकर अतियंत विकल होता रहा, जिसका कुछ थाह नहीं, यों तो वह अपना महां भयँकर पोड़ा को छुड़ाने निमित बहुत ही कोशिश किया, यानी हमारा वह दुसह दारुण दुःख छूट जाय, इस लिये भ्रम भूलवश, भांति भांति से देवी देव भूत भवानी भैरव आदि मान २ कर पूजा प्रतिष्ठा किया परंतु मेरा दरिद्र रूपी दुख दूर नहीं हुआ ? यह सब करते करते, बहुत दिन व्यतीत हो गया और दुख नहीं गया, तो इसके बाद और भी माना हुआ चारो धाम चौरासी अड्डा और अरसठ तीरथ आदि में दौड़ २ कर सब जगह तिरथाटन किया, औ नाना भांति से पूजन दर्शन किया गया, परन्तु ये सब करने से भी हमारा दरिद्रता नहीं गया जब यह सब करके थक गया और दुख नहीं दूर हुआ। तब मन में बहुत चिन्ता हुई औ उसी चिन्तातुर शोक में ग्रसित होकर और-और जगह भूल कर भटकने लगा, फिर तो उसी अवस्था में भटकते २ वहां जा पहुँचा की जहां पर योगी यंगम आदि छा दर्शनों औ छानबे पाखँड के मतवालों को भरमार थी, वहां जाकर अनेकों प्रकार से खोज

तलास की, जौने से यह हमारा दुख छूट जावै—यानो यहां तक उपाय किया कि जो राजा बाबू रूप बहुत मतों के अध्यक्ष थे, उनका भी नाना प्रकार से सेवा गुलामी किया। मतलब की अपना जन्म मरण रूपी दरिद्रता दुख छुड़ाने के लिये, हर तरह का जतन किया, परन्तु हमारा दरिद्री पना दुख छुटा नहीं, और शांति हुआ नहीं। इस प्रकार से दुख छुटने का उपाय नाना तरह भांति २ से बहुत २ प्रकार का यत्न फैलाया, पर हमारा यह अपर्बल संकट मिटा नहीं—यों तो जब मैं चारो तरफ दौड़ २ कर हर तरह का उपार्जन करके थक गया, और किसी के द्वारा यह मेरा बिकट संकट नहीं छुटा, तब मैं हर प्रकार से लाचार होकर अपने मनमें हार खाकर अफसोस के सागर में डूबने लगा, और रोरो कर हृदय में पछताने लगा, यों तो उस भयँकर महान शोक सागर के धार में मैं यही जाना, कि हमारा बचावा अब नही हो सक्ता है ? अथवा यह असह पीड़ा नहीं छुटैगा। इसी बात के फिक्र में रात-दिन सोच-सोच कर तड़फड़ाता था, और बहुत ही ऊब घबरा कर दुख में बिकल होता रहा यों तो क्षण २

हमारे लिये हज्जार बर्स बीतता था, की इतने में यकायक उस धनाडय सेठिया रूप श्री सद्गुरुदेव आ गयें, जिनका शोभा परम प्रकाश परम मनोहर निर्मल बिमल और परम शांति मुक्त स्वरूप से अतियंत प्रजल्लित रूप से बिराज रहें हैं, ऐसे २ महांन सद्-गुण संयुक्त इष्ट परम पारख रूप तेजस्बी शील रूप श्री गुरुवर को देखते ही मैं चरणों पर गिर पड़ा, तब श्री गुरुदेव, हमें शांति २ कहते हुए उठा कर बूझने लगे कि क्या चाहते हो सो कहो, श्री गुरुवर देव के ऐसा अमृत इशारा पाय कर, तब मैं खड़ा हो औ दोनो हाथों को जोर कर अर्जी किया। की हे दीना नाथ मैं अति नीच दीन दुखिया जीव हूँ, हे प्रभू इस जन्म मरण रूपी दुसह दुःखसे औ सद्गुण रूप धन से अति दरिद्र हूँ, कृपया हे दया सागर ज्ञान आगर, आप इस मेरी दरिद्रता कष्ट को हरण कर लीजिये। क्यों कि मैं बहुत दिनों से इस दुसह दुःख में अतियंत बेहाल हूँ—हे साहेब यह हमारा दरिद्र पना आप मिटा दीजिये और हे करुणा निधान दया सागर अब आप को देख कर हमें तसल्ली हो गया है ? मैं बहुत

दरिद्र दुखी लाचार होकर आप से अर्जी कर रहा हूँ। और हे प्रभू मैं इस गूढ़ दुख से बहुत ही मूढ़ हो गया हूँ, तहाँ इस गूढ़ दुखको छुड़ाने के बारे में बहुतों का सहारा लिया, परंतु क्या हो जैसे हम गूढ़ दुख मे मूढ़ बना था, वैसे ही वे सब बेचारे भी बने थे, तब भला कैसे हमारा दुख छुड़ावें, जबकी वई महां मोह खानी बानी के धारा मे बहि रहे हैं, तब फिर कैसे वो हम को बचा सकें। इस लिये अब मुझे आप ही का मात्र सहारा दिख रहा है ? और हे गरीब निवाज पारख दाता सद् गुरू—आप को छोड़ कर हमें दूसरा और किसी को सहारा नहो दिखाता है। इस लिये हे बन्द बिदारक, हे दुख हारक गुरु देव अब हमें इस महां घोर दुःख से बचाईये। क्यों कि अब मैं सब तर्फ से हीन दीन मलीन खीन लाचार होकर आप के शरण मे आया हुँ। सो हे बिध्न बिनाशक दीन दयाल आप इस मेरे अधम पापी बाल पे ख्याल करके नजर फेर दीजीये ? और इस महा घोर दुःख से बचा लीजीये, अब हम आप ही के न्याय अनकूल रह कर चलूँगा, फिर तो अब आप जैसा राय देंगे

वही करूँगा, परन्तु हे बन्दी मोचन, हे दुःख हर, बन्दी छोर कृपालू सदगुरू, इस हमारे प्रारथना पर दया द्रिष्टी करके, इस मेरे दरिद्र पना को हरण कर इसको नाश कर दीजीये। बस फकत आप से यही मेरा कर जोर के बिनीय बिनय बिन्ती है। और सब प्रकार से हे नाथ कर जोर के मेरा सवाल है, सो हे परम श्रेष्ट कृपालू प्रभू इस मेरे दीन के गर्जी के अर्जी पर मर्जी कीजीये।

इस मेरे बचन को सुन कर, श्री गुरुदेव ने अपना महांनु कृपा द्रिष्टी की नजर करते हुए गम्भीर अमृत से सने बैन बोले की अच्छा जो तुम्हारी सही सही यही बिचार है, तो लो मैं इस अखण्ड अमर अबिनाशी पारख मणी दिये देता हुँ। की जिसमे न तो कोई प्रकार की कमी है, और न तो कभी यह धन नाश ही होने वाला है। यानी इस अटल अचल पारख विचार रूपी मणी धन को जो तन मन बचन और जी जान से अपनाते रहोगे, तो आज से तुम्हारा जन्म मरण रूपी दरिद्रता नष्ट भ्रष्ट हो जायगा। और पुर्ब सब दुःखों से छूट कर, नित्य

के लिये अचल अविचल अचिन्त अजर अमर मुक्ति धाममें निहाल होकर बिराजोगे। लेकिन इस बात से हर वक्त खौफदार औ चौकसी रखकर हरदम हर घड़ी होशियार ही रहना ? यानी इस पारख बिचार मणी को छोड़कर कहीं भूलना नहीं, हर समय अपने चित्त व सूरत से उतारना ना। एवं तो आज से तुम्हे किसी प्रकार की आपदा नहीं सता सक्ती है—

बस अमर अमर अब मुक्त रहोगे।
कठिन जाल भव मे न बहोगे॥
अब स्वतंत्र आजाद रहो हो।
मुक्त भुक्त आबाद रहो हो॥१॥
नही किसी के बश मे रहना।
कभी नही मन वेग मे वहना॥
अंतिम काज बनालो प्यारे।
जल्दी होव जग्त भव पारे॥२॥
क्या हैं कमी अमी अमृत जब।
नष्ट भ्रष्ट जन्मृत्य सभी अब॥
अमन चैन से जीवन तुम्हरो।
चेतन परख रूप मे ठहरो॥३॥

आना जाना कहीं नहीं है।
स्वतः रहाना सही सही है॥
अमृत मुक्त तुम्हारो रूपा।
नहिफिर पड़न रहो भव कूपा॥ ४॥
पांच तत्व जड़ पृथक पृथक है।
सांच रूप निज पृथक पृथक है॥
चेतन आप निराला सब से।
पर यह भया बेहाला कब से॥ ५॥
पंच बिषय युत तत्व अनादी।
स्वयं स्वतः यह जीव अबादी॥
दोनो बन्ध जानु सन्बन्धा।
तेहिते जीव भयो गर्ज बन्दा॥ ६॥
तेहिते बार बार चव खानी।
मानि मानि बानी औ खानी॥
यहिते स्वतः रूप पहिचानो।
परख रूप चैतन्यहिं जानो॥ ७॥
सम्हरि सम्हरि पारख में ठहरो।
क्षण भर अन्य जगह नहि बिहरो॥
अब तो तुम्ही आप ही खुद है।
तेरे परे नहीं कोई जुद है॥ ८॥

पारख गहो रहो गुरु पद मे।
अब ना वृथा भ्रमो इस जग मे॥
निज स्वरूप मे निश दिन सोधो।
अमृत ज्ञान दिनो दिन बोधो॥ ६॥

॥ साखी ॥ बीजक ॥

अमृत केरी पूरिया, बहु विधि दीन्हीं छोरि।
आप सरीखा जो मिलै, ताहि पियावहु घोरि॥ १॥
बोली हमारी पूर्व की हमैं लखै नहिं कोय।
हमको तो सोई लखै, जो धुर पूरब का होय॥ २॥
सकलो दुरमति दूर करु, अच्छा जन्म बनाव।
काग गवन गति छाड़िके, हंस गवन चलि आव॥ ३॥
नग पषाण जग सकल है, पारख बिरला कोय।
नगते उत्तम पारखी, जग मे बिरला होय॥ ४॥
जो तू चाहै मूझ को, छांड़ सकल की आश।
मुझही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पाश॥ ५॥

इन आदर्श अम्मृत वाक्यों, को सुना कर श्री गुरु देव आप शांति रहे हैं।

तब मैं निमग्न होकर, अर्जी पूर्वक यह पद कहने लगा।

॥ पद ॥

हे नाथ मैं जगमें भटक रहा पलभर भी चैन न पाता था,
चौखानि बीच में घूमि २ वृथा मे जन्म गवांता था।
ऐसे ही ऐसे जन्म२ दुख बीच दुखाये जाता था॥
सब जीव जन्तु के घेर मे पड़ि मैं नित्य सताये जाता था
राजा अमीर औ रंक सभी हो करके ठोकर पाते थे।
बाम दाम रमड़ी चमड़ी मे फंस कर दुःख उठाते थे॥
इस जक्त सिंधु मे पौर २ सब ठौर २ दुख पाय रहा
भ्रम पंथ कुमार्ग मे पड़ कर परबस होकर चिल्लाय रहा
हम अपना कष्टमिटानेहित सबके पीछे बिललाते थे।
सुत नारि कुटुम्बी मानि और भेषों में चक्कर खाते थे
जलबिनमछरीजसतलफरही भोजनबिनभूख न जाताहै
मित्रबिना जस मित्र दुखी मणिबिन भुजँग दुख पाता है
जैसे अतिशय प्यासा कोई पानीबिनु चैने क्षणभर है।
कोई जो कूप में डूब रहा उसके दुखका क्या सरवर है।
निर्बल बालकजिमिमातपिताबिनकहांसुखी रह सक्ताहै
जिमि सीड़ी पागल निजअंगको काटि अटपटी बक्ताहै
जैसे मतंग मैगल हाथी दुरदशा सहरही भटक भटक
जैसेकुमारिपति मरनेसेअति बिलफरही शिर पटकर।३

तैसे दुखियामैंपारखबिन अति व्याकुल होकर रोता था
जलनिर्मल स्वछको छोड़२ कीचड़से तनको धोता था
क्याकहुँ हाल हे गुरुवरजी दिनरैन बिकल मैं सही रहा
सबसे तरपांसा नित्यगया रंचकभर सुखिया नहीं रहा
दरबदरकि ठोकर खाताथा कटुबानी सबकी सहा गया
जेहलीकेसम परवश होकरहयरानीमें भी रहा गया ४
तनमें पीरा अति जोर हुआ सब अंग २ में कांट चुभे
ऐसा सबजन कीन्हा हमको जस रोमरोममें भालगुभे
हम घायल होकर मरता था करता था सदा पुकार यही
क्याअहे दयालु कोइ जगमें लेता हर कष्ट हमार नहीं
इसतरह अनेकों कष्टपाय असमंजसमें दिनजात्य रहा
हममुर्झि२ मनहीमनमें जीवनजाना हत भाग्य रहा ५
पर भाग्य हमारा जाग गया गुरुदेव आपके मिलने से
जग भर्म करारा भाग गया गुरुदेव आपके मिलने से
हे पारख दाता आपको तजिके दूजा नहीं सहारा है
पारख बिचार को दे करके नर्कों से हमें उबारा है
उपकार नाथ है अमित आपका दास चुका नहिंसक्ता है
त्रयलोककिसम्पति देकरभी अहसानपुगानहिं सक्ताहै
क्योंकी अनाश धन आप क है अरु नाशहमारी सेवाहै

सो भला बराबर हो कैसे बदला भी नहीं पुरेवा है
है धन्य नरायणदेवतुम्हें मोहिंकाढ़िलियो भवसागरसे
मुक्तीपदमें निजजोड़ि दिये कर लिये परखपद आगरमें
इसहेतुसे तनमनधन स्वामी अर्पणहै आपके चरणोंमें
सब भूल चूक मेरा क्षमिके लीजै हेगुरुवर शरणों में ७
ये संत शरणहै अधमबाल गुरुवरसे विनय सुनाता है
हरबार प्रभूके चरणों पर हो दीन ये शीश झुकाताहै
जबअधमपतितके तारक हो हम पापीको अपना लीजै
सबदुःख दरिद्र निवारक हो मेरा भी कष्ट मिटा दीजै
जै२ गुरुवर जै २ गुरुवर जो मिले आप शुभ औसर में
जन्मरण हमारा मिटा दियेधनि आप मिले यहिऔसरमें

॥ छन्द ॥

धनि हमारे संत प्यारे दे दिये पदवी अमर।
जन्म सारे दुःख टारे सब मिटी खौफो खतर ॥
इन्द्रि मारे मन पछारे अस सरल दी युक्ति कर।
दुख से निकारे दै इसारे आप दी पदवी अजर ॥१॥
ऐसा सहारे नहिं दिखारे देख लीना ख्याल से।
दूजा को व्यक्तो ऐसी शक्ती जो बचाये काल से॥
पर संत गुरुजी आप प्रभुजी ली छुड़ा मन चाल से।

इस हेतु अर्जी बनके गर्जी सन्त दीन दयाल से ॥२॥
इस जहाना नहिं दिखाना गुरु समाना और है।
जोइ भेटाना सोइ भुलाना भर्म ही के ठौर है॥
छे बीच अन्दर सबही बन्दर हो रहे दो दौर है।
गुरु परख नामा बिन ठेकाना नहिं दिखा करि गौर है
छव सास्त्र बेदों मे भी देखो गुरु बिना नहि छांह है।
श्री कृष्ण रामा अरु जे भामा सबलिये गुरु राह हैं॥
औरो जिते रिषि मुनि तिते गुरु श्रेष्ट दी सल्लाह है।
यस जानि के गुरु मानि के जग ब्रम्ह के मल्लाह हैं॥
गुरु गुरू बीचन परख सींचन हार कोई ऐक हैं।
जोइ परख धारे करत पारे यहि मे शंक न नेक है॥
खानी औ बानी ही फसानो सद् गुरू का लेख है।
सो परखि त्यागे निज मे जागे मुक्ति नहि ये टेक है॥५॥
यहिते प्रबीना गुरू कीना पारखी को हेरि के।
है मुक्त होना असल होना नक्ल से मुख फेरि के॥
संत शरण जागो परख पागो कहत गुरुवर टेरिके।
धनि धन्य गुरु हो धन्य गुरु परखायो सबकुछ छेरिके॥

हे सद्गुरु श्री कबीर साहिब धन्य धन्य आपको है। और आप समान श्री पारखी सद्गुरु संतोंको, जो

की मुझ ऐसे महा अधम पापी, मलीन, हीन, दीन को ठिकाना दे दिये हो। धन्य धन्य हे सद्गुरु साहेब आपको, कि जिनका पर्म श्रेष्ट श्री नरायण साहेब ऐसा शुभ नाम है। हे साहेब आप ही ने महान कृपा दृष्टी फेर कर, हम ऐसे एक महा मलिन को, इस कठिन खानी बानी जालों से बचा लिये हो—इसलिये हे सर्ब पारखी श्री गुरु साहिब, आप सब का, सर्ब श्रेष्ट न्याय, और आप सब हे सद्गुरू साहेब, इस मेरे अंतः करण वा हृदय के बीच मे बसैं, ताकी आप के महान पारख स्वरूपज्ञान के प्रताप से, इस संसार सागर से पार होऊँ। हे साहेब जनों आप सब भ्रम मुक्त पुरुष के ही दया से, यह अति दीन एक संत शरण दास भी, आपके न्यायालय मे प्रबेश हो गया है। सो हे साहेब इस नीच को भी अपना लीजीये, क्योंकि आपको छोड़कर इसके और कोई आधार नहीं है? अब हे साहेब आप ही मात्र एक आधार हैं।

॥ दोहा ॥

संत गुरू आधार मम, इस जहांन के बीच।
आश्रय दीना दीन को, जग्त सिंधु से खींच ॥ १ ॥

गुरु सम नहिं दानी कोई, तीन लोक के माहिं
सहज दिये अखँड पद, मिला जो कब्बों नाहिं ॥२॥

॥ सोरठा ॥

जैसे हते बेहाल, भरमि २ जग जालमे।
तैसे कियो निहाल, परख अमर पद दै गुरू ॥
सुन नर मुनि औ देव, तपसी योगी जित सकल।
परख गुरू बिन केव, पार भये नहिं अति बिकल ॥२॥
ब्रम्हा विष्णु महेश, जेहि पद खातिर थे दुखी॥
उन्हे मिला नहि लेश, सो गुरु दीनो दया करि ॥३॥
यहिते पारख ज्ञान, है महांन, संसार मे।
जेहि बिनसकल जहान, अति हेवान है २ फिरत ॥४॥
बूड़ि गये सब लोग, सृष्टि मनोमय कूप में।
परखि मिला नहि ढोंग, बिन गुरु पारख के दया ॥५॥
गुरू पारखो आप, पार जग्त औ ब्रम्ह से।
नष्ट कियो मम ताप, पारख पद अनमोल दे ॥६॥
ताते बिनय सदांय, चरण कमल मे आप के।
लीजै शरण लगाय, अर्ज यहै सरकार से ॥ ७ ॥

॥ छन्द ॥

हे मोक्ष दाता सद् गुरू दुख के हरईया आप हो।
खानी वो बानी जाल से हमको छुड़ईय आप हो॥

हे दया सागर ज्ञान आगर शांति के भन्डार हो।
पारख के बाशी हो अनाशी जग्त से प्रभु पार हो॥१॥
हे परिकछक आप रच्छक और सब भक्छक अहैं।
हमको जलाते बिष चढ़ाते मानो सब दच्छक अहैं॥
अमृत उचारण करि निवारण हर लिये अज्ञान हो।
मेरी है बन्दन कर स्वछन्दन हर सकल बिषयान हो
सुनिये ये अर्जी एक गर्जी दीन की अभिलाष है॥
करके सहारो मोहि उबारो जन्ममरण त्राष है॥
हे उदारक दुख बिदारक कीन मम उद्धार हो।
निर्मान हो निष्काम हो सद्ज्ञान के दातार हो॥३॥
जो कुछ कहूँ जो कुछ सुनूं मनमें गुनूं धारण करूँ।
गुरु आपका परताप सब मुखसे जो उच्चारण करूँ॥
गुरु संत महिमा आपकी सब मैं नहीं कुछ जानता।
जो दया करके दिये उस ही को नाथ बखानता॥४॥
कुछ शक्ति मेरे में नहीं सब आपका इकबाल है।
यह ग्रन्थ चरणों में प्रभू करता समर्पण बाल है॥
करजोरि बारम्बार गुरुवर संत से बिन्ती मेरी।
अग्रसर करिये मुझे गाऊँ सदा मैं गुण तेरी॥५॥
हे मेरे शिरमौर इस बालक पे दाया कीजीये।
जिससे न हो हंकार मद निर्मान पद को दीजीये॥

धन्य बोधक देव श्री गुरुवर नरायण जी मेरे।
उपकार तव अथाह है वर्णन करूँ मैं किस तरे ॥६॥
जिन २ गुरू वा संत से मेरा हुआ उपकार है।
उनके चरण के हूँ शरण मम बन्दगी त्रय बार है॥
धन्य गुरुवर धन्य गुरुवर धन्य गुरुवर संत हो।
संत शरण पद रज प्रभू के बार बार नमन्त हो ॥७॥
पल २ वो क्षण २ हर घड़ी अब आपही का ध्यान हो।
नित हंस पद धारण करूँ होकर सदा निर्मान हो॥
हे सदगुरू सरकार दीनानाथ मेरे आप हो।
ऐसी दया दृष्टि करो फिरसे न दुखकी नाप हो ॥८॥

॥ शब्द ॥

हे लाजप्रभू आयेकिशरण, मोंहिजानिदुखी दै दीजैचरण
तवनाम सुनादुख हारक है, अघनीच पतितके तारक है
दुखएक अनाथ कि कीजै हरण॥ हे लाज० ॥१॥
जब आप दयालु उदार्कहो, भव डूबे हुएको उबार्क हो
तब एक बहेतु कि रखिये परण ॥ हे लाज० ॥२॥
जग मध्यसहायक खोजिथके, कोइद्वैत अद्वैतअनन्त बके
बहु माया के चक्र में फेरि करण ॥ हे लाज० ॥३॥

है जालके बीचघिरेहुँ बहुत, चौखानिके बीच फिरेहुँबहुत
बहु बार सहा दुख जन्म मरण ॥ है लाज० ॥४॥
सतसुकृत हैयहदेह मिला, अहोभाग्य अहैगुरुसैनमिला
औसर है मोक्ष कि भवसे तरण ॥ है लाज० ॥५॥
धनि बोधकदेवनरायणहो, मोहिमुक्तिकेमार्ग धरायण हो
करता है विनय यक संत शरण ॥ है लाज० ॥६॥

अब करबद्ध करके अन्तिमी यही विनय है, की हे पारख प्रकाशी सद्गुरु श्रीकबीर साहिब, और आप समान पारखमें लीन सदसन्त गुरूको। मेरी विनय है। तथा पारख ज्ञान के सत्संग शैली के तरफ चलन हारे, भक्त सज्जन जनोंसे, इस बालक की प्रार्थना है, जो कुछ इसमें, मेरी मन्द बुद्धि से त्रुटियां रह गई हो, सो आप सब छमा करके कृपया सुधार लेवेंगे, और इस दासको अब ऐका चित्त से, अपने पद या रहस्य के अनुगामी बनाये रहैंगे। यही अन्तिम प्रार्थना है।

श्री पारखी सद्गुरु व संतों का चरणरज
संत शरण दास
श्री कबीर पथ पथिक

श्री सदगुरु कबीर साहिब का, सर्व जीवों के लिये हितय कर शुभ, श्रेष्ठ अम्मृत संदेश।

॥ गजल ॥

कबीर गुरुवर की बानी, निर्भय निर्द्वन्द दिखाता है।
अतिधीर प्रभूवरकी बानी, अतिशयस्वछन्ददरशाताहै।टे।
जेहिज्ञानप्रकाश सदारबिवत, जीवनकल्यानसदादर्शत।
है छीरसरिसजिनकीबानी, सुखमयपदशांतिबताताहै।१
राजा परजा नर नारि कोई, पंडित बिद्वान, अनारि होई।
सब केर सहायक यह बानी, सबका कल्यान कराता है
निरधनी धनी कोईभी हों, कोइजाति स्व जाति जोईभोहां
सबके दुख हारक लो जानी, गहने से सुखी हो जाता है
हाकिमवोहुकुम सरदार कोई, चहे सेंठमुनोवभिखार होई
अखँडअमरगुरुकाहानी, सबकेसुखमयबिलगाताहै ।४।
सबभेषऔदेशके हितकरहै, अति श्रेष्ट बरेष्टसोरबिकरहै
तिनकाअमृतसमबचजानी, हिरदंयमेगहेसुखपाताहै।५।
जितनेमत जगमेजारी है, गुरु मतसबके हितकारी है।
मुक्तोपद दर्शकयह बानी, गहि सर्बकाज बन जाताहै।६।
जीवनकी दुखड़ा हरने मे, दुर्गुण दल टुकड़ा करने मे।
आमोघबाणलोपहिचानी, तेहिधारिबिजयहो जाताहै।७।

जिवकोसब भ्रांतिढहावतहै,निजरूप कि ज्ञान करावतहै।
पारखअसलीमतसत जानी,आगर्जअभयपद दाताहै।।८
कायामे बीरजो चेतन है, गुरुज्ञान उन्हीं के हेतन है ।
गहिलेयतिसे तजिमनमानी, सो जीवअमरपद्पाताहै।६।
संतोषवोशीलबिचारछमा, सतधीर दया।जेहि जीमेजमा।
हंसोंकिरहनि इकलाशानी,गहजोईसोभवतरजाताहै१०
इनसदगुन को कोईभि गहै,फिरसोभव सिंधुमें नाहिंबहैं
है बात सरासर निबानी, प्रत्यक्ष मोक्ष हो जाता है
धनि धन्यपुरुष वे धन्यअहैं, जोयहनिर्णयअपनातेहैं ।
पारखपर करली ठहरानी, तहिसंतशरण शिरनाताहै ॥
बीजकजोकोष खजानाहै, पारखधन तिसमे भरा हुआ।
पारख अपनावें जो प्रानी, हो रंक भूप हो जाता है ।
यह रहस वही जानो प्यारे जिसकोगहते हो गहते ही
जन्मरण फन्द्ततकाल टुटै, सबकमीपूर होजाती है ॥
पारख कीमहिमा क्याबर्णों, जोपाय गयें वें जानि सकैं
गुरु पारखपटतरतुलानामे, त्रिभुवनमेनहिंदिखलाता है
ब्रम्हाड पिन्डकीसकलसुःखबिष्टासमदर्शित हो जाता ।
वें जीवनफिरभवचक्रपड़ै, बस शांतिहि शांतिरहाता है
हेजीव जोमुक्ती चाहअगर,तोआव गुरूमगपारख मे ।
सहजै दुखसारा जायतेरा,संशयसब नाशिवोरोता है॥

है मन्त्र महां सब मंत्रों मे, हे प्यारे जीव जपो इसको
पारखपारख परखत परखत, पारख पारख हो जाताहै १८

॥ सवैया ॥

मेरे वहो सर्बोपरि सदगुरु, पारखज्ञान महांन दियो है
जन्म अनन्तन धोखमे सोवत खोवत रत्न जगा लियो है
औरकहूँमहिमाकिसकी गुरु संत समान न कोईमिल्योहै
तवआश मेरेयक मात्रगुरूवरजो भवबीचसेखीचलियोहै
नभक्ति न ज्ञान अहै मनमें तनमे बैराग्य न रंचक मेरे
न साधन ध्यान न शक्तिअहैसबरागअज्ञानहृदंयमेघनेरे
बोध नभाव हृदंयबिचआव बिषयकिखिचावहैमनमेकरेरे
हौं मति मन्दसबै बिधसेपर मुक्ति कि चाह कियों गुरु तेरे
मेरि दशा वैसे हि हुआ जस सर्प छछुन्दर केर भया है
ज्योबन्दरमूठ चबैनाकै कारणलोभतजे बिनप्राण गया है
त्यों मुक्ति चहूं पर भोगगहूँ तबकैसेलहूँ मैं मुक्त निवाशा
सुखदेंह किनेंह छोड़ायगुरू, अपनेहिचरणमेलीजै ये दासा

॥ दोहा ॥

भव बूड़त गुरुवर मिले, पार कीन्ह मम नांव।
जगत ब्रम्ह धोखा हन्यो, दीन्ह परख पद ठांव ॥१॥
हे सद्गुरु तुम सम नहीं, जग्त बीचकोइ और।
भांति २ तल्लास की, लखा हिये करि गौर ॥२॥

॥ गजल ॥

धन्यगुरू पारख अधिकारी, मिलेमिलेहो मिलेमिलेहो ।
धन्यगुरू सांचा पदधारी, मिलेमिलेहो मिलेमिलेहो॥टेक
जगतमे नानाकर्म कमाया, करत२ सब दिवस बिताया।
पर नहिंदेखि परा उजियारी,मिले मिलेहो मिले२ हो ॥१
और उपासन बहुतकियेहम,ईशदेव बहु पूजि लिये हम।
परनहिं गया भरम अन्हियारी,मिले२ हो मिले २ हो॥२
कीन्ह ज्ञान बिज्ञान रमाया, ब्रम्ह ज्योतिमे जायसमाया
पर बिनपरख गर्भ दुखजारी, मिले२हो मिले२ हो ॥३।
अहोगुरू पारख बिनपाये, युगन २ यहि मे भरमाये ।
कहुँ नहिंठौर ठिकान दिखारी, मिले२हो मिले २ हो ॥४
पर अब मिलासही वह पारख, जाहि पायद्वबिधाभइछारक
जग्त ब्रह्म तकरारमिटारी,मिलेमिले हो मिले २हो ॥५
जेहि बिनसुर मुनिऔनरनारी,तलफि २ हैंहुए दुखारी ।
सो पद पाय गयों सहजारी,मिले२ हो मिले२ हो ॥६
संतशरणअबमिलाअमरपद,जाहिमिलेसबदेखि परारद्द
सही प्रत्यक्ष आप सरकारी,मिले २ हो मिले२ हो ।७

चौपाई

गुरु समान दातानहिं कोई, पारखगुरुबिन मुक्तनहोई
गुरु बिनबिकल जीवजगकेरे,बिनगुरुदुख सहिफिरैंअनरे
गुरुके शरणनमे जो आवा, सहजपरममुक्ती पद पावा

॥ आइये मित्र गुरु पद मनन कीजिये ॥

मुक्ती चमन में आयकर, कुछ तो रमन कर लीजिये।
अमृत बचन में आयकर, कुछ तो मनन कर लीजिये॥
मुक्ति व्यंजन आपके हित, मित्र जी तैयार है।
सन्तजन में आयकर, कुछ तो अशन कर लीजिये॥
क्या बयाँ करके कहूँ, प्रत्यक्त खुद है आप के।
आओ हे आओ मित्र जन, संका शमन कर लीजिये॥
दिल कि दुबिधा छोड़कर, सुबिधा गुरू के मार्ग में।
फिर नहीं क्यों आवते, शांती सुधा मृत पीजिये॥
देखो तुम्हारे वास्ते अब पुर्ण मुक्ति सुसाज सब।
बर्णन किया बर्णन किया, जल्दीश्रवन अब कीजिये॥
कुछ नहीं बाकी किया, ताकी तुम्हारे वास्ते।
गहिके सकल जी-जान से, संशय दमन कर लीजिये॥
संत शरण न चूक अवर, आज का अनमोल है।
मुक्ती स्वराज स्वधाम में, अब तब गमन कर लीजिये॥
इन्द्री मन की जो गुलामी, की अनादी काल से।
आज मौका जीत इन्द्री, मन अमन कर लीजिये॥
हे प्रिये मम मित्र जन, अब हंस पन धारण करो।
आज ही ब्रतमान में, खुद मुक्त-मुक्त हो लीजिये॥

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

सद्ग्रंथ वैराग्य अमृत जीवन

प्रारम्भः

पारखी श्री सद्गुरु की

बन्दना

॥ दोहा ॥

श्री कबीर गुरुदेव को, बार बार शिर नाय ।
जिनके कृपा कटाक्ष से, बन्धन सकल नशाय ॥१॥
पारख अमृत अमर प्रभु, जीवन हेत बनाय ।
ऐसे समरथ देव को, सादर चरण मनाय ॥२॥
भव बूड़त भवसिंधु से, जीव उबारन हेत ।
पारख मन्त्र महान दे, जीवन कीन सचेत ॥३॥
सत संगति सत रहस गहि, पारख होत प्रकाश ।
पारख परख प्रकाशसे, कलिमल होत बिनाश ॥४॥

करुणा सिंधु कबीर गुरु, धन्य आपका ज्ञान ।
जाहि गहे जन्मृत टुटै, छुटै भरम अज्ञान ॥५॥
पुर्ब पारखी सन्त गुरु, भये अहैं जो आज ।
तिन सब आप स्वरूप हो, श्री कबीर शिर ताज ॥६॥
और सहायक सन्त गुरु, बोधक बोध जो दीन ।
धन्य नरायण सद्गुरू, जन्म सुफल मम कीन ॥७॥
जिनके संग प्रताप से, जग प्रचराड दुख नष्ट ।
तिन गुरुवर की धन्य है, हरयो असह मम कष्ट ॥८॥
सर्ब पारखी सन्त से, बिनय करूँ कर जोर ।
दया दृष्टि करके प्रभू, दीजै बन्धन छोर ॥९॥
हौं असहायक नाथ में, जल्दी होहु सहाय ।
करो पार भव से हमें, पारख अपन गहाय ॥१०॥

हरी गीत छन्द-१

(१)

बन्दौ गुरु चरना संशय हरना मंगल करना हारे
प्रभु नर तन धारे जीवन तारे दे निज ज्ञान सहारे
प्रथमे गुरु दाता बन्ध प्रखाता खुद पारख प्रगटाये
ज्ञानिन में धीरा मेटेव पीरा बीजक ग्रन्थ बनाये

(२)

इन्द्री मन जीते भवसे तीते पारख रूप कहाये
सब ज्ञानिन मांही श्रेष्ठ रहाहीं जीवन मुक्त कहाये
खानी औ बानी सब लपटानी कोई पार नहिं पाये
पारख परखाई सो बिलगाई गुरु कबीर दर्शाये

(३)

सोइ रहस्य जो धारे जग से पारे वे कबीर गुरु रूपा
तिन सम नहिं कोई जगत में होई वे ही मुक्तस्वरूपा
इस जगके माहीं संत रहाहीं पारख ज्ञान निधाना
वे ही बड़भागी जक्तको त्यागी लीन्हा मुक्त ठिकाना

(४)

सोइ रहनी धारे जग से पारे श्रीनरायण संता
प्रभु धन्य हमारे पतितन तारे जीवन मुक्त रहन्ता
दे बोधक पारख शोध यथार्थ सांचा बाना धारे
सत निर्णय धारी भ्रम तम हारी मेरो काज संवारे

(५)

हम पतित अभागा विषयमें लागा जन्मर दुखपाया
चवखानिन माहीं भ्रमि सदाहीं नाना कष्ट उठाया
गहिर विष भोगा सहिर शोगा सब योनिन के बीचा
नर्क कीट समाना मैं लपटाना महा मंद मति नीचा

(६)

करि२ बहु पापा सहि२ तापा यह जीवन मणि हारा
मेरे सम नीचा यह जग बीचा पापी नहीं निहारा
जितना दुख पाया कष्ट उठाया कहूँ कहाँ तक हाला
मुखसे नहिं आवै सोच समावै जेहिबिधि भयों बेहाला

(७)

जग भोग भयावन नर्क भोगावन जनम मरणकी घेरा
मैं मदमें माता तेहिमें राता फिरयों अनेकन बेरा
अति घोर प्रचंडा मैं मतिअन्धा झुलसि२ दुख खायों
भरि२ बिष घेला बहुत दुखेला शांति कतहुँ नहिं पायों

(८)

मैं अति अभिमानी बिष सुख मानी घूमि२ भ्रम खायों
मैं मुर्ख अनारी अति बेभिचारी यह तन रतन गवायों
यह ऐगुण मेरे अमित घनेरे रोम रोम नहिं बाकी।
गुरु अधमउधारण पतितउबारण सो दुर्गुण नहिं ताकी

(९)

हरदम हम भूला प्रभु प्रतिकूला कियों कार्य बहुबारा
सो भूल लखाये शांति दृढ़ाये ऐगुन सो न निहारा
मम बुद्धी ओछा बिषयन सोचा बार२ दिल आवै
मन इन्द्री घेरैं बिषयमें प्रेरैं जबरन मोहिं दुखावैं

(१०)

जेहि जेहिसे ख्वारी होत हमारी तिनहिं मीतकरिमाना
दुख मेटन हारे सद्गुरुप्यारे भूलि न तिनको जाना
अस २ दुख भारे सहा करारे जो नहिं बनत बखाना
सोदुख जिनटारा ताहिबिसारा अस मैं अधम अजाना

(११)

शुभगुण नहिंकोन्हा सबबिधि हीना इतनापापकमाया
सो ख्यालनकोन्हाशरणमें लीन्हा चरननमाँहिलगाया
धनि गुरु उपकारी मोहिं उबारी सकल चूक बिसराई
हरदम रखवारी करत हमारी दे निज ज्ञान सहाई

(१२)

जैसे कोइ दानी भिक्षुक प्रानी करत सहायसदारी
सबबिधि तेहि सेवा करत सदेवा हरत दुखीकदुखसारी
तैसेगुरुदानी अमर निशानी जो न मिला कोइ काला
सोपदको दीन्हा शरणमेंलीन्हा भिक्षुक कीननिहाला

(१३)

बड़ २ बुद्धिवंता भये अनन्ता एक मेक सब साना
सत निर्णयबीना नहिं पद चीन्हा कीन्हेउ गर्भ पयाना
जड़ चेतन सच्चा भेदमें कच्चा पारख ठौर न पाये
कथि अगम अपारा निज पदहारा और २ कहि गाये

(१४)

कब्बीर कृपाला मेटेव जाला खानिबानि गढ़ तोरे
तबसे गुरुसंता परख करंता भये सो बन्धन छोरे
पारख पद सारा कीन प्रचारा धन्य २ गुरु सन्ता
उपकारमहाना बिदितजहाना महिमा कहे न अन्ता

(१५)

तनमनकी जाला कठिनकराला सो संशय सबटारे
झांई संधिकाला अति बिकराला सो परखावन हारे
गुरुवर उपकारा अगमअपारा कहि न सकौं मैं भाखी
जो मिला न कबहूँ दीना अजहूँ प्रगट दिखायो आँखी

(१६)

मेरे जग भीतर और न दूसर सिवा एक गुरु देवा
सब जाल प्रखाये शरण लगाये सर्व लखाये भेवा
जग ब्रह्म परिच्छक आपहि दिच्छक देव नारायण मेरे
सब संकट टार्‌यो मोहि उबार्‌यो चरणपड़ौं मैं तेरे

(१७)

प्रभु शरण तुम्हारे द्वन्द नशारे जन्म २ कर आजा
असको उपकारी कष्टनिवारी दीन दरिद्रहिं राजा
युग२ दुख पाया बिपति उठाया रक्त आँशुनि तरोया
नित गयों गराशा पायों त्राशा सो दुख गुरुवर खोया

(१८)

ऐसो उपकारा गुरू तुम्हारा मैं न सकौं करि पूरा
धनि धन्य दयालू मेटेव जालू कीन सकल दुख दूरा
गुरुवर सम आना कौन जहाना जो भव बूड़त काढ़े
हम दुखिया दीना सुखिया कीना कष्ट छुड़ायो गाढ़े

(१९)

फिर२ यह अर्जी दास कि गर्जी हे गुरु दीनदयाला
यह जगतसे छूटूं चरणमें जूटूं फिर न बहूँ भवजाला
संत शरण मलीना अर्ज ये कीना गुरुवर देव सुनीजै
सब कालके फांसा मेटिके आशा अजरअमर पद दीजै

॥ दोहा ॥

यह संसार समुद्र में, संशय भरा अनेक ।
सो संशय निर्मूल कर, तुमही सद्गुरु एक ॥११॥
यह सागर संसार से, करन हेत भव पार ।
धनि धनि गुरुवर सन्त हो, कियो आदर्शकार ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

जग तम सम अन्हियार, जीव विकल अज्ञान में ।
सूर्य ज्योत उजियार, जग मगात गुरु ज्ञान जग ॥१॥

पावन परम स्वरूप, निर्मल अमल अमोल गुरु।
पतितन करत अनूप, सत्य रहनि दर्शाय कर ॥२॥

॥ चौपाई ॥

श्री गुरु शरण चरण शिर धरिके ।
बार २ बिनवों हिय करिके ॥
गुरु तव गुण जग अगम अगाधा ।
अपरम्पार अपार अबाधा ॥१॥
गुरु कबीर के चरण पर्श हूँ ।
अति मलीन यक संत शरण हूँ ॥
हे साहेब तव अमृत बचना ।
हिये धारि चाहौं सद रचना ॥२॥
धन्य गुरू गुरुवर धनि पारख ।
सन्मुख आय जीव कहँ तारत ॥
गुरु तुम्हार गुण कहौं कहाँ तक ।
बुद्धि नहीं मम चढ़ै वहां तक ॥३॥
प्रभु तुम्हार गुण सकौं न कहते ।
अस महान पारख बर रहते ॥

सत्य सिंधु सारूप तुम्हारा।
अजर अमर चेतन सद सारा ॥४॥
सत हौ सत्य २ परखाते।
असत २ सब असत मिटाते॥
औ आचार बिचारि बिचरते।
अनाचार अबिचार संहरते ॥५॥
अस बिचार प्रभु करत हमेशा।
दुख यह फिर न बने लव लेशा॥
शील अँग सोहत है कैसे।
दूध बीच घिव रोहत जैसे ॥६॥
शील सार सरसात हमेशा।
सरल २ नित सरल रहेशा॥
दया धारि दल २ से न्यारा।
दर्ब २ सदगुण पद धारा ॥७॥
दया दान गुरुवर हैं देते।
यम से छीन अभय करि लेते॥
धीरज धीर धन्य गुरु आपे।
ठग यम काल नाम सुनि कांपे ॥८॥

असप्रभु महिमा अमित तुम्हारा ।
नर जीवन के काज सवांरा ॥
आप महान सरिस जग माहीं ।
सर्व लोक नजरे नहिं आहीं ॥६॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक तन धारि जो, गुरु पटतर नहिं कोय ।
ईश लोक ब्रह्मादि लो, गुरु सरवर नहिं होय ॥१४॥
ताते गुरुवर देव ही, जीवन केर सहाय ।
जिनके कृपा कटाक्षसे, जीवन्मुक्ति ह्वै जाय ॥१५॥

॥ छन्द ॥

गुरुदेव पारख रूप तारनहार जग से आप हो ।
बीबेक बर बांका परीक्षाकार जग के आप हो ॥
बैराग्य में परवीण नित उपराम सबसे आप हो ।
भक्तिबर में शक्ति ऐसा मुक्त खुद हे आप हो ॥१॥
तजि मान मन अभिमान नित निर्मान हो रहते सदा ।
आमान शोभा राजता शिर मान मद दहते सदा ॥
तजि काम ह्वै आकाम अरु निष्काम हो रहते सदा ।
लगिसार सो भवपारहै तब नाम जो गहते सदा ॥२॥

॥ सोरठा ॥

हौ प्रभु खेवनहार, खानि बानि भव सिंधु से ।
बार बार बलिहार, तव गुण अगम अगाध है ॥३॥
गुरु समरथ परत्यक्ष, मोक्ष जीव के करन मे ।
परख स्वतः स्वच्छ, अति निर्पक्ष आपक्ष हो ॥४॥

॥ दोहा ॥

निदग २ निर्णय सहित, जग से रहत उदास ।
हंस हंस की नित रहनि, गहत परख ऊजास॥१६॥
निर्बिवाद सब बाद से, पद अजाद अजसार ।
सहज पार हौ जग्त से, जड़ चेतन निरवार॥१७॥

॥ चौपाई ॥

यस गुरु महिमा अहै तुम्हारा ।
वाक्य लेखनी कहि न सकारा ॥
सब क अन्त गुण अनन्त आपका ।
सुमिरत मिटै दुख त्रिविध तापका ॥१०॥
श्रुति महेश शेश सब हारे ।
गुरु महिमा कहि नहीं सकारे ॥

ब्रह्मा विष्णु कृष्ण अरु रामा ।
भयो पवित्र गुरु के नामा ॥११॥
औरो रिषि मुनि जे जग माहीं ।
गुरु के कृपा श्रेष्ठ पद पाहीं ॥
यहि ते गुरु महिमा अति भारी ।
कहि न सकत सुरपति त्रिपुरारी ॥१२॥
अस गुरु पारख परख प्रतापा ।
सर्व लोक नहिं पटतर जाका ॥
श्री कबीर पारख पद धामा ।
असल मुक्त अज अमर मुकामा ॥१३॥
सो पद जौन जीव नहिं जाना ।
और ठौर फंसि बहुत दुखाना ॥
तिनके दुख का कौर नहीं है ।
जग्त ब्रह्म कहुँ ठौर नहीं है ॥१४॥
सो दुख मिटै मिलै जब पारख ।
श्री कबीर पद सांच यथरथ ॥
सोई गुरू पारख बिन पाये ।
युगन २ हमहुँ जहंड़ाये ॥१५॥

अकर्म कर्म धर्म दिन गयऊ ।
गुरु पारख बिन नहि थिति पयऊ ॥
पर जब मिले पारखी सदगुरु ।
दीन लखाय सांच औ झूठ फुरु ॥१६॥
अहो धन्य गुरुदेव नरायण ।
मोक्ष काज में खाश परायण ॥
संत शरण को चरण लगायो ।
बिषय नींद से सोवत जगायो ॥१७॥

॥ दोहा ॥

धनि धनि गुरुवर धन्य हो, काज बनायो मोर ।
कोटि कोटि जन्मादि की, दुःख नशायो घोर॥१८॥
जो पद कोई काल नहिं, मिला रहा हे भाय ।
तौन सदगुरू सन्मुखै, परतछ दिये दिखाय॥१९॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के शरण चरण रज सेवत ।
संत शरण मुक्ती पद लेवत ॥
पारख गुरू संत आधारा ।
मिला मुक्ति निर्मल निरधारा ॥१८॥

धन्य धन्य गुरु संत दयाला ।
जन्म मरण मेटत ततकाला ॥
को अस गुरुवर सम उपकारी ।
जगत जाल से लीन उबारी ॥१६॥
मुक्ति कीन पद दीन निराला ।
खानि बानि से बुड़त निकाला ॥
बार२ बिनवों यहि नाते ।
अमृत मुक्ति मिला बल जाके ॥२०॥
शीश धरौं पारख गुरु चरणा ।
जेहि प्रताप नाश्यो जन्मरणा ॥
जिनके कृपा निसंशय भयऊ ।
जन्म २ कर संशय गयऊ ॥२१॥
नशि कलिमल मद निदग अदागा ।
स्वयं स्वतः पारखपद लागा ॥
भयों निहाल पाय पद ऐसा ।
जात अंधतम सुर्य उदैसा ॥२२॥
साहेब धन्य २ है तोहीं ।
लीन बचाय काल से मोहीं ॥

अमर वस्तु दर्शायो अपना ।
जेहि को पाय जगत सब सपना ॥२३॥
जाहिमिले नहिं मिलन कि आशा ।
सकल भोग जग बन्ध बिनाशा ॥
पाय अमर पद भयों सुखारी ।
नाश भयो दुख गयो दुकारी ॥२४॥
काज पूर सब भये हमारे ।
संत गुरू धनि दया तुम्हारे ॥
अकट अबाध्य अचल चंचल से ।
अघट अगर्ज अदल दल २ से ॥२५॥

॥ सोरठा ॥

है उपकार महान, श्री गुरुवर जो आप का ।
संशय सकल नशान, कृपा आप के ज्ञान बल ॥५॥
है अर्जी बस एक, कहौं दोऊ कर जोरि कै ॥
यही निबाहो टेक, दया द्रिष्टि करि दीन पर ॥६॥
धन्य धन्य गुरु तोंहि, कहयो भेद चैतन्य जड़ ।
बेगि उबारो मोंहि, पड़ा शरण तेरी चरण ॥७॥

तब तक तन मन काल, जब तक यह प्रारब्ध है।
तब तक देव सम्हाल, बचा रहूँ तिन फन्द से ॥८॥
सब विधि आप सहाय, रच्छक दाता हो मेरे।
आप बिना असहाय, भटकिर बहु दुःख सह्यों ॥६॥
कहँ तक बर्णू दुःख, खानि बानि बिकराल का।
कबहु न पायों सुःख, तलफिर चहुँदिश फिर्यों॥१०॥
आप छुड़ायो नाथ, महा बिकट बन्धन कठिन।
कीन्हयो मोहिं सनाथ, नमोंर गुरुवर तुम्हें ॥११॥

॥ छन्द ॥

श्री संत गुरुवर धन्यहो कीन्हा सकल दुख दूर है ॥
तुम सम न मेरे अन्य हो दीन्हा परख पद पूर है॥
जितना रहा बेहाल हम तितना कियो नीहाल हो ॥
खानी औबानी साल हर अरु टरगये सब जाल हो॥
तेरे सिवा संसार में मेरे न दिखता नैन तर ॥
हा हाय संकट सब हर्यो मेटेव सकल खौफो खतर॥१
इस हेतु हे गुरु देव दीना नाथ मेरे आप हो ॥
एकी सहारा मात्र निशदिन आपहीका जाप हो॥२

॥ चौपाई ॥

गुरु के दया भया सब कामा ।
जन्म मरण मिट गया सदामा ॥
गुरु सम कौन जग्त मे आहैं ।
शरण गये सब कलुष विदाहैं ॥२६॥
करत द्धक यक रस निज लच्छय ।
मुक्ति धाम दिखलात प्रत्यच्छै ॥
अस अविकार परख पद पावै ।
सो जिव स्वयं मुक्त है जावै ॥२७॥
ताहि निकट जग सन्धि न दर्शै ।
नित्त २ अमृत सुख वर्शै ॥
सरसे शांति २ सुख सब दिन ।
काल कला ब्यापै नहिं यकछिन ॥२८॥
जीवत होसो मुक्ति आप हैं ।
फिर न लेश की दुःख ताप हैं ॥
पारख पद प्रत्यछ है खाशै ।
निज स्वरूप सञ्जय दुख नाशै ॥२६॥
निज स्वरूप पारख गुरु दाया ।
संत शरण मुक्ती पद पाया ॥

मिटिगे खानि बानि की पीरा ।
गुरु के कृपा परखि भय थीरा ॥३०॥
नाश्यो बन्ध भयो निर्बन्धा ।
छुटिगे जन्म २ की धन्धा ॥
भयौ पवित्र स्वच्छ स्वाच्छन्दा ।
नष्ट भयो प्रमदा कर फन्दा ॥३१॥
अब दिन रैन शान्ति में जाता ।
अमर मुक्त निर्भय पद पाता ॥
श्रीगुरु शरण लीन है जब से ।
असह दुःख सब छीन है तब से ॥३२॥
अकट अफट अस पट पहिराये ।
निज पद देखि परम सुख पाये ॥
धन्य २ गुरु कृपा दृष्टि है ।
नाश भया मन सकल सृष्टि है ॥३३॥

* श्री गुरुदेव की वन्दना * भजन १

देव गुरूदेव गुरूदेव गुरूदेव, देव गुरूदेव गुरूदेव गुरूदेव ॥टे०॥ देव देव देव देव देव गुरूदेव, दैव दैव दैव दैव दैव गुरूदैव ॥ दैव गुरूदैव गुरूदैव गुरूदैव देव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव ॥१॥ गुरू गुरू गुरू

देव— गुरू गुरू गुरू देव ॥ देवगुरू देवगुरू
देवगुरू देव, देव गुरूदेव गुरूदेव गुरूदेव ॥२॥
देव गुरू भक्ति मुक्तिकार अपानी, उक्ति युक्ति-
शक्ति गुरू सार अमानी ॥ सेव गुरू सेव गुरू
सेव गुरू सेव, देव गुरूदेव गुरूदेव गुरूदेव ॥३॥
संसार महाधार पार कीजिये गुरू, झूंठा असार
से निकार लीजिये गुरू ॥ खेव गूरू खेव गूरू
खेव गूरू खेव, देव गूरूदेव गूरूदेव गूरूढेव ॥४॥
सन्त शरण आपके दर का भिखार है, सन्तगुरू
आपसे करता पुकार है। लेव गूरूदेव गूरूदेव
गूरूदेव, चरण शरण तरण करके लेव गूरू लेव ॥५॥

॥ छन्द ॥

हे गुरु पावन मुक्ति करावन बंध नशावन वाले
संशय जावन परखि ढहावन सबसे पृथक निराले
जग सिंधु अपारा से हो पारा आपै खेवन वाले
मुक्ती पद भारी जो अविकारी आपै देवन वाले
गुरुगुरुवर मेरे शरण में तेरे पड़ा आय मैं आजा
दोऊ करजोरी अस्तुति मोरीपूर करो मम काजा

जग मध्य हमारे सद्गुरुप्यारे अहो आप शिरताजा।
आपैके दाया यह पदपाया जीवत मुक्ति बिराजा।
धनि२ गुरुपारख जिवको तारक श्रीकबीर गुरुदीना।
सो पद अपनाये द्वन्द नशाये फिर न भौर जगलीना।
हमहूँ मतिहीना अतिहिकुलीना अतिश्यरहामलीना।
सो ख्यालनकीन्हा गुरुमोंहि लीना ऐसो परमप्रबीना।

॥सोरठा॥

धनि धनि गुरुवर तोंहि, मोंहि बचायो जरत से।
तुम समान नहिं कोंहि, होंहि जग्तमें देखिहम॥१२॥
भला कौन अस आहि, अघ छोड़ाय दे मुक्तिपद।
बन्दौ तुम्हे सराहि, धन्य २ पारख गुरू॥१३॥
जग बासना अथाह, और आवर्ण पूर्व की।
गुरुवर देहु निबाह, भिन्न रहूँ सबको परखि॥१४॥
चहे छुटे यह देंह, पड़े अपर्बल दुःख जो।
तबहुँ न टूटे नेंह, चेतन पारख प्रभू का॥१५॥
गुरुवर कृपा तुम्हारि, अहै भरोसा मोंहि अब।
जड़ चेतन निरवारि, पार होंव दुःख देशसे॥१६॥
यह अर्जी सरकार, गर्जी पूरा कीजीये।
चरण भक्ति दरकार, मोंहि न आशा और कुछ॥

सुत बनिता परिवार, और भोग आराम जग ।
जन्मि जन्मि बहु बार, यही भोग भोगत रह्यों ॥
खानि बानि के बीच, पड़ा अनादी से रहा ।
कियों कर्म अति नीच, घायल तेहिमे नित भयों ॥
आज तलक गुरुदेव, भटकि २ दुखिया रह्यों ।
तुम बिन लखा न भेव, कौन यतन नाना बिधी ॥
कहूँ कहाँ तक हाल, सब दुरगति मेरी भई ।
रहा बहुत बेहाल, मुख से बरणत ना बने ॥२१॥
दुर दुर चारो ओर, ऊँच नीच भरमन किया ।
मिटा नहीं दुखघोर, और बल्कि बढ़तै गया॥२२॥
संत शरण दुख पाय, बिकल २ हर छिन रहा ।
मिल्यो गुरू जब आय, सुखी किये पद शांति दे ॥
यहिते बन्दौं शीश, गुरू नरायण के चरण ।
बारंबार नमीश, ईश ब्रह्मसे अधिक लखि ॥२४॥
ईश ब्रह्म निज भर्म, भरम परख पाये भया ।
जीव श्रेष्ठ सोई पर्म, मुक्त स्वयं खुद आप है॥२५॥

॥ दोहा ॥

सो गुरु दियो लखाय मोंहि, मिटा अन्ध तम कूप ।
आप आप दर्शन हुआ, स्वतः अचल थिर भूप ॥

॥ सोरठा ॥

दीन्हयो सन्धि लखाय, गुरू नरायण आप मिलि।
बन्ध मोच परखाय, मोंहि बचायो काल से ॥२६॥
जैस जालिया जाल, रचि २ गल बान्हिन मेरा ॥
पारख वज्रप्रहाल, दै कर बन्धन छय कियो ॥२७॥
पूर किहयो मम काज, आज यही नर देंह मे ॥
पारख तख्त बिराज, साज मुक्तिकी दै सकल॥२८॥
धन्य गुरू कब्बीर, पीर मिटायो जीव की।
दीन अटल पद थीर, धीर बीर राहस्य तब ॥२६॥
सत्य शील बीबेक, दया छमा संतोष युत ॥
भक्ति बिराग धरेत, परख२ सत मग चलन॥३०॥
सकल हंस की चाल, दियो दया के दृष्टि से ॥
हटल फन्द यम जाल, धन्य २ गुरुसंत हो ॥३१॥
जन्म २ बेकाज, तब पद से बंचित रहा ॥
दियो दरिद्रहिं राज, सकल आपदा दुःखहरि ॥३२
दियो बित्त की कोष, और रच्छ की युक्ति सब ॥
करौं यतन से पोष, जग दुखदा सज्ञै टरै ॥३३॥
हरण हरण सब फन्दि, स्वस्वरूप बर सस्त्र से ॥
शरण २ पद बन्दि, गुरूउद्धारक जीव के ॥३४॥

श्री सद्गुरु पद बन्दना पहिला प्रसङ्ग, समाप्त ॥

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

दूसरा प्रसंग प्रारंभः

अनादी काल की अपनी अज्ञानता का हालत वर्णन

॥ छन्द ॥

धनि धन्य देव सदगुरु दुख हर लिये हमारे ॥
इस हेतु पड़ रहे हैं चरणों मे मैं तुम्हारे ॥
हे जन हितार्थ करता तुमही सहाय कारी ॥
सादर बिनय हुँ करता सुनिये अर्ज हमारी ॥
ऐसे जटिल दुरत्या दुख से कौन निकाले ॥
हे जीव दुख हरईया तुमही हमें सम्हाले ॥
हे देव गूरु हमारे तुम सम न कोई मेरे ॥
करि लेव शर्ण मारे दे देव निज बसेरे ॥१॥

धन्य २ हे सदगुरु

देव आपके सामान हमारे इस संसार में कोई नहीं है, धन्य २ गुरुदेव आप अपनी अमृत रूपी

पारख ज्ञान दान देकर हमारा सारा दुःख हर लिये हो, हे दीनानाथ सदगुरु, सर्व दुःख हर, आपको जान कर, मैं हे गुरुदेव आपके चरण कमलों में गिर कर बिनय कर रहा हूँ क्योंकि आप हमारे दुःख तो हरण कर ही लिये हो, परंतु आप समस्त बिस्व जन्तावों के संकट छुड़ाने वाले हो, और खानी बानी से दीन दुखी जीवों के आप हे सदगुरु परम रच्छक या सहायक हो। अहो धन्य २ सदगुरु के उपकार को मैं क्या कहूँ ऐसे महान प्रभु कि मैं अपनी तुच्छ नीच बुद्धी से क्या बर्णन करूँ, इसलिये हे साहिब मैं हर हमेशा हर घड़ी नम्रता दीनता के साथ सादर प्रेम पूर्वक बार२ आपका बिन्य बिन्ती करता हूँ। क्यों की हे सदगुरु आप मुक्त महापुरुष का आगे और क्या कर ही सकता हूँ, या क्या कर पाऊँगा सिवा बिनय के अलावा यों तो संसार सागर से आप पार सर्ब जीवों को बूड़ते से पार करने वाले हो, तो सोचने की बात है, भला जो सबको पार

करने वाला है, उन श्रेष्ट सद्गुरु को हम सब बूड़ते हुए अधम आपकारी जीव क्या कर पायेंगे, या कौन सा उपकार उनका हम कर सक्ते हैं सिवा एक बन्दना प्रार्थनाके बाद, और जो हम यहसोचें कि सद्गुरु का सेवा भक्ती आदि करता हूँ, उसी से हमारा उपकार सद्गुरु के प्रति हो रहा है। तहाँ हे नीच मनवशी जीव तू ध्यान से सुन, और विचार करके देखु की अनादि काल से तू इस खानी बानी में दुख ही दुख तो भोगते आया है, तहाँ अंडज पिंडज और उष्मज आदि चार-खानी और चौरासी लाख योनी में कौन-कौन सा दण्ड तू नहीं सहा है। हे नालायक जीव उसे तु अच्छी तरीका से याद तो कर औ प्रत्यक्ष देख तो ले। हे नीच पामर मतिमन्द जीव तू उस घड़ी के समस्यों और हवालों को तो कुछ होस हवास कर—जब की नैनो से रक्त का आंसू बहता था, तो वह क्या है, अरे वह चौखानि के गर्भ योनियो का संकट ही है। हे जीव तनी जरा

उस समय का भी ख्याल तो रक्खा कर। कि जो अनादि काल का अघटित अनन्त दुःख था, उस असह दुःख को आज सदगूरुदेव निवारण कर दिये हैं, अब तो तुम्हें आगे भी अनादी काल के लिये स्वतन्त्र आजाद मुक्त कर दिये हैं, तो भला जो पाछे वाला अनादि के दुःख नाश कर, और फिर आगे अनन्त अनादी काल के लिये स्वतः अमर मुक्त सुख प्राप्त कर दिये, तो एसे अखण्ड अमरदानी को हे जीव तू क्या चुकावैगा, अथवा कौन सेवा करके प्रबल अथाह अनन्त श्री सदगूरू के पर्म उपकार का बदला क्या पुरावेगा, सोच तो सही, जो एक ही जन्मके सेवा से सर्व जन्मादि का दुख छुड़ा दिया, और सर्व जन्मो के लिये सुखी कर दिये, तो उनका बदला कैसे पुरा सकते हैं। अरे भाई यहां तो एक ही जनम के सेवा भक्ती से अनन्त काल के लिये शान्ति सुख हो रहा है। तो सोचो हे जीव एक जन्म के सेवा से तुम कैसे उपकार पुरा

सक्ते हो, हे निर्बुद्धि जीव देख तो भला की आज यहां एक ही जनम के सेवासे तुम्हें वह मुक्ती मिल गई, की फिर इस संसार का दर्शन न होगा। और विशेश हम क्या कहें, और तुम्हें अब इसी जन्म के बाद फिर सर्व दुःखों से छुटकार भी हो गया है। तो सेवा आदि से भी तुम मुक्त हुए, फिर तो तुम सदगूरू के प्रति कैसे अपना उपकार मनाना मनाते हो, अरे बिचार से देखो तो एक नहीं, जो हजारों लाखों जनम तक देह धर २ के सेवा करना होता या करना पड़ता, तब्बो सदगुरु में तुम्हारा उपकार होना साबित नहीं होता है, परंतु यहां तो तुम्हें मुक्त होकर दूसरा जनम भी तो नहीं लेना है, ताते दोऊ कर जोर के हरदम सदगूरू से विनय या प्रार्थना करना ही तुम्हारा धर्म है, क्यों की इस महा-भयानक संसार चक्र से कोई और पार नहीं कर सकता, मात्र एक सदगूरू के, यानी पारखी सन्त गूरू के अलावा ऐसा संसार में कोई नहीं

है जो इस जीव को उबार लेवै। इस लिये हे सदगूरू आपको बारम्बार धन्यवाद और बिनती है, सर्व जीवों के सर्व दुःख हरइया हे सदगूरु आप ही ने दया करके हम एक पातकी को भी बचा लिये हो, धन्य २ सदगूरू आपको, और आप समान सन्तों को, और हे साहिब अब मैं ता उम्रतक आपका गुणानुवाद गाता रहूँगा कभी भी नहीं भूलूँगा। हम सब अज्ञ जीवों के लिये हे सदगुरू आप ही सहायकारी हैं। हे साहेब आप हम सबों के लिये कैसे हो, कि जैसे कोई राजा हो और उसके तेज प्रताप से, उसके अनुचरों को कोई भी प्रजा रे तक नहीं कर सकता है, और प्रजा तो दूर रहैं वो तो राजा औ अनुचरों के अज्ञा में ही चलते हैं। परंतु जो राजा के बिरुद्ध चलते हैं, और अनुचरों को नष्ट करना चाहते हैं वे सब भी, जब अनुचर लोग राजा के अन्कूल चलते हैं तब उस राजा के प्रताप से, उन अनुचरों के दुशमन लोग भी उन

अनुचरों से सदा डर कर भयभीत रहा करते हैं। यानी उस राजा के तेज प्रताप से साह रूप प्रजा तो अनुचरों के अज्ञा में रहते हैं, परंतु जो लुटेरू चोर बदमाश डाकू आदि, जो कि अनुचरों ही के प्राण घातक थे। परंतु जब राजा की द्रिष्टी हरदम अनुचरों पर रहता है तब वो चोर डाकू आदि भी उन अनुचरों से हार कर दब जाते हैं, यानी कोई प्रकार का कष्ट नहीं दे सक्ते हैं। बस हे सदगुरू आप तो उन राजावों से भी बढ़ कर राजा हैं। क्योंकि वह राजा तो प्रजावों को यकै जन्म तक रच्छा कर सक्ता आगे उसका पहुँच वा जोर नहीं है, परंतु आप तो जनम २ के लिये रच्छा कर दिये हो, ताते आप सर्व राजावों से महांन श्रेष्ट बलशाली और तेज प्रतापीराजा हो, हे श्रेष्ट राजारूप सदगुरू देव जब से आपकी कृपा द्रिष्टी हम अनुचरों पर हो गया है, तब से हाथ पाव आंख कान नाक आदिक परजा रूप होकर सहायता ही दे रहे हैं, यानी

अनादी काल से जो हमको दुखी किये रहें सो भी हे सद्गुरू आपके दया से वो सब अब प्रजा रूप बन कर सेवकाईकर रहें हैं, इन सबका तो यह हाल है—और जो पर्बल शत्रु काम क्रोध लोभ मोह हङ्कार आदि जो चोर डाकुओं से भी बढ़ कर दुख देने वाले हैं, यानी जो अनादी काल से हमारा प्राण हतन रूपी कष्ट दिया और आज ब्रतमान वाले शरीर में भी नाना दराड ही दराड देते रहें, या अकसमाद हमको सताते रहें, वो सब भी हे सदगुरू देव जब से आप दया की नजर मुझ दीन पर कर दिये हो, तब से वो सब भी दब गये हैं, यानी हे सद्गुरू साहिब अब आपके तेज प्रताप से, सकल काम क्रोधादि शत्रु नष्ट हो गये हैं, उन सबका बिलकुल जड़ मूल से खिस्सा खत्म हो गया, और सफाई हो रही है। धन्य २ आपके दया का प्रताप है। हे मनबशी जीव तू अब शीघ्र गुरू ज्ञान के तर्फ झुक जा तो तुम्हारे

सर्व दुशमन निर्मूल हो जायेंगे। हे भाई है तो बात यह सही २ ही की, सदगुरू शरण हो जाने पर, और तन मन वचन जो जान से गुरू न्याई बन जानेपर भला मजाल क्या है कि कोई दुरगुण शत्रु रे तक कर सकैं, यानी सर्व श्रेष्ट रूपी सद्-गुरू राजा के तेज प्रताप से ऐसा नहीं है कि कोई कामादि दुशमन आँख उठा देवैं, परंतु सदगुरू विमुखियों को तो संसार संकट भोगते २ ही नहीं छुट्टी मिलता है, यों तो इसी प्रकार पारख गुरू को भूल कर मैं भी अनादि से बहुत दुखी रहा जो की कहते नहीं बनता है। एवं सदगुरू पारख को न जानकर जैसा २ कष्ट वा दुख भोगा गया है, उसका तो वर्णन हो सक्ता नही। परंतु उसी दुःख का थोड़ा नमूना मात्र कहता हूँ। जैसा की श्री सदगुरू से दूर होकर नाना दुसह दुःख को पाया हूँ—

उसी का वर्णन आगे इसमें है।

॥ दोहा ॥

श्री गुरु पारख के चरण, बारंबार मनाय।
अनन्तकालकी हालनिज, कहौं कछुक दर्शाय॥२१॥
गुरु पारख निज रूप बिन, जस २ रह्यों बेहाल।
तस २ सब वर्णन करूँ, सुनो चितदे हाल ॥२२॥
अहै अनादी जग्त यह, पाँच तत्व जड़ देश।
उत्पति परलय से रहित, सदा सर्बदा येश ॥२३॥
जड़ से चेतन भिन्न है, अमर अनन्त अपार।
आप आपसो श्रेष्ट है, अचल स्वतः निरधार॥२४॥
जड़ गुण लक्षण से पृथक, ज्ञान रूप चैतन्य।
दुइके बादे तीसरा, नहीं पदारथ अन्य ॥२५॥
पांच तत्व जड़ विषय है, सोइ अनादि सम्बन्ध।
तेहिमे चेतन रमि रहा, रचि २ स्वयं सो फन्द ॥
यही अनादी काल से, जड़ चेतनहिं नचाय।
मुक्त आप होते हुए, निजै कल्पना खाय ॥२७॥
जड़ चेतन के बीच में, पड़ा ग्रंथि दुइ केर।
ऊँच नीच भरमाय के, गर्भ बास फिर फेर ॥२८॥
मनो बासना काल यह, जीव दुखी करि देय।
जीव दुखी तेहि मे अरुझि, जनमत मरत सदेय ॥

यही फेर के घेर में, हम पड़े थे भाय।
अमर मुक्त होते हुए निजहि कल्पना खाय॥३०॥
सो दुख का कुछ थाह नहिं, वे अथाह वह जान।
महा घोर नहिं थोर दुख, देत न बने प्रमान॥३१॥

॥ सोरठा ॥

घुमरि घुमरि धरि देंह, चारि खानि के बीच मे।
तलफि तलफि बिकलेंह, हर छिन जरता ही रहा।
सुनौ कहौं दास्तान, जस हैवान युग युग रहा।
गुनौ हृदय धरि ध्यान, करौ जासु हित होय तब।
हम अनादि से पीर, पाय कठिन दुखलित हुए।
शोक मोह की नीर, जोर अधिक तेहिं मे बह्यो॥

॥ छन्द ॥

धारा प्रबल अथाह जो चौखानि का झकझोर है
तिन मे बहा धरि देंह को पाया नहीं दुख थोर है
कृमि कीट आदिक में सदा अरु पंछियोंमें जाय कर
पशु बैल गदहा ऊँट में रोया अमित दुख पाय कर
मानुष के ऊँच वो नीचमें पा पाय तन दुख भोगिया
शुभकर्म कीन न स्वपनमें औरों बलिक दुर्गुण किया

फिर वो नर तन छोड़िके जाकर गिरा त्रयखानिमे
हा हाय दुख दारुण दुसह क्षण २ रहे बिलखानिमे
है प्रवश मारा औ कूटा लात से कुचला गया
दागा बझाया और छेका आगि मे झुलसा गया
कहुँ-कहुं तो निकियाया गया हड्डी वो चाम सहीत से
कहुँ शिर जबा कहु तन खवा कहु मारि जान शरीर से

॥ चौपाई ॥

यहि विधि तीन खानिके बीचा ।
पायों असह कष्ट में नीचा ॥
सो दुख कहत बनै नहिं भाई ।
रोय-रोय तहं दिवस बिताई ॥३४॥
कीट पतंग आदि में आकर ।
कठिन २ दुख भुगत्यो जाकर ॥
केचुवा सर्प बिच्छि तन धरि २ ।
क्षण २ जन्मि क्षणै क्षण मरि २ ॥३५॥
वह, दुख अमित अनन्त प्रकारा ।
सहि न जाय अति बिकट अपारा ॥
काह कहौं दुख जाय न कहते ।
भोग्यों बहुत २ दुख सहते ॥३६॥

जनिम २ मरि २ दुख धारा ।
अहो हाय नहि कहत बनारा ॥
कबों २ कृमि कीट के माहीं ।
सहि दुख फिर पंछी तन पाहीं ॥३७॥
तहाँ लोग मोहि कीन शिकारा ।
या फंसाय के करैं अहारा ॥
बहुत जनम पंछिन मे धरि कैं ।
पायों दुख तहवाँ हिय भरि कैं ॥३८॥
जनमत मरत-मरत औ जनमत ।
यहि मिसाल दुख ही में रमनत ॥
कइउ बार पशुवन के अन्दर ।
सहि अथाह दुख तहाँ अनन्तर ॥३९॥
धूप छाँह नहि शीत बचावा ।
भूख प्यास को दुख अति पावा ॥
रात दिना की जहं नहिं गणना ।
ऊपर मार-पीट तहं पड़ना ॥४०॥
रक्त आंस रोवत दिन गया ।
दुख संताप कठिन शिर भया ॥

परवश सहयों दुखै दुख निशदिन ।
सुख न मिला वहवां पर यक छिन ॥४१॥
मुर्झि २ मन ही मन रोयों ।
पलक मात्र सुख से नहिं सोयों ॥
खोयों जनम मनै मन बस में ।
कहि न जाय यस परयों अवस में ॥४२॥
केतनो बार मनुष्य तन पायों ।
पशु समान भी वहूँ बितायों ॥
सब संकट सहि तलफि २ के ।
रोय २ अति बिलखि २ के ॥४३॥

॥ दोहा ॥

बहुत काल ऐसे गयो, चारि खानि दुख भोग ।
पर यस समया ना मिला, संस्कार शुभ योग ॥३२॥
अन्डज उष्मज पशुन में, भोगि कष्ट बहु बार ।
आय गया संयोग अस, मिला मनुज अवतार ॥३३॥
उत्तम कुल धन धाम खुब, सुन्दर तन बर नारि ।
भोगन लाग्यों भोग सुख, अधर्म धर्म बिसारि ॥३४॥

॥ चौपाई ॥

पाय बडप्पा जग के माहीं ।
अधर्म धर्म कर्म सुधि नाहीं ॥
बार २ अप कर्म कमायों ।
शुभ सुसंग सपन्यो नहि भायो ॥४४॥
संत-संग में भूलि न बैठयों ।
नित अभिमान मदै मन ऐठयों ॥
तन मे भरे गुमान सदाई ।
देखत संत न शीश नवाई ॥४५॥
काम क्रोध हंकार करारा ।
भरे भरे सब जन्म गुजारा ॥
निज प्ररब्ध से छुटयो शरीरा ।
जन्मृत सहयों दुसह दुख पीरा ॥४६॥
कर्म हीन सुद्रन तन पाये ।
तहौं धर्म सत्त संगन भाये ॥
पाप पुन्य कुछ ख्याल न कीन्हा ।
तजिशुभ पुन्य अशुभ चितदीन्हा ॥४७॥
पेट पालि नित तनैं सवांरा ।
अस हम पतित मलीन गवांरा ॥

लज्जा शर्म छोड़ि जग केरा।
करत पाप नित घुम्यों अनेरा ॥४८॥
यहि विधि जनम बीत तन त्यागा।
पुनि २ जरयों गर्भ के आगा।
कबों बयस क्षत्री तन पाया।
अनाचार अविचार कमाया ॥४९॥

॥ छन्द ॥

पापीमें मैं सरदार हूँ ॥टेक॥

हैं अनादी काल से पापी जगत के बीच में।
उन पापियों से कइ गुना पापी पड़ा मैं कीच में॥
है पापकी गणना नहीं इतना किया अपकार हूँ।
कहते न बनता मुख्ख से पापी में मैं सरदार हूँ॥१॥
आजकलमें तन नहीं हो पर न इसका ख्याल है।
काम क्रोधमे पड़ि सदा निश दिन उन्हीं की चाल है॥
आजकल जग में बहुत ही पापियों का शोर है॥
तिन पापियोंसे भी अधिक मैं पाप कीन्हा जोर है॥२
हूँ कुटिल कामी छली नित पाप में तदकार हूँ।
क्षण भर न दुर्गुण से पृथक पापीमें मैं सरदार हूँ॥

तन मन के मद में मस्त हो हङ्कार में मैं चूर था ।
झगड़ा लड़ाई करन में नम्बरमें मैं मशहूर था ॥३॥
धीरज न मनमें रञ्च है परपञ्च में सरदार हूँ ।
सदगुन सुमति समता नहीं इस हेतुसे लाचार हूँ ॥
हिंसा कपट निन्दाकरन समता रहनि नहिं धार हूँ ॥
फल गुरुके सङ्गतसे बिमुख पापीमें मैं सरदार हूँ ॥४॥
बनता बड़ा संसार से पर पाप नित धारण करूँ ।
सच्चा बड़ा बनता हूँ पर मिथ्या हि उच्चारण करूँ ।
छल बल अमल मनमें बसै बास्तिबिकमें एकलबारहूँ ॥
सार तजि आसार गहि पापीमें मैं सरदार हूँ ॥५॥
कुछ थाह मेरे है नहीं कितना कमाया अघकर्म ।
दिन रैन इसमें बीतता स्वपने किया नहिं शुभधर्म॥
चोरी जुवारीमें निपुण करि २ किया तन ख्वार हूँ ।
रञ्चक धर्म मनमें नही पापी में मैं सरदार हूँ ॥६॥
सूकर वो स्वान समान सेती कठिन गति मेरी भई ।
बिलला रहा चवरखानि में ये दुरगती मेरी भई ॥
नर्क का कीड़ा बना सहता अनन्तो भार हूँ ।
दुखका मेरे कुछ थाह नहिं पापीमें मैं सरदार हूँ ॥७॥

बेभिचार अत्याचार करि आपार पाया कष्ट को।
पापकरि सहि तापको जीवन बिताया नष्ट मो॥
हिंसा वो निन्दा कटु बचन सबपर मैं करता वार हूँ।
कोइ नीच मेरे सम नही पापीमें मैं सरदार हूँ॥८॥
काम क्रोध हङ्कार में पड़ करके मैं जरता रहा।
ऐसै अनादी काल से त्रयताप में मरता रहा॥
सतधर्म भक्ती दान नहि ना किया पर उपकार हूँ।
गुरुमातु पितु सेवा नही पापीमें मैं सरदार हूँ॥९॥
कोटानु कोटिउ जन्म से प्राकृत के सन्मेल में।
घोर दुख पाया सदा झूठे बिन्स्वर खेल में॥
निज अमर पद भूलकर झूठै किया स्वइकार हूँ।
झूंठ गहि झूंठे हुआ पापीमें मैं सरदार हूँ॥१०॥
मम रूप सच्चा सार था पर भूल बश सोया हुआ।
चव तत्वही के म्यानमें निज मूल सब खोया हुआ॥
यद्यपि पड़ा जड़ग्रंथि में तद्यपि मैं चेतन सार हूँ।
सदगुरु लखाये भेव निजको जानि तनसे न्यारहूँ॥
है धन्यता गुरु संतकी दुरुगुण जो सब परखाय हैं।
जिसमे अनादिसे बन्ध था सो एक एक लखायहैं॥

उन गुरूवर के दया से जानि सबसे किनार हूँ।
यकदम हृदयमें ठान ली अब पापसे इनकार हूँ॥
छार सब दुरुगुण किये गुरुने दिया गुण-सार है।
तिन बोध दाता से बिनय मेरी हजारो बार है॥
उन सम न कोइ त्रयलोकमें मेरा सहायक औरहै।
युगन युगकी द्वन्द दलि दीन्हें अचल पद ठौर हैं॥

॥ चौईपा ॥

कबो पंडित विद्वान कहायों।
जग्त बीच धनवान रहायों॥
कब्बो पाय राज गज बाजा।
धन संपत्ति सुख विपुल समाजा॥४६॥
बहुत भांत्ति सुख भोग्यों तहवां।
छत्रपती है २ कर जहवां॥
सब सुख भोगि छोड़ि सब साजा।
गर्भ बीच पुनि आय बिराजा॥५०॥
यहि मिसाल युग युगन २ से।
सह्यों दुःख भुल भुलन २ से॥
चारि बरण तन धरि २ जन्मा।
वही बासना करि २ मनमा॥५१॥

यही भांति दुख अगम अपारा ।
कहि न जाय कुछ वार न पारा ॥
चारि खानिमे धरि २ देंहा ।
दुख-दुख पाय, न सुख सपनेहा ॥५२॥
सब सुख भोगि मनुजमें आयों ।
दुख छूटन बहु युक्ति लगायों ॥
जब दुख पड़ा तो अति अकुलाना ।
देवि देव बहु मानि भुलाना ॥५३॥

॥ छन्द ॥

भैरव भवानी भूत काली देव देहड़ा मान कर।
कोटिन तरह पूजन किया दुखका हरईया जानकर॥

संत शरण यक पातकी को स्वातकी बुद्धी दिये।
परम पद पारख अचल दे चित्तकी शुद्धी किये॥
कर जोरिके मेरी बिनय-गुरु संत हे सुन लीजीये।
हंसकी रहनी बना अपनी शरणमें कीजीये ॥१४॥

चउरी वो थाने थे दिवाने मन भुलाने हो रहे।
कहुँ मरी, मस्सान औ शैतान है कहते रहें॥

नट्टू बीर को मान कर कहते कि यहं बैताल है।
कहुँ जिन्द चुड़ैल शीतला को मानि२ बेहाल है॥१॥
ऐसे भुलईया भूल में पड़ करके हम माते रहे।
कोई तरह दुख ना गया तब मन मे पछताते रहे॥
मनमे बहुत पछताय कर तीरथ बरत करने लगे।
जिससे न हमको होय दुख चौबिस व्रत रहने लगे॥
तैंतीस कोटिन देवता अरसठ वो तीरथ मानकर।
चारो तरफ भ्रमने लगा फिकिरा हटा जी जान कर॥२

॥ चौपाई ॥

तीरथ वर्त करत दिन गया।
जीव काज रंचक नहि भया॥
निज कल्यान हेत बहुकर्मा।
दान पुन्य कीन्ह्यो सब धर्मा॥५४॥
जप तप बरत करत बहु नाना।
यहि अकाज मे दिनै सिराना॥
नाना भूल बस्यो हिय माहीं,
दौरि २ भटक्यों बहु ठांही॥५५॥

॥ सोरठा ॥

बारह वर्ष कलाम, रह्यों ब्रत इतवार का।
पूजा पाठ तमाम, भाँति२बहु विधि कियों ॥३८॥
वेद पुराण कुराण, सुनेउ कि जाणै कष्ट सब।
रंच न दुःखटराण,हारयों करनी करि सकल॥३६॥
बहुत बहुत पट कर्म, किया कि जाणै दुःखमम।
कुफल भया परिश्रम, पर न गया त्रय ताप वह ॥४०॥

॥ दोहा ॥

यहि प्रकार बहु काल तक, करत, भयों हयरान।
पर न मिला वह शांति पद, नहि हिय तपनि बुझान॥
यहो करत दुख ना गया, भया बहुत मन सोच।
अहो कहां जाऊँ चला, जहांन दुख, मन रोच ॥३६॥
मनै २ सोचत रह्यों, खोजत थे तदबीर।
कौन भांति अब क्या करूँ,जाय असह दुखपीर॥३७॥

॥ चौपाई ॥

लाग्यों करन सोच मन ही मन ।
हृदय दुखी छिन ही छिन ही छन ॥
हृदय चिंतवन भयो अपारा ।
तेहि समया यक युक्ति बिचारा ॥५६॥

मंत्र-यंत्र तव सुमिरन लागे।
यही लगन मे अतिशय पागे॥
नाना मंत्र तंत्र अरु नाना।
जपत २ सुधि सबै भुलाना॥५७॥
मन्त्र यंत्र औ तंत्र अरिद्धी।
बहु प्रकार से कीन्हउ सिद्धी॥
जेहि २ कर जग नाम सुनेवा।
भांति २ पूजेंउ बहु देवा॥५८॥
नाना कर्म धर्म अवराधे।
योग युक्ति सब साधन साधे॥
भई सोच उर अन्दर भारी।
खान पान की सुधी बिसारी॥५९॥
अन्न छोड़ि फल फूल अहारा।
तन सुखाय जीरण करि डारा॥
कबो जलहार कबो फलहारा।
कबो २ यकदम निरहारा॥६०॥
कोइ २ समय निरा जल रहिकै।
भरम २ मे भरमयों अतिकै॥

घर बस्ती तजि निज कुलग्रामा ।
जाय जँगलमें कीन मुकामा ॥६१॥
जप तप यज्ञ करन तहँ लागे ।
सब तजि राम भजनमें पागे ॥
खाक भभूत लगायों तनमें ।
होश न जोश जमायों मनमें ॥६२॥
यहि विधि सकल भांति सब करि २ ।
पञ्च अग्नि ताप्यों तहं जरि २ ॥
कबों जल शयन जलै बिच रहिकै ।
राति बिराति अमित दुख सहिकै ॥
नख शिख जटा बढ़ायों केशा ।
भांति २ बहु सहयों कलेशा ॥६३॥
जोग ध्यान ब्रत विविधि प्रकारा ।
कीन तपस्या घोर अपारा ॥
कठिन २ दुख सहि २ तन पर ।
सो दुख तनिक न लायों मन पर ॥६४॥
जो २ सुन्यों औ जान्यों भाई ।
तौन २ सब कियों उपाई ॥

यतन कोई बाकी नहिं राखा ।
जहं तक वेद सास्त्र सब भाखा ॥६५॥
वह सब किये जो कोइ समझावा ।
पर न शांति सपने में पावा ॥
यह सब करत २ थकि गयऊ ।
पारख बिना शांति नहिं भयऊ ॥६६॥
ना तो मिले पारखी प्रभु जी ।
ना तो तपन बुझानी जियकी ॥
यहि ते निज स्वरूप नहि पायन ।
खानि बानि भ्रमि धोखा खायन ॥६७॥
अगम अगोचर कहि २ हारा ।
जग्त ब्रह्म दुइ कीन पुकारा ॥
सकल भांति करतब करि देखा ।
ईश ब्रह्म बनि गयों विशेशा ॥६८॥
जग्त जाल तजि ब्रह्म समाना ।
संयम नियम विविधि विधिठाना ॥
ब्रह्म चीन्हि ब्रह्मै बनि गया ।
पारख बिना मुक्ति नहि भया ॥६९॥

॥ सोरठा ॥

भटक्यों जन्म अनेक, जग में नाना भेष धरि।
जगत ब्रह्म तक देख, सकल भांति करतव्य करि॥
बिना परख परकाश, और पारखो संत के।
नष्ट भया नहि भाश, खानि बानि द्वे द्वन्द्की ॥४२॥
अतिशय रहा बेहाल, युगन २ जग सिंधु में।
पारख गुरू दयाल, बिन न भये भव पार हम ॥४३॥
दर २ फिरा अनेर, चारि खानि के बीच में।
जगत ब्रह्म के घेरे, बेर २ जाजा परा ॥४४॥

॥ चौपाई ॥

छुटा न दुविधा मिला न पारख ।
परख गुरू बिनु भयों अकारथ ॥
पारख पाय बिना भर माया ।
खानि बानि के बीच समाया ॥७०॥
केतनो बार ब्रह्म बन २ कर ।
ईश आदि बहु नाम को गन कर ॥
केतनो बार योग तप जापा ।
तीरथ आदि करत जग नापा ॥७१॥

कई बार नागानिर्बानी ।
अंग भभूत सह्यो हयरानी ॥
कइ बर नखशिख जटा रखाया ।
जगा जगा जगमें भरमाया ॥७२॥
कई बार रिषि मुनि तन धारा ।
करि तप बहुत बेर तन जारा ॥
सबही करत बार कइ जग में ।
भरमि २ भरम्यो यहि मग में ॥७३॥
कौन उपाय न बाकी राखा ।
जहं तक बड़े २ सब भाषा ॥
सब कुछ किया न निज को जाना ।
पारख गुरु बिन फिरा भुलाना ॥७४॥
जग्त मध्य जो कुछ सुनि पाया ।
वहि २ करन मे जन्म बिताया ॥
पर बिनु पारख गुरु के पाये ।
कोई जगह न शांति रहाये ॥७५॥
केतनो कल्प बीत गै प्यारे ।
पारख बिन नहि मुक्ति मिलारे ॥

पर ई जन्म मिला जब आके।
पूरब संस्कार कुछ जागे ॥७६॥
मिले नरायंण सदगुरु प्यारे।
जन्म मरण छय कीन हमारे ॥
साहेब धन्य तुम्हे बलिहारी।
कालजाल से लीन उबारी ॥७७॥
साहिब मिले लखाये पारख।
सांच २ पद दीन यथार्थ ॥
सदगुण शैन इशारा करके।
दुरगुण छार भया सब जरके ॥७८॥
तब से शांति हृदंय में आया।
काल टालि जग जाल नशाया ॥
तब से मिला अटल पद पूरा।
फेंकि बहाय दियों सब कूरा ॥७९॥
नाशी भूल शूल सब भागा।
निज स्वरूप पारख में जागा ॥
पर्दा फटा हटा अज्ञाना।
सत्य भेद जड़ चेतन जाना ॥८०॥

आन जान छुटि गया परख से ।
अमर सत्य पद लिया हरख से ॥
सदगुरु कृपा सुखी हम भया ।
जन्ममरण संशय सब गया ॥८१॥

❀ श्री सदगुरु की दया से ❀

दूसरा प्रसंग समाप्त शुभम्

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

तीसरा प्रसंग प्रारंभः

मन की रंग

हरी गीत छन्द

सदगुरु मिले सुखिया किये ॥टेक॥

(१)

काम क्रोध हंकार मे मैं जल रहा दिन रैन था
लोभ मोह मे बास कर पलभर न पाता चैन था
ये सब कठिन दुशमन मेरे इंन ही से हम नाता किये
नाता क फल दुखही मिला सदगुरुमिले सुखिया किये

(२)

गंध शर्पंश रूप रस मदिरा के सम जहरील है
मैं बना पागल के सम जा जा उसी में मील है
मदिरा नशा से जोर अति मैं मुर्ख नित जाकर पिये
वह ही नशा में चूर था सदगुरु मिले सुखिया किये

(३)

ऐसे जहर को पान कर मैं नित जलाता जान था
क्या कहूँ निज भूल को विष में सदा बे भान था
कैसा निपट गवांर मैं अमृत को तजि विष को पिये
बस भूल सहता शूल था सदगुरु मिले सुखिया किये

(४)

माता मिले पिता मिले भाई भतीजे यार हैं
सासू ससुर सारा वो सरहज अरु मनोहर नार है
ये सबमिले निज स्वार्थ हित हम जीवको दुखियाकिये
नित दुखउठाया इनमेंमिलि सदगुरु मिलेसुखियाकिये

(५)

नाता गोता कुल कुटुम्बी और जो हित मित्र हैं
अपने ही अपने गर्ज बस करत वो हमसे प्रेम हैं
चलता न देखैं गर्ज जब तब मुह छिपा हमसे लिये
फिर बात तक पूछैं नहीं सदगुरु मिले सुखिया किये

(६)

सब लोग की यह रीत है करते गर्ज बस प्रीत है
जब गर्ज में बट्टा लगा क्षण में सभी विपरीत है
हाय ऐसे स्वार्थी से हम भी सुख समझा हिये
पर वे तो सब दुखही दिये सदगुरु मिले सुखियाकिये

(७)

गुरु साधु के सतसङ्ग में बैठे कहूँ गर देख लें
तो कुल कुटुम्बी क्रोध करि सब मारने को घेरलें
ताना सुनाते रात दिन कहते हैं चल जाता न ये
वे सब हमें झकझोरते सदगुरु मिले सुखिया किये

(८)

सहि२ के सबकी कटु बचन हमदिन बितायारोयकर
सब कुछ सहा परबस रहा उनही के बसमें होय कर
सुखसे नहीं दाना किये पानी नहीं सुख से पिये
हा हाय संकट सब सहा सदगुरुमिले सुखिया किये

(६)

उन सबों के संग में हम तंग तो बहुतै रहा
सुख स्वपन में पाया न दुखमें नित्य ही कुहुँते रहा
जो कुछ हुआ अच्छा हुआ जो कुछकिये वे ही किये
अब क्या बहुत वर्णन करूँ सदगुरु मिले सुखियाकिये

(१०)

रो रोके दिन कटता रहा पर आश ये दिल में रहा
बन्धन छुटै ये कब मेरा गुरुदेव से मिलबे रहा
वह आज मौका पायके खोऊँ मैं क्यों सोचो हिये
युग युग कि आशा मिट रही सद्गुरु मिले सुखियकिये

(११)

हे जीव प्यारे हो सजग आया है औसर मुक्ति का
जो आज गुरुसे हो बिमुख फिरके मिले यसयुक्तिका
है धन्य तेरा भाग्य जो पारख प्रभू दर्शन दिये
तूं ले शरण २ सदगुरु मिले सुखिया किये

(१२)

अब फेर मन संसार से यक चित्त से तैयार हो
है मुक्ति का मौका अभी क्यों कर पड़े बेकार हो
जब आज अमृत मिल रहा तब बिष काहेको पिये
अबतकमिला ना यस समय सदगुरुमिले सुखियाकिये

(१३)

झूंठा है नाता जग्त का मिथ्या सकल संसार है
तख्त मसनद झूंठ सब झूंठा ये भोग बिहार है
नारी पियारी पुत्र धन गज राज बाज वो स्वपन है
सब एक पल में छुटते कोई यहाँ नहिं अप्न है

(१४)

माल मुलकत ऊँच वहदा पद अमीरी ठाट है
कोठी भरोठी औ जगीरी पल मे बारा बांट है
आज कल में एक दिन जब कूँच कर जाना हमें
तब मुक्त औसर खोय कर क्या लाभ है पाना हमें

(१५)

सर्वस्स जग के भोग सुख न चाहते छुटि जांयगे
राजा अमीर गरीब नर कोई रहन नहिं पायंगे
इस नाटयशाला जगतमें यक दो मिनटका खेल है
आयु खतम होते पतन दो एक दिन का मेल है

(१६)

हे मित्र मन यह देखते ही देखते दिन जायगा
जिस लाल फल मे भूलता वह फल न खाने पायगा
फल होय जायेगा बिफल यह जिन्दगी चल जायगी
मुक्त होने का दिवस हरगिज न ऐसी आयगी

(१७)

खाना है फल तब खा अमरफल मुक्तभो हो जाय तूँ
इस बिषैले फल में पड़ि क्यों कर रहा बौआय तूँ
धिक्क लानत है थुड़ी तेरे अकिल पर आगि है
अमृत ब्यंजन त्याग कर खाता जहर को मागि है

(१८)

बस आज से तूं कर तिलांजू इस जहर संसार से
आऊँ नखाऊँ बिष कभी ना कह दिया त्रय बार से
गुरुवर नरायण के दया छूटा हूँ मन के फेर से
संत शरण मुक्ती पथ लिया छूटा परखि यम जेरसे

इस धुर्त ठग मन की नाना तरह का चलाकी
और ठगाई को श्री सदगुरु के कृपा से
मालुम होने का हालत, फिर तिस
मन की कहा ना मान के निज
रूप में स्वतः शांति
होने का हाल
वर्णन

॥ साखी-बीजक ॥

ई मन चंचल ई मन चोर, ई मन शुद्ध ठगहार
मन मन करते सुर नर मुनि,जहड़े मनके लत्त दुवार
बाजी गर का बांदरा, ऐसा जिव मन के साथ
नाना नाच नचाय के, ले राखे अपने हाथ
मन: सायर मनसा लहरि, बूड़े बहुत अचेत
कहहिं कबीर ते बाचि हैं, जाके हृदय बिबेक

॥ छन्द हरी गीत ॥

हे मन बड़ा तू है गजब ॥टेक॥

(१)

है अटा पट चाल तेरी अब खटा पट लग रहा
नाना तरह बाचाल कर बन मित्र हमको ठग रहा
बनता चतुर तू बाँकुड़ा लाता जरा भर ना अदब
करता है उल्टा काम को हे मन बड़ा तू है गजब

(२)

पलपल हजारों कोश जाता है और लाखों जगह
जो काम हो सक्ता नहीं सो करनकी करता निगह
पर सोचना है बात तेरा आसमा के फूल कब
क्षण २ बदलता पैंट को हे मन बड़ा तूं है गजब

(३)

तेरी क्षणिक ये चाल लखि मेरी अकल हयरान है
इस्थिर के बदले और ही तूं हो रहा शैतान है
बुद्धी तेरी होती अशुद्धी जान ले यह ही सबब
पर होश कुछ करता नहीं हे मन बड़ा तूं है गजब

(४)

जैसे कोई दालाल ऊपर से बहुत चिकनावता
नाना तरह छल बल अकल के बच्नमें बहंकावता

पीछे से धोखा देय कर लेता है हर धन माल स
बस गति तुम्हारी वैस ही है मन बड़ा तूं है गज

(५)

बस तू भी जाली करि दलाली है रहा मम साथ
देता है धोखा बाद में लेता है करि जब हाथ
चेतन को धोखा देत हो बहंकाय कर कैसा अज
छल बल बिछाता है सदा है मन बड़ा तूं है गज

(६)

शत्रू तो तुम आनादि के हमकों फंसाते जाल क
कामाग्नि गर्भाग्नि के नित नित जलाते आग प
त्रय ताप गर्भाग्नि में त्रय ताप बाहर का सह
दोनों तरफ है झुलसता है मन बड़ा तूं है गज

(७)

तुमसा न कोई निर्दई होगा सकल संसार मे
ले जायकर कुठांव में देता है दुख बेकार मे
करता वही फिर काम को हरदम जिसे कहता तज
करनी तेरी बेइमान ठग की मन बड़ा तूं है गज

(८)

अबतक न जाना हालको मैं सब सहा सांसत तेरी
तेरे ही कहने में चला यह पड़ गया आदत मेरी

आदतक फल दुखहीमिला सुखशांतिच्चणपाया न जब
एकमात्र बहकावा तेरा हे मन बड़ा तूं है गजब

(९)

हे मन समझता हूँ तुम्हारे पुर्वके जब चाल को
जो २ किह्यो सांसत मेरी अब क्या कहूँ उस हालको
पर हाय वह करनी समझ जब यादआता है तेरा
तब दुःख होता है जिगर चित फाट जाता है मेरा

(१०)

पर हाँ कहूँ उपकार क्या जो गुरुनरायण देव हैं
दुख नाश कर मेरे वही तेरा लखाये भेव हैं
तेरा जो करनी चाल था सो खोल कर दर्शा दिये
मेरे धधकते हृदंय में वो शांति जल वर्सा दिये

(११)

श्री गुरुवर के दया अब जान पाया छल तेरा
पारख प्रभू परताय से अब ना लगेगा कल तेरा
क्योंकी बहुत धोखा दिया गुरु कीदया हूँगा सजग
अकतक तो खुबरीझा हमें हे मन बड़ा तूँ है गजब

(१२)

गुरुके कृपा अब शांति हो करके रहो प्रारब्ध भर
प्रारब्ध होते खत्म सब मिट जायगा तेरा झगर

हे मन जो आयू है इधर गुरु ज्ञान सब गहिये सदा
संत शरण हैं अन्तिमी मन मार कर रहिये सदा

॥ हरी गीत छंद ॥

मन तूं पतित क्यों हो रहा ॥टेक॥

(१)

पांचों विषय दुख रूप जो रौ-रौ नरककी खानि
उस नर्क सिंधू में सदा तू दौड़ता सुख ठानि
तेरी अहमक पन देख कर मैं दिन बदिन अब रो र
तब भी न लाता है तरश मन तूं पतित क्यों हो र

(२)

बज बजाता पीब रक्तों से घृड़ित यह देह
मल मुत्र दुरगंधी भरा प्रत्यछ क्या संदेह
तिसमें परम सुख मानता कैसा तू डांगर खोर
धिक २ तुझे धिक २ तुझे मन तूं पतित क्यों हो र

(३)

करता अनेको चाहना तू सुःख पाने के लि
करता हमें हयरान तू नित दुख उठाने के लि
जिससुखके हित तूंदौड़ताआखिरतोदुखही हो र
तिसपर न करताख्याल कुछ मन तूं पतित क्योंहोर

(४)

पूजा प्रतिष्ठा के लिये बनना बड़ा तूं चाहता
सुनकर तनिक अपमान बचअतिशय हृदयमें दाहता
मान भोगों के लिये अनमोल जीवन खो रहा
क्षण मात्रसुखकी आशकर हे मन पतित क्यों होरहा

(५)

सुन कर बड़ाई आपनी फूले समाता है नहीं
रंचक निरादर कोइ किया मानो मराजाता सही
करनी तुम्हारी देखकर बेहोश हम भी हो रहा
सुख भोग मे बेहाल हो हे मन पतित क्यों होरहा

(६)

पाया जहां सुख भोग खुब करता वहीं का याद है
वोइ याद गारी मे सदा स्थित किया बरबाद है
मुक्ति स्थिति छोड़कर सुख भोग ही में सो रहा
उल्टी मती तेरी हुई मन तू पनित क्यों हो रहा

(७)

मुक्ती से बढ़के और क्या है जरा हमको दे बता
जो जग्त मारग में सदां तूं जाय करके झुलशाता
जलता उसी में रात दिन अमृत समय निज खो रहा
होता न इस्थिर क्यों जरा मन तूं पतित क्यों हो रहा

(८)

आखिरमें जिस हित दौड़ता वह दूर पड़ता है नहीं
फिर२के करता काम वह जिससे कठिन दुख शिरसहे
घायल हमें कर २ सदा बेहाल तुम भी हो रहे
धिक धिक तुम्हारे चालपर मन तूं पतित क्योंहो रहे

(९)

बिसवाश तुमपर मैं किया पर तूं सदां शिरकाटता
बिष जानि जो त्यागन किया जाकर वही फिर चाटता
वह काल की बेड़ी अहै जिसके लिये तू रो रहे
अब भाग वंह से भागरे मन तू पतित क्यों हो रहे

(१०)

तेरे लिये वह काल है जिसके लिये तू मर रहे
तब भी निपट हेवान तूं फिर काम वह ही कर रहे
हम थक गये समझावते तेरी वही फिर लौ रहे
तुम सम न कोई बेशरम रे मन पतित क्यों हो रहे

(११)

जिस कामिनी के चाम पर होता निछावर आप है
वह ही नरकका कुंड है त्रय दुःखका वहि ताप है
भोगा अशंखन कष्टको नहिं होश तुमको हो रहे
जाजा उसी में डूबता मन तूं पतित क्यों हो रहे

(१२)

क्या क्या कर्म तूं नहिं किये नारी पियारी के लिये
फल मिला उसका यही की नर्कका कीड़ा हुये
जिस घोर संकट दुःख सहि २ के सदा तूं रो रहा
उसके लिये पागल बना है मन पतित क्यों हो रहा

(१३)

अबतक किया तू चाकरी नारी सकल संसार का
दुख नाश करने के लिये कर चाकरी गुरुद्वार का
इस चाकरी के बाद अन्तिम मुक्त अब तूं हो रहा
ऐसा है औसर पायकर आसक्त किसमें हो रहा

(१४)

कादर वो भद्दा न बनो रणक्षेत्र अन्दर हार कर
संग्राम कर कटिबद्ध इच्छासक्ति डाइन मार कर
अबकी बिजय पद प्राप्तकर करिये अकंटक राजको
शिर पर लिया क्यों तुंमड़ी तूं फेंक करके ताजको

(१५)

इंद्रियां मन जीत ले फिर तूं ही शाहन्शाह है
सब फिक्रकी फाका करो बैराग्य की ले राह है
नहिं सामने शत्रू कोई सब मित्र ही दरशाय हैं
बैराग्य पारख तख्त पर सुख शांति ही सरसाय हैं

(१६)

सदगुरु कृपा से अनादि का दुख द्वन्द साराजलगये
जन्मरण से छुट्टी मिला हम भी परम सुखिया भये
सब काम अब पूरा हुआ नहिं काम कुछकरनोरहा
मरना यही है आखिरी फिर बाद नहि मरनो रहा

(१७)

बोधक नरायण देव गुरु सिधान्त सत्य कबीर का
जल थल पवन पावक ये जड़ चैतन्य पारखधीरका
था बासना सम्बंध से सोत्याग कर मुक्ती मिला
चैतन्य जड़ न्यार हुआ गुरु देव से युक्ती मिला

(१८)

अनुमान सब परखाय कर धोखा हृदयका नष्टकी
हमको बचाने के लिये गुरुदेव भारी कष्ट की
अब तो खतम झगड़ा हुआ रगड़ा मिटा जन्मादिका
यथार्थ से ठहरा यही चैतन्य जड़ आनादिका

(१९)

हैं भूल से सम्बन्ध पारख पाय कर छुटि जायगा
बासना के त्याग से जिव मुक्त भी हो जायगा
हे मुक्त पद के चाहतू आवो जरा सतसंग में
गुरु पारखी को छोड़ कर क्या दौड़ते बहि रंग में

(१६)

पारख प्रकाशी के बिना मुक्ती को पा सक्ते नहीं
मुक्ती बिना बेकार सब जन्मरण मिट सक्ते नहीं
जन्ममरण मिटने के लिये संत शरण कहता टेरकर
सबको परखि तज मुक्ति ले मुख बासना से फेरकर

(२०)

यह देह क्षण भँगूर है नहिं देर करिये यार तुम
औसर है गुरुवर जी मिले जल्दी से हो भव पार तुम
नाश तन धन जन सभी इसका न कुछ इतबार कर
मल्लाह गुरु से खेय कर नईया अपानी पार कर

॥ हरी गीत छंद ॥

रे मन तुझे धिक्कार है ॥टेक॥

(१)

हम शांति सुख जब चाहते तब तुम बनाता बात है
बिष मार्ग में ले जाय कर मुझको खिलाता लात है
सुख का बहाना दे मुझे फिर तानता तलवार है
शिर काटता हरदम मेरा रे मन तुझे धिक्कार है

(२)

करके जो पश्चाताप घूमूँ फिर मुझे बहकावता
रचि जाल युक्ती पेंच को बिषही में सुख दर्शावता

उपर बना है मित्र सम पीछे से करता वार है
करके कला लेता है छल रे मन तुझे धिक्कार है

(३)

जैसे कोई जाली मनुष्य लड्डू में जहर मिलाय के
पीछे वो करता है जुरम पहिले से मीठ खिलाय के
ऐसे तुम्हारी है दशा कैसा बना ठगहार है
यों ही सताता नित हमें रे मन तुझे धिक्कार है

(४)

कर-कर हुकूमत हर समय है मार खिलवाता मुझे
अमृत सुधाको छीनकर विष डांग दिलवाता मुझे
छल बल चतुरई देख तेरी मैं गया अब हार है
क्या कहूँ तेरे कुटिल पर रे मन तुझे धिक्कार है

(५)

पहिले तो करता राय यस मानो सुखी कर देयगा
पर हाय जाना मैं नहीं पीछे गजब दुख देयगा
फिरफिर वो पैनी छूरियों का मोंहि खिलाता मार है
तूं ही कठिन शत्रू अहै रे मन तुझे धिकार है

(६)

अब हार बैठा हूँ तुम्हारी ये कुचाली देख कर
तुझसे घिनावट हो गया तेरी चलांकी लेख कर

हर तरह नीचे डारता तेरा न अब इतबार है
फाटा जिगर तुझसे मेरा रे मन तुझे धिक्कार है

(७)

हम अनादी से दुखी करि साथ तेरा खल रहा
आशादिया सुखकी बहुत परना सुखीयक पलरहा
सुख सैन्य सेज दिखाय दे चवखानियों का भारहै
अफसोश है अफसोश है रे मन तुझे धिक्कार है

(८)

श्री सदगुरु के दया जाना तुम्हारा भाव अब
अबतक सहा सब कुछ तेरा पर ना चलेगा दाव अब
तुमसेपिछाड़ूँ पाव ना गुरु ज्ञान तीखा धार है
अब मेटता तेरा हुकुम रे मन तुझे धिक्कार है

(६)

हे मन नहीं अब लागता अच्छा तुम्हारा चाल है
तूं है निघर्घट धूर्त ठग तूं ही हमारा काल है
भोगो में सुख दर्शावना ये सब तेरा खेलवार है
करि खेल नर्क ढकेलता रे मन तुझे धिक्कार है

१०

हममुक्त अविनाशी अहैं पर तूं दिवाना कर दिया
विषयों में सुख दर्शाय कर हमको वेगाना करदिया

सर्वस्स बल हर कर मेरा तूं बन रहा मुख्तार है
मम राज ले राजा बना रे मन तुझे धिक्कार है

(११)

अब तक बना नौकर तेरा तेरे बचन को मानकर
गुरुवर कृपा से हूं सजग तेरी ठगहरी जान कर
गुरु देव ने पारख दिया तेरा लखा सब कार है
तुझ से सदा मैं हूँ अलग रे मन तुझे धिक्कार है

(१२)

अब तज हमारा साथ को की तो करो ममरायके
नहि भाव तव अच्छा लगे हरदम तमाचा खायके
तूं दुख मुझे ऐसा दिया जिसका न वारा पार है
मैं तड़फता दिन रैन था रे मन तुझे धिक्कार है

(१३)

बल पारखी गुरु संत के तेरा मरम सब जान ले
हरगिज पड़ूँ ना फन्द में अब यह हृदय में ठान ले
अब मुक्त पद गुरु से मिला तुझसे हुआ कीनार है
अब प्रीत ना तुमसे करूँ रेमन तुझे धिक्कार है

(१४)

जैसे हमारा रूप है तैसे रहन धारण करो
जैसे कहन वैसे रहन बच वोही उच्चारण करो

कहनी गहन रहनी बिना मन मारना दुस्वार है
पर जो गहै त्रय रहनि को आपीवो बेड़ापार है

(१५)

तन करे कस मन करे बस ले बचन को जीत भी
तीन पांच औदशकसै फिर लेय जीत पचीसभी
गुरु ज्ञान कर्ता दुःख हर्ता आप मम शिर मौर हैं
संत शरणके सबकुछ तुम्ही तोंहितजि न दूजाऔर है

॥ मन की नीचता पर गजल १ ॥

हे मन तुँ अधम पापी है बड़ा, गुरु संत से चाल छिपाता है। तुझको न शर्म आती है जड़ा, गुरु संत से चाल छिपाता है ॥ टेक ॥ चिकनाव दिखाता उपर से, छल घात लगाता भीतर से। जस जहर भरा कंचन कि घड़ा, वैसे तू भी दर्शाता है ॥ १ ॥ तेरी करनी कराल दिखावत है, जिय समझि बहुत घबरावत है। अन्तर से करन चहता है छला, ऊपर से लीप लगाता है ॥ २ ॥ तेरी चाल तो हे मन पाजी है, हरदम तु विषय पर राजी है। चहता तु किसी

कि नहीं है भला, तुझे अनभल काम सुहाता है ॥३॥ गुरुदेव तेरी सब जानत हैं, तु है छलिया बड़ा पहचानत हैं। उनहीं के चरण में तेरी है भला, काहें न तु प्रेम, लगाता है ॥४॥ हैं गुड़ गुरू छल लागे न अब, सुन रे तु मलिन मन भागेगा कब। तुझसे बिसवास मेरा भी टला, अब क्या तु बहुत बहकाता है ॥५॥ हट हट जा बहुत बकवाद न कर, तेरी इसमें भलाई बिवाद न कर। तेरे साथ मे पड़ि कै बहुत मैं जला, अब से ये क दांव लगता है ॥६॥ मैं न चाहूँ तुझे तु क्यों आता है, ब्येशर्म तु भया नहिं जाता है। जो बढ़ै तो तेरी खिंच जाय खला, फाँसी कि कजा तेरी आता है ॥७॥ अपनी तु भालई चाह अगर, हमसे हट कर दुसरे ज डगर। है सफाई तेरी काहे है खड़ा, मन हट तुनही क्यों जाता है ॥८॥ जस जाली तु जाल बनावत है, तस गुरुवर जाल छुड़ावत हैं। तेरे जालों से जाल लिये हैं कड़ा, बेकार तु रा

बढ़ाता है ॥९॥ गुरुदेव नरायण पारख वर, संत शरण पड़ा तिन चरणों तर। मन नाश हुआ अजबासमिला, अब शांतिसे गुरु गुण गाता है॥१०॥

मनांकुश के प्रति दृष्टान्त

एक जहर सिंधु नाम का शहर था, उस शहर में दर्बशाह नाम का एक राजा रहते थे, वे राजा बहुत बीर और प्रतापी थे, फिर तो जैसे उनका नाम दर्बशाह था, तैसे उनमें गुण भी था। धनों में तो यहाँ तक की, हीरा, मोती, पोखराज, पन्नग, निलम, मणि, लाल और जवाहिर आदि रतनों में, यानी सब प्रकार से सर्व धनियों में वे एक महा धनवान धनी ही थे। और बड़े नीत-वान विद्वान एवं तो बहुत भारी कई यक राजावों में वे एक भाग्यवान, वा भाग्यशाली, और तेजस्वी, राजा थे, संसारमें चारों तरफ, उनके गुण वा नाम का यस छाया था। उनके एक निर्धनिक चन्द नाम का नौकर था, वह बुद्धि के यकदम कम अक्ल एवं यथोनाम तथो गुण वाला था, तो उस-

की यह दशा होने में कारण क्या था, कि उसी शहर में एक क्रूरसिंह नामक मनुष्य रहता था, यों तो उसका जैसे क्रूरसिंह नाम था तैसे वह निहाइत क्रूर ही था, और उसका काम क्या था सो आगे वर्णन किया जाता है। जो की रात दिन उसका यही पेशा व रोजगार हो गया था, जैसे की चोरी, हिंसा, बैभिचारी, मार, काट, लूट, फूँक, नाना प्रकार का झगड़ा, लड़ाई, गाली, गुफ्ता, फजिहती ही में, और इसके बाद सब प्रकार का अमल भी खाता था, जैसे की पान, बीड़ी, सिगरेट, और गांजा, भांग, धतूरा, अफीम, संखिया, चर्स, चन्डू, शराब, ताड़ी, आदि पीता ही था, कि इसके ऊपर जूवा, पाशा सतरंज, चौसर, आदि और भी—नाटक, सनेमा, कथिक, नौटङ्की, सफेड़ा, कहँरवा, बेश्या, आदि के गाने में और ग्रामोफोन, इस्टियर, रेडियो आदि के नाना नाच, राग, रंग, तान, बान के गाने बजाने ही में उसका दिन बीतता था। इसके अलाहिदा और

भी-जैसे बड़े बड़े बाल रखाना भाँति भाँतिसे तेल फुलेल, और शीशा, ककही, द्वारे कंघी करना, और मुख लाल, हित पान खा, या रंग लगाना, दातों में भी नाना मेर के मीशी आदि जड़ावना- इनके ऊपर कोट, कमीज, नाना तरह का झालर या कालरदार खूब फैन्सनी-फैन्सनी-चुनावदार धोती और तरह तरह से बूंट, सूट, हैट, घड़ी, आदि पहिनता था, इसके ऊपर और भी खूब सजधज के साथो साथ नाना ठाट बाट बढ़ाता या जमाता था। और भी-तहां यह सब साज्न्सी चीजें पहन के वह कूरसिंह गली गली घूमता था और बहुत से बेभिचार पाप वा दुष्टकर्म करता फिरता था, हे भाइयों उस कूरसिंह का हाल कहां तक सुनाऊँ—यहां तक रहा की कोई दुर्गुण वा बुराई कर्म उससे बाकी नही था-एवं तो वह नाना प्रकार का अपकर्म अधर्म अत्याचार ही कर करके जीवन बिताता था, यानी कूरसिंह के एगुणों को कहां तक कहा जाय कुछ कहते नहीं बनता है,

ऐसा वह एक अति नीच स्वभाव वाला था, जिससे की उसकी तो बुद्धी इन्हीं दुरस्वभाव से नष्ट भष्ट हुई ही थी और जो उसका सङ्गत करता था उसका भी बुद्धी खराब हो जाता था। क्यों की—सोरठा—कि तो ऊँच कोइ होय, करै दुरगुण संग गर। सकल शुद्ध गुण खोय, दुष्ट संग का फल यही ॥१॥ पापी नीच खराब—करत दुखी व और को। जैसे जहर तेजाब, जारि छार करत सबहिं ॥२॥ इसी प्रकार दुर्गुणी जन अपने तो दुखी ही हैं और दुसरे को भी दुखी करते रहते यों तो उसी कुचाली क्रूरसिंह से—अब निर्धनिक चन्द मित्रता भी किये थे, यदिप निर्धनिक चन्द क्रूरसिंह इतना दुरगुंण नहीं था, तो भी नीच का संग करने से कुछ ना कुछ असर पड़ ही जाता है क्यों कि कहा है—चौपाई—को न कुसङ्गति पा नशाई—चलै न नीच मते चतुराई। इस प्रकार क्रूरसिंह का संग करने से निर्धनिक चन्द का भी स्वभाव खराब होता ही था, और बुद्धी खराब

होने के वजह से महाराज दर्वशाह से भी—छल कपट तथा भेद का बर्ताव रखते थे। यानी मनमें तो नाना प्रकार से छिपाव रखते और दुष्कर्म भी किया करते थे, परंतु महाराज दर्वशाह जी तो सब कुछ निर्धनिक के छल भेद का बर्ताव जान्ते ही थे तो भी किसी प्रकार का दण्ड नही देते थे, बल्कि राजा महापुरुष होने से निर्धनिक चन्द को समझाते थे। समय समय से राजा यही समझाते बुझाते थे, कि देखो भईया निर्धनिक चन्द नीच और दुष्ट की संग करने से अपनी भी नीच बुद्धी बन जाती है, नीच बुद्धी और दुष्टता स्वभाव अपना भी बनने से नाना प्रकार का कष्ट ही कष्ट भोगना पड़ता है, इस लिये जहां तक हो तहां तक दुष्ट और नीचों की संगत ही त्यागने में अपनी भलाई वा कल्याण है इस प्रकार राजा-निर्धनिक चन्द्र को समझाते थे, परंतु निर्धनिक चन्द की बुद्धि नही पलटती थी, क्योंकि जिसकी जैसा स्वभाव पड़ जाता है,

तो उस स्वभाव से उसको छूटना कठिन-सा
मालुम पड़ता है। यों तो महाराजा के आज्ञा
अनुसार ना चलने से, निर्धनिक चन्द को दुख
ही दुख मिलता रहा, तो भी वो कुरसिंह का
साथ नहीं छोड़ना चाहता था। इस प्रकार
निर्धनिक चन्द को कूरसिंह का संग करने से
सब प्रकार का कष्ट ही कष्ट उठाता था। जिसमें
की दर्बशाह का कहा ना मानने से और कूरसिंह
की संगत ना छोड़ने से निर्धनिक चन्द सब
प्रकार से हीन दीन लाचार दुखी ही बने थे।
और जो २ दुःख नहीं भोगना चाहिये, वो २
दुःख पा रहे थे, फिर तो निर्धनिक चन्द रो रो कर
नित्य २ असह पीड़ा को पाते रहे, यों तो उनके
दुख का कुछ थाह नहीं था। इस प्रकार उनको
रो रो दुःख भोगते देखकर, जो दर्बशाह का
सच्चा मन्त्री था, वो करुणा करके मीठा नम्र
कोमल बचनो से कहने लगा कि हे भईया निर्ध-
निक चन्द तुम इतना दुखी क्यों हो सो मेरे से

कहो—यदिप मन्त्री ने निर्धनिक चन्द और क्रूर सिंह का प्रेमासक्ती जान्ता था, परंतु उसका दुख छुड़ाने के वास्ते बूझा कि बतावो भइया निर्धनिक चन्द क्यों दुखी हो, ऐसे वचन सुन कर निर्धनिक चन्द बोला की हे भईया मन्त्री जी मैं अपने दुख का हाल क्या कहूं क्यों कि इस दुख का कारणमेरा आदत और स्वभाव ही है अथवा मैं ही हूँ, क्या कहें मित्र जी मैं दुख तो नहीं चाहता हूँ, पर एक क्रूरसिंह के मित्रता ने हमें दुखी कर रहा है, हे मित्र जी सो सब मैं अपने दुख का कारण जान कर भी, आदत और स्वभाव बश दुखी हूँ, सो दया करके आप उस मेरे आदत स्वभाव को सुधारने का उपाय बता दीजीये, जिससे कि मैं दुःख से या उस क्रूरसिह के फन्दे से छुटकारा पाऊँ। इस प्रकार दीन की लाचारता बैन सुन कर सच्चे मन्त्री ने कहा की हे निर्धनिक चन्द देखो जब तक क्रूरसिंह का साथ नहीं छोड़ोगे तब तक दुख छुटना मुहाल है,

बल्की और और दुःखही दुःख उठाना पड़ैगा। इस
लिये हे निर्धनिक चन्द सब दुख छुटने का यही युक्ति
है और यही उपाय है, की आप इतनाही कीजीये
की क्रूर सिंह का संग ही मात्र छोड़ दें, बस आप
के सारा झंझट दुख छूट जायैंगे और सुख से
जीवन बीतेगा, एवं तो यदी आप को सुखी
होना है तो सिर्फ इतनी ही कीजीये कि क्रूरसिंह के
तर्फ से अपना मुख फेर लीजिये बस आप के सब
दुख का अंत हो जायगा, हे भाय जी तुम्हारे
सुखी होने का उपाय बता दिया, यदि सुखी
होना है तो यही करो। मन्त्री का इतना वचन
सुनते ही निर्धनिक चन्द का स्वभाव बदल गया
और उन सच्चे मन्त्री के चरण पर गिर पड़े, और
हाथ जोड़ कर कहने लगे कि धन्य धन्य आप
हैं जो हम भूले हुये का भूल लखा दिये हो
सो मैं आपके उपकार को धन्य मनाता हूँ।
और जो मैं क्रूरसिंह के संगत से ना ना तरह का
दुख पाता था, वह आप के कृपा से मेरे समझ में

आगया, अब आज से मैं भूल कर भी उस क्रूर-सिंह दुष्ट का संग नहीं करूँगा। निर्धनिक चन्द इस प्रकार से अपने हृदय में दृढ़ निश्चय पक्का कर लिया, कि चाहे मेरा प्राण भले ही निकल जवै परंतु अब प्रण करके कहता हूँ की उस ऐसे छली कपटी धुर्त ठग क्रूर सिंह का साथ ना करूँगा, अहो साथ करना तो दूर रहा, अरे उसका मन में याद गारी तक नहीं करूगा। इस प्रकार मन्त्री के कहने अनकूल निर्धनिक चन्द चलने लगे और उनको हर प्रकार का सुख तब से प्राप्त हुआ, एवं तो क्रूरसिंह दुष्ट का संग त्याग देने से निर्धनिक चन्द का जीवन सुख मय से गुजरने लगा। अब यहां से दृष्टांत पूरा हुआ अब आगे इसी का सार सिद्धाँत सुनिये—ना ना प्रकार के काम क्रोध लोभ मोह हंकारादि से भरा हुआ, और सब्द र्पश रूप रस गन्ध यही सब पिन्ड से मय ब्रह्माड तक इसी पंच बिषय रूपी बिष या प्रचन्ड दुख ज्वाला से भरा हुआ,

इस संसार ही की प्रसिद्ध नाम जहर सिंधु सां
शहर है। इस संसार जहर सिंधु शहर में
यहाँ राजा रूप जीते जीवन मुक्त परम श्रे
श्री सदगुरु देव ही हैं। यथार्थ में उन्ही सदगु
का नाम दर्बशाह राजा है—क्योंकि दया, छमा
सत्य, धीर, बिचार, शील, संतोष, और अमानत
समता, निरमानता, आदि यही सर्बोच्च धन का
नाम, हीरा, मोती, पोखराज पन्नग निलम मणिलाल
जवाहिर आदि धन है। इन्ही रत्नों के संयुक्त
श्री गुरुदेव दर्बशाह राजा हैं इसी से सर्ब नरों में
महान तेज प्रतापी एक गुरुदेव हैं जिनके पटत
या तुलना वा बराबरी में इस जगत में कोई नहीं
है। एवं तो इस संसार में गुरु संत ही एक महा
तेज प्रतापी और सर्ब बिद्धानों में बिद्धान है
और सर्ब भाग्यवानों में भाग्यवान हैं।
यों तो ऐसे शक्ति शाली सदगुरु का यस संसार
में चारों तरफ फैल रहा है, और सर्ब सदगुण
रूपी दर्ब से भरे हुये श्री सदगुरु ही बिराजमान

हैं, उन्हीं का नाम दर्बशाह राजा है। अब यहाँ सदा चरण और सदगुण रूपी धन से रहित हीन, मलीन, लाचार, दीन दरिद्र निर्धनिक चन्द के समान हम सब जीव हैं और सर्ब सदगुण से भरे हुये दर्बशाह राजा रूप गुरुदेव के दरबार में, हम सब सदगुण रूप धन से हीन हो निर्धनिक के समान शिष्य रूपी नौकर हुये, परंतु इसी तन बीच संशय रूपी शहर में क्रूरसिंह रूपी मन है, अब उसी क्रूरसिंह रूपी मन से यह जीव मिताई कर रक्खा है, ताते जीवको ना ना प्रकार का कष्ट भोगना पड़ता है, सो कष्ट भोगने का कारण यह मन ही है। क्यों कि सर्ब कुचाल से और अपकर्म अधर्म कुकर्त्तव्य रूप क्रूरता से भरा हुआ यह मन ही क्रूरसिंह हैं, इसी मन क्रूर से जीव रूपी निर्धनिक चन्द ने मित्रता कर लिया है, ताते ना ना कष्ट पा रहा है। और सदगुरु से भी छल भेद का बर्ताव रखता है, यद्यपि दर्बशाह रूप सदगुरु ने इस जीव और मन की सब बातों को

जान्ते हैं, तो भी इस जीव को किसी प्रकार से कष्ट न देकर बल्कि दया स्वभाव से इस जीव ही के हितय कर बचन कह देते हैं, जीवरूपी निर्धनिक चन्द से गुरुदेव यही कहते हैं, हे भाईयों इस दुराचरण और सर्व दुर्गुण के स्वरूप यह मन ही है, सो जब तलक इस मन क्रूर का संगत वा साथ नही छोड़ेंगे तब तक सुखी स्वतंत्र नहीं हो सकोंगे, ताते हे जीव तुम मन ठग का कहा मत मान, जाते सुखी हो। इस प्रकार श्री सदगुरु देव इस जीव को समझाते है, परंतु यह जीव मन से अतिशय मित्रता कर लिया है, ऐसा कुछ कठिन का आदत वा स्वभाव बना रक्खा है, की बार बार मन से ठगाया भी जाता है, तो भी मनै के कहे अनुसार चलता है, यों तो हर घड़ी इस मन के भुलावा में पड़ कर यह जीव नाना दुरगती को पाता रहता है। जिससे की दर्बशाह रूप गुरु-देव का कहा ना मानने से सर्व प्रकार की असह

कष्ट इस जीव को भोगना पड़ता है। एवं तो तन मन ना ना झमेले में पड़ कर जीव रूपी निर्धनिक चन्द को भांति भांति के दुःख सहना पड़ता है, तो भी यह जीव मन का मित्रता नहीं त्यागता है। फिर तो क्रूरसिंह रूप मन का संग करके, निर्धनिक चन्द रूपी जीवको कौन सा ऐसा कष्ट है जो ना उठाना या न भोगना पड़े इस प्रकार ना ना दुसह दुःख में बेहाल हो कर, यह जीव सदा सर्बदा तकलीफ को पाया करता है। यों तो रोरोकर हर हमेशा इस जीव को दुख ही दुख उठाना पड़ता है या ना ना ठोकर खा रहा है। अब यहाँ साँचा पद देने वाले सच्चे संत गुरु ही साँचा या सच्चा मन्त्री हैं, सो उन्हो ने इस जीव की ना ना दुरदशा देख कर, दया से कहते हैं, की हे जीव यदि तं सच्चा सुख चाहते हो या जनम मरण के दुःख से छुटकारा चाहते हो तो इस मन की दोस्ती या मित्रता को छोड़ दो और सुखी हो जावो, क्यों कि यह छलो मन ही सर्ब

दुःख का मूल हैं, अरे भाई इस मन के संग में पड़कर जो न दुख हो जाय वही कम है, यों तो मन के राय से चलनेसे दुख ही दुखहाथ आयेगा। इस नाते ना दुख चाहने वाले, हे जीव आप सब के प्रति मेरा यही कहना है की इस मन शत्रु से एक दम नाता तोड़दो,तभी खाश निजी कल्याण होगा। इस प्रकार से संत गुरुरूप परम श्रेष्ट सच्चे मन्त्री का बचन सुन कर जो मान लेता है, तो वह जीव सर्ब मनोमय कुसंगो से बच कर इसी जीवन में मुक्त होकर शांति सुख पाते रहते हैं। फिर उन्हे कभी इस संसार चक्र में, और मन इन्द्रियों के झूला में नहीं आना पड़ता है। तो हे जीव तुम्हे भी इस संसार सागर से बचना है तो इसी गुरु न्याय से चल कर, जनम मरण रूपी संसृत चक्रसे छूट कर मुक्त हो जा— यह मन इस जीव को कैसे ठगता है और मन के बश होकर यह जीव किस प्रकार दुखी है, सो आगे गजल में बर्णन—

॥ गजल ॥

चेतन हुआ बेहाल मन वश, मन है अपने रङ्ग में। करि करि कुचाली चाल को, ले जा रहा बेढङ्ग में ॥ टेक ॥ है बना प्रिय मित्र सम, पर वार हरदम कर रहा। देता दगा चेतन को निश दिन ले जा गिराता खन्द में ॥१॥ है अनादी कालसे, ये घाव ही करता रहा। फौरेब जाल बिछाय कर, नित घाव करता अङ्ग में ॥२॥ करतब गजब इसका लखो, कैसा बना है मित्र सम। पीछे से दुशमन होय कर, करता दगा निज सङ्ग में ॥३॥ लड्डू देवै कोइ प्यारकर, पर जहर उसमें हो मिला। तैसै दशा मन की लखो, नित मारता विषयंग में ॥४॥ इस छली मन के पेंच में, मैं दुःख को सहता रहा। हरदम बना गूलाम सम, मन इंद्रियों के जङ्ग में ॥५॥ करता बेगारी सबन की, खर सम मैं लादी ढोवता। अामुल्य जीवन खोवता, रहता हमेशा तङ्ग में ॥६॥ गुरूवर नरायण जब मिले, प्रखाये सब ही जाल को। मेरे अनाथ पे करि

दया, कय दीन पारख रङ्ग में ॥७॥ करके दया करुणा निधी, सब गांस, फांस छुड़ा दिये। ऐसे बिता प्रांरब्ध भर, जगमें न आना अन्तमें ॥८॥ जनमरण त्रयताप ज्वाला, अग्नि में जरता रहा। शांति निर्मल मग दिखा, कर दीन मोक्ष प्रसंग में ॥९॥ संत शरण निर्मान रहि, नित सजगता धारण करो। तन मन बचन से सेवकर, गुरुदेव के रहि रङ्ग में ॥१०॥

मन के प्रति एक गारी

मन तेरो चलिया खराब, हमें अब नीक न लागे ॥ टेक ॥ काह कहौं मन कहत न आवै, लखि २ तेरो हिसाब ॥ हमें ॥१॥ छल बल करत-रहतनिश बासर तनिक न तुमको लाज ॥ हमें ॥२॥ कबों धन नारि कुटुम्ब को मानत, कबहुँक करत बिराग ॥ हमें ॥३॥ कबहुंक मान गुमानमे फूलत, कबों हीन-दीन बनाज ॥ हमें ॥४॥ कबहुँक खुसी होत मन ही मन, कबहुंक होत नराज ॥ हमें ॥५॥ कबहुँक बनत रहत त्रिभुवनपति, कबहूँ दरिद्र निवाज

॥ हमें ॥६॥ ऐसे छल बलिया को काह कहों मैं, भावत नित्य ठगाव ॥ हमें ॥७॥ काम क्रोध में जरत रहत नित, जात न संत समाज ॥ हमें ॥८॥ सत्संगत में भूलि न बैठत, हरदम करत कुकाज ॥ हमें ॥६॥ गांजा भांग धतूरा पी पी, बैठत भांड समाज ॥ हमें ॥१०॥ नाच रंग औ राग तानमें, हंसि २ करत मवाज ॥११॥ चोरी हिंसा बेभिचार करन में, जिनगी करत खराब ॥ हमें ॥१२॥ पतित मूढ़ मन सम नहिं कोई, एतना बना निलाज ॥ हमें ॥१३॥ सन्त शरण मन महा धुर्त ठग, पक्का धोखे बाज ॥ हमें ॥१४॥ मन दुशमन से बचा रहे जो, सोई सबन शिर ताज ॥ हमें ॥१५॥

॥ मनांकुश कर—भजन ॥

सुधारो अब मनुवा अपनी चाल ॥ टेक ॥ युगन युगन से मोहिं भरमायो, रचि २ अपनी जाल । हरदम हम पर वार करत हौ, बन्यो हमारो काल ॥ सु० ॥१॥ काम क्रोध हङ्कार महाभट,

तव सैना बिकराल । मारि मारि मोंहि निर्बल कीन्ह्यो, भई खराबी हाल ॥ सु० ॥२॥ हमहूँ पतित तेरे बश ह्वै के, सह्यों कठिन दुख भाल । इच्छा बशी भ्रमयों संग तुम्हरे, तेहि ते भयों बेहाल सु० ॥३॥ सहि सहि कष्ट सकल खानिन की, मम जिय बहु घबराल । पल भर चैन दिहौ नहिं हमका, अइसन किह्यो हवाल॥४॥ आदत बसी सह्यों सब तुम्हरी, होकर हम भूपाल ॥ हमरे शक्ति भयो बलशाली, हमरै किह्यों यस हाल ॥ सु० ॥५॥ गुरू ज्ञान से तुम्हें पछारौं, दै निज शक्ति कराल। संत शरण गुरु चरण गहो नित, मनकी तोड़ि कुचाल ॥६॥

सीसरा प्रसङ्ग, समाप्त

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

चौथा प्रसंग प्रारंभः

गुरुभक्ति की लक्षण

चैतन्य पारखी साधु गुरु के भक्ती ना धारण करने से, जीव की नाना दुरदशा—

॥ हरी गीत छन्द ॥

(१)

गुरु भक्ति बिन दुख पा रहा ॥ टेक ॥
बल बुद्धि विद्या मान यस संसार में भर पूर हो ।
करता हुकुम सब पर रहै त्रयलोक में मसहूर हो ॥
चाहना डाकिन में पड़ि नाना वो ठोकर खा रहा ।
प्रभुता मिला सब खाक में गुरुभक्ति बिन दुख पा रहा ॥

(२)

कुलमें सबनसे ऊँच हो औ जातिमें भी पांति हो ।
संत गुरु से हो बिमुख उर में न लाता शांति हो ॥
पशु पन्छियों से नीच सो तजि के अमी बिष खा रहा ।
सब ऊँचपन मिट्टी मिला गुरुभक्ति बिन दुख पा रहा ॥

(३)

धनधाम वहदा ऊँच हो या सेठ साहूकार हो।
नौकर अनेको हों चहे दौलत किना शुम्मार हो॥
मौज शौक वो ठाट में नाटक सनेमा भा रहा।
सब नष्ट शौकत शान है गुरुभक्ति विन दुख पा रहा॥

(४)

हाकिम हुकुम जिमदार हों या कोइ इलाकेदार हो।
बादशाही तख्त या सबके शिरे सरदार हो॥
वाम चाम में लीन है सुख भोगमें दिन जा रहा।
कूकर वो शूकर समदशा गुरुभक्ति बिनदुख पा रहा॥

(५)

डिप्पटी कलट्टर जज हो भारी मोहकिमा पाय हैं।
सब देशके मालिक बने सबको बताते राय हैं॥
मदमस्त रमड़ी भोगमें चमड़ीमें सब दिन जा रहा।
गुरु सन्तकी हाँसी करै गुरुभक्ति बिन दुख पा रहा॥

(६)

पञ्च या परधान हो बाबू या भईया देश के।
करता निरादर है सदा गुरु सन्तको यदि देखके।
तब सब बड़प्पन धूर है परपञ्च ही में धा रहा॥
खरस्वान समतिनकी दशा गुरुभक्ति बिनदुख पारहा।

(७)

राजा वो रठ्ठी रंक हो नरनारि जितने जीव हैं।
गुरुभक्ति बिन होकर पतित दुख पावते सादींव हैं॥
साधू होंग्रेही भक्ति बिन सब व्यर्थ जीवन जा रहा।
करते सदा गुरुभक्ति जो वो सर्व दुखको ढा रहा॥

(८)

हांके हवाई रेल मोटर मास्टर बन जाय है।
चंदा सितारे भान तक सबका पता लगवाय है॥
मैंन मैंनिस्टर बने अभिमान गाथा गा रहा।
गुरुसंतसे परिचय नहीं गुरुभक्ति बिन दुख पा रहा॥

(९)

हरफन में सब परिपक्क हो एटम या वायुयान में।
तार गाड़ी रच रहे षड़यन्त्र ही के शान में॥
ब्रह्मांड पिंडको नापते मनबस हो चक्कर खा रहा।
तनबादमें सब छार है गुरुभक्ति बिन दुख पा रहा॥

(१०)

सब इरिडयाँ की बात को क्षणमात्र मे लेवै लगा।
बन जाय सर्बाजीत यह सब शत्रु को देवै भगा॥
हे मित्र यहि के बादमें त्रयखानि का दुख आ रहा।
जल्दीमिलो गुरु संतसे क्यों भक्ति बिन दुख पारहा॥

(११)

बहु पुत्र पुत्री धाम धन तन छूटते छुटि जांयगे।
जिसमें तु गाफिल हो रहा वह काम मे नहिं आयंगे ॥
सतधर्म भक्तीको करो वह काल सनमुख आ रहा।
आखिर अकेलेही चलो क्यों भक्ति बिन दुख पारहा॥

(१२)

हे नारि नर गुरु भक्तिमें मनको लगावो आजसे।
यहं के यहीं छुट जायगा नाता है अंतिम काजसे
संत शरण जाना एक दिन ये सत सरासर बातहै
तब फिर बिलम्ब काहे किया किसमें तुं भूलाजात है

(१३)

गुरू नाता कर सही नाता जगत से ढील कर
रहनी गहो नित हंस का गुरु पारखी से मील कर
सद गुरु चरण होके शरण मेटो जनमऔमरण को
नित शांति रहिये मुक्ति गहिये फिर न भवमें परणको

॥ हरी गीत छंद ॥

भक्ती से मुक्ती लीजिये ॥ टेक ॥

(१)

भक्ति सदगुरु के बिना चंचल बिकल हर छिन रहें
शांती रहित आशांति ही इस जग्तमें प्रति दिन रहें

शुम्मार दुख का ना रहा गर्भाग्निमें नित छीजिये
तलमलाय दुख जिव भोगिया भक्ती से मुक्ती लीजिये

(२)

भक्ति बिन ठोकर सहा चव खानियों में जायकर
क्या-क्या न दुरगत्ती भई सारी जगह बिललाय कर
वह समय सब सोच कर पछताय मन कर* मींजिये
रोते ही रोते दिन गया भक्ती से मुक्ती लीजिये

(३)

भक्ती से होकर हीन मैं समझा नही है ज्ञान क्या
भव सिंधु में डूबा सदा मुख से करूं बायान क्या
धधकते दुख अग्नि में भक्ती बिना नित रीझिये
पल चैन ना जग औन में भक्ती से मुक्ती लीजिये

(४)

नर जन्म पाया बार बहु भक्ती बिना सबखो दिया
अमृतकि बिरवा छोड़ कर बिरवा जहरका बोलिया
अब आज गुरुवर जो मिले इस हेतु भक्तीकीजिये
है मोक्ष का मौका यही भक्ती से मुक्ती लीजिये

(५)

गुरु भक्ति करने से सुनो सब हंस रहनी आय है
सुख शांति सरसै रैन दिन आशांतिसब दुखजायहै

---

* हाथ

आमुल्य जिसका मुल्य नहि यस जानि भक्तोकीजिये
सब दुःख हारक भक्ति है भक्तो से मुक्तो लीजिये

(६)

जैसे बिना मल्लाह नौका पार जा सकता नहीं
तैसे गुरू मल्लाह बिन कोइ पार पा सक्ता कहीं
जगसिंधु तरने के लिये मल्लाह गुरु को कीजिये
जल्दी करो जल्दी करो भक्ती से मुक्ति लीजिये

(७)

जगमार्ग यक गुरु मार्ग यक दोमार्ग हीबस जानलो
जग मार्ग में परिश्रम अधिकफल खानि रमना मान लो
गुरुमार्ग में सुखशांति सब तब क्यों उधर चित दीजिये
हे नर जरा कुछ ख्याल कर भक्ती से मुक्ती लीजिये

(८)

गुरुभक्ति करि अजमायलो सुखशांति कितना हैभरा
कुछ भार परिश्रम है नहीं चित देय कर देखोजरा
थोरे कसाला से मसाला मुक्ति मणि को लीजिये
हानिकुछ नहिं लाभ सब है लखितो भक्ती कीजिये

(९)

गुरु शरण में आते ही आते सर्व सदगुण आय हैं
परमार्थ पद गहते ही गहते दोष दुर्गुण जाय हैं

ऐसी अघट शांती मिले चित को जरा तो दीजिये
गुरु मार्गमें आवो हे नर भक्तीसे मुक्ती लीजिये

(१०)

जैसे कोई इक शहर है तहं बिष औ अमृत बिक रहा
उतने ही उतने दाम में या एक भाव में मिल रहा
जब भाव एक में मिलरहा तब लीजीये अमृतसदा
अमृतको पि होवो अमर अरु तोड़ीये जन्मृतसदा

(११)

बिषमें भि उतनै दाम बिषको खायसे मरि जायहै
फल जनमना मरना पड़े चौरासि में चिल्लाय है
बिष खाके बिललाना पड़े अमृत को पीकर चैन है
बिष त्यागिये हे सुबुद्ध जन अमृत हि सज्जन लैन है

(१२)

जानो शहर संसार है अमृत और बिष धार्ग है
अमृत गुरू मग जानिये बिष तो बिषय का मार्गहै
कीमत लगे दोनों तरफ गुरु मार्ग में जग मार्ग में
बन्धन टुटे गुरु मार्ग में बन्धन जुटे जग मार्ग में

(१३)

इस हेतु से जग मार्ग तजि गुरुमार्गमें अब आइये
जग जहर को त्यागकर गुरु मग में अमृत खाइये

हे प्रिये बन्धू मेरे गुरुभक्ति मुक्ती दायकम
मन वच कर्म से जो गहे जगसिंधु सो तरजायकम

(१४)

वो नर बड़े हैं भाग्यवर जो कर रहें गुरु भक्ति हैं
क्रम क्रम से साहस तेजकर दिन २ बढ़ाते शक्ति हैं
वे सर्व शिर मौर हैं जिनने गुरूभक्ती किया
गुरु के कृपा भवपार हैं जन्मरण से मुक्ती लिया

(१५)

जैसे बिना अंकुश के गज काबू में आता है नहीं
पिलवान है लाचार गज मदमस्त हो जावे कहीं
तैसे अंकुश गुरु भक्ति बिन मन गज सदा मतवाल है
पिलवान रूपी जीव नित तेहि के बिना बेहाल है

(१६)

गुरुभक्ति अंकुश जबलिया मनगजपे तब कब्जाकिया
अलमस्त मनको प्रास्तकर तब ध्येय निज पूरा किया
गुरु सम न दाता और कोई देखिये त्रयलोक में
अज अमर पद देंय गुरु बिन रो रहे सब शोक में

(१७)

भक्ती बिन गुरुदेव के मुक्ती तो मिल सक्ता नहीं
जैसे जड़ सींचे बिना फल फूल लग सक्ता कहीं

त्यों भक्ति जड़ सींचे बिना फल फूल सदगुण ना मिले
सदगुण ग्रहण होये बिना स्थिति कहो कैसे खिले

(१८)

स्थिति बिना दुख ना छुटै कोटिन तरीका कीजिये
इस हेतु से हे मित्र मन भक्ती गुरू का कीजिये
जल्दी लगो निजकार्यमें हिचकापिचक सब छोड़कर
गुरुभक्तिसे मुक्तीको लो हिंसका पटैती तोड़कर

(१६)

निर्मानता वो दीनता औ नम्रता को धार कर
छमता सहन समता गहन हङ्कार मद को मार कर
सबही सहो गुण को गहो गुरु की सदा भक्तीकरो
बेग मन को ना बहो निजमें रहो शक्ती धरो

(२०)

पायके नर देंहको संत शरण भक्ती धार ले
हो जावगे अजाद मुक्त तु जगत का ना भार ले
अब काज बना अंत का अकाज जगत छोड़ कर
संशय रहित हुआ भले बन्धन अनादी तोड़कर

॥ गुरुभक्ति का सर्वोपरि विशेषता ॥

अहो धन्य धन्य श्री गुरुदेव के भक्तो का फल है को जिसगुरु भक्तीके करनेसे, अनादीकाल

की अविद्या अज्ञान नष्ट हो जाता है, इसलिये धन्य गुरु भक्ति का प्रताप है। हे जीव तूं सच्चे सदगुरू के भक्ती से विमुख होकर ही चौरासी में भ्रमने का पेशा बनाया है तहां तिन चारोखानी में नाना देंह धर २ के सब कुछ उपाय तूने किया है, परंतु तेरा दुःख छुटा नहीं। यहाँ तक कि कानि कितना बेर तो तू राजा बाबू और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य आदि में रूपवान धनवान हुआ है, यानी राजशाही बादशाही सब भोग, सब जगह तू ने भोग चुका है, लेकिन चैतन्य साधु गुरु के बिना तूं कूकर शूकरवत ही तो रहा की और कुछ हुआ, अरे तुम्हारा दशा तो वहां यही रहा कि, तन मन के भोग ही में मदान्ध होकर और सदज्ञान सत्याचरण से हीन हो, बाम चाम दाममें ही जीवन नष्ट किया है, तिसका फल भी यही हुआ है, की चारखानी के गर्भयोनि में नाना संकट कि जिसका कुछ थाह नहीं ऐसे असह बेद-नावों को तू ने सहा है, फिर २ जनम फिर २

मरण यही प्रचण्डाग्नि में तू जरता रहा। परंतु सच्चे पारखी सदगुरु के ना मिलने के वजह से कहीं भी तेरा दुख नहीं गया, और न जनम मरण से तू मुक्त ही हुआ। सो आज इस नर-देह में तुम्हारा सो सौ सौभाग्य जग गया है, जो पारख प्रभू जी मुक्ति के दाता, दयालु श्री सदगुरु मिल गये हैं। सो हे जीव तू सर्ब जगदासक्ती छोड़, तन मन धन सब गुरु चरणों में अर्पण करके इस जगतसिंधु से तू मुक्त हो जा। यानी श्रीगुरू भक्ती ही तुम्हें मोक्ष कर देने वाला है। सो गुरू-देव कैसे और उनके भक्ती से क्या मिलता है। सो सुनो—

॥ साखी मुक्ति द्वार ॥

स्वंयं सिद्ध गुरु आप हैं, आप समानहिं आप।
बन्ध हरण तारण तरण, पट तर केहि को थाप॥

टीका—सर्ब प्रकार से, अंश-अंशी रहित सदा रहनहार सर्ब चैतन्य जीव 'अपने' स्वरूप से 'भिन्न-भिन्न' अजर अमर 'अनन्त' नित्य हैं परन्तु

वे सब अपने 'स्वतः' स्वरूप को भूले हुये हैं। तिन 'सर्व' नर समूहों में श्रेष्ट आप सदगुरु देव अपने स्वतः स्वरूप को जानकर परीक्षा करके सद रहस्य युक्त सदैव 'मुक्त' स्थित हैं। अतः बोध–बैराग्य–स्थिति संयुक्त स्वयं सिद्धगुरु आप हैं। सर्व देह धारियों की गति मति और जड़ तत्वों के परीक्षक बोध, धारण रहस्य में पुर्ण होने से आपके समान आप ही हैं। 'हे श्रीपारख गुरु देव' आप तो स्वयं संसार सागर से पार ही हैं, और साथ ही 'हम' सब, अन्य जीवों के इन्द्रिय सुखाशा और भोग क्रिया रूप मुख्य बन्धन हरण कर—स्वजाति जीवों पर करुणा करके तारने वाले होने से आप तरण रूप हैं। आपकी समता में कौन सी उपमा दी जाय या दिया जाया। 'हे गुरुदेव' आप निरूपम महिमा मूल हमारे हृदय में बसें।

॥ गजल ॥

सब पर बिशेष गुरुवर, सद ज्ञान देने वाले।
संशय समूह ढेरी, तिसको जलाने वाले ॥टेक॥

(१)

दुनियाँ कि बुद्धि ऐसी, पाँखी जलै है जैसी।
सुख भोग के नशा में, ठगने ठगाने वाले ॥

(२)

विषयों में फँस के अपना, बाँधे जु पाप गठरी।
सो बासना के बश हो तन धरि रुलाने वाले ॥

(३)

गुरु देव धन्य पाये, सुभग्य प्रेम लाये।
गहिधर्म भक्ति,अविचल, फिर भव न आने वाले॥

एवं गुरुदेव की सर्वोपरि विशेषता है— और हमारे प्रिये जीव, अब तुम्हारे पुर्व के परम स्वभाग्य उदय हो गये हैं, जो की वै पारख प्रभू तुम्हे मिले हैं, जो जीते जीवन मुक्त हैं, फिर तो तुम्हें मुक्त होनेमें संशय ही क्या है ? कुछ नहीं।

॥ चौपाई ॥

गुरू मुक्त मुक्ती पद देवें।
यम से छीन अभय करि लेवें॥
फिर क्या कमी तुम्हे क्या घाटा।
ब्रह्म जग्त पर्दा जब फाटा॥

बस हे जीव मात्र तूं गुरू के चरण शरण में लगे रहो, फिर तो तुम्हारा खाश कार्य पूर्ण हुआ ही जानो। इस में कोई भी संदेह नहीं है। हाँ हाँ हे हंस जीव ! इस में संदेह का नाम नहीं, परन्तु अब आज से गुरु अज्ञा में जी जान से हाजिर होजा फिर तो देख ही ले तू कैसा अमर पद पा जायगा। तो अब देरी ही क्या है आज से ऐसे ही रहेंगे—जैसे की श्री गुरू साहेब के वाक्य है।

॥ शब्द ॥

मिले गुरु संगी, तजब मन मानी ॥टेक॥

गुरु के बयन सुनब चितधरि कै, छोड़ि जगत की बानी। युवति रिझावन टहल न करिबै, गुरु के हाथ बिकानी ॥ १ ॥ मत मजहब भ्रम ग्रन्थ न देखिबै, पढ़िबै गुरु मुख बानी। गुरु के ज्ञान मनन तद ह्वै कै, लेबै रहस्य निशानी ॥ २ ॥ ताल राग स्वर धुनि सब तजि कै, गुरु की सुनब कहानी। मन के चरित लखत थकि

बैठे, गुरु के सुमति लोभानी ॥ ३ ॥ मन रक्षण कोइ बस्तु न खइबै, तन हित खाद बखानी। विषय अग्नि से जलति बचावों, गुरु के दर्श जुड़ानो ॥ ४ ॥ धन सम्पति दुख साज न सजिबै, गुरु के ज्ञान समानी। मोह मिलावन भार न धरिबै, होई हैं सकल दुख हानी ॥ ५ ॥ गुरु ब्रत गहि अर्पण करि मन को, भव से पार ठेकानी ॥

॥ भवयान ॥

सारांश टीका—अब हमको परम परीक्षक और सहायक श्री सदगुरु देव मिल गये, जिससे मनमानी कहिये मन को अनेक झूँठी मानी हुई सुखाशारूप अनंत कल्पनाओं को और क्रियाओं को हम छोड़ देंगे ॥टेक॥ अब हम इस ठग मनके नाना फन्द से बचने के लिये जगत रसिक काव्य शृंगारादिक प्रपंच की बानी सुनना छोड़कर गुरुदेव के ही निर्णय रूप बचन सुनेंगे ॥ १ ॥ पांचों विषय से पुर्ण इन्द्रिय-सुख को चाहने वाली, हठता और मदन को खानि, परमार्थ में बाधक

रूप ऐसी प्रमदा के प्रसन्नता निमित्त कोई भी बंधन हेतुक कार्य हम नहीं करेंगे। क्योंकि जीव एक ही है, सो जीव वह अब गुरू के हाथ बिक गया है तो गुरु के अनुसार साधन बिचार करे या बाम बिनोदार्थ काम, क्रोध, लोभ, मोहादि में आसक्त होवे। 'यों तो यह एक जीव अब कहाँ कहाँ बिके? यथा कहा भी है—

बिके बिना नहिं बाचिहो, चाहे जहाँ बिकाव।
गुरु के बिके बिकन नशि, मनके बिके बिकाव॥

प्रत्यक्ष इस संसार में देखा ही जाता है कि —स्त्री-पुरुष सब मनुष्य प्रणियों को कहीं न कहीं बिकना अवश्य पड़ता है चाहे 'कामी क्रोधी आदि' सकामी स्त्री पुरुषों वश और इन्द्रिय मन विषय बासना के वश हो नाना नाच नाचें, और चाहे श्री गुरु के शरण में बिककर शुद्ध-सत्य ध्येय सहित साधन में तन मन लगा दें, पर यह स्मरण रखना चाहिये कि सकामी नर नारियों की ओर

बिक कर जनम-जनम का बिकाना बन्द नहीं होगा-। यानी सकाम कामना बश बार-बार सब कहीं न कहीं बिकना ही बिकना पड़ेगा और चारों खानी का सब दुर्दशा दुःख भोगना ही भोगना पड़ेगा। और गुरु के हाथ बिककर, बड़े दरबारका चाकर हो जाने से, कामादि शत्रुओं में किसी का मजाल है कि आँख उठा सकें। फिर तो युग युग और अनादि काल के लिये एकदम बिकना ही बन्द हो जायगा। यों तो गर्भयोनी संकट में फिर आना ही नहीं पड़ेगा। इससे हे भाई श्रीगुरुदेव के हाथ बिकना* ही सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ट है ॥२॥

---

*१ टि०। दृष्टाँत-एक देवदत्त नामक पंडित्त सदभक्त सदा चारी और सत्संगी था। वह संतो का सत्संग और भक्ति ही अपने आश्रम में मुख्य समझता था। इस लिये एक न एक बिवेकी साधु को बुलाकर बिविधि प्रकार से सेवा करता और सद्शिक्षा सुनकर शमदमादिक साधन युक्त रहता

भास, अध्यास, अनुमान, कल्पना, मिथ्या,सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाले या विषयवृत्ति को बढ़ाने वाले

था, पर उसकी स्त्री बिलकुल न समझ थी,वह अपने क्षणिक भोग सुख के लिये पुरुष के सत्यब्रत को नाश करना चाहती थी। इसलिये वह अनेक उपाय करती रही कि देवदत्त सत्संग और विवेक साधनसे रुक जावे, पर देवदत्त को जगत दुखों से छूटने की पूर्ण इच्छा थी, याते वह अपने साधन मार्ग से कभी बिचलित नहीं होता था। एक दिन स्त्री और देवदत्त का इस तरह प्रश्नोत्तर हुआ—

प्रश्नोत्तर–सा०–क्यों बैठत सत्संग में, सेवत क्यों पर लोग। जीव काज के कारणे, करत सेव सँयोग।—स्त्री बोली अहो आप साधुसंग में क्यों बैठते हैं। साधुओं से न तो कोई रिस्ता, न वास्ता, फिर क्यों बिराने की सेवा करते हैं? तब पुरुष बोला,—देह से भिन्न जो स्वयं अमर चेतन है, उसकी संसारियों के सम्बन्ध से बिपरीत

ऐसे ग्रन्थों को हम नहीं पढ़ेंगे केवल गुरु मुख वाणी का ही पठन-पाठन करते रहेंगे। "सार

समझ हो रही है, सो विपरीत समझ मिटाने के लिये हम साधुसत्संग करते हैं। जगत प्रणियों का भी रिस्ता वा सम्बन्ध अपने अपने मन के सुख के लिये ही है। अपने अपने मन का जिस दिन न पावें तो उसीदिन सब-सबके शत्रु रूप होकर बर्ताव करते दिखाई दे रहे हैं। जब तुच्छ इन्द्रियों के सुख भोग के लिये सब रिस्तेदारों का वास्ता मान लिया है, जिनकी ममता 'का फल जन्म-मरणादि रूप नर्क बास है, तो अबिनाशी स्वरूप ज्ञान गुण साधन बिचार के लिये बिबेकी संतो से से क्यों न नाता जोड़ा जाय ? क्यों कि सच्चे हितैषी नात सधु गुरू ही हैं, जिनके प्रेम सेवादि का फल—मानसिक रोगों की निबृत्ति हैं। सच्चे हितैषी मित्र सम्बन्धी सत्यशिच्छक संत ही होते हैं, तुझे इस बातो का ज्ञान नहीं है। हम जीव के

शब्द निर्णय को नामा। जाते होय जीव को कामा॥ "भ्रम ग्रन्थ न देखिबे" यानी मुख्य अपने

कृतार्थ हेत परिश्रम करके सेवा और सत्संग करते रहते हैं, यथा "संतन में जेहि प्रीति अभंगा। मोक्ष होन को ताहि प्रसंगा।"—प्रश्नोत्तर-सा०

सबहिं बिरक्ती लेंय जो, तौ सब शृष्टी छिन्न।
तो यामें है हानि क्या, बृथा होत तैं खिन्न॥

स्त्री बोली—कि सब बैराग्यवान त्यागी ही हो जाँय तो शृष्टि न रह जायगी? पुरूष बोला—तो इसमें तेरी या किसी की हानि हो क्या है। हानि तो तुझे अज्ञान मन से मालुम होती है। जब तू अचेत होकर खूब निन्द्रा में सो जाती है, स्वपन भी जब नहीं देखती, उस समय तुझे कुछ भी दुःख नहीं मालूम होता अर्थात् बिना देखी सुनी हुई बातें मनन न होने से तिसके सम्बन्धी हानि कहां मालूम होती है? अथवा जिसमें मोह आदत अपनेयत नहीं मानी है उसके न मिलने

कल्याण के लिये तो गुरूमुख बानी का मनन ही काफी है, यही सांचा गुरू निर्णय ही मेरा

या हानि होने पर कहां दुख होता है। इससे सिद्ध हुआ कि हानियां दुःख का मूल मनद्वेग ही है, सो मनदेह इन्द्रियों के सम्बन्ध से है। बिषयासक्ति त्याग द्वारा देह न बने तो मन कहां यदि मन नहीं है। तो दुख वा हानि ही क्या, जब कोई दुःख ही नहीं; तो सृष्टी न होना दुख रूप या सुख रूप ही हुआ। अरे तू बिना समझे ही स्वप्न जल में डूबकर वृथा दुखी हो रही है। देख हे स्त्री विचार कर—कि रोग ही के लिये तो दवा की जाती है, जो बिना दवा ही रोग चला जाय तो क्या पूछना है—"बिनमारे बैरी मरे, ठाढ़े न ऊख बिकाय" वाली दशा हो जाय। मन के अन्दर जो काम क्रोध की बासनाएँ हैं वही संसार है। बिना उस संसार के मिटे बाह्य संसार कैसे मिटेगा। पहिले तू अपना मन काबू कर, तब फिर शृष्टि

सिद्धान्त अटल रूप से है, और सर्व जिज्ञासुओं को यही ग्राह्य है—हाँ सर्व भ्रमिक सिद्धान्तों को त्याग कर केवल रहस्य साधक बातें सर्व की ग्राह्य हैं। क्यों कि—दोहा—

"ग्रंथ पन्थ बहु भांति के, प्रचलित हैं जग मांहि।
वृथा सकल सत्त असतके, जहँ बिचार कछु नांहि॥
यामे सत उपदेश है, यथा शास्त्र परमान।
भव बन्धन से मुक्ति को, सत्य पन्थ वह जान॥"

इस प्रकार अब तो हम गुरू का जो पारख

भर की चिन्ता कर। तेरा कहना तो ऐसा हुआ कि—दोहा—"रोगी कोसै वैद को, सबै अरोगी होंय। तो बैदाय बेकाम भौ, भला कहै अस कोय" जैसे उनमाद रोगी सदबैद को कोषने लगे कि तेरी दवा से सब रोग रहित हो जाँय तो तू किस की दवा करै। या तेरा कार्य कैसे चले—तो उस मूढ़ से सदबैद कहते हैं अरे तेरे सामान पागलकी सी बातें कौन कहेगा। कौन रोग

ज्ञान है उसी को मनन चिन्तन करते करते उसी

पीड़ित मनुष्य रोग से छुटकारा नहीं चाहता है। यदि रोग न होता तो बैद की क्या जरूरत है? तब तेरा तो परिश्रम ही पुर्ण हो जाता, बैदाय की फिर जरूरत ही न पड़ै। बस इसी प्रकार इस शरीर में, काम क्रोधादि यही बड़े रोग हैं, जन्म जरा व्याधि मृत्यु बार बार इसी बासना से होते हैं। यदि सब कामनाएँ नाश हो जाँय तो फिर इससे वढ़कर और क्या है। पर इन सब बातों की तुझे कहाँ समझ है। क्यों कि परमार्थ भी एक बिद्या है, उसको सच्चे संतो के सत्संग बिना तू क्या—कोई भी नहीं पा सक्ता है या नहीं समझ सक्ता—अरी बावली अभी तू साधु सत्सङ्ग में प्रेम करे तो भी यथार्थ समझ होकर तुझे शांति सुख मिल जाय। प्रश्नोत्तर सा०।

राख पड़ै वही समझ में, मन को राखै मारि।
मन तो मारन सबहिं को परबश या बश टारि॥

में तदाकार हो रहेंगे और जितने गुरुदेव के

स्त्री बोली—धूल पड़ै अङ्गार लगे मैं उस बात को नहीं समझना चाहती हूँ। जिसमें मन को मारि २ कर रखना पड़े तुम्हीं इसमें मरो। पुरुष बोला अरे अबले तू क्या—सारा संसार ही इस मन को मारने के लिये हैरान है। मन सबको मारना पड़ता है, तू अपने मन को पुर्ण करने के ही लिये सब कार्य करती है। चाहे कुछ दौड़ के आगे हद्द न देखकर गिरके रुकै या चाहे पहिले ही से सर्व विषय सुख मिथ्या जान कर रुक जाय, पर मन की चालों को मिथ्या समझते हुए जो अपने मन को अपने बश कर लेता है और सर्व इच्छाओं को हटा देता है वह सदाके लिये अरोग्य होकर मन की बेगारी से छुट्टी पा जाता है—और जो विषयों को भोग-भोग कर शक्तिहित होने से रुकता है वह हद रोगी के समान दुखी ही रहता है। जैसे कोई नांच देख २ नेत्र थकने

पर रुक जाता है, पर वह रुकना कुछ पुर्ण होकर नही हैं, क्योंकि इससे फिर चौगुनी इच्छा बढ़ेगी और जो समझ लिया कि इच्छा होना ही दुःख है, इच्छा मिट जाना ही सुख है, तो इच्छा हमारी पहिले से ही बुझी बुझाई है मैं क्यों आदत बनाऊँ। अथवा बनी हुई आदत को त्याग द्वारा ही मिटा कर मैं सुखी होऊँगा, ऐसे बिचारशील की इच्छा सदा के लिये पुर्ण हो जाती है। हे मोहजाले तू समझती हैं कि मन न मारना पड़े तब सुख हो यह तेरी महान भूल ही तुझे अनन्त कष्ट देती है। तू चेतकर देख तो जरा, की मन को तो जितना चाहना है, या मन जितना चाहता है और जितना पायगा उतनाही बढ़ेगा। फिर तो मन अच्छे अच्छे बिषयों को रात दिन चाहता है, सबका धन, सबका रूप, सबकी प्रभुताई, सबका सुख यहाँ तक जो ब्रह्मांड भर जो तेरे आगे

चिन्ह हैं उन सब को हम बड़े प्रेम से धारण करेंगे

रखदें तो भी मन मारना ही पड़ैगा, क्यों कि मन को कल्पनायें अनंत हैं। जितना हो जो मन का कहा करता है उतना ही उसको मन मारना पड़ता है, क्यों कि उसका मन बालक के समान सर्वदा शहनरहित हो जाता है। अब मैं तुझसे बिशेश क्या कहूँ क्यों कि तू ठहरी स्त्री अज्ञ स्वभाव की? हाँ अगर तुझे सत्य सुख पाना है तो तू अपने मन को स्वशता सहित जीत और सुखी हो, मैं तेरे हितकर बचन कहता हूँ। स्त्री आँखे चढ़ाकर क्रोध भरे बचन बोली। मैं बहुत प्रपंच नहीं जनती हूँ, मैं तुम्हारा आगे त्याग बताऊँगी, इससे तो अच्छा है कि तुम मर जावो या कही चले जावो। इस प्रकार स्त्री का बात सुन कर पुरुष बोला—कि तू दुख मत मान, मैं मरने ही का ठाठ ठठ रहा हूँ—फिर जैसा हो, इत्यादि बाते स्त्री पुरुष मे चलती रहती थीं।

।।४।। कानों को अच्छे लगने वाले जगत के सुन्दर-सुन्दर राग-रागिनी, विषयासक्ति के पुष्ट

कामी नरनारियों को धन, वस्त्र, भोजन, मान, सत्संगादि का चाहे जो सुख हो, पर एक वही जगत मुलक भ्रमभोग-सुख न पावें तो वे कधी सन्तुष्ट नहीं होते। त्याग बृत्ति के कारण देवदत्त से स्त्री सदा असन्तुष्ट रहती, स्त्री को निश्चय था कि साधु महात्माओं के संग से ही इनकी मति बिनड़ गई है, याते विसेश कोप उसका सन्तों पर ही रहता था। परन्तु सबसे विशेश अधिक कोप तो देवदत्त के गुरू पर ही था। क्योंकि कहा है कि "वैष्णव कंत अवैष्णव नारी। ऊँट बैल कर जोत विचारी"। के तद्वत देवदत्त दिन बिताते रहे। कथा वार्ता सुनने के लिये सत्संगमें ग्राम के अनेक स्त्री-पुरुष आये थे, शिच्छा के अनुसार अपने सुधार निमित्त पूर्ण प्रयत्न में सब लग रहे थे। पर देवदत्त की स्त्री को तो घर ही में रहते

करने वाले अनेक छन्द-प्रबन्ध, श्लोकादि की।

भी कुछ सत्संग का असर नहीं पड़ा। "कहुँ श्रधा बिन शिक्षा लागत।" के अनुसार उसको को तो संत महातमा बैरी-सा जान पड़ते थे। एक दिन द्विज देवदत्त कहीं गये थे, संयोगबस गुरुदेव आ गये, भीतर जाकर पूछा कि पण्डित देवदत्त कहाँ है। गुरुदेव को देखते ही स्त्री जल गई, फिर धीरज धर के बोली--महाराज प्रणाम। थोड़ा सोचकर—स्त्री तुरन्त बोली कि महाराज। आप के शिष्य तो न जाने किस कारण से पागल हो गये हैं। वे पहिले जिन जिन इष्ट-मित्र गुरुजनों से प्रेम करते रहे, अब कहते हैं उन्हें मैं मार डालूँगा, इस प्रकार बकते हुए आप के शिष्य तो गड़ासा लिये घूमते हैं। कहीं ऐसा न हो जाय कि आप मिल जाँय तो मार डाले। क्योंकि सीड़ी सौदाई का कौन ठिकाना। गुरू बोले--यह बात साँच है। स्त्री बोली—अरे महाराज आपसे भी झूठ।

व्याख्या, सितार ढोल तबला मँजीरा और हरो-

उनके गुरु तो हमारे गुरु भी हो। गुरु से कपट साधु से चोरी की होय निर्धन कि होय....” इतना सुनते ही गुरु महाराज, पोथी आसन, पात्र सब उठाकर चल दिये। इतने में देवदत्त घर को आये स्त्री बोली–तुम्हारे गुरू आये थे। पुरुष ने कहा–तो क्यों सम्मान नहीं किया। स्त्री—सम्मान क्यों न करती? पर वे एक गड़ासा माँगते थे कोई उनका काम रहा होगा, मैंने तुम्हारे बिना नहीं दिया। पुरुष—अहो तैने बड़ी भूल की। गड़ासा क्या मेरा तन, मन, धन आदि गुरुदेव को निछावर है। स्त्री–यह सब मुझे नहीं मालूम पर अभी बहुत दूर नहीं गये होंगे। पुरुष गड़ासा को हाथ में लेकर दौड़ा, दौड़ते-दौड़ते गुरु को गाँव के सरहद पर दूर से देखा। हाथ उठाकर गड़ासा देखाते हुए देवदत्त पुकारता जाय। गुरु-गुरु। स्वामी ठहरो–ठहरो॥ गड़ास ले लो। घूम

मुनियाँ आदि भजन कारों से काम क्या बनैगा?

कर गुरुदेव ने देखा, तो स्त्री की बात ठीक निश्चय हो गई। गुरु प्राण संकट जानकर पात्र, आसन, पुस्तक, आदि सब वहीं डालकर जल्दी २ भाग खड़े हुए देवदत्त गुरु के भागने का हिसाब जान न सका, गुरु की सब वस्तुएँ घर लाकर स्त्री से बूझा की गुरू के भागने में क्या कारण है। स्त्री बोली-तुम जानों गुरू जानें, मैं कुछ भी नहीं जानती हूँ। पंडित बहुत उदास होकर गुरू स्थान में गया, तब भी गुरू उससे डरते रहे। देवदत्त ने पूछा, आप क्यों डरते हैं, गुरुदेव पुर्व का सब हाल कह सुनाए। देवदत्त स्त्री के बर्ताव को सुनते ही अधिक कष्टित हुआ, और हाय शोक हाय शोक करके रह गया, देवदत्त ने मन में कहने लगा, अहो इस माया-चरित्र को कोई सुनता है। मेरे शिर पर बीतता है। ऐसी दशा में तो वह हमें मार भी सकती है, मुझे धिक्कार है कि जो

सिवा आसक्ति बंधन बढ़ने के। इससे तिनको

छल मूर्ति माया की ममता करके मैं गृहजाल में फंसा पड़ा हूँ। पंडित जी अपने मन से कहने लगे कि हे मन। तू स्त्री के बाहरी प्रेम में मत भूल यह बिजुली वा नदी के प्रवाह की तरह चञ्चल हैं। अहो, मन इन्द्रियों के वशवर्ती इस संसार में कामी नर-नारियों का कोई विशवास नहीं है। जो आज अपने हैं। वे दूसरे क्षण पराये हो जाते हैं। हे मन। यह, उत्तम। सीख स्मरण रख। दोहा—"उरग तुरग नारी नृपति, नर नीचो हथियार। तुलसी परखत रहब नित, इनहिं न पलटत बार॥" इस प्रकार देवदत्त बिचार कर रहा है कि गुरू से भेद करने वाली या भेद कराने वाली और मोह करकें विषय प्रपञ्च में बाँधने वाली शोक मोह मूलक योषित का अब तो सर्वथा त्यागकर कल्याण पथ में आरूढ़ होऊँगा। ऐसा दृढ़ निश्चय करके वह निज स्वरूप के स्थिति साधन

तज कर गुरुदेव के श्रीमुख से निकली हुई देशी-निर्मान भा-षा ही की "अमृत अमर पारख ज्ञानका सत्य सत्यामृत" कथाओं को हम बड़े प्रेम से सुनेंगे और ग्रहण भी करेंगे—साखी।—नित्य रूप जेहि वाक्य से जाने ठहरै रूप। सोइ

में एक चित्त से लग गया। विशेश करके नारियें को प्रमार्थ ज्ञान न पुष्ट होने से वे परमार्थ में काम क्रोध लोभादि बढ़ाकर रुकावट किया करती हैं। इस लिये यहाँ मुमुक्षु पुरुष कहता है कि मैं वाम बिनोदार्थ कार्य नहीं करूँगा। परन्तु अज्ञानी पुरुष स्त्री से कम नहीं हैं। यदि स्त्री को मोक्ष की तीव्र इच्छा हो तो पुरुषासक्ति को युक्ति पूर्वक हटानी पड़ैगी। स्त्री पुरुष दोनों के लिये युवति का भाव हुआ-मैथुन वा पाँचों विषयों की चाह और क्रिया सो, मोक्ष इच्छुक कल्याणार्थीं नर-नारी दोनों को बन्धन दायक क्रिया से अलग होना चाहिये।—यों तो स्त्री हो पुरुष हो मुक्ति

विद्या गुरुदेव की, हरत सकल भ्रम कूप" ॥५॥
अब गुरु की दया से मन की अटपटी चालों को देख-देख कर हम थक गयें हैं, कायल हो गये। 'इससे' अब हमने निश्चय कर लिया कि इस दगा बाज मन का कहा एक भी नहीं मानूँगा अब तो गुरुदेव कि दी हुई जो 'अमृत रूपी' सद विवेक आदि सुबुद्धि है उसी में मैं लुब्ध हो रहें हैं। वस अब गुरु बुद्धि, गुरु बिचार ही से हमारा कल्यण हो जायगा। क्यों कि– साखी–
"कबीर यह मन लालची, समझै नहीं गवाँर।
भजन करन को अलसी, भोजन को हुशियार॥"
जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौर। सहजै

होने का खाश इच्छा हो तो सारा संसार और देह कि, आसक्ती नाश कर, पारखी गुरु का सत्संग कर, पारख पद को, ठीक ठीक जानकर, इसी जीवन में, अमूल्य अमर मुक्ती पद प्राप्त करना परम आवश्यक है।

हीरा निपजै, जो मन आवै ठौर ॥ सा० ग्रंन्थ—ऐसे मन का कहा न मान कर गुरु बिबेक से ही, हम कार्य करेंगे ॥६॥ जैसे अच्छी से अच्छी लगने के लिये औषिध नहीं खाई जाती, बल्कि रोग निर्बृत्ति के लिये मीठी या कटु ही योग्य औषधि ग्रहण की जाती है, तद्धत केवल मन को अच्छा लगने के लिये ही हम स्वादी वस्तुओं को नहीं ग्रहण करेंगे, बल्कि देंहरत्तार्थ स्वादिष्ट अथवा साधारण पदार्थों में भी संतोष पूर्वक आसक्ति रहित बिचार संयुक्त शुद्ध अंकुरज मात्र भोजन ग्रहण करेंगे ॥७॥ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध, ये पांचो विषय अग्नि के तुल्य जीव को जलाते रहते हैं। अग्नि जब छू जाय तब ही जलाती है, और इन विषयों की कामना या बासना तो अनंत काल से आज तक जलाती ही रही है और आगे भी बिषयाग्नि का सम्बन्ध रखने से जलाती ही रहैगी। अतः अब गुरुदेवके मिल जाने से हम अपने को विषय बासना रूप

अग्नि से बचा लेंगे, जलते हृदंय को गुरुदर्शन रूपी जल से संतोष रूपी शीतलता आ गई। इस लिये हमें गुरुदर्शन ही नित्य चाहिये ॥यथा। "करि हरि मीन कुरंग पतंगा। इक इक बशि बिसरत सब अंगा, सब के बशि सो किमि सुख पावै। तेहि ते मो मन दूरि रहावै॥" बि० ॥८॥ धनसंग्रह* और अन्य ऐशर्वय दुखकी सामग्री को

---

*टि०—धनवृद्धि ही अधिक करके और तिसके रक्षण में लगे रहने से साधु-संग करने का मौका ही नहीं मिलता और साधु सत्सङ्ग बिना सदगुणों की प्राप्ति भी नहीं होती, और सदगुण बिना सुख नहीं होता इस लिये अधिक धन की तृष्णा छोड़कर निर्बाह के लिए मर्जी माफिक धन्धा करके हानि, लाभ में सन्तोष रखते हुए संत-सत्संग से हम कल्याण करेंगे, और सर्वथा कल्या-णार्थी बिचारें—दोहा—"तीन गती हैं द्रव्य की, दान भोग अरु नाश। कोपैं ताड़ै भ्रात त्रय,

हम ऐकत्र नहीं करेंगे, क्यों कि—श्री गुरु कृपा के प्रताप से मुझे अजर अमर अखंड संतोष रूपी अमर अखँड ज्ञान—धन की प्राप्ती हुई है, उसी में हम मस्त हैं। कहा भी है—"जब कौड़ी की रूचि भई तब कौड़ी को होय। जब कौड़ी की रूचि गई, तब कोटिध्वज सोय" ॥ संतो० ॥ ६ ॥ किसी मन के अनकूल भी, 'हर एक सुखदाई साज या, दास दासी या अन्य मायाकी, और मायिक पदार्थों में हमें ममता नहीं है, अथवा हम ममता नहीं बाधेंगे ! ममता मोह ही बोझा

जहाँ न जेठा बास ॥१॥ लोभ तजे बिन सुख नहीं जिमि पानी को नाव। है उदार शुचि उल्चिये, नहिं तो डूबी जाव ॥२॥ इससे आश्रमवान, या कोई भी सम्पत्ति वाले को उदार होकर दान धर्म सम्मान करना चाहिये जिससे कि द्रव्य दुरगुणों से बचावा होकर सन्मार्ग ग्रहण होता रहे, या होता है और बिरक्त को तो सर्वथा लोभरहित होना ही चाहिये।

है, सब बन्धनों की जड़ है। सब जालों में धँसा देने की मोह में शक्ति है, याते सब में मिलौना मोह को हम गुरु की दया से त्याग कर देंगे,— जिससे मोह सम्बन्धी सर्व दुःखों से हमारा पीछा भी छूट जायगा ॥१०॥ पूर्वोक्त मन की चालों को हम त्याग कर और गुरुमतानुसार साधन संयम सहित स्वरूप बोध में टिकाव ही गुरु ब्रत है—ऐसे गुरु ब्रत को ग्रहण करके गुरु के चरणों में अपने मन को भेंट देकर हम संसार चक्कर से पार पा के मोक्ष रूपी घर में सदा के लिये। हम अपने ठौर ठिकाने पर अचल निराधार हो रहेंगे। जिससे फिर दुखावर्ण मनोमय से भेंट न होगी। यह सब बन्दी छोर श्री सदगुरु के मिलने का ही प्रताप है। धन्य २ गुरुदेव-धन्य-धन्य गुरुदेव— जय-जय गुरुदेव—

॥ दोहा ॥

(१)

भक्ति किहे भ्रम भूल गय, दास अभय पद पाय।
यहि ते भक्ती ही करौं, सदा सर्वदा धाय ॥

(२)

पारख गुरुवर सन्त की, भक्तिमुक्ति दय देत।
तेहिते चतुर सयान जन, प्रथम भक्तिलय लेत॥

(३)

अमर अमर पद भक्ति से, पाय गया यह दास।
आगे दुःख अनादिका, गया सकल यम त्रास॥

भक्ती और सत संग प्रेरक,

॥ गजल २ ॥

(पहिला गजल)

गुरु भक्ति में मन को डटा करके, सतसंग करो सतसंग करो। विषयों से मन को हटा करके, सतसंग करो सतसंग करो ॥टेक॥ अन-मोल ये औसर आज यहाँ, गुरु संत के संग से बंध रिहाँ* । तन मन गुरु मो लौ ला करके, सत-संग करो सतसंग करो ॥१॥ जड़ बस्तु से चेतन भिन्न रहै, पर पंचन में फंसि द्वन्द सहै। पंच भोग से दिल को घुमा करके, सतसंग करो सतसंग करो ॥२॥ अपना निज रूप निराला है,

* छुटकारा

पर विषय में पड़ि मतवाला है। तिन सर्ब से वृत्ति हटा करके, सत संग करो२ ॥३॥ चैतन्य के बाद न कोई और, देखो हृदय करि आप गौर। सब भर्म से लच्च मिटा करके, सतसंग करो सतसंग करो ॥४॥ गुरुदेव कृपा जस द्रिष्टी सुझा, तस संत शरण कहता है बुझा। सज्जन जन तुर्टी छमा करके, सतसंग करो सतसंग करो ॥५॥

(दूसरा गजल)

मन का अभिमान हटा करके, गुरु भक्ति करो सतसंग करो। गुरु पारख शरण में आकरके गुरु भक्ति करो सतसंग करो ॥टेक॥ दया धीर बिचार को गहिये सदा, निर्मान सबन से रहिये सदा। नम्र मीठा वचनको बना करके, गुरु भक्ति करो सतसंग करो॥१॥ जिव शत्रुये काम औ क्रोध महां, बिरथा जीवन मति खोवो तहां। सतसंग में हर्ष बढ़ा करके, गुरु भक्ति करो सतसङ्ग करो ॥२॥ गुरुदेव शरण में आवो जरा, बिगड़ी जीवन को बनावो जरा। दया धर्म से पुन्य कमा

करके, गुरुभक्ति करो सतसंग करो ॥३॥ यह मान भोग जग दुखदाई, गुरु संत दया करि दर्शाई। तिन बचनो पे ध्यान जमा करके, गुरु भक्ति करो सतसंग करो ॥४॥ जिव के दुइ बन्धन भारी है, यक गुरुवा और यक नारी है। इंन दोनो से पीछा छोड़ा करके, गुरु भक्ति करो सतसंग करो ॥५॥ प्यारे चेतन जीव तुहीं है सही, तब बाद और सब द्वन्द रही ॥ निजरूप में प्रेम डटा करके, गुरुभिक्त करो सतसंग करो ॥६॥ गुरुदेव कबीर कि कहना है, गहो सार न भव में बहना हैं। बर हंस रहिनि नितला करके, गुरुभक्तिा करो सतसंग० ॥७॥ ग्रेही या यती षट भेष कोई, ।गुरु पारख संग उबार होई। कह संत शरण समुझा करके, गुरु भक्ति करो सतसंग करो ॥८॥

गुरु के दया से चौथा प्रसंग,

॥ गुरू भक्ति लक्षण समाप्त ॥

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

पंचम प्रसंग प्रारंभ

सद रहस्य युत बैराग्य का कुछ अंग

वर्णन

हे परम प्रिये हमारे जीव तेरा धन्य २ भाग्य है, जो पतित पावन पारख गुरू मिल गयें हैं, जिससे कि तूं अब सर्व द्वन्दों से रहित निर्द्वन्द हुआ ! भला इससे बढ़ करके और क्या उतसाह होगा—

॥ हरी गीत छन्द ॥

अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले ।टे०।

(१)

हाय मैं हत भाग्य हो जग आग में झुलसा गया
सारा बदन था खाक तो जी जानसे घुलता भया
तब भी अहंमें था गड़क यद्यिप बिपति घर में हले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(२)

युग-युग में सबके मेल में जग जेल में छेंका गया
जीवन के कारा बास सम चौखानि में ठेंका भया
मानों अग्निके भट्ठि पर हम नित उछल करके जले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(३)

दुख घनेरी पाय करके सबसे तरपांसा गया
मैं अनेरी हाय सबसे दिन बदिन गांसा गया
जो-जो मिले दुख यस दिये जस शीशपर पत्थरढले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(४)

प्रांणी पदार्थ लोग जैसा शोग में हमको किया
वह जी हमारा जान्ता जैसा वो गम हमको दिया
ऐसी दशा मेरी किये कांटा कलेजा पर खिले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(५)

दुःख का दम भर रहा नाकों चबाता था चना
ऐसी मेरी हालत हुई नर्कों कि कीड़ा तक बना
सब खानियों में घूमते तन छोड़ कर करके चले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(६)

इस तरीका का बिपति पाया अनादी काल से
कुछ दुःख ना बाकी रहा धाया मन दी जाल में
वह याद आता है जरा हृदय मेरा थर थर हिले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(७)

मुक्ति दाता सदगुरू दर्शन दिये हैं आन कर
साहेब बड़ा दाया किये दुखिया हमें पहिचान कर
मुक्ती अपाने देश में हमको भि ले करके चले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(८)

निजको कराये दर्श जो की शांति का भन्डार है
पारख सुनाये मन्त्र जो की मुक्ति पद निरधार है
बीजक लखाये युक्ति जिससे कामना सर्बस जले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(९)

अपने उजाला ज्ञान से मेरा भरम सब नाश की
चैतन्य आला ध्यान दें निजका मरम परकाश की
दर्शन हुआ निज रूपका उजड़ी चमन मेरा खिले
अनमोल यह उत्साह है जो पारखी गुरुवर मिले

(१०)

हमको बचा के काल से, स्वातंत्र जीवन कर दिये
उरमें दिखा के लाल धन सद्, मन्त्र पारख भर दिये
तबशांति सुख लहरा गया, जब दिब्यद्रिष्टी हियखुले
अनमोल यह उत्साह है, जो पारखी गुरुवर मिले

(११)

अब आज गुरुवर का सहारा, पाय कर ऐसा कहूँ
करि काज बन्धन गत होऊँ, भव में दुबार ना बहूँ
जैसे कठिन फन्दा रहा, तैसे छुड़ईया गुरु मिले
एसी सहज युक्ती किये, जिससे सरल बन्धन टले

(१२)

नर जीव जग में इष्ट माने, बहु बेगाने ही बने
प्रत्यत्त जाहिर कोइ नहीं, अनुमान में ही सब फने
अनुमान मन से मान कर, सब और ही जाते घले
अनमोल यह उत्साह है, जो पारखी गुरुवर मिले

(१३)

पर हमारे इष्ट तो, प्रत्यत्त जाहिर आप हैं
बन्धन अनादी का हरें, मेटे सकल संताप हैं
प्रत्यत्त बन्धन था मेरा, प्रत्यत्त गुरुवर जी दले
अनमोल यह उत्साह है, जो पारखी गुरुवर मिले

(१४)

सर्ब का शिरमौर पारख तख्त जब पाया गया
अथाह जस गुरुदेव का, यस जानकर गाया गया
यह अमर उपकार गुरुका, कर सकूँ चुक्ता नहीं
अहसान गुरुका है कठिन, बिनकहे दिल रुक्ता नहीं

(१५)

अब अमर बैराग्य पारख पारखी गुरुदेव का
नाहीं जरूरत अब तो है, इस स्वार्थी जगकेव का
पर भुलईया जीव अक बक, बात कहते हैं मुझे
मोंहि सहन सबका सर्ब कुछ, मोह में कोइ कुछ बुझे

(१६)

पर हाल क्या जानें मेरा, जब वे अनाड़ी लोग हैं
निन्दा करैं गाली बकैं, मारैं तो भी नहिं शोग है
जोर से फटकार कर, दुतकार या झटकार दें
कुछ भी हमारा छीन कर, दुरियाय के हटकार दें

(१७)

सबकि सब कुछ सहि हमें, अब प्यार है गुरुज्ञान में
नहिं गर्ज मन बश जीव से, ना मान ना अपमानमें
जो होय मेरे सम कोई, मेरा करैं पहिचान वो
बूझैं हमारे हाल को, जो मम हृदय दरम्यान मों

(१८)

वे ही मेरा पावैं पता, सब बे पता अज्ञान हैं
जग जीव कोई कुछ कहैं, उसका हमें नहिं ध्यान है
सब तरह सबका सहूँ, हरदम रहूँ निज देश में
हमको गुरू पारख दिये, दुख है जहाँ नहिं लेश में

(१९)

गुरुदेव को बलिहार है, सबसे छुड़ा हमको लिया
जग जाल में डूबा था कबसे, पर बुला हमको लिया
सबके झकझोर से खिंच, कोरे* में बैठाया मुझे
पारख प्रखा जग ब्रह्म दिखा, सब भ्रम समझाय मुझे

(२०)

लाखों तरह का जाल मन, गुरवा औ नारीका रहा
युग युग तो बहते आय, एहू जन्म में तईयारी रहा
पर पारखी गुरुदेव हम, बहते को नौका मिल गये
सबसे छुड़ा पारख दिये, तब शांति उर बाशा भये

(२१)

निज रूप पारख ज्ञान दे सब दुःखकर दीना दहन
पाकर अमर पद संतशरण उपकार गुरुवरका कहन

---

* गोद में।

त्रयलोक में गुरुदेव सम, संकट हटावन है कवन
इस हेतु मेरी है बिनय, मेटेव कठिन आवन गवन

पद (१)

धन्य २ गुरुवरकी महिमा, जो सब जाल देखाय दिये
अमर अमर मुक्तीपद जेहिमा, पारख लाललखायदिये
कामाग्नि परचंड ताहि, बैराग्य लखा बूझाय दिए
धनिधन्य गुरूधनिधन्यगुरू, आजादजगासूझायदिए

(२)

ऐसे दयाल गुरु कृपासिंधु के, दास पड़रहा चरण २
इस जगत ओरसे आश घुमा, एदास आणरहा शरण २
हे प्रभ आपके दयाद्रिष्टि, अबसृष्टि मनोमय खोय गया
जो लगी लालसाअन्दरथा, वहआजदयानिधिहोयगया

(३)

क्याकहैं आपके पारखको, जिसका प्रताप जग छायरहा
औरों की उपमा क्या देवें, सूरज भी बहाँ लजाय रहा
उस दिव्यज्योति पारखप्रकाश, प्रत्यक्ष आजही दर्शरही
जिसके हित सुरनरमुनि व्याकुलअमृतमुक्ती वहबर्सरही

(४)

अमृत मुक्ती निज पारखपद, यद्यपि प्रत्यक्षमें सन्मुखहै
पर अज्ञ नहीं लख पायेंगे, जो गुरुअज्ञासे मन्मुख है
जस नेत्रहीनको और काव, चाहे सूरज ला रख दीजे
पर रहा अंधका अंध वहाँ, उसके हित ज्यादाक्या कीजे

(५)

इस तरह जिसे सदगुन रहनी, बीचार नेत्र नहिं आयाहै
अमृत पारख पद होते ही, वह और २ बौआया है
जब पारखगुरू के संग रंगसे, दिव्य चक्षु है खुलानहीं
तब स्वतःअखंडितस्वयंमुक्तपद, समझमेंआवैभलाकहीं

(६)

हे भाय आज प्रत्यक्ष स्वयं, मुक्ती सन्मुख दर्शाय रहा
जो हंस रहनिको गहि लेते, वे सत्यमें मुक्ती पाय रहा
उन परम मुक्तजीवन पुरुषोंके, दयाद्रिष्टि जबपायगया
तब संतशरणके हृदंयमें, मुक्ती प्रत्यक्षपद आय गया

धन्य धन्य हे दीनदयालु

परम कृपालू सदगुरु, आपके कृपा दिष्टि को धन्य है-धन्य है । क्यों कि जो अमर अमृत मुक्ति

पद अनादि से नहीं मिला था, सो हे दया सागर सद्गुरुदेव, आप प्रत्यक्ष कर दिये हो—इससे आपके चरणों पर बार बार धन्यवाद है। अब यहां बहुतेक जगदासक्त जन यह समझ रहे हैं :— मुक्ति नहीं—केवल जगत को बिगाड़ने या अच्छा २ सुख भोगने के वास्ते, सब साधु हो जाते हैं— परन्तु नहीं २ सुख भोग नहीं बल्कि सर्व सुख भोग, जन्म मरण का महारोग है। ऐसा जानकर तिस रोग से पीछा छुड़ाने निमित्त, हम या सब कोई साधु होते हैं। सो आगे छन्द में देखिये।

॥ हरी गीत छन्द ॥

निजरूप अपना जानकर, सब त्यागकर साधू बने॥टे०॥

(१)

एक दिन का बात है, गुरु संत सब जाते रहे
दश बीस गुंडे बाज भी, यक तरफ से आते रहे
उनमें से कहता एक ए सब, पेट हित घर छोड़ दी
तब एक कहता सच कहूँ, बुद्धी लगे जस चोरकी

(२)

कोई कहै जी कुछ नहीं, पहिलेसे दरिद्र ये दीन हैं
घरमें ठिकाना ना लगा, तब ये दशा धरि लीन हैं
कोइ २ कहै जग के बिगाड़न, हेतु ये अगुवा बने
कोइ कहै ये सब निठल्ले, देश के ठगुवा बने

(३)

जब काम घर में ना सधा, तब आ गये बैराग्य में
धिक्कार है इन लोग को, जीवन गई आभागि में
ये कहेंगे क्या भला, जग जन्म हम पाये रहे
सुख भोगको भी ना किये, बृथा ये जग जाए रहे

(४)

कह–कहके ना२ दुर बचन, निन्दा किए हर तौर से
ऊपर ही ऊपर बक रहे, समझा नहीं कुछ गौर से
दुनिया कि उल्टी है मती, यस जानि करके सन्तसब
जो कुछ कहैं जो कुछ सुनैं, यस कहिके लीन्हा पंथसब

(५)

जब मार्गमें आगे चले, तब पड़ गया यक ग्राम है
बहु नारि नर लखिसन्तको, सब जुटिगए यक ठामहैं
तब एक कहता हाय ए सब, सन्त काहे को हुए
क्या कोई इनके न था, पलिवार सब इनके मुए

(६)

कइ लोग ने अर्जी किया, महराज बैठो सब जने
दीजै दया करके बता, काहे भला साधू बने
का नारि बिन साधू भये, कीना कोई पलिवार था
ये नवजवानी बीच में, साधू बने महाराज का

(७)

आग्रह बहुत करने है पर, तब संत बोले बैन हैं
सुनिये हे भाई जिस लिये, हम सबने साधु भैन हैं
थे कुल कुटुम्बी सब मिले, नारी मनोहर थी मिली
सब सुःखका मिलसाज था, धनजन अटारी भी मिली

(८)

सुख भोग आदि बहारमें, सब दिन गुजरता जा रहा
पर कठिन बन्धन मेरा, दिन-दिनहीं बढ़ता था रहा
बन्धन बढ़न का हेतु, मोहासक्त जग का राग है
यस जानि के निर्बन्ध हो, सबसे लिया वैराग्य है

(९)

देखो अनादी काल से बन्धन में हम जकड़े रहे
सुत बन्धु नारी मानकर हम खुद स्वयं पकड़े रहे
उन सबों में फँस के हम मुक्त मग अपना हने
अब त्यागि होऊँ मुक्त हम यह जानकर साधू बने

(१०)

देखो जगतमें जीव सबही एक एक में बन्ध हैं
सुख भोगमें गाफिल पड़े सतमार्ग से सब अन्ध हैं
त्यों बन्धमें हम अन्ध था लखि फन्द सब परित्यागकी
जग भोगकी ख्वाहिश मिटा रस्ता लिया बैराग्यकी

(११)

परचंड जग ज्वालाग्निमें मैं सदा जलता रहा
मानों मैं भठ्ठीमें पड़ा तहँ दुखही दुख मिलता रहा
स्वासों ही स्वांसों में हमारा दम निकलना चाहता
तिसपर सकल दुख बज्र सम मेरा कलेजा डाहता

(१२)

शिर अनन्तों दुख पड़ा जो नहिं वोरायेगा गने
सो दुःख दलने के लिये सब त्यागकर साधू बने
एक कौड़ी लाभ में मणिलाल हीरा खों गया
सुख एक क्षण भी ना मिला सतलाख पीरा होगया

(१३)

ऐसे दुरत्या दुःखमें सुख रञ्च मैं पाया नहीं
पर भोग्यमें लालित्य हो कहँ कहँ पे मैं धायानहीं
एक दमड़ी लोभ में हम नीच चमड़ी में सने
सो जब लखा गुरु के दया तब त्यागकर साधू बने

(१४)

वह भूल प्यारे क्या कहूँ नित शूल ही पाता रहा
ऐसी लाचारी थी मेरा दिन रो-रो के जाता रहा
पर अब हृदय मे ठान ली फिरसे न ऐसा दुख बने
सब दुःख दलि मलि मुक्ति लूँ इसके लिये साधू बने

(१५)

पर क्या हो ऐसा मर्म कोई संत ही जानै मेरा
जग जीव मोहासक्त हैं वै हाल क्या जानै मेरा
फिर भी नहीं परवाह है वै जीव कोई कुछ कहैं
पर मुक्ति अंतिम कामहित सबकी हि सहि सबकुछ रहैं

(१६)

जन्मरण गर्भाग्नि औ त्रयताप यह दुःख दारुणम
बैराग्य बोध औ भक्ति गहि ये सर्व कष्ट निवारणम
सर्व दुखसे ऊबकर प्रण यह न फिर व्याधू बने
हे मित्र जन जानो सही इस हेतु से साधू बने

(१७)

इमि बैन सुनि तब एक ने कहने लगा यस संत से
सुत पुत्र पुत्री नारि ही सुख स्वर्ग औ बैकुंठ में
सेवा वो देश समाज का करना यही तो मुक्ति है
तब फिर भगोड़े क्यों बने घर ही में ऐसी युक्ति है

(१८)

सुनि करके इतना बैनको फिर संत हंस कहने लगे
वाह जी हाँ आप तो जल मथिके घी चहनें लगे
गर तुम्हारा बच्न है, सुत नारि में सुख स्वर्ग का
सूकर औ बिल्ली स्वान कऊआ गिद्धको सुख सर्वका

(१९)

जो आप गड़हा में गिरा क्या देशकी सेवा करै
जो आप दुर्गुण से भरा वह और की बेवा करै
वह देश और समाज का क्या करि सके सत्कार है
दूसर को कैसे ले बचा जो बहि रहा भवधार है

(२०)

जो नेत्र अन्धा है स्वयं रस्ता वो क्या बतलायगा
जो आप भुखन मर रहा दुसरे को कैसे खिलायगा
जो मूर्ख औ अज्ञान है वह ज्ञान दे सक्ता नहीं
अनपढ़ पढ़ा सक्ता कहाँ तुम ही बिचारो तो सही

(२१)

जैसे कोई है मनुष्य मदिरा औ मांसको खात जब
दुसरेको मदिरा मास ना खाने कि शिच्छा देय कब
और जैसे कोई पापाचार करते फिर रहा
वह सत्य शिच्छा देय क्या जो आपही भव गिर रहा

(२२)

तैसे भला जो आपही सुत नारि में आसक्त है
वह और की क्या करि सकै जो आपही अजलस्त है
ग्रह धर्म से बर्तें अगर तो न्याय से यक राह है
जो आप घर में मुक्ति कहते ये गलत सल्लाह है

(२३)

जो त्यागपन को भगोड़पन जो आप ऐसा मान्ते
बैराग्यवानों* का रहस्य तो आप अभी नहिं जान्ते
पूरब में त्यागी जो हुए उनको जरा सुन लीजिये
बैराग्य बिन मुक्ती नहीं है ध्यान इस पर दीजिये

(२४)

गोरख वो ब्यास बसिष्ट शुक मुनि दत्त नारद होगये
गोपी चन्द वो भरथरी सुल्तान त्याग को किये
भरत जढ़ औ कपिल देव सनकादि ने बैराग्य ली
रघुगुण वो कर्दम बिदुर, अष्टा बक्रने भी त्याग की

---

*टि०—प्रश्न—बैराग्यवानों का क्या रहस्य है उसको आप बताइये—उत्तर—अच्छा जो बैराग्य-वानों का रहस्य बूझ रहे हो तो आगे छन्द में

(२५)

पुनीत मुनि कद्रू शिकन्दर, ये सभी त्यागी भये
विक्रमादित्य भर्तृहरि, जग छोड़ि बैरागी भये
पल्टू वो नान्हक और तुलसी त्यागि कै बैराग्य की
कबीर पारख रूप झंडा, त्याग का फहराय दी

भी समझिये और सुनिये—जिसे लगा बैराग्य उसे है माल मुलक से क्या दरकार। हुकुम हुकूमत तख्त सल्तनत को देता ठोकर मार॥ महल अटारी तात मात सुत भ्राता नारी कुल परिवार। स्वप्ना जैसा नजर आता है उसको सब संसार॥ जो कोई मिले इन्द्र की अप्सरा उसको भी देता ललकार। घर बस्ती को छोड़ कर एकान्त रहता निरआधार॥ शेर—

जगत का नहिं भोग मागै स्वर्ग का बासा नहीं।
फिकर जीने की उसे और मरण की संसा नहीं॥
मुक्ति ना चाहे वो ईश्वर दर्श का प्यासा नहीं।
खाश बैरागी वही है जिसके कुछ आशा नहीं॥

(२६)

और पारख रूप त्यागी संत गुवर हो गयें।
ब्रतमान में भी आज हैं जीते जो बन्धन खो दिये
प्राचीन में या आज के बैराग्य लीन्हा त्याग कर
शांति पद हासिल किये, दुख रूप जगसे भाग कर

देखिये तात इस प्रकार सकल पिन्ड से ब्रह्मांड तक का सर्व सुख तुच्छ जान कर जो निज स्वरूप ही में सदा शान्ति रहते हैं, ऐसो बैराग्य-वानों का रहस्य जानो, फिर तो श्रेष्ट आप बैराग्य-वान का रहस्य यह ही है—ऐसा आप जान लीजिये—

इस बचन को सुन कर वह प्रश्न—करता ने आप भी शुद्ध मार्ग में लग कर कल्याण करने लगा। धन्य २ बैराग्यवान के सदरहस्य हैं, जिसको सुन कर ही मात्र से कल्याण का कूक भी भर जाता है, धन्य २ गुरुसंत। (सत्य ही है) ममत्ता माया रहे न उसके जो कोइ ऐसा त्याग सुनै।
मुक्ति उसी की होय शब्द संतो का करके लाग सुनै॥

(२७)

जो शांतिपद हासिल किये दूसर को शान्ती देयंगे
जो मुक्त पारख रूप है वै मुक्त भी कर लेयंगे
जस एक कूंवा में गिरा अरु एक जगतिके पास है
तो जगति वाला ले बंचा ये सरतियाँ बिश्वास है

(२८)

अब कहो कूँवा में दोनों तब कहो कैसे बचै
त्यों बंधजन निर्बन्ध बिन भवकूप से किमि बचि सकैं
संसार का सूधार वे निर्बन्ध ही से होयगा
निर्बन्ध बिन सब बन्धजन ना ना बिपतिमें रोयगा

(२९)

माहांन कृपा द्रिष्टि सदगुरु संत का होता है जब
पूरब क भी संस्कार अपना शुभ उदय होता है तब
वे ही सुकृतवान जिव जग त्यागि हैं सक्ते सही
कोटिन यतन करिये तो जगमें लगि वे सक्ते नही

(३०)

नाहीं तो जगको त्यागिके बैराग्य कहँ लेते हैं सब
दुःख ही का बीज को संसार में बोते हैं सब
बहुतक नरों में कोई यक जग त्यागि बन्धन खोयंगे
दुख निवारक जिव उबारक धन्यमें वे होयंगे

(३१)

उनहीं के द्वारे देश और समाज का दुख जायगा
उनके सहारे जग्त में सब जीवको सुख आयगा
उनका ही महिमा धन्य निज दुख और के दुख हर रहें
अपने तो खुद मुक्तीलिये वाहि युक्ति सबको कर रहें

(३२)

उनकी कहा कोई गहै सोई सुखी हो जायगा
पारख गुरुवर के बिना सब दुःख में पछतायगा
धन्य महिमा पारखी सरकार संत समाज का
इस दास के कोई नहीं बस बल सहारा आपका

(३३)

संत शरण ने संत गुरु से जान पाया हाल यह
जन्मरणके बन्धन यही अरु मुक्तिपद के काल यह
तब छोड़ि झंझा जग्तका निर्बन्ध जीवनकर लिया
जस रूप तैसा जानकर तब शांतिपद हासिल किया

प्रश्न—क्या बैराग्य पद में दुख नहीं है—

उत्तर—यों तो दृढ़ निश्चय द्वारा-पक्का-पक्का बैराग्य पद जिसे प्राप्ती हो जाती है उनके द्रिष्टि

में, समस्त भूमण्डल का राज-काज जगह जिमदारी, यहाँ तक की माना हुआ स्वर्ग बैकुन्ठ और ब्रह्मलोक आदि का भी सुख। बिचारमान सच्चे पारखी बैराग्यवान को नहीं प्रतीत होता है, इसके बारे में आगे छन्द में देखिये, और दोहा—ब्रह्मलोक लौं भोग जो, चहै सबन को त्याग। बेद अर्थ ज्ञाता मुनी, कहत ताहि बैराग॥

—बि० सा०

॥ हरी गीत छन्द ॥

बैराग्य में परवाह का ॥ टेक ॥

(१)

पांचो विषय धन माल यावत नारि नर दुख रूप है
जाना गया सब भोग सुख मलमुत्र नर्क स्वरूप है
टट्टी वो मल सम जानकर त्यागा ये नर्की रास्ता
अमृत अमर मारग मिला बैराग्य में परवाह का

(२)

काम कीचड़ की सफाई कर दिया तन बीच से
दुख द्रिष्टि की बर्सा बर्साई कामिनी अति नीच से

सारा जहाँ दुखरूप लखि तिसका लगे फिर धाहका
जब चिन्तवन का चिन्ह नहिं बैराग्यमें परवाह का

(३)

क्रोध डाकू लोभ छलिया मोह ठग मारा गया
आशा वो तृष्णा डांयनी को डांटि फटकारा गया
बैराग्य ज्ञानाग्नि से सबको जलाया लाह सा
जड़ मूल से निर्मूल की बैराग्य में परवाह का

(४)

हरहंट चपल मन इन्द्रियों को कर दिया इस्थीर है
धीरज वो साहस शांति से बृत्ती बनाई बीर है
तन मन बचनको ली परख तब फिर बनूँ चरवाहका
इनका बेगारी तज दिया बैराग्य में परवाह का

(५)

हाकिम हुकुम राजा वो बाबू सर्व दुनियादार का
सर्बों से नाता तोड़ दी इन लोग से दरकार का
सम्बन्ध नाशी सर्व से बासी अमर पुरमांह का
अब तो कहो क्या पूंछना बैराग्य में परवाह का

(६)

सब भ्रम में अरुझे पड़े जग ब्रह्म ही कहि गावते
पारखी गुरुवर बिना सत मर्म भी नहिं पावते
फिर फिर जनम फिर २ मरण घेरा यही धरवाहका
नहिं बन्ध गत होते कभी बैराग्य में परवाह का

(७)

पर जिसे पारख मिला लीना परखि जग ब्रह्मको
गुरु पारखीसे जानि तजि दीना परखि सब भ्रमको
वह जीव पारख रूप खुद ही मुक्तपद निर्चाहता
तुलना में जिनके कुछ नहीं बैराग्य में परवाह का

(८)

अब तो अकंटक राज अपना मुक्तपद पाया गया
जब राग तजिके जग्त से बैराग्य उरलाया गया
फिर क्या कमीका नाम है जहँ तख्त शाहन्शाहका
सारा कमी पूरण हुआ बैराग्य में परवाह का

(९)

दुनियाँ कि दौलत दर्ब सबही गर्द धूरि समान है
पर क्या हो याही धूरि में मगरूर सर्बो जहान है
आखिरमें संग कउड़ी न जाये तब कहौ धन काहका
अस जानि सब आशा तजा बैराग्य में परवाह का

(१०)

सोचो हे भाई तन यही मिट्टी में जब मिल जायगा
बाहर बहाया जो गया गिद्ध स्वान कऊवा खायगा
नेमित न आज कि काल्ह हो इसका कहो है थाहका
यस जानि जगसे मृत्यु ली बैराग्य में परवाह का

(११)

नश्वर अमीरी ठाट तजि लीन्हा फकीरी ठाट है
अब गर्ज वन्दा क्या बनैं पदवी मिला सम्राट है
वह बनैगा दीन क्यों जिसके कमी नहि काह का
उन सा न जगमें है कोई बैराग्य में परवाह का

(१२)

चाहे अशनमें रूख सूखा भी मिले नहिं सोच है
दो चार दिन गर ना मिले तो भी न उसका खोजहै
जल फल या कोई भांति से प्रारब्ध है निर्बाह का
वह भी निराशाके तौर बैराग्य में परवाह का

(१३)

दुखसे चहे पीड़ित रहूँ तन टूक टुक भी होय है
चाहे अगर घुलघुल मरूँ रच्छक रहे नहिं कोय है
सब दुरदशा होते हुए बैराग्य है उत्साह का
साहस न रञ्चक हो कमी बैराग्यमें परवाह का

(१४)

बहु खोल करके क्या कहूँ चाहे ये तन छूटे अगर
बैराग्य पारख के तरफ जी जानसे जूटें मगर
जब मुक्ति अन्तिम मिल रहा पीछे हटूँ फिर चाहका
बस दृढ़ प्रतिज्ञा है यही बैराग्य मे परवाह का

(१५)

जब प्रेम था जग जीव से तब राग मे पागल रहा
संसारियो के बैनमे मैं नित बना बागल रहा
द्रिष्टी घुमा जगसे लिया फिरके धरूँ वो राह का
बस साफ कहना है यही बैराग्य मे परवाह का

(१६)

वेश्या सरीखा का कथन गुरु न्यायमे तो है नहीं
कथनी गहन रहनी रहूँ सत न्याय मेरा है यही
इससे फरक तो हैं नरक भुगतान चारो खानिका
रस एक रहनी हंसका बैराग्य में फिर हानि का

इसी के अन्दर दृढ़ प्रतिज्ञा

(१७)

चाहे जमी असमान हो असमान नीचे हो चहे
सिक्टा से चाहे तेल हो पानी को मथि घी हो चहे



दिन रात्री होवे चहे या राति दिन है जाय है
सूरज चहे पूरबको तजि पच्छिम तरफ उगियाय है

(१८)

जलधार चाहे अग्नि हों अगिनी चहे जलधार हो
चह घामके उत्ताप में बरसात का अम्मार हो
चाहे सकल जग उल्टकर तरका उपर हो जाय है
उत्तर चहे दक्खिन होवै पच्छिम पूरब हो जाय है

(१६)

यह सब अन्होनी हो न सक्ता है कभी त्रयकालमें
क्योंकी नियम परिपक्क है वह ना टलै कोइ हालमे
यह ना अनादी कालसे कभि हुआ है ना होयगा
यह सब असंभव युक्त है सम्भव तो कैसे होयगा

(२०)

पर यह अन्होनी होय जो तो भी मेरा प्रणहै यही
बैराग्य पारख से पृथक पल भर कभी होऊँ नहीं
जब चित फटा संसार से तब हो उधर खीचाह का
अंतिम दशा अब धर लिया बैराग्य में परवाह का

(१८)

मृत्यू लिया संसार से मुर्दा लखा तन मन सभी
जिससे भलामैं मर चुका वह ना गहूँ हरगिज कभी

जिसको बमनवत कर दिया चाहूं उसे फ़िर चाहका
हे मित्र जानो साँच यह बैराग्य में परवाह का

(१९)

अब जन्मने मरने कि कोई चिन्तवन करना नहीं
हम मुक्त पारख रूप हूँ फिर से हमें तरना नहीं
फिर २ जनम फिर २ मरण फेरा नहीं चवराह का
बन्धन टुटा सब दुख छुटा बैराग्य में परवाह का

(२०)

अबतो अडिग अविचल अचल चैतन्य पारख देश है
स्वाछन्द वो निर्द्वन्द अमृत सुःख दुःख न लेश है
अब तख्त पर हरदम बिराजूँ खुद स्वयं निंचाहता
तुलना न तीनो लोक में बैराग्य में परवाह का

(२१)

मैं मुक्त अपने रूप में संसार से नाता नहीं
पूरब रचित यह देह है सो छूट जायेगा कहीं
बस छूटते बिदेह मुक्ती फिर न झंझट काह का
निज आप आप में स्थिती बैराग्य में परवाह का

(२२)

तन मे न रहना चाहता पर क्या करें मजबूर हैं
जब तक मेरा प्रारब्ध है भोगन उसे जारूर है

जीते हैं जीवन्मुक्त फिर क्यों जाँय वो कूराह का
बस-पद अमर बस-पद अमर वैराग्य में परवाह का

(२३)

जो बन गया प्रारब्ध पूरब वेग से ये योजना
वह चाहते भी ना हुए वेबश परेगा भोगना
निशख होकर भोगि फिर धारा नहीं परवाह का
नितशान्ति सुख सरसा रहा वैराग्य में परवाहका

(२४)

कहना वो गहना और रहना एक सम तीनो करूँ
गुरु के रहस परतन निछावर तजि न तृण भर भी टरूँ
अब जनम जन्मान्त्रों का हो रहा झगड़ा खतम
तो संतशरण सतध्येय तजि दूजा न कहता खा कसम

(२५)

पारख गुरू वैराग्य औ निजरूप तजि अंते रहूँ
तो है सपथ चैतन्य का भवधार मे फिर फिर बहूँ
प्रण रोप कर हर स्वाँस में या दम निकलते यों कहूँ
वैराग्य पारख रूप गुरुपद में हमेशा ही रहूँ

(२६)

जिस हित लिया वैराग्य में पूरण हुआ सो कामहै
वैराग्य पारख धाम में अब हर घड़ी बिश्राम है

आना न जाना है कहीं लेना न देना ही रहा
निजरूप पारख में सदां के वास्ते मुक्ती गहा

॥ हरीगीत छंद ॥

नारी हि बन्धन रूप है ॥ टेक ॥

(१)

यहि देखते ही देखते विषका जहर चढ़ि जाय है
काम काला नाग आकर जीव को खौलाय है
नारी मदन तन पे चढ़ा नर हो गया भ्रम भूत है
तब होश सब जाता रहा नारी हि बंधन रूप है

(२)

कैसा गजब सिंगार करती मांस मज्जा देह में
हाड़ नाड़ी चाम के आसक्त करती नेह में
मल मुत्र पीब औ रक्तसब ऊपर से चाम तनूप है
हा-हा नरक की कुन्ड यह नारी हि बंधन रूप है

(३)

नौ द्वारसे बहता नरक जिसमें ये जिव गाफिल हुआ
धंस-धंस के नारी नेह में ये जीव भी जाहिल हुआ
आखिर में जा त्रयखानि अन्दर जीव को भूजूप है
हैं मित्र देखो ज्ञान से नारी नरक की रूप है

(४)

जैसे छली बाघिन कोई सो रूप धरि के गाय के
पेट भरने के लिये पशुवों के अन्दर आय के
सुन्दर गऊ को जान कर सब वो पशू दौड़े गये
धरिरूप असली खा लिया तब वो सभी मरते भये

(५)

देखिये ये भोग बस जाकर गवाँई जान है
तैसे ये नर पशु भोग मे सब हो रहे हेवान हैं
खाय कर आखिर में डारैगी नरक के कूप है
जल्दी बंचो जल्दी बंचो नारी हि बंधन रूप है

(६)

डांइन पिचाशिन नागिनी औ भच्छिनीयहि जानलो
है भच्छती जन्मादि से ऐसा हे नर पहिचान लो
देखो जरा बिचार कर ये सर्ब दुख का रूप है
काहे गवाँते प्राण जब नारी हि बंधन रूप है

(७)

सांप बिच्छू का जहर एकै दफे दुख होय है
नारी जहर से कोटि जन्मों तक गर्भ मे रोय है
इस में फंसो दुख में धंसों कब्बों चैन नहिं पावगे
जन्मरण चारो खानि में हा हा हि करते जावगे

(८)

सारे जहाँ को चूसकर भव बीच अन्दर छोड़ती
है पीव मज्जा नर्क में लेजा सदां ये बोरती
पढ़ अपढ़ विद्वान या नादान सबको धरूप है
बचता न नागिन से कोई नारी हि बन्धन रूप है

(९)

पीर पैगम्बर अवलिया औ मियाँ औ मोलवी
पंडित पुराणिक और वैदिक इन सबों पर पैर दी
चूमते हरदम कदम चाकर बने हैं नारि को
सबको घुमाती नाथ कर थप्पड़ शिरों में मारती

(१०)

डिप्टी कलट्टर जज हो थाना पुलिस कपतान हो
कामा असक्ती नारि में सब बन रहे दीवान हो
सबसे तो बनते हैं चतुर नारी से पागल मूक हैं
चमड़ी के रमड़ी में लिपट लेते विषम की कूक हैं

(११)

हाकिम हुकुम राजा वो बाबू सैठ साहूकार हो
नारी नरक के भोग में फिरते सदा बेजार हो
बादशाही तख्त भोगे पर विषय में चूर हैं
नारी तमाचा मार कर मुख सबके करती धूर है

(१२)

निर्धन दरिद्री औ धनी छोटे बड़े जितने बसर
करते गुलामी बाम की इस मोहनी वश होय कर
आखिर में करि सब दुरदशा डारै गर्भ के कूप है
हे मित्र मन होवौ सजग नारी हि बंधन रूप है

(१३)

सब भेष ना ना पन्थ में नारी मचाये जंग है
वहि राग में सब चूर हैं वैराग्य बिन सब भंग है
योगी यती तपसी औ मौनी छोड़ि सब त्यागी हुए
सब कर्म कर कर थक गये फिर नारिअनुरागी हुए

(१४)

ब्रह्म विष्णु महेश सब* नारी बिरह में रोय है
प्रथमें बड़े बड़ जो हुए बाकी बँचे नहिं कोय है
इन सब दिवाना हो बेगाना नारि के पीछे फिरे
तबऔर की कहना हि क्या अब बहुत गिन्तीको करे

(१५)

सबको किया है कैद अपने फन्द में भुलवाय कर
कीड़ा बनाती नर्क की चौखानि में रुलवाय कर
पुर्व मे यक संत श्री कब्बीर साहिब हो गयें
आपने नारी औ बानी को सकल जरि खो गयें

---

* टि०—खानी—वानी रूपी नारी से नहीं बंचे—

(१६)

आपने सर्वोच्च झन्डा पर्ख का फहरा दिया
खानी औ बानी को सकल जर मूलसे भहरा दिया
काया में होके बीर खुद कब्बीर कहलाये सही
पारख में जीवन मुक्त हो गर्भबीच में आये नहीं

(१७)

पर हाँ सहारा जो लिया उन परख पद कब्बीर का
बाल बाँका क्या करे बाना लिया जब बीर का
वैं ही सिपाही शूर हैं वैं ही बबर में शेर हैं
होकर सजग जी जान से हरदम रहैं मुख फेर हैं

(१८)

काबू न चलती सामने उनके ये नारी नीच की
वैं ध्यान में रखते यही फोट्ट अहै ये बीच की
चैतन्य जड़ के बाद में नर नारि भ्रम के रूप हैं
आसक्ति इसका काल है यों ही नरक की कूप है

(१९)

वो नर बचैं अावस्य हैं पारख तख्त पे जो खड़ा
सर्व आशा छोड़ कर पारख अमर में जो अड़ा
संत बोधक देव श्री गुरुवर नरायण के दया
पेंच सब परखाय दी मम काज अब पूरा भया

(२०)

त्रय लोकमे जो नहिं मिला दीन्हे दया करि संत हैं
संत गुरु के चरण रज शिर बार-बार नमन्त हैं
जो कवौं पद ना मिला वह आज गुरुवर से मिला
गुरुदेव के प्रताप से जन्मरण की द्वन्दी टला

(२१)

स्वर्ग वा वैकुन्ठ मुक्ती धाम जो सब मान्ते
प्रत्यक्ष तो मिलता नही हाँ हाँ करें अनुमानते
पहिले तो हम भी इन सभी में भूलकर हैरान था
ब्रह्म ईश्वर देव आदिक मान कर बेमान था

(२२)

सदगुरु मिले सद ज्ञान दीन्हे भ्रम हर लीना सभी
अंतः करण से आपने हम भूल तजि दीना तभी
तब अमर मुक्ती खुलाशा समझ पाया यार हम
खानी औ बानीका तड़ाका धर दिया सब भारहम

(२३)

हे भाय जन क्यों भूल कर जाकर पड़ेहो तुम उधर
होना सही गर मुक्त है तो जल्द से आवो इधर
क्यों भ्रमिकोंके रगड़ में हरदम झगड़ सहते होतुम
निजमुक्ति जीवन खोयकर काहे सकड़ रहते होतुम

(२४)

उत्साह है कल्याण का तो आईये गुरु ज्ञान मे
सतसंग ज्ञान को छोड़कर क्यों भ्रमते अज्ञान में
आज है मौका भले सत्संग करके जान लो
प्रत्यक्ष पारख लेव कर तब बात मेरी मान लो

(२५)

जल्दी मिलो जल्दी मिलो जल्दी मिलो गुरुसंत से
भ्रम त्यागो भ्रम त्यागो जान कर सत्संग से
आप के हित बात है हे तात सुन लीजै जरा
इसमे न पच्छा पात है हे भ्रात गुन लीजै जरा

(२६)

खुबगौर करके देखलो तब मुक्ति अधिकारी बनो
हृदय में धरके पेख लो तब मुक्ति अविकारी गनो
संत शरण पाया सहारा पारखी गुरु संत से
निर्मान होकर कह रहा कहता नहीं है हन्त से

(२७)

छूटना है बंन्ध से तो भागिये पर तन्त से
भ्रम से हटो निज पद डटो एक मात्र पारख मंत्र से
अब दिन उजाला आगया गुरुके दया परकाश है
धन्य गुरुवर संत को अब भौ कृतार्थ ये दास है

॥ हरी गीत छन्द ॥

वे ही सबों में वीर हैं ॥टेक॥

(१)

जिनके हृदयमें मुक्ति मणि आकर किया निजबास है
पांचो विषय ब्रह्मांड सुख रंचक हिये नहिं खाश है
जिनकी सुखाशा कट गई भव सिंधु से वै तीर हैं
मन पर विजय जो कर लिये वे ही सबों में बीर हैं

(२)

अमर पारख पाय कर जीवन सुफल वो कर लिये
सदगुण खजाना ज्ञान का अंतः करण में भर लिये
शाहन के शाहन पति वही सबसे हुए आमीर हैं
उनकी गया दारिद्र दुख वे ही सबों में बीर हैं

(३)

पटतर न कोई इस जगत भरमें नजर में आ रहा
सेवा में जिनके भूप से सुरनर मुनी सब धा रहा
ब्रह्माँगड पिन्ड में हैं नहीं जिसका मैं देऊं नजीर है
बास्तव में सुखिया हैं वही वे ही सबों में बीर हैं

(४)

सबसे निराला हो गये, नहिं जन्मना मरना उन्हे
सबकाम अंतिमकर लिये कुछ काम नहिं करनाउन्हें
बन्धन अगाड़ी है कहां सन्मुख न कर्म शरीर है
आसक्तियाँ सब छोड़कर वे ही सबों में वीर हैं

(५)

चाहे-कोई कुछ भी कहै सहि लेत हैं मन मार के
पर आप हाँ दुख किसी को देते नहीं फटकार के
सब पर छमा समता रखैं गहि हंस बुद्धी धीर हैं
होइके अमानी बर्तते वे ही सबों में वीर हैं

(६)

निन्दा वो अस्तुतिके परे पारख अचल बिश्राम है
मानन्दियाँ सब त्याग कर नित स्थिती के धाम हैं
चाहे कोई पागल गनै तब भी नहीं आधीर हैं
हैं शांति के बस्ते भवन वे ही सबों में वीर हैं

(७)

क्या कहूँ उनकी दशा उनके समान को और है
जग में वही विजयी हुए सबके शिरों के मौर हैं
रण चढ़ि पछाड़े शत्रु को अव्वल वही फक्कीर हैं
निज अमर तख्त को पा गये वे ही सबो में बीर हैं

(८)

धनि धन्य जीवन मुक्त वे सबसे हुऐ अब तीर* हैं
हम तो अधम पापी पतित तनके बने नित कीर† हैं
मद काम क्रोध के हो बसी सहता अनन्तो भीर हैं
हाँ छूट सबसे जो गये वास्तव में वे ही बीर हैं

(९)

मेरी है बुद्धी मन्द हरदम मोह में बेहाल हूँ
बैराग्य साधन भक्ति से हरदम रहा बेख्याल हूँ
फकीर का यक नाम है पर बना एक लकीर हैं
पर हाँ जो मुक्ती ले लिये वे ही सबों में बीर हैं

(१०)

है अटल बैराग्य जो वह मुक्त का सारूप है
जिन सक्सने अपना लिया फिर ना पड़े भव कूप है
सब बासना को दग्ध कर निज देश में जो थीर हैं
बन्धन तृण सम तोड़ दें वे ही सबों में बीर हैं

(११)

धन्य बोधक देव श्री गुरुवर नरायण संत हो
हम गरीब अनाथ की कीन्हा सकल दुख अंत हो

टि०--* पार † कीड़ा--

है सेव में हाजिर सकल मन बच ये सर्व शरीर है
तब भी उरिण ना हो सकूँ ऐसा दिये पद थीर है

(१२)

आप का माहांन है उपकार गुरुवर देव जी
नित बनी प्रीती आप से यहि मांगत बर देव जी
दूजा न अब मरना पड़े याही मरन आखीर है
संतशरण को गुरुपारकी ना कुछ करन तदबीर है

(१३)

जैसे मैं खाया चक्र है जड़ देश में अरुझाय कर
तैसे बिरागी सन्त श्री गुरुवर मिले हैं आय कर
सब जन्मका झगड़ा छुटा गुरुदेव दाया जानिये
हो ब्रह्म ईस्वर गुरु मेरे अब और किसको मानिये

(१४)

सब टेरते ईस्वर खुदा ढूंढ़े जुदा है जाय कर
ब्रह्म आदम ना मिले भटका फिरैं पछताय कर
पहिलेतो हमभी भूलकरकुलकुल गती* करिथकिगया
तीरथसकल करता सबनका नाम आदिक जपि भया

---

*—तीरथ आदि के बारे में, एक छन्द और दो ख्याल में देख कर भरम छोड़िये और

(१५)

सब कर्म करि हारि तब उदास मैं मन में हुआ
दुख ना छुटा त्रय तापका निराश मैं तन में हुआ

सांचे सद्गुरु में चित जोड़िये तब जीव का सांचा २ कल्याण होगा ऐसा जानिये—

॥ हरीगीत छंद ॥२॥

मेरे लियेतो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरवर संत हैं ॥टेक॥

(१)

जिनके हृदय में हर घड़ी पारख परम परश हैका
अज्ञान भ्रान्ती औ असत जड़ मूल सेती नाश है
जग ब्रह्म दोनो बासना तोड़े अनादी तंत है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर संत है

(२)

जीते जो जीवन मुक्त हैं सबसे सदा उपराम हैं
देह छूटे बाद जिनको जगत से नहिं काम है
रहनी लिये बैराग्य की सब काम कीन्हे अंत हैं
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर संत हैं

मनमें ये खटका नित रहा कैसे मेरा दुख जाय ये

---

(३)

जिनके बचन सत्संग सुनि जाता हृदय का पाप है
करते ग्रहण जिस ज्ञानको, मिटता त्रिविधि संतापहै
रहनी औ गहनी सब बिलच्छण सत्य में वे हंस है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर संत है

(४)

निर्मल-विमल-निर्द्वन्द औ जिनका मनोहर ज्ञान है
स्वच्छ वा स्वाच्छन्दसे निज रूपका नित ध्यान है
तिनके चरण रज में सदां सब तीर्थ गँग बसँत है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर सन्त है

(५)

तीरथ बरत जग बीच में जो मानते सब लोग है
पर है दिखवा ऊपरी भीतर बना सब शोग है
काम क्रोध हंकार दुर्गण का जहां नहि अन्त है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर सन्त हैं

(६]

जैसे कि यक सन्दूक है कपड़ादि उसमें है रखा
ऊपर चहे सन्दूक केतनो साबुनो से कर सफा

इतने में बन्दी छोर सदगुरु हर लिये दुख आयके

संन्दूक में साबुन लगाने से न कपड़ा साफ है
तैसे इधर लखिये सुजन यह सरतियाँ सत बात है

(७)

सन्दूक रूप शरीर चाहे बार केतनो धोईए
अज्ञानता नहिं दूर हो मन मैल कैसे खोईए
मनमैल जबतक साफ नहिं तबतक न दुखका अन्तहो
सो मैल करते हैं सफा प्रत्यक्ष में गुरु संत हो

(८)

पाप कटने के लिये तीरथ में धाते सब कोई
बद्री केदार औ द्वारिका चवधाम जाते सब कोई
सच्चे गुरू औ ज्ञान बिनु सब भूल कर भर्मन्त हैं
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर संत हैं

(९)

पर एक नाते ठीक है, की ज्ञान से वे हीन हैं
सद्ग्रन्थ संत के संग बिन, सदज्ञान धनसे दीन हैं
वे बिचारे ज्ञान बिन, बालक समा परतन्त हैं
पर मैं तो कहता सत्य में, ही श्रेष्ट तीरथ संत हैं

(१६)

मैं सर्व कुछ करि २ थका, पर पारखी गुरुदेव बिन

---

(१०)

संत गुरुको छोड़ि, कोटिन बार तीरथ जावई
भीतर कमल ना साफ हो, ना शांति पदको पावई
इस हेतु तीरथ से बड़ा, मोंहि संत गुरु दर्शन्त है
जो पाप के हरता अहैं, औ शांति निर्मल कन्त है

(११)

मेरा ये कहना है नहीं, तीरथ में जाना ना चही
पर जीव का कल्याण सद गुरु संत बिन पाना नहीं
कल्याण अपना चाहते, तो संत का संगत गहो
जानो असल तब बात, झूठा जाल में काहे बहो

(१२)

ब्रत रहते सब कोई, मन मारते नहिं लोग है
मन के रुकावट के बिना, करते सरासर ढोंग है
मन इन्द्रियों को रोकना, सच्चा बरत औ सार है
मन इन्द्रियों के शुद्धि बिन, रहना ब्रत बेकार है

सच्चा नहीं शांती मिली, अशांति में सबगेव दिन

---

(१३)

पर भुलईया जीव सब, भ्रम मार्ग में भूला फिरैं
तीरथ बरत दृढ़ मान कर, अज्ञान में झूला करैं
पर क्या हो सच्चा ज्ञान बिन,उनका नहीं कुछ दोषहै
सद ज्ञान रूपी नेत्र बिन, उसही में करते तोष हैं

(१४)

पर ज्ञान सच्चा होय कस,गुरु संत ढिग आते नहीं
सत्संग सदगुरु संत बिन, असली पता पाते नहीं
तीरथ बरत का फल वही, छूटै सकल मद हंत है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे हि गुरुवर संत हैं

(१५)

जिनके दरश औ,परश ज्ञान वो,ध्यान से,दुखजात हैं
सच्चेसै उनका मार्ग गहि के मुक्तिभी मिलजात हैं
ऐसे हि संत के दर्श से, दुख दोष पाप टलन्त है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ वे, हि गुरुवर संत हैं

(१६)

कोटिन चहे तीरथ करो,कोटिन बरत रहिये अगर
संत गुरुवर के सेव बिन, दुख छूटना दुस्तर मगर

पर जब मिले गुरुदेव तब, दुख हर लिये विकरालका

धाय धाय के चव तरफ, बिन ज्ञान के भटकन्त है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ, वे हि गुरुवर संत है

(१७)

जो कहो ऐसा कि क्या, तीरथ क जाना झूंठ है
तो पाप मनका जो अहै, तीरथ गये नहिं छूट है
अंतः कारण मन साफ हित, गुरुसंत आप स्वहंतहै
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ, वे हि गुरुवर संत है

(१८)

संत तीरथ से बड़े, श्रेष्टों क यह फरमान है
सत्संग तीरथ फल सहो, वेदों क यह परमान है
संतों के चरणों में बसे, मुक्ती औ तीर्थ समंत है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ, वे हि गुरुवर संत है

(१९)

बहु तक तो तीरथ जात हैं, अरु पूजतेभी, देव है
स्नान पूजा पाठ करते, देव का खुब शेव है
जड़ देवके बिसवास पर, औ जीभ के भी, स्वादपर
खाते हैं, मदिरा, मांस, भेड़ा और खसी को, मारकर

फन्दा सकल दिखला दिये, खानी वो बानी जालका

---

(२०)

करते कसाई काम, तो तीरथ गये से क्या भया
देव पूजिके खात मच्छी, कटि अकिल उसका गया
पर देव असली, संत गुरु, तिनसे तो, दूरि रहन्त हैं
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ, वे हि गुरुवर संत हैं

(२१)

सच्चा करन कल्याण, करिये प्रेम, गुरुवर ज्ञान से
तन मन भी निर्मल होयगा, गहिये दया जो जानसे
नहिं तो दयाअरुज्ञान बिन, सांचा ठौर मिलना कठिन
भटकोगे दर दर भूल वस, गुरु संत सच्चे ज्ञान बिन

(२२)

ना रोषकरिये सुन बचन, कहता हितयकर आपके
मेरे दरद आया सही, बहता चितय कर आपके
हितकर कहा यह आपके, पर आप जैसा समझिये
इसमें जबरियन कुछ नहीं, भावै सो वैसा कीजिये

(२३)

पर हाँ हमारा फर्ज जो, कहना हमारा काम है
भईया मुनासिब बात हो, करना तुम्हारा काम है

खुब समझ लीजै भले, करिये जो दिल में जँच है
मेरे लिये तो श्रेष्ट तीरथ, वे हि गुरुवर संत हैं
(२४)
मैं भी तो भाई, भूलकर, नाना जगह भटका किया
बहु देव देवी मानकर, ईसादि में लटका किया
पर जब मिले गुरुदेव तब, सब भ्रम परदा टार दी
तबसे लिया उनका शरण, औ पद भि सच्चा सार ली
(२५)
उनके कृपा औ ज्ञान बल, हम जाल सारा छोड़िया
गुरु के चरण मे आपना, सच्चे से मनको जोड़िया
धनि धन्य गुरुवर के दया, मेरा छुटा भटकन्त है
इस हेतु से मेरे लिये, सब कुछ वही गुरु सन्त हैं
(२६)
तन निर्मल उनके सेव से, मन निर्मल उनके ज्ञानसे
जीव निर्मल होत है, श्रीसदगुरू के ध्यान से
सत्संग उनका ज्ञान सुनि, परिवार निर्मल होत है
गुरु का रहस ग्रहण किये, सुखसार निर्मल होत है
(२७)
गुरु का परखपद पाय कर, जन्मरण भी मिट जात है
जिव मोच्छ में बिराजता, गुरुदेव का प्रताप है

तब भ्रम पर्दा फट गया, पाया परख उजियार जब

ऐसे गुरू औ संत का, मम कोटिशः बन्दन है
मेरे हो सब कुछ आप गुरु, तोड़े सकल बन्धन हैं

(२८)

दुखके हरन सुखके करन, मेटन गवन आवन सही
दाया दृढ़ावन शांति लावन, पतित के पावन तुहीं
जग भोगसे वृत्ती हटा, दीना परख पद मन्त्र हैं
उन गुरूवर के चरण यक संत शरण स्वतन्त्र है

—श्री–कबीर–भजन–माला—

॥ ख्याल–१ ॥

कभी रहें जमुना पै कभी, गङ्गाके किनारे फिरते हैं
जोगी बनके मन्तजिर यार, तुम्हारे फिरते हैं ॥टेक॥
कभी रहें मथुरा में कभी, बृन्दाबन में विश्राम करें
नन्द गाँव में कभी गोबरधन में, आराम करें
कभी कुञ्ज गलियों में फिरके, गोकुलमें मुकाम करें
सिवा उसी की यादके, और न कोई काम करें

माया का गर्दा हट गया, नाशा वो तम अन्हियार सब

॥ शेर ॥

कभी काशी में रहें, जाते कभी केदार को
प्रयाग को जाकर कभी, जाते हैं हम गिरनार को
कभी आबू देखकर, जाते हैं फिर हरद्वार को
हर ठिकाने ढूँढते फिरते, उसी दिलदार को

॥ मिलान ॥

तलबगार दीदार के दर दर, मारे मारे फिरते हैं
जोगी बनके मुन्तजिर, यार तुम्हारे फिरते हैं ॥१॥
मक्के अन्दर गये मगरबी, मिले बहुतसे हमें फकीर
पूँछा उनसे कहीं तुमने देखा है वो बेनजीर
कसमें खाकर लगे वो कहने, इसी सबबसे हुए लकीर
उमर गुजर गई यादमें, हाथ न आई वह तसवीर

॥ शेर ॥

आसमानी लोग भी, कइ इक मिले हाँ आनकर
उनसे भी पूँछा कहीं की, खुबरू आया नजर
वे सभी कहने लगे कुल, आसमानो का जिकर
नाम तो हमने सुना, पर है निशाकी नहीं खबर

मिलान

इसी फिकर में, महर और माह सितारे फिरते हैं
जोगी बनके मुन्तजिरमें, यार तुम्हारे फिरते हैं॥२॥
मिले दक्षिणी लोग बहुतसे, और मिले उत्तराखंडी
कोई झोलियें लिये कांधे, अरु कोई बाँधे झन्डी
कोई बैरागी कोई उदासी, कोई बनवासी बनखण्डी
कोई अचारी ब्रह्मचारी, कोई सन्यासी दण्डी

शेर

पूछता सबसे फिरा, दिलदार को देखा कहीं
वो तो सब कहने लगे, सपने तलक मुतलक नहीं
पता जिस जाँ पर लगा, ज्यों त्यों से कर पहुँचे वहीं
पर न देखा है वो दिलवर, जिस जगे ढूँढ़ा तहीं

मिलान

सबके सब लाचार कि खिस्ता, ख्वार बिचारे फिरते हैं
जोगी बनके मुन्तज़िरमें, यार तुम्हारे फिरते हैं॥३॥
कोई कहे घर बार छोड़कर, फिर आये हम चारों धाम
अरसठ तीरथ नहाये, हाथ न आया वो गुल फाम

देखो मेरे प्रत्यक्ष गुरु, बन्धन अखाय के तोड़ दो

कोई कहे हम ठाट अमीरी, छोड़ दिया ऐसो आराम
दुनियाँ से भी गये, पर तो भी नहिं पाया इसलाम

शेर

कोई कहता है हमारी, उम्र भर से आरजू
मिलेगा किस रोज प्यारा, दिलमें है यह जुस्तजू
मैं मैं कहता है कोई, और कोई कहता तू ही तू
पड़ गये छाले जबा पर, पर मिला नहिं माहरू

मिलान

इसी सबब से हरदम दिलपर गमके आरे फिरते हैं
जोगी बनके मुन्तजिर में, यार तुम्हारे फिरते हैं॥४॥
करते थे अफसोस अदेंशा, सबके दिलमें बड़ा मलाल
दास अमर भी कहे, किस रोज मिले, वह दीनदयाल
इतने में आगये कहीं से, इक बुजुर्ग साहेब कमाल
सफेद दाढ़ी पोस्ता, सफेद और सब पाक जमाल

शेर

धर दिया शिर पर मेरे, पञ्जा हुए वो मेहरबां
आगये नजरों में सातों, तहजमी कुल आसमा

अब श्रेष्ट उनसे है कौन, मोहिं मुक्त पदमें जोड़दी

पवन से पतला था परदा, जिसके आँगू लामका
नूर के चौरङ्ग पर, बैठा था वो साहे जहाँ

मिलान

करीम कमतर उस गुलपुर, पर तन मन वारे फिरते हैं
जोगी बनके मुन्तजिरमें, यार तुम्हारे फिरते हैं ॥५॥

॥ ख्याल २ ॥

खाकमें हममिलगये दोस्तों, खाकमें सब घरबारमिला
जोगी बनकर दर-बदर फिरे, नवो दिलदारमिला ॥टे०
देश विदेशों फिरे ढूँढते, उसके मुन्तजिर हो होकर
खाक सार हो, उसीके दरकी, खाक पर सो सोकर
किया तर बतर चेहरेको, चश्मोंके आबसे धो धोकर
हुए दिवाने हिज्र उसी में, हरदम रो रोकर

॥ शेर ॥

धूप में कुछ दिन तपे, कुछ रोज हम थंडों मरें
कहीं पर भर पेट खाया, कहीं पर फाँके करे

(१८)

कोई बिकासी उत्पती, सूरजसे सबकी मान्ते

कहीं मन्दिर और कहीं मसजिदमें जा आसन धरें
कहीं बस्ती कहीं जंगलमें, बिरछ देखे हरे

मिलान

किसी के घर खाये धक्के,
और कहीं गाली गुफतार मिला।
जोगी बनकर दर बदर फिरे, नवो दिलदार मिला॥१॥
आबू और गिरनार ढूँढ़ते, पैरों मे पड़ गये छाले
न्हाये नर्मदा मिटे नहिं, तो भी दिलके कस हाले
वृन्दाबनके बृछ बृछ, पत्ते पत्ते डाले डाले
ढूँढ़फिरे हम मिला नहिं कहीं, वो दिलबर की हाले

॥ शेर ॥

कुंज गलियों मे पता, कुछ ना लगा दिलदार का
देखी अयोध्या और मथुरा, ढूँढ़ सारी द्वार का
न्हाये गङ्गा गोमती, मेला किया हरद्वार का
और भी सारा जिला, देखा समुन्दर पार का

जो है अनाशी जिव अमर, तिसको नहीं पहिचान्ते

मिलान

मिला प्रयाग पुष्कर हमको, आगे बद्री केदार मिला ।
जोगीबनकर दर-बदर फिरे, नवो दिलदारमिला ॥२॥
नन्दगाँव बरसाना महावन, गोकुलके घर २ झांके
अरसठ तीरथ हम कर आये, कई मरतबे न्हा न्हा के
योग तपस्या करी, बहुत दिन नीमसार में भी जाके
अन्न छोड़के कन्द फल फूल रहें कुछ दिन खाके

॥ शेर ॥

ना मिला जब, वो सनम दिल में उदासी आ गई
फिर चले उठ के तो रस्ते ही में, काशी आ गई
ना मिला काशीमें जब खिजलत जरासी आ गई
जांबजां सब ढूँढ कर, यक दिल पे हाँसी आ गई

मिलान

कहीं पै पानी पथ्थर और, कहिंजङ्गल शहरबजारमिला
जोगी बनकर दर-बदर फिरें, न वो दिलदारमिला ॥३॥
उत्तर से दक्खिन देखी, अरु पूरबसे देखी पश्चिम
परिस्तान में गये पर वहाँ भी, मिला न बागो इरम

मानो सनक शिर पर चढ़ा, जैसे पिये शराब हैं

मक्का और मदीना देखा, और देखा सारा आलम
जमीन सारी ढूँढ़ कर, आसमान पर पहुँचे हम

॥ शेर ॥

जायके बैकुन्ठ में, देखा बहिस्तक द्वार को
और भी आगू गये, बागे अरम गुलजार को
देव भी देखे बहुत से, और परी परदार को
कुल जमी से आसमां तक, देखा उसके कारको

मिलान

मिले पीर पैगम्बर हमको, सनम का नहिं दीदार मिला
जोगी बनकर दर-बदर फिरे, न वो दिलदार मिला ४॥
जन्म अनेको फिरा भटकते, अब मेरी जागी तकदीर
एका एकी राहमें मुरशिद, मिल गये सत्य कबीर
भरमकी टट्टी तोड़ जिन्होंने झुरमुटकी तोड़ी जंजीर
दिल दरगामें दिखाई आकर, दिलवर की तसवीर

॥ शेर ॥

ना सनम बन में मिला, और ना सनम घरमें मिला
ना मिला मन्दिरके अन्दर, वरन मसजिदमें मिला

विकाशबादी धोखे में, जीवन किये बरबाद हैं

(२४)

गुरु संत से जाने बिना कैसे असल पावैं पता
सार जीव को छोड़ लेकर नकल की धावैं लता
पर वे बिचारे, बन दिवाने, संत गुरु की संग तज
बक्ते अटापट बातको, खाते फिरें हैं अज्ज खज

(२५)

सूकर वो कूकर सम बने हैं, इन्द्रियों के भोग में
बिकाश सूरज से कहें, जो बात है आखोज में
ऐसे ए अहमक हैं बने, भुनगा से हाथी कह रहे
चैतन्य जड़के ज्ञान बिन, ये अज्ञता बस मर रहे

ना मिला पाताल में, औ स्वर्ग में भी ना मिला
ना मिला पानी के अन्दर अरु न पत्थर में मिला

मिलान

अमरदास आधीन कहे—इस तनमें सिरजनहार मिला
जोगी बनकर दर-बदर फिरे, नवो दिलदार मिला ॥५॥

—❀—

(२१)

लागी कटारी पांव में, करते दवा कापार की
तैसे नया मत है चला, है धूम इन मक्कार की
बिकाशवाद में जो गये, वो हो गये बरबाद हैं
हाँ आ गये गुरुपदमें जो, वो हो गये आजाद हैं

(२२)

दुःख से है मुक्त होना, आईये गुरु संत में
है अगर दुख भोगना, तो जाईये भ्रम पन्थ में
हम भी दुखी तो थे बहुत, गुरुवर सम्हारे आप हैं
सब धोखे बाजों से बंचा, गुरुवर हमारे आप हैं

(२३)

चैतन्य जड़ प्रखाय कर, दीना हटा सब कल्पना
सांचा ठिकाना को दिये, छूटा हमारा भटकना
हे मित्र भ्राता नारि नर, सज्जन हे प्रेमी भक्तजन
सत्सङ्ग में अब आईये, गुरु की करो पूजन भजन
संत गुरु से ना परें, दुखको छुड़ईया और है
काल से लेंगे बंचा, देखो हिये करि गौर है

॥ हरी गीत छन्द ॥३॥

(१)

मानिन्दी मनके पूर हित, जग जीव अति हयरान हैं
आनन्द तन सुख के लिये, सारा बिकल जाहान हैं

सुखका फिकर सबको अहै, पर दुःख दूना हो रहा
यह हाल लखकै जक्त* का, कुछ२ नमूनाको कहा।१।

(२)

ध्यान दे करके बिचारो, बात को समझो जरा
मणि फेंक घुंघची आशमें, हे मित्रजन क्यों हो परा

---

* टि० जक्त का क्या हाल है उसे नीचे छन्द से विचारिये और देखोये—

॥ हरीगीत छंद ॥४॥

इस जगत का, यह चाल है ॥टेक॥

(१)

मानुष्य खानी में कोई, कोई पशू, कृमि कीट में
पंछी जनावर में कोई, चव खानि ही के सीट में
रजगुण कोई, तमगुण कोई, सत्वगुण कोइ पाल है
तसदुःख सुख सब भोगते, इस जगतका यह चाल है

(२)

पांचो विषय जड़ तत्वके, तिसमें सकल जिव चूर हैं
तेहि भोग हित ध्याते हैं नित, परहै न पड़ता पूर है
चाहना ना ना तरह, दौड़ावते हर काल है
होते अमर, भोगे खतर, इस जक्त का यह चालहै

क्या फिर समय ये आयगा, जो आज बीताजात है
मेवा औ मिश्री खांडतजि, काहे जहर विषखात है

---

(३)

मरता कोई क्षण मात्र में, लेता कोई अवतार है
गालिष्ट कोई रोग में, कोई सदां बीमार है
कोई सुखी है रैन दिन, कोई दुखी हर हाल है
देखा तो कोई ना सुखी, इसजक्त का यहचाल है

(४)

कोई ना ना रोग से, ग्रसित, न पाता चैन है
कोई बहिर, गूँगा कोई, नहि सूझता कुछ नैन है
नहिं दुःख का शुम्मार, सबहो, कष्ट में बेहाल है
पल भर न कोई है सुखी,इस जग्त का यह चालहै

(५)

कोई तो पर्दा, पेट, बिन, रहता सदा लाचार है
दर दर कि करता चाकरी, ढोता शिरों पर भारहै
दो जून से, एक जून में,रोटी है तो, नहिं दाल है
इसही फिकरमें, हैं बिकल, इस जक्तका यह चाल है

(३)

पर बात इसमें एक है, की भूल बस बिष खा रहे
परिणाम तिसका है, मरण संकट अनन्तो पा रहे

---

(६)

करते जतन लाखो तरह, खाना, पहिरना, के लिये
पर पूर पड़ता है नहीं, सब कर्म करके थक गये
नारी तबाहट कर रहीं, लरिके किये, बेहाल हैं
खाऊँ ही खाऊँ, सर्बदा, इस जक्त का यह चाल है

(७)

कोई के धन का थाह नहिं, घरमें खवईया कोइनहीं
यक बाल बच्चे हैं नहीं, नित शोक, इसका ही रहीं
वे मुर्झते, पलिवार बिन, नहिं बंश में यक लाल है
इसही फिकरमें नित जलैं, इस जक्तका यहचाल है

(८)

करते हैं युक्ती, भांति बहु, यक पुत्र, पुत्री के लिये
सत धर्म भक्ती ना किये, धोखे उमर सारी गये
तन छोड़ करके चल दिये, आया अचानक काल है
धन, जन, धर्म, सबसे गये, इस जक्तका यह चाल है

जबतक मिटेगा भूल ना, तबतक बहैंगे धार में
पारख प्रभू को पाय बिन, कस भूल होगा छारमें

---

(९)

कोई अमीरी ठाट रमड़ी, भोग में नित चूर है
ना सत धर्म,ना सत कर्म, गुरु संत से नित दूर है
मद मस्त पशुवत भोग में, कुत्ता सरीखे चाल है
विषयोंमें निशदिन दौड़ते,इस जक्तका यहचाल है

(१०)

रूप सुन्दर, नव जवानी, जोश में नरनारि सब
हाव भाव असन्जमिक, बरताव में, नहिं होश अब
धर्म मेरा, क्या मैं करता, कुछ न इसका ख्याल है
नर नारि, भोगोंमें गड़क, बिगड़ा जगतका चाल है

(११)

मुख रँगने हित पान खा, कोई लगाता रँग है
शौकीन, सुन्दर, तन बना, करते कृया बेढ़ँग है
बनते तो हैं परबींण, सूकर, कूकरी, सम चाल है
तबक्या, बडप्पन रह गया, जब इस तरहका हाल है

(४)

इसके लिए करिए लगन, करि प्रेम गुरुवर संत में
रात दिन रहिये मगन, नित धाईये सतपन्थ में

---

(१२)

शौक, फैसन, को बढ़ा, मेला, शहर वो हाट में
बेभिचार हित, घूमा करैं, हरदम विषय के चाटमें
बेस्या गमन, पर नारि भोग में, बीतता हर काल है
त्रय खानि भागीहै बने, कस जक्त का यह चालहै

(१३)

कोई गवन्नर, लाट, मुल्की, औ कलक्टर जज है
न्याय तजि, अन्याय करि, मन में उड़ाते मज्ज है
झूंठ फुर, फुर झूंठ करि, रचते यही नित जाल है
सत न्यायसे, रहते बिमुख, इस जक्तका यहचालहै

(१४)

थान्हा, पुलिस, कप्तान, हो पंच, या सरपंच हों
दीन दुखियों, को सता, करते सदा परपंच हो
धन, दर्ब, हित झुठ्ठा बने, सत, धर्म का नहिं ख्याल है
जीवन बृथा खोतेहैं सब, इस जक्तका यह चाल है

जस कामी अपने काम बस, नित चाम करता प्यार है
तिसमें है रहता लिप्त नित, सहता अनन्तो भार है

(१५)

वहदा बड़ा, परधान होने के लिये, सब तड़फते
पाकरके पदवी ऊँच, चारो तर्फ सबको हड़फते
चाप लोशी, घूस खोरी, में चपल चांलाक है
ठग धुर्त, करने में चतुर, लज्जा न रंचक लात है

(१६)

कोई के, पदवी राज है, तो भी अकिल दौड़ावते
बैठे ही बैठे मेज पर, तृष्णा लहर में धावते
धन से खजाना हैं भरा, संतोष बिन कंगाल है
तृष्णा अग्नि धधकै सदा, इस जक्त का यहचाल है

(१७)

घोड़ा वो, हाथी,ऊँट,मोटर, राज का, सब साज है
नौकर, वो चाकर,साथ में,शिर तख्त शाहीताज है
मालिक बने हैं, मुल्क के,सुख भोग मालो माल है
करते सदा आनन्द सुख,इस जक्क का यह चाल है

(५)

प्रेम सबसे तोड़कर, यक भामिनी से जोड़ता
सांसति विपति अतिपाय जो, तो भी नहीं मुखमोड़ता

---

(१८)

कोठी बनी दश तल्ल, कंचन भवन में, विश्राम है
साथ में गुलजार हित, सुन्दर मनोहर बाम है
है मान, प्रभुता, जोर से, नित पान, कूंचे गाल है
है मस्त, इन्द्री भोग में, इस जक्त का यह चाल है

(१९)

कोइ कोइ बहुत विद्या पढ़े, विद्वान भी कहलावते
वाक्य चातुरता, औ बर बर में, वे निशदिन धावते
सत्या चरण, पद आचरण बिन, काक बक सम चालहै
यहि से बृथा, सब धूर है, बुद्धी बनाये काल है

(२०)

संस्कृत, उर्दू, वो इंगलिस, एम एल बी, पास है
दुरगुंण कमाते रैन दिन, पापा चरण में बास है
सबसे हैं बनते श्रेष्ट, विद्या मत्त में मतवाल है
कूकर, वो सूकर, समदशा, यह जग कि बिगड़ा हालहै

यक मात्र भूला भूल में, सब शूल पाता जा रहा
यों ही बिषय के चाहमें, संसार ध्याता जा रहा

---

(२१)

कोई कुराणिक, कोइ पुराणिक, और बैदिक गावते
अनुमान से, ईस्वर, खुदा, नाना जगह ठहरावते
जैनी, इसाई, नास्तिक, निज २ तरफ बेहाल हैं
पारखबिना भटका करैं, इस जक्तका यह चालहै

(२२)

कोइ तत्व कहते न्यानबे, कोइ चन्द सूरज नापते
बन्दर से, नर उत्पति कहैं, भ्रम अन्ध होकर नाचते
बीकाश सूरज से कहैं, भौतिक बने, निज काल है
मानुष्य खुद होते हुए, पशु के सरीखा चाल है

(२३)

भौत्तिक बादी हो, बिबादी, देह ही के भोग मे
उनमत्त हो, जीवन गवाँते, इद्रियों के योग मे
कुत्ता, पशू, बिल्ली के सम इनकी सरासर हाल है
हैं भ्रष्ट करते और को अपने बने खुद काल है

(६)

लोभी तो धन के फिक्र में, छल बल अनेकों कर रहा
झूठा कपट प्रपंच कर तृष्णा, अग्नि मे जर रहा
धन ही धनै के लोभ में, यह मोक्ष जीवन खो रहा
तेली के बैल समान वह, दिन रैन बोझा ढो रहा

---

(२४)

कोई गड़क है तार वायु, यान के फौरेब में
ग्रामफ़ोमो रेडिया, नाना चपल औरेब में
इस देशका, उस देशका, लेते पता क्षण काल में
बन्ते हुनर हर तौर से, बस आधुनिक बाचाल में

(२५)

कोइ एसिया अध्यक्ष बन, कोइ उच्च प्रोफेसर बने
निज इन्द्रियों के स्वाद बस, जिव दीन दुखियों को हने
पंच इन्द्री भोग में, कैसा बने मतवाल हैं
उन्मत्त हैं बेकार में, इस जक्त का यह चाल है

(२६)

कोई बनारस बंबई, डिल्ली घुमै सब शहर है
बहु देश देशान्तर बिचर, मनमें उड़ाते लहर हैं
अजमेर अम्रिरीका तलक, औ काठिया, नैपाल है
चक्कर लगाते हैं सदा, इस जक्त का यह चाल है

(७)

मोही तो होके मोह बस, नहिं धर्म कर्म क ख्याल कर
हरदम उसीके फेर में, पड़ि मोह में जाता है मर
फातिंग का जो है मरन, तो दीप में मोहा हुआ
तैसे लखो नर जीव को, कस मोंह में सोहा हुआ

---

(२७)

कोइ बादशाही भोगता, घर घर कोई मड़रा रहा
कोई के दरवानी खड़ी, कोइ बुन्द जल नहिं पा रहा
कोई कि आदर हो रहा, कोई तो जाता टाल है
कोइ शोगमें कोइ भोगमें, इस जक्तका यह चाल है

(२८)

कोई बरातें साजकर, खुसियाँ मनाते जा रहा
कोइ दूसरे की व्याहुती, जबरन भगाये ला रहा
गौना कराये आ रहा कोइ ब्याह कर लौटाल है
कोइ रो रहाहै, नारि बिन, इस जक्तका यह चालहै

(२९)

कोई कुटुम पलिवार, नारी में न पाता चैन है
हींन घर है, दर्ब बिन, बाहर कमाने गैन है
कोइ रेल मोटर तर कटे, कोइ कूप नद डूबाल है
मरता कोई फांसी लगा, इस जक्तका यह चाल है

(८)

क्रोधी तो पड़ि के क्रोध में, हरदम रहे बेहाल है
अपना तो घात वो कर रहा,पर बना सबका काल है
बसमे हो करके क्रोध के,कुछ ख्याल करता है नहीं
क्रोधाग्नि से दुःख हो, अरु आप मरता है सही

---

(३०)

कोई कमाते धन बहुत, भक्ती धर्म करते नहीं
धनके लिये सब कुछ करैं, परलोक को डरते नहीं
खावे वो पीवे में कपट,पैसा कमावे सूम बन
काछते ही काछते, बहुतक इकट्ठा कीन धन

(३१)

इतने में डाकू आयकर, घर ही में डांका डार दी
रुपया औ पैसा छीनकर, उनको भि जानसे मारदी
बहुतों कि ऐसी है गती, धन भी गई, जीवन गया
संत सेवन धर्म बिन, बेकार मे नर तन भया

(३२)

कोइ नारि सुत पुत्री बिना, मनहीं मनों में रो रहा
कोई के पुत्री नारि तो, झगड़ा लड़ाई हो रहा
कोई के कोई है नहीं, निर्बंश लखि बेहाल है
रो रो सदा दिन काटते, इस जक्तका यह चाल है

(६)

हंकार जो धारण किये, उनको लखो जु बिचार से
दिन रैन उनका जा रहा, कर कर के अत्याचार से
वे हं मद मे मस्त हैं, नहिं समझते कोइ और है
वे नित बहैं भव धार में, देखो हिये करि गौर है

(३३)

कोइ लूट में कोइ फूंक में, चोरी वो, डांका डालते
चलकर सदा शुभमार्ग कोई, धर्म सांचा पालते
पूजा कोई का होत, कोइ का खींच जाता खाल है
कोइ जेल फांसी पा रहा, इस जक्तका यह चाल है

(३४)

जन्म का कैदी कोई, तो लात मूका खा रहा
वारंट कोइ का कट गया, छिप २ सदा बिललारहा
बन्दूक छूरी से मरा, कोई कटारी भाल है
कोई कनिक कोई जहर, इस जक्तका यह हाल है

(३५)

कोई तो चराडू चर्स बीड़ी, भाँग में अलमस्त है
कोइ मांस मदिरा नाच नाटक, गान में मदमस्त है
कोई जुवा वो ताशशतरञ्ज, फाग होली गा रहा
कोइ के हंसी औ मस्खरी, माजाक मनमे भा रहा

(१०)

अपने बने हैं ऊँच, औरो दीन जीव को घालते
सत्य बिचार से हीन हैं, दुख काम क्रोध कु पालते
यहि पांच दुश्मनके बसी, हो हो सकल जग जीव सब
सहते अनन्तों दुरदशा, निज शांति सुख रंचक न अब

---

(३६)

ना ना तरह का बिरहनी, गा गा कोई बेहोश है
मैं क्या औ करता क्या, नहीं इसका जरा भी होशहै
भांति भांति के गांयनों में, आप माते जा रहे
कैसा जकड़ि बन्धन कठिन, आपे बनाते जा रहे

(३७)

किस्सा कहानी में कोई, आल्हा चनैंनी राग मे
संगीत वो अखबार कोइ, चौताल लचका फाग मे
कोई गड़क है खेमटा, वो दादरा के गान मे
कोई मजीरा ढोल, हर मुनियाँ, सरँगी तान में

(३८)

कोई सोहदा तेल जुलुफी में, लगाये घूमता
युवती बिरह में हो बिकल, नारी हि नारी धूनता
रमड़ी रमड़, चमड़ी चमन में, हो रहा पागल है
जलता है कामाग्नि में, इस जक्त का यह चाल है

(११)

अपने हि अपने चाहना में, जीव सबहीं मग्न है
कहुँकहुँ तो सारी भोग हासिल, कहूँ फिरते नग्न है
एक के यक सामने, नहिं चाहते कम भोग है
अपने अपाने चाह में, सब जीव सहते शोग है

---

(३९)

केवड़ा कोई इतर, जूही चमेली गंध मे
भांति भांति के तेल मलि, होते हैं मन आनन्द में
कोई मनोरामा, अप्सरा, देखि घायल होत है
कोई सुन्दर नव जवानी में, धर्म से लोप है

(४०)

कोई मलाई दूध घी, पकवान, ब्यञ्जन खा रहा
मकई, जुवारी का कोई, रोटी तलक नहिं पा रहा
फाटा मलीना बस्त्र, कोई, दीन भिच्छुक हैं बने
कोईके सुखका साज तो, और औरके इच्छूक बने

(४१)

कोई तो यों ही फैल सुफी, फैसनों में खुस्स है
कोईतो मन भर भोगको,ना पायसे अति घुस्स है
कोई तो रोता बिलफता, कोई करै बाहार है
देंह सजि धजि ठाट करि, करता सदां गुलजार है

(४१)

सब मर रहें हैं कामना में, पर न पीछे हट रहे
सौ सौ गुना सहि भार को, तौ भी विषय में डट रहे
ना ना तरह की संकटों, सहि ना पिछारे पाव को
कहते हैं चाहे कुछ परे, चूको न ऐसी दांव को

(४२)

कोई तो दोनों जून मालिश, तेल की करवावते
हरवक्त मौजा मौज में, जी को बहुत बहलावते
कोई जलाने के लिये, नहिं तेल मिट्टिक पाय है
तन में लगाना दूर है, अन्हियार में ही खाय है

(४३)

कोई एवं रात दिन, बैठे ही बैठे फूलता
मल मुत्र हाड़ वो चाम के, इस देंह ही में भूलता
अभिमान हरदम तन भरा, आंखे दिखाते लाल है
सब गर्भ उसदिन चूर भय, आया दिवस जिस काल है

(४४)

हे भाय कहिये क्या बहुत, जग व्यर्थ स्वपना ठाट है
दो चार दिनका मामला, आखिरमें चलना बाट है
सत्संग धर्म भक्ती को कर, जासे सकल दुख टाल है
नहिं जनमरण चक्कर पड़ै, यहही जगतका चाल है

(४४)

राजा बड़े हाकिम हुकुम, बादशाह वो शूर हैं
ज्ञानी गुड़ी तपसी जिते, पड़ि कामना में चूर हैं
दारिद्र औ निर्धन धनी, या सेंठ साहूकार सब
है चाट विषयों का कठिन, लाचार होते कस गजब

---

(४५)

अपने हि अपने मौज में, भूला सकल संसार है
कोई इधर कोई उधर, करि कामना लाचार है
कोई इधर खानीके अन्दर, भोग-सुख हित रो रहा
कोई उधर बानी के अन्दर, नष्ट जीवन खो रहा

(४६)

सब मारे मारे दौड़ कर, हैरान प्यारे हो रहे
प्रत्यक्ष पारख छोड़ कर, बेगान प्यारे रो रहे
क्या कहें जग की दशा, सब अवदशा ही पावते
तिस पर नहीं जिव मान्ते, बन्धन तरफ ही धावते

(४७)

पै पारखी गुरु संत तो, दोनो कि आशा छोड़कर
पारख अचल में हैं अटल, संसार से मुख मोड़ कर
दाया छमा बैराग्य भक्ती, आदि के संयुक्त हैं
आज ही बर्तमान में, जीते वें जीवन्मुक्त हैं

(४७)

कहँ तक कहूँ मैं, खोल कर, संसार के जित जीव हैं
सहि सहि सरब कुछ दुरगती, बहते वो मरते सदीव हैं
हे मित्र मन ले हृदय में, सुन जरा इस बात को
उन छणिक वस्तू के लिये, सब सहि रहें नित ताप को

---

(४८)

पिन्ड से ब्रह्मांड सुख को, विष्टवत वे जानते
पल मात्र में सब नष्ट हो, ऐसा वे निश्चय मानते
नहिं भूलते भव भोग में, उपराम रहते हर समय
जड़ि मूलसे इच्छा हतें, जिससे न फिरसंभृत जमय

(४९)

पटतर में उनके फिर कौन, जो सामना को करि सके
भूल वा अज्ञान बस, वैसे कोई कुछ भी बके
संसार दल दल में धंसा, वें दलों से पार हैं
इस हेतु सबसे मारि मन, बश आप खुद निरधार हैं

(५०)

उन पारखी गुरु के दया, पद पाय मालो माल है
संतशरण यक सुखिया हुआ, अपने में पाया लाल है
वह लाल पारख रूप चेतन, खुद स्वयं सरकार है
यस भेद को जानै बिना, दुखिया सकल संसार है

(१५)

तब इधर गुरु मग तरफ से. क्यों हटैं हम हार कर
जल्दी बढ़ावो पग दिनो दिन, काम क्रोध को मार कर
हम सब अनादी काल से, उस मग में भूले आये हैं
ना गुरु मिलें ना समय मिल, ना शांति ठौर को पाये हैं

(१६)

अब धन्य है सदगुरु मिले, जो हंस के अध्यक्ष हैं
ऐसा अमौलिक ज्ञान पारख, मुक्ति खुद प्रत्यक्ष है
अब आज ही औसर मिला, पिछड़ो नहीं हे मित्र बर
पुरुषार्थ में कटि बद्ध होवो, रैन दिन संग्राम कर

(१७)

अति शक्ति जोधा जीवकी, मारो डपट कर काल को
दल छांटि माया शत्रु का, पारख असल लै भालको
रणक्षेत्र में चढ़ि बीर सम, पीछे कदम करना नहीं
तन मन बचन शत्रू खड़े, गुरु न्याय से टरना नहीं

---

(५१)

चैतन्य पारख रूप पड़ि के, बासना में बन्ध है
जब परखि तेहिको त्यागिया, तब मुक्त ही स्वाछन्द है
जबतक सब आशा न तजे, तब तक रहे बेहाल है
जनमरण चक्कर शिरपड़े, जगका यही सबचाल है

(१८)

बैराग भक्ति बिबेक गहि, नित सजगता का तेग है
दुशमन बढ़ै पावैं नहीं, लहि शांति धीरज बेग है
दया शील बिचार आदिक, सदगुणों के अंग हैं
नैरास्य समता सत्य ले, फिर हम कहो क्यों तंग हैं

(१९)

गहि छमा संतोष शम दम, अरि हटायेंगे सदा
पारख अटल औ मुक्ति हित, जी को डटायेंगे सदा
लोभ मोह हंकार सबहीं, जीव को घायल किया
मन इन्द्रियाँ करि २ हुकुम, शिर तोड़ का बोझ दिया

(२०)

कबसे अहिम्मत में पड़े, पाये बहुत हैं सासना
हमको नचाया जगत में, दुशमन मेरी ये बासना
पर बासना अब नाश करिके, बास पारख में करूँ
हमदम ये शिर उन सदगुरू के, चरण तारकमें धरूँ

(२१)

अब जागिये गुरु मार्गमें, हिम्मतको हारो बीर ना
कादर बने ऐसे रहें, तब होयँगे हम तीर ना
सुखध्यास काल शरीरको, जल्दी निकालो यार तुम
गफलतकि त्यागो नींदको, गुरु पदसे करलो प्यार तुम

(२२)

संत शरण क्यों बनते पतित,इस देह के आसक्तिमे
तन मन बचन अर्पण करो, गुरुभक्तिमे गुरुभक्तिमें
यह भक्ति सदगुरुकी सयाने, जानिये मणिलाल है
सेवन करे जो सरुस यहि, तेहि को टलै यम जालहैं

(२३)

पूर्व रहस युत रहनि को, धारण करे कोई बसर
नहिं बाल बांका होय तेहि, जग ब्रह्म का टूटै असर
कैसा भी कोई दीन हो, हो जाय माला माल सो
युग-युग दरिद्री नाश हो, पदवी मिलै भूपाल को

(२४)

अजेय सो रण क्षेत्र में, जो हनै मनके मान को
निशंख सुखसरसायगा, शँका जहाँ नहिं आन को
अब ताकते क्या मित्र हो, आओ समर मैं दान में
साहस सजग हिम्मत गहो, पावो बिजय संग्राम में

(२५)

बीर धीर गम्भीर से, आओ गुरु के देश में
अमृत अमरसुख त्यागकर, जरतेक्यों बालू रेत में
अंतिम मेरा कहना यही, गहना तो अमृत ही गहो
आके बिराजो राज्यमें, जगका वरहना ना सहो

॥ हरीगीत छन्द ॥

॥ भ्रमहर और स्वतंत्र जीव ॥

(१)

स्वतंत्र स्वतः यह जीव है, इसकातो कोइ कर्ता नहीं
करि यत्न लाखो खोजिये, प्रत्यच्च मिलता है नहीं
पर बेद बिद्या ब्रह्म ईस्वर, मान करके भूलता
मत बादियों के पच्च से, बानी में पड़ कर भूलता

(२)

पंच बिषय मन इन्द्रियाँ, सुख मानि नलनी नाल मे
सहता है सारी दुरदशा, पड़करके खानी जाल मे
जैसे है कोई सिंह, अपना रूप ताको भूल कर
सहता अनन्तों कष्ट को, वो भेड़ियों मे मील कर

(३)

चरता सदा रहता सदा, अपने को भेड़ी जानता
निज सिंह पन को भूल कर, भेड़ीमे सब सुख मानता
जब सिंह कोइ दूसर मिला, तब भ्रम पर्दा टार है
जब रूप जाना गर्ज के, भेड़ों से हो गया न्यार है

(४)

त्यों सिंह चेतन जीव है, भेड़ी यही संसार है
निज रूप अपना भूल कर, सहता सरब का भार है
भोगे अनेको दुरदशा, खानी वो बानी फेर मे
सुत नारि धन परिवार संपति, ब्रह्म इश के टेर मे

(५)

कोटि तीरथ कोटि मूरति, कोटि पूजे देव हो
पारखी गुरु सन्त बिन, पाये न रंचक भेव हो
हेरे अनन्तो तौर से, पर ना मिला दिलदार है
पारख प्रभू के दर्श भै, तब कौन दुबिधा छार है

(६)

गुरु पारखी सबके जनईया, सिंह वत वे भूप हैं
सब भ्रम पर्दा को हटा, दिखला दिये निज रूप है
तबछोड़ि कांटा भरम फाटा, परखि सब उजियार है
अज्ञान अन्हियारी मिटी, निज हो गया सरकार है

(७)

तब हूँ अखंड तब हूँ अमर, यह बात आया ध्यान में
फूटा घड़ा तब भर्म का, रहने लगा गुरु ज्ञान में
हे मित्र भ्राता सुज्ञ जन, इस बात को सुन लीजिये
हंस वत रहनी बना, अब ज्ञान अमृत पीजिये

(८)

पारखी गुरु संत के, दर्शन को नित प्रति कीजिये
सत्संग कर संतो कि सेवा, से अभय पद लीजिये
फूल फल या कुछ भी हो, सेवामें उनके लईये
सब भाँति उनको पूज कर, तब मोक्षपदको पाईये

(९)

जो जो बचन देवें बता, उसको हृदय में मान लो
ब्रह्म ईस्वर आदि से, बढ़ करके उनको जान लो
तनमन बचन से सेव कर,सब लाज शर्म मिटाय कर
नित नेम से दर्शन करो, बिषयोंसे मन को हटाय कर

(१०)

कुछ रोज सेवा भक्ति करि, मन को जरा अजमाईये
फीका लगे जग भोग जो, तो शिघ्र मनको घुमाईये
हो तीब्र इच्छा मोक्ष का, तब त्यागिये घर द्वार को
संसार से तब पीठ दे, फेंको जगत सब भार को

(११)

बस जल्द अब त्ययार हो, नहिं घूमने का काम है
यें जन्म सारी खत्म है, यक जिन्दगी का नाम है
ऐसा समझके बात को, देरी तो करना है नही
सद् गुरु से मन क्यों रोकते,जब एक दिन मरना सही

(१२)

जग फांस मे जकड़े हुए, जब एक दिन मरि जांयगे
तब क्यों न गुरु मग में चलैं, जिससे परमपद पांयगे
आखिर में सब जग भार जब, सहना परे हर तौरसे
तब क्यों न गुरु मग में रहौं, बूझो इसे खुबगौर से

(१३)

मन शत्रु का यह काम है, सत्संग से करता मना
सुख चाहनाको खोज कर, पांचो विषयमें जा फना
मन के कहन मे जो पड़े, तब तो गये तुम हार है
पर जो गये गुरु के शरण, वो हो गये भव पार है

(१४)

धन्य पारख गुरु अहैं, जो की लखाये भर्म को
उनके शरणमें जो गया, सो जान ली सब मर्म को
उपकार गुरुवर संतका, बर्णन करूँ केहि भांति से
ऊबारलो भवसिंधु से, चर्णन परूँ यहि नाति से

(१५)

भवसे खेवईया आप हो, इस हेतु हमको आसरा
चव खानि में भरमा बहुत, अब तो चरणमे आपरा
है लाज आये का प्रभू, हम पतित को पावन करो
पाहाड़ पातक का लगा, तेहि ज्ञान से ढांवन करो

(१६)

संत शरण ये दीन जिव,जब तक न जाना हाल है
तब तक तो भोगा दुःख बहु, होता रहा बेहाल है
सदगुरू परखा दिये, जग जाल को जाना गया
अब ना गहूँ तिस जालको यस हृदय में ठानागया

(१७)

सदगुरु नरायण देव के, परताप से बन्धन टुटा
बिकराल काल कराल, जन्मों जन्म का बन्धनछुटा
अब दास यहसुखिया हुआ,दुख छूटिया जगजाल का
पारखमे अब बासा हुआ,चिन्ता जहां नहि कालका

॥ हरीगीत छन्द ॥५॥

जीनेकि आशा त्याग कर,मरने से करले प्यार है॥टेक॥

(१)

एक रस अभ्यास कर, मुर्दा ये तन मन साज है
जब नाश यक दिन होयगा,इससे भला क्या काज है
सारा फिकर को छोड़कर, आठो पहर यहिकार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यारहै

(२)

सब दुरदशा का खानि तन,मनही कराता है सदा
देह को सत मान कर, अकरम कमाता है सदा

आशातो रखता तन अमर, पर एक पलमें छार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यार है

(३)

जनमा है जब से आय कर, तबसे नजरसे देखता
जोजो जनम जग में लिया, सबकोहि मरते देखता
तब चूहड़ी तन आश में, क्यों सो रहा बेकार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यार है

(४)

अंतिम दशाले आदि में, भोगों कि आशा छोड़कर
मुर्दा क तन ये ठाट है, जीमें सदा अब पोढ़ कर
ऐसे बिता प्रारब्ध भर, पूरण तेरा सब कार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से कर ले प्यारहै

(५)

कहना सहज ये बात है, करना कठिन है जानिये
करना कठिन भी है नहीं, गर ध्येय पूरा ठानिये
सनमुख सदा रखियेमृत्यु, तन मनसे दुखःकार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरनेसे करले प्यार है

(६)

जब जान्ता हूँ एक दिन, ये तन मिलेगा धूर में
तब जान वैसे आज ही, काहे फिरूँ मगरूर में

धूर चूर है आज ही, यह ध्यान में निश वार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरनेसे करले प्यार है

(७)

जिस देह में हा भूल बस, हूँ चाहता नित सुख्खहै
तनतो यही यम काल है, इसमें हि सारा दुख्ख है
छीछी ये तन में सुख कहाँ, बहता नरक नवद्वारहै
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यारहै

(८)

आज है ये चांदनी, यक, दिन अन्हेरी होयगी
प्रारब्ध होते पूर, कब्रो में बसेरी होयगी
आगे दशा जो आयगा, वह आज ही ली धारहै
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यारहै

(९)

हे मृत्यु तू प्यारी मेरी, हरदम तू रह मम सामने
मेरा सहायक है तुहीं, तृष्णा ढहाती कामने
तेरा हि पल पल याद कर, छूटा सकल तकरार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से कर ले प्यारहै

(१०)

खाते वो पीते सोवते, हरदम यही बस ख्याल हो
बैठे या चलते जागते, जानो ये तन ही काल हो

तन नेह त्यागो बमनवत, आवागवन कर छार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरनेसे करले प्यार है

(११)

जैसे अजूरी जल, बुन्दै बुन्द होता खत्म है
तैसे ये जानो जिन्दगी, होता दिनो दिन पत्न है
घड़ी पल में तन छुटै, इसका न कुछ इतबार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यार है

(१२)

बस जो हुआ कुछ भूल से, वह लौट आयेगा नहीं
बाकी जो समया है इधर, वह नष्ट जायेगा नहीं
चेतन हमारा रूप, तन मनसे हमेशा पार है
जीने कि आशा त्याग कर, मरने से करले प्यार है

(१३)

अब तो गुरूवर के कृपा, यह जान पाया बात को
संबन्ध झूंठा जग्त का, झूंठा ये तन मन नात को
झूंठाही झूंठा जान कर, धारा परख पद सार है
जीनेकि आशा त्याग कर, मरने से कर ले प्यार है

(१४)

पाना रहा सो पा लिये, पाना नहीं कुछ और है
मिलना नहीं कोई से है, गुरुसे मिला निज ठौर है

अब शांति में बासा हुआ, नाशा सकल तकरार है
जीने की आशा त्याग कर, मरने से करले प्यार है

(१५)

मैं हूँ अमर मैं हूँ अजर, मैं हूँ अखंड अनादि हूँ
मैं नित्य हूँ मैं मुक्त हूँ, पारख परख अजादि हूँ
सुख दुख हमारे में नहीं, मैं सत्य चेतन सार हूँ
इस जग्त से उपराम हो, बस मुक्त खुद निरधार हूँ

(१६)

मरना नहीं फिर से हमें, करना नहीं कुछ काम है
अंतिम दशा धारण किया, निज रूपमें बिश्राम है
छूटै मिलै चाहे कोई, कुछ लाभ हानी है नहीं
प्रारब्ध बस यह देंह है, इसका ठिकानो है नहीं

(१७)

निरवार जड़ चैतन्य का, पारख में रमना रैन दिन
यह जाप हो त्रयकालमें, नहिं बाह्यलक्ष हो एक छिन
तन मन पृथक लखि सर्बदा, बैराग्य में अति प्रेम हो
बोध स्थिति गहि सदा, गुरु भक्ति में दृढ़ नेम हो

(१८)

यह तन परिवर्तन शील है, झूँठा*जगत का मेल है
जग जीव का सम्बन्ध सब, सपने सरीखा खेल है
आखिर को छूटेंगे सभी, सो आज हो या काल हो
फिर मोह करके बन्ध हों, हरगिज न ऐसी चाल हो

(१९)

बादशाही त्याग कर, काहे को भिच्छा खायगा
भन्डार जिसके खुद खुला, मागन को काहे जायगा
तैसे भला पारख जो, सर्वोपरि सर्वों शिर मौर है
तब जाचना किससे है क्या, ऐसा मिला जब ठौर है

---

*टि०–१–यह जक्त झूँठा कैसे और किस तरह है उसे नीचे छन्द में देखिये।

॥ हरीगीत छन्द ॥६॥

झूँठा जगत बाजार है ॥ टेक ॥

जिमि रेल का है मेल, जैसे वोशकरण का हाल है
ऐसे हमेशा अनिस्थिर, इस जक्त का भी चाल है
एक आता एक जाता, एक खुद त्ययार है
हेजीव देखु बिचारि यह, झूंठा जगत बाजार है ॥१॥

(२०)

नाश कारी छोड़ कर, आनाश में अब थीर हो
तनमन कि आशा त्यागकर, पारख स्वतःगम्भीर हो
जग जाल जो बिकराल है, अब शिघ्र उसको त्यागिये
कोई न साथी है तेरा, अबिचल अमर में लागिये

पानी क बुल्ला, नांव कागज, भीत बालू के समा
सावन क सेहरा, मृग जल, अरु फूल जैसे आसमा
जैसे ये सब निहसार, होत न, काज कोई सार है
त्योंजीव देखु बिचारि यह, झूठा जगत बाजार है ॥२॥
जस रात-दिन उदला बदल, जसघाम-छांह दिखात है
उत्पन्न बाल कुमार ज्वानी, वृद्ध भी होइ जात है
क्षण क्षण बिनस्वर हैं दिखें, रंचक नहीं इतबार है
हे जीव देखु बिचारि यह, झूठा जगत बाजार है॥ ३॥
थोड़े में सुख शुम्मार नहिं, थोड़े में दुख से रोवता
क्षणमें अरोग्य अशोग्य है, क्षणमें है शोगवो रोग्यता
क्षण ही में राजा रंक, निर्धन धन धनी भीखार है
हे जीव देखु बिचारि यह, झूठा जगत बाजार है ॥४॥
सब अबिनाशी जीव, सौदागर सरीखा दीखते
क्षण भंग जगका भोग है, उसही को नित्य खरीदते

(२१)

बासना जो जो है सनमुख, पुर्बका वह जानिए
तूं भिन्न दृष्टा उनसे है, तिसमें न सत्या ठानिए
आवै अगर जो सामने, तो परखि न्यारा होईए
निज रूप सच्चा जानकर, बस शिघ्र उसको खोईए

बासना बश घूमि घुमि, चव खानि का ब्यपार है
है सत्य सत्य में देखिये, झूठा जगत बाजार है ॥५॥
है अनादी जग्त में, रोजगार चेतन कर रहा
पाचों बिषय सौदा खरिद, जन्मृत्यु हेतन धर रहा
इस हेतु बारम्बार, चारो खानियों का कार है
हे जीव देखु बिचारि यह, झूठा जगत बाजार है ॥६॥
परबाह रूप अनादि में, यहि कार्य चालू है सदा
बासनायें भार को, सब जीव रख रख के लदा
बस बासना बस जीव को, दुख होत जात हजार है
यह नित्य से चालू सदंय, येही जगत बाजार है ॥७॥
कबसे ये दुख को सह रहें, इसका न कोई थाह है
पर सोच कर दुख छूटने की, ना किये परवाह है
सो अब अनादी दुःख, छुटने के लिये बेजार हैं
हे जीव देखु बिचारियह, झूँठा जगत बाजार है ॥८॥

(२२)

है निराला सबसे आला, रूप निज सरकार का
सो रूप पाया शांति आया, और से दरकार का
जग ब्रह्म आशा, सब बिनाशा, परख में बासा हुआ
गुरुवर दया का, ज्ञान बांका, स्वतः अब दासा हुआ

(२३)

सब फिक्र नाशी, पद अनाशी, मिल गया गुरुदेवसे
थिर स्वयं रहना, परख गहना, है न कहना केव से
हे जीव प्यारे, हो जा पारे, दांव पा चूको नहीं
यहि बेरसजजा, जगसे भगजा, जालफिर तोकोनहीं

झूंठे जगत के बीच में, बड़ बड़ प्रतापी हो गये
झूंठे हो झूंठे प्रीत कर, झूंठे में आखिर सो गये
उस झूंठ हो में प्रीत कर, हम भी हुए लाचार हैं
मिथ्या लखा गुरु न्याय से, झूंठा जगतबाजार है ॥६॥
लख पती करोरा पति, कइबर अशँखो पति हुआ
धन धाम कोठ मकान, कईयो बार त्रिभुवन पतिहुआ
कइ बार सुद्र व्यस्य ब्राम्हण, चत्रिये तन धार है
युगन युग यहि राह में, घूमा अनेको बार है ॥१०॥

(२४)

सब स्वपन माया, कहँ भुलाया, कोई यंह तेरा नहीं
इसमें फसोंगे, फिर धसोंगे, मिटै फिर फेरा नहीं
अस जानिके मन, बासना हन, नाशतन धनजानकर
गुरुसंत सम, कोई न हन, तिनका बचन सतमानकर

राजा हुए हाकिम हुकुम में, फूलते दिन रैन हैं
बाद शाही भी मिला, पर भोग में बेचन हैं
आशा वो तृष्णा जोर है, सब दुःख का आजार है
नहिं शांति सुख है स्वपन में, झूठा जगत बाजार है ११॥
सुखहेत सेवन सब किये, बाकी जतन कोई नहीं
पर सुःख कारण दुःख में, कहँ कहाँ पर रोई नहीं
जहँ जहँ गया प्रपंच फंसि, झूंठै झुंठा भरमार है
मन लड्डू से तृप्तीकहाँ, जब झूठ ही बाजार है ॥१२॥
पिंड से ब्रम्हांड तक का, भोगे सकलो भोग है
भोग पीछे झूंठ सब, सहना अतन्तो शोग है।
आवागवन छूटा नहीं, सब भोग सुख बेकार है
उसमेंनपल स्थितिमिली, झूंठा जगत बाजार है॥१३॥
धन धाम कुल परिवार जग में, लागि मन कायल हुआ
सर्व से सहि दुःख को, ये संत शरण घायल हुआ
सदगुरु मिले सुखिया किये, फिर ना परूं दुख धार है
अबखाश दिलमें जच गया, झूंठा जगतबजार है॥१४॥

(२५)

पारख चमनमें, कर रमन, जगको वमनवत त्यागकर
मनकरके शमइन्द्री दमन, जगजानि बननिजभागकर
क्यों सो रहा, दिन खो रहा, तुमको नहीं क्यासूझता
तन चोर सारे, धन नशारे, क्यों नही तूं बूझता

(२६)

मग बीच सोयो, मूल खोयो, अब तो आओ होशमें
गुरुदेव प्यारे, हैं पुकारे, क्यों पड़े बेहोश में
साथी तुम्हारा, जग मझारा, हैं तो गुरुवर संत ही
है और जोई, काल वोई, देय करि भ्रम पन्थ ही

(२७)

जगभोगतजिगुरुकोहिभजि, सतमगमेंसजिचलियेसदा
तन फन्द भारी, तेहि सम्भारी, कामना दलिये सदा
यक अनारी, दीन भारी, था रहा संसार में
गुरुवर उबारी, ली सम्हारी, होगया वह सार में

(२८)

कर जो कर, संतशरण कह, गुरुसंतके चरणों में पर
धन्य प्रभु जी, आपको, मेटेयो सकल खौफो खतर
बन्दि बारम्बार पद, अर्जी यही सरकार से
इस दास पे करिये दया, लीजे बंचा संसार से

॥ सदगुरु बन्दना ॥ पद-

(१)

श्री कबीर पारख गुरुवर की, बार बार बलिहारी है
श्री कबीर तारक प्रभुवर की, बार बार बलिहारी है
श्री कबीर का ज्ञान, परख अम्मर पदवी दर्शाने में
श्री कबीर का ध्यान, सकल भवफन्द संधि परखानेमें

(२)

श्री कबीरपद पा करके, आना जाना छुट जाता है
श्री कबीर गुण गा करके, खुद जीव मोक्षहो जाताहै
इस हेतु श्रीकब्बीर गुरू, कब्बीर गुरू की ध्यान रहे
तनमनधन सर्व निछावरकरि, संकल्प सदा जी जानरहे

(३)

गुरुवर कबीर गुरुवरकबीर, गुरुवर कबीरगुणगाताहूँ
भवसिंधुतीर भवसिंधु तीर, भवसिंधु तीर हो जाता हूँ
श्रीकबीर गुरु श्रीकबीरगुरु, धन्य परख परखाय गये
बन्ध मोक्ष प्रत्यक्ष किये, जड़ चेतन भेद लखायगये

(४)

श्री पूरण साहिब धन्य हुए, तिनके चरणोंमेंशीशधरूँ
हरबार नमों हरबार नमों, शिर धर धरके नावीश करूँ

श्रीरामरहस श्रीगुरुदयालके, बाल चरणमें परता है
धनिधनिपारखपददर्शाये,यहजानिबिनय नितकरता है

(५)

श्रीकाशी गुरुवर धन्य धन्य, श्रीप्रेम गुरुवरकीजयहो
जिनके दायाके दृष्टी से इस दासकि सारा भ्रम गयहो
श्रीबालकलाल गुरूवरको, है धन्य धन्य शिरनाताहूँ
श्रीबिशाल प्रतिपाल हुए, सादर पद् बन्दि मनाताहूँ

(६)

धनिधनि२गुरुवरसंतोंको,जिनसे सदगुन बिस्तारहुआ
तिनके चरणों में पडूं सदां, जिससे मेरानिस्तारहुआ
जेथार्थ पारखी संत गुरू, जितने इस जगमें जाये हैं
बन्दना कर रहा सादर हूँ, मेरा शुभ काज बनाये हैं

(७)

धनिधन्य नारायण बोधकगुरु,जिनसेमेराउपकार हुआ
हम जीव जगतमें बूड़ि रहा,तिनसे मेरा ऊबार हुआ
क्या भला उरिण हो सक्ताहूँ उन पारख देवबिहारीसे
क्यों की कारज सब पूर्णकिये,इस हेतुबिनयत्रयबारीसे

(८)

गुरुदेव पारखी संतोंसे, गर्जी मेरा बस गर्जी है
बस फकत आपके चरणों में, अर्जी मेरा अर्जी है

सदगुरु कबीर श्रीसंतगुरूसे, प्रिये कोई नहिं अन्यहमे
क्योंकीपारखधनअटलदिये, धनिधन्यतुम्हेंधनिधन्यतुम्हें

(६)

हे नाथ अंतिमीबिनयमेरा, चरणों में पड़कर कहताहूँ
भवसिंधु धारसे पार प्रभू, शरणों में रहकर चहता हूँ
हम बाल दीन सब तरहहीन, गुरुसंत गोदमेंआपकेहूँ
हे धर्म मात पितु बन्धु सखा, मैं सिर्फओटमें आपकेहूँ

(१०)

जिमिमातपिता निजबालकके, आधारऔरखुदजीवनहैं
तिमि संतशरणके हितरच्छक, हे संत गुरू तुमहीजन हैं
हे करुणानिधि गुरुसंत जनों, मेरी नईयाकोपार करो
निज बाद वृथा बरबाद लखूँ, ऐसी वृत्ती संभारकरो

(११)

सब तर्फसे लक्ष हटा करके, पड़रहा तुम्हारेचरण २
प्रभु परखमें हमें डटा दीजे, है दीन पुकारे संतशरण
अन्तिमी यही मम आशा है, बासा पारखमें करदीजे
फिरसे तनमें नहिं आना हो, तारकगुरुवर ये बरदीजे

॥ दोहा ॥

श्रीपारख गुरुदेव के, कृपा परख बल पाय ।
थीर सदा निजमें रहूँ, जगत बन्ध मिटि जाय ॥ १ ॥

॥ पारख प्रकाशी सदगुरु श्री कबीर साहिब की सर्वोंपरि बन्दना ॥

धन्य सदगुरु श्रीदेव कब्बीर को, जिसने पारख का परकाश जगमें किया। खानी बानी कि मेटे कठिन पीर को, मुक्त हो खाश दृढ़ बास निज में किया। संत होकर करन जैसे तदबीर को, तैसे ही आप ऊजास कारज किया। धारि बाना असल आप फक्कीर को, शोक संताप त्रयताप हारण किया ॥ १ ॥

जो २ प्रथमे भये बिस्व के बीच में, माया अन्दर मे भूले वो आपी रहे। खानी बानी में जकड़े पड़े कीच मे, काया अन्दर मे भूले वो आपी रहे ॥ बिष्णु संकर औ ब्रह्मा वही जाल मे, जाय जाकर गिरे भूलि निज रूप को। राम वो कृष्ण बावन वही गाल मे, धाय धा कर हिरे हूलि तजि रूप को ॥ २ ॥

औरा रिषि मुनि जिते थे सकल मोह कर, तत्व मसि के हि फन्दा मे फन्दे गये। गौर करके न निज को लखे खोज कर, खानी बानी के धन्धा

मे अन्धे भये ।। मुक्त होंने कि युक्ती रचे हर तरह, पर वो उल्टे गरभ बीच बन्धे गये । युक्ति खाली गया एक पारख बिना, कल्पना कीच का जाय बन्दे भये ।।३।।

युक्ति हर तौर करके जो देखे नहीं, उसको कब्बीर गुरुवर दिखा ही दिया । मुक्त प्रत्यक्ष पारख स्वयं है स्वतः, ऐसा कहिके सकल भ्रम हटा ही दिया !। छार दुबिधा किया सर्ब बन्धन परखि, सार है जीव चैतन्य आपी खुदै । पर न ऐसा लखैं पछपाती कोई । ढूढ़ते और ही और आपी जुदै ।।४।।

बेद सास्त्रों के ज्ञाता हुए जग्त में, एक से एक भारी भरम भीर के। जिनकी महिमा अनन्तों हुई हर तरह, थे प्रतापी वो बावन बरण बीर के। सर्ब कुछ हो गये एक पारख बिना, खाश पाये पता ना वो जिव तीर के सर्ब को निज में पारख कसौटी किये, धन्य पड़ता चरणदेव कब्बीर के ।।५।।

एक से एक कृतवान गुणवान भी, हो गये इस अनादी के संसार में। जिनकी चारो तरफ मान फैला रहा, थे चतुर एक हर कार वो बार में। सर्व सुख भी किये मात्र पारख विना, हुआ जीवन निरर्थक है बेकार में। तिन सबों की कसौटी को करि आपने, दीन दिखलाय बीजक के टकसार में ६॥

सर्व जीवों के आपी शिरोमणि रहे, चर्य जीवन बिताये थे सारा सही। आप इन्द्री औ मन जीत कस में किये, पग कुमार्ग तरफ रंच डारा नहीं। झन्डा पारख का सर्वोच्च फहरा दिये, आपका आगा कोइ रोक पाया नहीं। धन्य कब्बीर हो—धन्य कब्बीर हो, आप-सा व्यक्ति दुनियाँ में जाया नहीं ॥ ७ ॥

इस लिये कोई पटतर के तुलना परख, जीव चैतन्य का भेद करि ना सके। जड़ वो चेतन को मिश्रित मिला के सभी, और के और ही बात अकबक बके। तिन सबों की बिलक्षण दशा देखकर, आप सतपथ, सुझाया दया द्रिष्टि से।

मुक्ति पारख कि सींढ़ी सुगम से सुगम, कह दिये मेघ अन्तःकरण वृष्टि से ॥ ८ ॥

इससे महिमा सर्वोपरि तुम्हारा गुरू, जगत में श्रेष्ट, ज्ञाता हुए आप हैं। आपके ज्ञान से जीव सुखिया सभी, सब मनाते हैं धनि आप धनि आप हैं। धनि अमर भेद टकसार बीजक प्रभू, जो कि प्रत्यक्ष मुक्ती खुलाशा कहे। इस लिये सर्व शिर-मौर कब्बीर गुरु, धन्य हे धन्य हे धन्य हे धन्य हे ॥ ६ ॥

धन्य कब्बीर गुरु बोध दाता नमों, ज्ञान पारख के आपी प्रचारक गुरू। जड़ से चैतन्य पद को निराला किये, खानी बानी के बन्धन निवारक गुरू। भव भयानक कठिन बेग सरिता प्रबल, ऐसे लहरों से हो आप तारक गुरू। इस लिये जोर करके है बिनती मेरा, धन्य पारख गुरू धन्य पारख गुरू ॥ १० ॥

ऐसे दुखदा जगत घोर आसार में, आप ही ने स्वयं शोध धारी हुए। करके पारख असल औ

नकल ठीक से, आप ही से प्रथा मोक्ष जारीहुए। ऐसे विपदारराड के जगत बीच में, आपसा नहिं कोई बोधकारी हुए। धन्य कब्बीर पतितों के पावन प्रभू, मक्तिकारी हुए–मुक्तिकारी हुए॥११॥

आपके जोई तत* सम रहस युत्त हैं, धन्य उन सदगुरू को नमन कर रहा। जिनके जरिये से निज बोध पारख मिला, ऐसे तारक प्रभ के चरन पर रहा। ऐसा पद सर्व उत्तम गुरूदेव का, बार ही बार मनमें मनन कर रहा। धन्य पारख गुरू के कृपा द्रिष्टि से, सर्व दुख जर रहा, सर्व दुख जर रहा॥ १२ ॥

आपने दीन जीवों पे करके दया, कह दिये सबके हितकर बचन साँच हो। जिसको गहते ही जिव मुक्त होता तुरत, छूट जाता मर्खज गर्भ की आंच हो। ऐसी पारख कि सैली सहज से सहज, मोक्ष होने के खातिर जगत जाल से।

टि०--* बराबर।

एक पारख असल रूप चैतन्य है, ऐसा कह के बंचाये कठिन काल से ॥ १३ ॥

सत्यवादी सदा सत्य निर्पछ से, न्याय निर्मल निराला बिमल आपका। सत्य सिधान्त चेतन परख सच्च से, यह ही निश्चय से आला अदल आपका। बिस्व† भर के लिये पक्की सीधी सड़क, मुक्ती का रास्ता खुद निकारे अहो। ऐसे समर्थ दाता हुए आप थे, धन्य कब्बीर पारख गुरू धन्य हो ॥ १४ ॥

जग्त सिंधू से जिव पार जाने के हित, ऐसी शिच्छा अटल आप देते रहे। सर्ब धन्धे से-निर्धार खुद थे पृथक, आये जीवों को भी शरण लेते रहे। काल काया में चैतन्य अति श्रेष्ट जो, जीव ही सब जनईया स्वयं बीर है। गहि के पारख किया बासना नाश जब, सोई कब्बीर है सोई कब्बीर* हैं ॥ १५ ॥

टि०—*प्रश्न कबीर किसे कहते हैं।

† संसार

धन्य पारख गुरू जो हुए आज हैं, धन्यता बार ही बार है आपको। डूबते अन्य जिवके किए काज हैं मन्यता सार ही सार है आपको।
सर्व बन्धन कि जड़ बासना बेग मन, तिसको

उत्तर—ऊपर पांती में आया ही है, और कबीर कहिये—क नाम काल शरीर का है—तिसमें जो प्रेरना करके, इस शरीर को चलाता है—वही चेतन जीव जब अपने आप को जान कर, सर्व बासना नाश कर देता है, तब वही इस काल काया में बीर होकर, कब्बीर कहाता है, ऐसा जानिये और नीचे छन्द में देखिये— ॥ हरीगीत छन्द ॥

कब्बीर काया बीर, चेतन जीव ही का नाम है ॥टेक॥
काया ये काल स्वरूप है, कूचाल इसमें हो रहा
दुख हो कठिन कराल, जिव बेहाल हो के रो रहा
आपीही तन में पाग कर, खुद हो रहा बदनाम है
कब्बीर काया बीर, चेतन जीव ही का नाम है ॥१
ये देह है जड़ तत्व का, तन मन और सब इन्द्रियाँ
पर जिव दुखारी हो रहा, तिनमें टिका मानिन्द्रियाँ

करि नाश पारख स्वतः कर दिये। दिखला बैराग्य कृपान, अति तेग घन, जिसको धरि खाश तारक अतः बरदिये ॥१६॥

मानिन्द्रियाँ निज भूल बस, सो भूल दुख का धाम है
कब्बोर काया बीर, चेतन जीव ही का नाम है ॥२
काया से इन्द्री मन बने, सो अति छली बिकराल हैं
छल करके चेतन जीव को, चव खानियों में डाल हैं
इस जीव अमृत रूप को, देते नरक की ठाम है
तनमन ये इन्द्री तीन मिलि, दुखका तपाते घाम हैं॥३
जीव ही के प्रेरंणा से, हो रहा सब कर्म है
कहता परखि जिव सर्व को, ठंडी उष्ण शित गर्म है
सारा व्यवस्था जीव जरियन, खुद प्रत्यक्ष प्रमान है
कब्बीर काया बीर, चेतन जीव ही का नाम है ॥४
जीव ही निज प्रेरण से, योग जप तप ठान्ता
नाना तरह का कल्पना करि, और और हि मान्ता
भांति भांति उपासना, आपै करत बीधान है
हांनिलखिके त्यागता, औ लाभ लखि पकड़ान है ॥५
चैतन्य है अजरा अमर, सो निज अमर सुखके लिये
है हेरता जड़ विषय में, पर वो हुआ दुख के बिये

धन्य पारख गुरू बोध दाता मेरे, आप सम कोई दुनियाँ में होगा नहीं। मुक्त कारक के हो शोधदाता मेरे, पाप हर तुम सा दुनियाँमें होगा नहीं।

दुख बीज जड़ पांचो विषय, फिर २ उसी में हेरता
अपना अमर सुख छोड़ कर, बेहोश बन आनेसा ६॥
जब जीव बिषया बस हुआ, तब दुख लहर लहरा गया
निज अमरपन बिसभोर भय, दुख खंद में भहरा गया
निज होस तब जाता रहा बेहोश अति दुख में हुआ
नाना तरह अनुमान ही, का जोश तिन मनमें हुआ ॥७
अपने मनै से कल्प कर, कर्ता किया तय्यार है
उसको बतावै श्रेष्ट, दुख हरता कहै हामार है
लखि ईश हित दुख हरके हित, नाना कर्म करने लगा
अंजांन बनकर जीव खुद, अनुमान में मरने लगा॥८
कब्बो बतावै भूत देबी देव, दुख मोहि देत हैं
कब्बो बतावै धन्य देबी देव, दुख हरि लेत हैं
कब्बो कहै मालिक हमारा, ब्रह्म ईश्वर विष्णु है
कब्बो कहै अवतार चौबिस, आदि राम वो कृष्ण हैं॥९
निज मन गढ़न्त को मानकर, चेतन हुआ लाचार है
निज मुक्त पद बिसराय कर, अंते कहै वह द्वार है

धन्य हो धन्य गुरुवर नरायण मेरे, दास शिर अर्पता
आपके है चरण। जन्मरण से हो मुक्ती करायण

कब्बो कहै बैकुन्ठ स्वर्ग, बिमान चढ़कर जांयगे
शिव ब्रह्म लोकमें जाय, बिष्णु धाममें सुख पांयगे॥ १०
चार मुक्ती के लिये, व्यपार करते हैं सभी
नाना तपस्या योग जप तप, ख्वार जरते हैं सभी
करते उधापन हर तरह, फल चार पाने के लिये
अनुमान ही का जाप जपि, जग पार जाने के लिये॥ ११
जीव ही कब्बो कहै, की ईश का मैं अंश हूँ
मन इन्द्रियों के बेग पड़ि कब्बो कहै मैं कंस हूँ
जीव ही कब्बो कहै, की ब्रह्म का मैं रूप हूँ
कब्बो कहै सारा जगत, मेराहि मात्र स्वरूप हूँ॥ १२
जीव ही ने बेद सास्त्र, पुराण बिद्या रच रहा
निज रूप अपना भूल कर, बहु कलपना में पच रहा
जीव ही सब का जनईया, है मनईया सर्ब का
भांति भांति से नाम धरि, जीवै गनईया सर्ब का॥ १३
जीव का प्रभुता प्रत्यच्छै, सब जगह दिखलात है
जीव बादे जड़ सकल, यक कलपना की बात है

मेरे, निभा दीना हमारे जो दिल था परण ॥१७॥

जिव बेचारा आप अपने, रूप को चीन्हे बिना
बन्धन परखि त्यागे, औ निजको स्थिती कीन्हे बिना १४
कैसे मिले वह पद भला, जो सर्व जग से पार है
कारण यही की जीव खुद, आपी बना लाचार है
पर पारखी गुरु संग से, निज रूप को लखि लेंय जो
खानी औ बानी भ्रम, ताको दूर हो रखि देय जो॥१५
एकरस रहिके सदां, सो बीर में सरनाम है
काया कसर जब दूर की, कब्बीर सोई जान है
जो जीव ऐसा हो गया, फिर बन्ध का नहिं नाम है
कब्बीर काया बीर, चेतन जीव ही का नाम है ॥१६
सोइ धीर सोइ कब्बीर, सोई पारखी है सर्व का
सोइ ईश है सोइ राम है, सोइ है बराबर ब्रह्म का
संत शरण आला सोई, सबसे निराला हो गया
वह जीव सोयम मुक्त हो, बन्धन कराला खो गया॥१७
इस हेतु चेतन के परे, धोखा सकल भ्रम रूप है
जीव ही अजरा अमर, अबिचल स्वयं खुद भूप है
पर रूप अपना जब लखा, काया में सोई बीर है
जग ब्रम्ह से न्यारा हुआ, वोई का नाम कबीर है १८

थां पड़ा काल चक्कर में युग-युग रहा, दुख हरदईया मिला कोइ हमारा नहीं। जो मिले थे सो आपी स्वयं बहि रहे, तिनसे बचने का कोई सहारा नहीं। पर मिले आप जब तब लिये कष्ट हर, फिर से भव में बहूँगा दुबारा नहीं। संत शरण एक दुखिया को सुखिया किये, जग्त से पार गुरुवर उतारा सही ॥१८॥

॥ गजल ॥

पारखका आला ज्ञान दिये, गुरुदेव कबीर दयालू ने
बीजकका निराला ज्ञानदिये, गुरुदेवकबीरदयालूने टे०

(१)

अन्धान्ध जगतमेंछायाथा, सब मूलजमाकोगमायाथा
चैतन्य निराला ज्ञान दिये, गुरुदेव कबीर दयालू ने

(२)

सब घोर अन्हारमें धायरहा, सब शून्यमें शोरमचायरहा
द्वन्द्वोंसे रहित पद जानदिये, गुरुदेव कबीर दयालू ने

(३)

सतज्ञान बिना दोउदीनरहे, पारखबिनभटकि मलीनरहे
जड़ चेतन सत्य विधानकिये, गुरुदेव कबीर दयालू ने

(४)

चौतर्फ था हाहाकार मचा, जितजीवजहान बेकारनचा
दुख देखि दया करि ध्यानदिये, गुरुदेव कबीर दयालू ने

(५)

परदाको हटा परकाशकिये, पारखमहांनविकाशकिये
चिज्जड़काअनादिठिकानदिये, गुरुदेवकबीरदयालूने

(६)

सबके हितकारक ज्ञानहुआ, मुक्तीकतर्भ:से भानहुआ
सतनिर्णय असल चौगान किये, गुरुदेवकबीरदयालूने

(७)

सर्बोत्तम पारख परखाया, सर्वोत्तम बीजक दर्शाया
चैतन्य अमर बिलगान किये, गुरुदेव कबीर दयालूने

(८)

धनि चिन्हदियेभवतारकका, जौहरदिखलायेपारखका
सर्वोच्च प्रथा ठहरान किये, गुरुदेव कबीर दयालू ने

(९)

गुरुदेवकबीर कि जयजयहो, पारखपद थीरकिजयरहो
जय २ जिव आला बयानकिये, गुरुदेव कबीरदयालूने

(१०)

पारखमेंपरखिरमताजोसदां, तेहिसंतशरणनमताहैसदां
हम दीन कि अति अहसानकिये, गुरुदेवकबीरदयालू ने

॥ श्री सदगुरु के दया से पंचम प्रसंग समाप्तम् ॥

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

छट्ठमम प्रसंग प्रारंभ

पारख प्रकाश, संसृत विनाश और मोक्ष स्वराज्य का यथार्थ साज वर्णन

॥ विकट बन्धन हरण छन्द ॥

पारख रूप कबीर बीर, जिन पारख का प्रकाश किया। बन्दि चरण तिनके हुँ शरण, जिन घोर अबिद्या नाश किया ॥ बलिहार सदा उन गुरुवर की, जिन खानि बानि गढ़ ढाये हैं। करि २ के दया की नजर प्रभू, सब काल के जाल छोड़ाये हैं ॥ १ ॥

धनि धन्य अहैं धनि धन्य अहैं, उनका महिमा क्या कहना है। करुणा निधि कब्बीर गुरू, तिनका हि चरण रज़ गहना है। बोधक लक्षित जे संत

गुरू, तिनके चरणों का चेरा हूँ। मम बाल बुद्धि हरिये हे प्रभू, इस हेतु विनय करि टेरा हूँ ॥२॥

इस जक्त मध्य में जाल, अनादी कालसे जीवन खाया है। बड़े बड़े भये बेहाल, मनोमय जाल ने पकरि नचाया है॥ मन कल्पित वाणी सांच मानि, गर्भाग्न बींच में जरते हैं। गुरु परख पाय बिन भरम खाय, युग युगन जीव भव परते हैं ॥३॥

ओंकार औरे सब मानै, गौर नहीं कुछ करते हैं। जीव मूल सबका है लखिये, तिसे त्यागि भव परते हैं। सबका कल्पक जीव यही, खुद स्वयं कल्पना करता है। भास आस के गांस में प्यारा, होकर दुखिया फिरता है ॥ ४ ॥

क का केवल जीव सत्य है, जिव बादे कोइ और नहीं। जीव उबारक सन्त गुरू हैं, गुरुको तजि कहुँ ठौर नहीं॥ मूल भरम बन्धन सब परखो, संत गुरू का संग करो। निज स्वरूप के बाद वृथा, सब सकल हंस का अंग धरो ॥५॥

ख खा ख्याल करो हे प्यारे, खलक दुखी क्यों होय रहा। सांच सांच पहिचान बिना, सब जगत खुदी यों रोय रहा। सांच एक चैतन्य तुम्ही हो, और सकल जड़ धोखा है। असल नकल का निर्णय करलो, गुरू ज्ञान भल चोखा है ॥६॥

ग गा शरण गुरू के आवो, गर का बंधन टूटैगा। अमन चैन हो अमृत पीके, जनम मरण दुख छूटैगा॥ जनम जनम का कष्ट नष्ट, गुरुवर की भक्ती करने से॥ अजर अमर पद मिलैगा, प्यारे, गुरु की रहनी धरने से ॥ ७ ॥

घ घा घालो नहीं किसी को, नहिं घायल हो जावोगे। दया बिना चौरासी अन्दर, नाना ठोकर खावोगे। इससे दुख सुख भी सहि करके, धर्म मार्ग से नहीं हटो। दुख हारक गुरुदेव पारखी, चरण शरण में सदा डटो ॥ ८ ॥

ङ ङा अंग हंस का धारो, मारो दुर्गुण तन मन के। कटै जक्त का जाल काल सब, गर्भ छुटै तन धन जनके॥ भव में बहते रहे सदां से, ठीक

ठिकाना मिला कहाँ। सहि सहि सांसत्ति तलफि तलफि के, चव खाना में रहा जहाँ ॥ ६ ॥

च चा चेतन जीव सार है, चार तत्व जड़ न्यारा है। कारण कारज जड़ को जानो, कर्ता चेतन प्यारा है॥ कर्म करै सुख मानि मानिके पञ्च विषयमें बंधि सदा। सुखा शक्तिमें जीव बेचारा, होय रहा है अन्धि सदा ॥ १० ॥

छ छा छत्रपती हो करके, करता तावेदारी है। मन इन्द्री मजदूर सरिस जो, भरता जीव बेगारी है। करै गुलामी जीव भूप हो, क्षण भर चैन न पाता है। स्व स्वरूप के ज्ञान बिना, यह जीव सताये जाता है॥ ११ ॥

ज जा जगमें जीवन जानो, जस पानी का बूला है। झूंठा तन धन राज काज, गज बाज साज में भूला है। मुख में कूँचे पान, अमीरी ठाट बाट में फूला है। एक दिना ऐसा आयेगा, सब सुख क्षण में धूला है॥ १२ ॥

झ झा ओझा खानि बानि में, बोझा सहता भारी है। बाहर भीतर झगर रगर में, चेतन हुआ लचारी है। होय स्वतः स्वातंत्र जीव खुद, पर प्रतंत्र दुख पाय रहा। हो हो के लाचार बहुत रो रो कर चक्कर खाय रहा ॥१३॥

ञ ञा ञान रूप सदगुरु हैं, तिनसे मुह छिपकाता है। परघञी में अरुझि २ के, नाना ठोकर खाता है ॥ जकड़ा जाय रहा बन्धन में, अंधन को नहिं सूझि परै। मांस मच्छ बारंडी रंडी, आदिक में पड़ि जूझि मरैं ॥१४॥

ट टा टुट्ट बने जगत में, बोझा गुरुवा नारी का। तीन खानि त्रिशूल ताप त्रय, संकट बिकट करारी का ॥ क्या बयान अब करिये प्यारे, जान निकल अब जाता है। तब भी चेत नहीं होता है, होय बिकल पछताता है ॥१५॥

ठ ठा ठीक ठिकाना कर लो, ठौर मिला खुब अच्छा है। ठग को चीन्ह फरक हो उनसे गहलो गुरु पद सच्चा है। इसका सोच करो हे प्यारे,

असह कष्ट अति पाये हो। पारख गुरु को भूल भूल कर, ऊँच नींच भ्रम खाये हो ॥१६॥

डडा डार डार कर धोखा, डरो न खानी बानी से। परख परख पारख पर थिर हो, अजर अमर निर्बानी से। त्याग भाग जल्दी से प्यारे, तन का ना इतबार करो ॥ गुरु कैं चरण शरण में होकर, जड़ चेतन निरवार करो ॥१७॥

ढ ढा ढाढस करो हे मित्रों, जीवन सुफल बनाने का। ढूंढ़ि मिलो गुरु संत पारखी, अपना काज बनाने का ॥ जन्म जन्म से भूल में पड़ कर, सबसे हूले जाते थे। अपने को कुछ होश नहीं था, प्रति दिन भूले जाते थे ॥१८॥

ण णा लणो हटो नहीं पीछे, रण में खुब संग्राम करो। दया धीर सन्तोष शस्त्र लै, अजय अन्तिमी काम करो ॥ काम क्रोध शत्रु को मारो, मन इन्द्री को दलिये अब। छांटि छांटि सैना दुशमन की, गुरु ऐना में चलिये अब ॥१९॥

त ता तुपक खींच तलवारी, तीर निशाना साधो जो। गहि वैराग्य वीर बल जोधा॥ खानि बानि दल नाघो जी। गुरु पारख बीबेक तख्त पर, बिजय हुआ अब चेतन का॥ शाहन्शाह शांति सुख शरशै, दुःख नहीं है लेशन का॥२०॥

थ था थीर हुआ पारख में, पीर मिटा भव-सागर का। अमर अमर पद मिला आज बश, चेतन सार उजागर का। आना जाना कहीं नहीं है, आप आप में रहना है। परखि परखि मन थीर स्वयं हो, मुक्ति स्वतः पद गहना है॥ २१॥

द दा दलि दलि के मानिन्दी, दया स्वरूपी रहैंगे अब। धन्य दयालू गुरु के दाया, मुक्ति मुक्ति पद गहैंगे अब॥ दर दर ठोकर सहा गया, अब दया सिंधु का द्वार मिला। पारख प्रभु की कृपा हुई, अब सुख शांती भण्डार खुला॥२२॥

ध धा धनि धंनि भाग्य हमारा, मिलासहारा गुरुवर का। धन पाया अखंड अमर, रहनी है सारा प्रभुवर का॥ जिनके पटतर तुलना में,

नहिं तीन लोक में आता है। वही गुरू पारख को पाकर, संत शरण गुण गाता है॥ २३ ॥

न ना न्याय असल यह जानो, चेतन ही यक मालिक है। चार तत्व के पंच विषय में, बन्ध दुखी सब खालिक है। जड़ चेतन दो वस्तु अनादी, जड़ में जड़ ही लक्षण है॥ चेतन भिन्न ज्ञान गुण वाला, पारख रूप विलक्षण है॥२४॥

जीव अनन्त अन्त, नहिं कोई, अजर अमर अविनाशी हैं। पर विषयन में घूमि घूमिके, आप बने खुद भासी हैं। भास मिटै गुरु पारख पाये, नाश भया सब झगड़ा है॥ वह गुरू पारख बिनु पाये, जीव खानि में रगड़ा है॥ २५ ॥

प पा पहिले संत गुरू बिन, ज्ञान ये पाना दुस्तर है। यहिते औसर पाय जो चूकै, वही अनाड़ी बन्दर है॥ खुद स्वतन्त्र होकर हे प्यारे, क्यों प्रतन्त अब होते हो। खौफदार हो जाव आज बस, क्यों वृथा में सोते हो॥२६॥

फ फा फहम करो अब अपना, क्यों अहमक पन करते हो। भाग त्याग निन्द्रा गफलत की, जन्मि २ क्यों मरते हो। रूप तुम्हारा अजर अमर बस, फहम कि प्यारे देरी है॥ पृथक परिक्षा करिके थिर हो, तुम्हीं शाँति की ढेरी है॥२७॥

ब बा तजो बासना दिल से, बासा करलो पारख में। बस्तु बिराना तजि के प्यारे, रहिये सांच यथार्थ में॥ यही बासना यही चाहना, जनम मरण की खानी है। त्याग यही जिस वक्त हुआ बस, जीवनमुक्ति ठिकानी है॥२८॥

भ भा भरम रूप यह देंही, जीव बेचारा भर्म रहा। निज स्वरूप का ज्ञान भूल कर, चवखानिन का कर्म गहा॥ यही देंह में ढारि ढारि जो, संस्कार गहि लेता है। तन तजि के फिर जाय जोनि, में वही कर्म को सेता है॥२९॥

ममा मरना यक दिन सबको, तन का नहिं भरोसा है। जग सराय में जीव मुसाफिर, आकर हुआ बेहोश है। चेत करो कुछ होश करो,

अब काहे इतना सोते हो। ऐसा दांव मिलै नहिं हरगिज, कितना गफलत होते हो ॥३०॥

य या यारी कर सतगुरु से, छोड़ जगत की यारी सब। हंस रहनि को गहिए सब दिन, तजिये दुनियाँ दारी अब। पता नहीं इसका इस जग में, कब से भार उठाते हैं। जानि मिला यह हाल आज, सदगुरु से कष्ट छुड़ाते हैं ॥३१॥

र रा राग तजोगे जबहीं, तब बिराग पद पावोगे। गुरु की भक्ति विवेक किहेसे, मोक्ष साज पा जावोगे ॥ इसके हित नित फिक्र करो, जड़ पृथक मैं सबसे न्यारा हूँ। मात्र बासना दलने से, बस मुक्त सदां निरधारा हूँ ॥३२॥

ल ला लालच लगा जो दिल में, परखि परखि सब त्यागो अब। लाभ लाभ से काम नहीं, गुरु ज्ञान ध्यान गहि जागो अब। मनका चाल अजब है देखो, गजब २ दुख देता है। चेतन को नित नचा नचाके, जनम मरण गहि लेता है।३३।

व वा वार न चूको अबकी, पार होव भव सिंधू से । खेवन हार गुरूवर जानो, काल जालके फन्दू से ॥ वोई बचायेंगे संकट से, दूजा नहीं सहारा है । ताते आश गुरू का राखो, कटै दुसह दुख सारा है ॥३४॥

श शा सनै सनै अब बढ़िये, हल बल चंचल तज करके । धीर बीर गम्भीर ठहरिए, गुरु पद का पद भज करके । अहो अनादी से ऐसे ही, संकट भारी सहा गया ॥ खानि बानि भवसिंधु धार में, युगन २ से बहा गया ॥३५॥

ष षा खर सम जन्म जन्मसे, क्यों कर लादी ढोते हो । उठो उठो हाँ उठो हे प्यारे, मोह नींद क्यों सोते हो ॥ हो करके भूपाल पालि, परजा से क्यों कर डरते हो ॥ साहस हिम्मत हीन बनो ना, निज का ख्याल न करते हो ॥ ३६ ॥

स सा सरवत छोड़ छोड़कर, खारा जल क्यों पीते हो । जहर जहर को खाय खाय कर, नाहक जग में जीते हो ॥ आज काज कर लोगे

भईया, शांति दिनो दिन पावोगे। गुरु ज्ञान को पान करो तव, जनम मरण दुख दावोगे ॥३७॥

ह हा हर छिन सजग रहो, गुरु भक्ति हृदय में धारण कर। नम्र दीन हो रहो हमेशा, कोमल बचन उचारण कर॥ समता गहि के रहो अमानी, मान शान दुखदाई है। तन मद त्यागि सुखी हो जावो, जन्म२ दुख जाई है॥ ३८ ॥

त्त त्ता त्तय मानिन्दी करके, छान छान गुरु पद गहिये। ठहरि रहो यक रस अपने में, फेर नहीं भव में बहिए॥ पिण्ड और ब्रह्मण्ड तलक सुख, त्याग तुच्छ तृणवत्त दीजे॥ मन का वेग तेग गुरु पारख, दुशमन जीत विजय लीजे ३६॥

त्र त्रा त्राहि त्राहि भव दुख में, मिला अपबॅल संकट है। घूमि घूमि दुख ही दुख पाये, मिटा नहीं ये कंटक हैं। पर अब तो गुरु ज्ञान मिला, निज कारज स्वतः बनावैंगे॥ गुरु कबीर पारख पद गहि के, तीर सिंधु हो जावैंगे॥ ४० ॥

ज्ञ ज्ञा ज्ञान खड़ग ले करके, घोर अविद्या नाश करो। अजर अमर रजधानी पाकर, मुक्ति कार्य ए खाश करो॥ जड़ की देंह जड़ै से नाशै, पारख पद परकाश भया॥ कोटि कोटि जन्मों की संभृत, गुरू कृपा से नाश भया ॥४१॥

दया हुआ सदगुरु की प्यारे, मिला अमर रजधानी है। हटा जन्म औ मरण रोग भव, मिटा सकल हयरानी है। अमर अमर बश राज राज है, अमर मोक्ष स्वराज्य हुआ॥ गुरू कृपा पारख प्रताप से जिवन्मुक्तिका काज्य हुआ ॥४२॥

अमर तख्त पर बास हुआ, फिर जन्म मरण नहिं लेना है। अब सत्य जीव का बिजय हुआ, छुट गया सकल ठकठेना है॥ पारख प्रत्यक्ष जीवन मुक्ती में, शांति २ दिन बीत रहा। निज अटल सत्य स्वराज्य राज्य में, काज सभी निभींत रहा।४३।

जिस हेतु युगों युग भिच्छुक था, वह मिला आज गुरु दायासे। मैं मुक्त हुआ मैं मुक्त हुआ, छूट गया अविद्या माया से। खानी बानीमें मिला

न जो, वह आज देखिये मिला मिला ॥ निज मोक्ष राज इस जीवन में, प्रत्यक्ष साज है खिला खिला ॥४४॥

अब स्वयं स्वतः स्वाराज्य सही, आना जाना कहिं नहीं नहीं । पारख कबीर गुरु के दाया, खुद मुक्त अमर पद गहो गही ॥ गुरुदेव नारायण के कृपा, मैं छूट गया जड़ग्रन्थी से। टूट गया कुमार्ग कुपथ सकल, निज भेंट भया सतपन्थी से ॥४५॥

अब बहुत हाल क्या कहना है, जब स्वतः मुक्त पद पाय गया । फिर भूंख कि इच्छा लागै क्या, अमृत भोजन जब खाय भया ॥ अब राति दिवस की गणना क्या, यह देंह रहे या नहीं रहे। मुक्ती में बन्दा स्वतः हुआ, फिर से भव बीच में नहीं बहें ॥ ४६ ॥

बस अमर अमर बस अमर अमर, बस अमर २ में रहना है । बस मोक्ष राज्य बस मोक्ष राज्य गुरु के कृपा से गहना है ॥ प्रत्यक्ष सही प्रत्यक्ष सही, जीवनमुक्ती पद पाई है । उस ही सुख का

कुछ हाल यहाँ पर, संतशरण कहि गाई है ॥४७॥

अब शांति नित्य पद मुक्ति मिला, नहिं और किसी की आशा है। संत शरण गुरु पारख बल से, सर्वंश दुःख बिनाशा है। पढ़ि गुनि अर्थ बिचारि करो, निज काज अन्तिमी प्यारे हो॥ काग बुद्धि तजि हंस रहनि गहि, होव जग्त भव पारे हो ॥ ४८ ॥

यहि बेरि किहे यहि कारज को, फिर काज नहीं करना होगा। यहि बेरि मुक्ति ले पारख को, फिर बाद नहीं मरना होगा। यह मुक्त अमर पथ पाय गये, नहिं और किसी से पाना है। पारख प्रत्यच्छ निज भाय गये, नहिं आना है नहिं जाना है ॥४६॥

श्री गुरु के दया से पारख प्रकाश मोक्ष स्वराज्य

छठम प्रसङ्ग समाप्त

(बैराग्यवान का सर्वोपरि निश्चय)

॥ पद ॥

अहै गुदरिया ओढ़न को, इक उदासीन कुछ बस्तर है। सहन वृत्ति से भूख गई, सब लोग

कहैं कम अक्कल है ॥ मस्त हुये हम गुरू ज्ञानमें, जिसकी नहिं कुछ सरवर है। उलटि पलटि हम मनको मारैं, वार पार हो शस्तर है ॥ १ ॥

प्राण हथेली पर रख घूमैं, दुख सुख का कुछ ख्याल नहीं। चहौ गालि दुतकारि खिझावो, रङ्ग हमारा बढ़ै सही ॥ नारि नवेली जलती भट्ठी, मान भोगको चाह नहीं ॥ सड़ी गली दुर्गन्धी दुनियाँ, तज-तज के एकान्त चही ॥ २ ॥

घट ही अन्दर अजब तमाशा, दुनियाँ भर की लीला है। घट ही अन्दर परम प्रकाशी, स्थिर शांति अकेला है ॥ बाहर दौड़त हारी दुनियाँ करती धक्कम धेला है। सर्व शिरोमणि सर्व परीक्षक, अन्दर नित हम खेला है ॥ २ ॥

बड़ी दया सत गुरु ने कीन्हा, अपना परख प्रकाश दिया। अमृत रस को पी पी खेलैं, बिष रस का अब ध्यान गया ॥ गुरु मस्ती में नैन खुले, अब झका झूम कर पन्थ लिया। किसी तरह अब डिगे न बन्दा, श्री कबीर ने ज्ञानदिया ॥४॥

गुरु के दया से समाप्तम्

जय जय हो श्री पारखी सदगुरु कबीर की।
जय जय हो श्री पारखी सदगुरु कबीर की॥

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

सप्तम प्रसङ्ग प्रारम्भः

ऊँच नीच स्त्री, पुरुष, संसार

के

समस्त नर तन धारियों के लिये, सब तरह
यथा योग्य से बैराग्य की आवश्यकता
या जरूरी है,

॥ तिसी का संक्षेप रूप से वर्णन इसी में ॥

॥ पारखी श्रेष्ट श्री गुरुदेव सदगुरु से बिनय ॥

श्री सदगुरू के चरण ध्यान धरके।
इस्वर ब्रह्म से श्रेष्ट तोंहि जान करके॥
तुम्ही एक हो दुःख हारी हे गुरुवर।
मिटाये जनम मरण सारी हे गुरुवर॥

सकल सङ्कटों से बंचाते तुम्ही हो।
सकल कंटकों से छुड़ाते तुम्ही हो ॥१॥
मिला ज्ञान औ ध्यान जब मिल गये आप।
जिवन्मुक्ति पद जान जब मिलगये आप॥
मिले आप जब मिल गया तब सरब कुछ।
मिले आप जब लखि परा जग सरब तुछ॥
हे बोधक गुरू संत सदगुरु हमारे।
लखा झूंठ औ फुर दया से तुम्हारे ॥२॥
तेरे बिना जग्त जिव हैं दुखारी।
जगत ब्रह्म में लागि करते टुकारी॥
टुकड़खोर मैं भी रहा जग जनम से।
कठिन घोर दुख भी सहा नीच मनसे॥
नरायण गुरू आपने दर्श देकर।
शरण बीच में आपने हमको लेकर ॥३॥
जोगी यती और तपसी उदासी।
जङ्गम सेवड़ा और भी सन्नयासी॥
ज्ञानी बैरागी और बिज्ञानी।
दिखाये कृपा करके सबकी निशानी॥

दर्शन छवो छानवे जित पखंडा।
और जग्त जारी तिते हैं बितन्डा ॥३॥
सबका मरम आप ही ने प्रखाया।
सकल जग भरम आप ही ने लखाया ॥
पारख दिया सर्ब जग से निराला।
कारज किया मुक्ति पद सबसे आला ॥
युगन युग की द्वन्दी नशाये हो प्यारे।
मेरी मन मनन्दी हटाये हो सारे ॥ ५ ॥
संत शरण एक दुखिया बंचाया।
अंतःकरण मध्य पारख जंचाया ॥
जिसे पाय कर पावना सब नशा है।
हिये में अमर मुक्त पद अब बसा है ॥
नशी आना जाना रहट चक्र जगका।
टुटी मन मनाना खटक मक्र मनका ॥६॥
दया सिंधु कब्बीर गुरु ज्ञान भारी।
कलह कल्पना जग्त की सब उखारी ॥
अमर जीव जैसा कहे सत्य तैसा।
जनम औ मरण सब दहे दुख मिटैसा ॥

असल भेद खोल्यो परख मन्त्र देकर ।
अमर बैन बोल्यो परख संत सेकर ॥७॥
परख संत से भेद पाया जभी से ।
संत शरण दुख मिटाया तभी से ॥
हिये का खुला खाश भन्डार सारा ।
दिखा खुद प्रत्यत्तै परख पद उजारा ॥
तभी से हुआ मुक्त पारख में होकर ।
हुआ तत्व निजमें मनोंमय को खोकर ॥८॥

॥ छन्द ॥

नर नारि इस गुरुज्ञान पर कुछ तो जरा भी कानदो
सतसार इस गुरु नाम पर कुछ तो जरा भी ध्यान दो
गुरु के कृपा जो कह रहा हूँ आपके हितकार है
जो जानसे धारण करो पावो सदा सुखसार है
गुरुपद संदेशा यह अमर हे नारि नर अपनाय लो
बिगड़ा अनादिका दशा गुरुज्ञान गहिके बनाय लो

हे प्रिये हमारे परम मित्र सुज्ञजनो इस श्री सदगुरु के पारख रूप अमृतमय बचनो, अथवा इन मुक्ति संदेशों पर ध्यान देवो, और अपने

हृदय में बिचार करके देखो, तभी ठीक ठीक पता इस जड़ चेतन का पाकर शान्ति सुख के अधिकारी बन सकोंगे। अब ठीक २ पता वा पारख करना है यही की, पृथवी, जल, अग्नि, वायु, और अकाश, फिर इसी से बने शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, यही पञ्च विषय हैं। यानी पांच तत्व जड़ और तिसी में से बने पञ्च विषय, यही का कार्य ए जितने इस पिण्ड और ब्रह्मांड तक या समस्त भूमन्डल पर दिखा रहा है, वह सर्व कारज बन बन कर उसी कारण रूप चारों तत्वों में मिलते रहते हैं। सो वे अपने जड़ स्वरूपसे स्वतः अनादि और सिद्ध हैं, और स्वभाव से अतियन्त चञ्चल जड़ हैं। यों तो सर्व बिकारों से भरा हुआ उस चञ्चल पञ्च बिषय ही का नाम जगत है। ऐसे जड़ जगत से हर हमेशा पृथक रहनहार, तिन जड़ तत्वों और उनसे बने पञ्चविषयों आदि का जनईया ज्ञाता यह चेतन जीव ही है, सो यह जीव ऐसे हैं कि, जिसकी गिन्ती ना की

जाय, और अगणित अनन्त हैं। और भी यह चेतन जीव अपने स्वरूप से, अजर, अमर, अखन्ड, और अबिनाशी हैं। यों तो अपने अपने स्वरूप से सर्व जीव अलग २ अनन्त असंख्य हैं, और ज्ञान रूप अनादि स्वतः हैं। फिर तो जड़ जगत से अलग सर्व जीव पृथक ही हैं। इस अनादी काल के जगत जड़ के, पंच विषयों मे, निज निजबासना बस भ्रमते आ रहे हैं, ऐसे ही इस जीव को परम्परा अनादि से मन इन्द्रियों आदि में सुख टिका २ कर, मनोमय बासना बस भरमना ही चालू होता आ रहा है। इस प्रकार जड़ और चेतन के संबंध में ही बन्धन खड़ा है, कारण की यह चेतन जीव आप ही खुद अपने अमर, पारख, नित्य, सत्य, मुक्त, स्वरूप को भूलकर जो दुःख रूप पञ्च विषय है, उसी में आसक्त हो गया है। ताते जनम मरण का मूल और सर्ब दुख का केन्द्र पञ्च बिषय, तामे सुख मानकर यह जीव बन्धमान हो रहा है। या नाना दुःख सहते हुए बन्धा है। तहां सर्ब नर

तनधारी स्त्री पुरुष के लिये, बन्धन छुटने का यही सर्वोत्तम सरल उपाय है, कि पहिले सच्चे सदगुरु विवेकी पारखी बिचारमान सन्तों का सतसंग, वा सद्ग्रन्थ आदि द्वारा जैसे ये चेतन जीव आप अजर, अमर, मुक्त, रूप है, तैसे पुर्व कहे अनुसार सांचे संत गुरू का सतसंग करके अपने अमर पारख, स्वस्वरूप, का परिचय कर ठीक २ से जान लेवे, इसके बाद जब सर्व जड़ तत्व के कारण कार्यों से भिन्न अपना स्वरूप मालुम हो जावै। तब समस्त पिन्ड और ब्रह्मांड की ममता आसक्ती त्यागना चाहिये। तहां उस समय में केवल एक श्री पारखी सद्गुरु संत का मात्र सतसंग करते हुए और तन मन बचन से नम्रता पूर्वक, सेवा, भाव, भक्ति करते हुए इस देह, गेह, धन, धाम और समस्त संसार से निर्मोही बनकर, अपने निज स्वरूप में धीरे धीरे ठहराव बनाकर दया, छमा आदि हंस अङ्ग धारण कर मुक्ति देशमें प्रवेश कर मुक्त होना चाहिए। यह सर्वोत्तम बिचार श्रेष्ट श्रेणी

नर नारियों के प्रति है। इससे सर्वोत्तम बैराग्य का प्रथम आचरण यही है कि धीरे २ सदगुण धारण करके मुक्त मगके तर्फ बढ़ें। फिर दया, छमा, सत्य, धीर, विचार, शील, सन्तोष, बिवेक, बैराग्य, गुरु-भक्ति, आदि के संयुक्त और सदरहस समेत सद् धारणा बनाकर अपने स्वस्वरूप में ठहर जावैं, बस तो सारा झंझट ही छुटा जानो। फिर तो आप अपने स्वरूप में मुक्त होकर ठहर रह कर शान्ति होवैं। यह गुरु न्याय सर्व जीवों के दुख हरने वाले हैं, यानी इस सर्वोपरि गुरू बिचार को कोई भी ऊँच नीच ग्रहण करे सोई सुखी स्वतन्त्र होकर बिराजेंगे। क्योंकि—साखी—

शुभ विद्या* सदगुण करम, धारै तजै बिकार।
नीच ऊँच नारी पुरुष, है सबको अधिकार॥
गहै यही गुरुपद सही, ऊँच नीच नर कोय।
सर्वोपरि सुख पावई, नहिं तेहि पटतर कोय॥१॥

* दया छमा आदि ही बिद्या है।

सदगुण धरि निर्णय गहै, सोई हंस सुजान।
जन्म २ दुख नष्ट है, हिय की तपन बुझान ॥२॥
यहि ते सदगुरु भक्तिकरु, छोड़ि जगत की लाज।
बिगड़ी जन्म अनादिका, करो अपन ही काज॥३॥

इस प्रकार यथायोग्य सब नर नारियों को, धर्म, भक्ती, रूपी बैराग्य धारण करना चाहिये।

प्रश्न—आपके कहने में शङ्का यह है कि गृहस्थ जन कैसे बैराग्य करैं—

उत्तर—गृहस्थों को चाहिये कि डकैती, चोरी, बेभिचारी, हिंसा, आदि कर्म त्यागकर, इन चीजों से बैराग्य कर, जैसे कि—साखी—

यथा लाभ सन्तोष मन, तजि धनकी चित चाह।
न्याय सहित साधू चलैं, जग में सूधी राह॥

फिर तो सद गृहस्त इस तरह त्याग बैराग्य करना चाहिये—साखी—

पर धन पत्थर धूरि जिमि, पर तिय मात समान।
सब प्राणी निज आतमा, जानत सन्त सुजान॥

पर धन पर तिय अरु असत, तीन बातको त्याग।
यह सांचो ब्रत जानिए, और वृथा खटराग॥

सद गृहस्त जनो को, इस तरह घर ही में वैराग्य की जरूरी है। जैसे को अपने पुर्व प्रारब्ध से, और आज के शुद्ध शुभ पुरुषार्थ द्वारा जो अन्न धनादि प्राप्ती होवे, उसी में सन्तोष युक्त, शांति रहे, और नाना धन धाम आदि और और की चाहना त्यागकर, सत्य, धर्म के सहित सब प्राणी के साथ बर्तें, और न्याय पूर्वक जगतमें चलें, सुद्धि बुद्धि से तो वही सुज्ञ जन सज्जन आपी सांचा साधु रूप ही हैं। फिर तो अपने पुर्व प्रारब्ध और सद् पुरुषार्थ से घर में रहे हुए अन्न धनादि में सन्तोष रख कर रहैं, और पराया धनादि ढेला धूरि कंकड़ पत्थर समान जानकर तिससे पूर्ण बैराग्य करैं। सद गृहस्त सज्जन को चाहिये कि खाश अपने बिवाहित स्त्री से न्याय-पूर्बक उचित सम्बन्ध रख के बर्तें, बाकी और संसार के समस्त नारियों से दृढ़ बैराग्य धारण

करें। इस संसार में जितने जीवधारी हैं उनको अपने जीव ही समान जानता रहे, अब यहाँ जिस प्रकार पुरुष को करने के लिए बैराग्य बताया गया है, उसी प्रकार सदगृहस्त नारियों को भी बैराग्य धारण करना चाहिए, ताकी समस्त स्त्री* पुरुषों को बैराग्य करके मुक्ति अधिकारी बनना चाहिए। यों तो सर्व नरनारी को चाहिए की इस अमृतमय पारख गुरुपद को धारण करें, और शान्ति सुखी होवैं, यथा योग्य का मतलब यह

---

* ॥ छन्द ॥

बैराग्य सबही नारिनर को, इस तरह करना चही।टेक॥
त्रय खानि के जितने कर्म, तिनसे करे बैराग्य ही
मानुष्यके जितने धर्म हैं, तांहि में नित पाग्य ही
पशु पन्छियाँ कृमि कीट आदिक से, पृथक मानव धर्म
तेहि जान कर सत्संग से, करना हि मानव का कर्म
पशु बैल गदहा चाल तजि, नर नारि को रहना चही
बैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चही॥१॥
कूकर वो सूकर चील्ह कउवा, गिद्ध की छोड़ो कर्म
सूस औ घरियार नाक ये, नीच की, तोड़ो धर्म

जानना चाहिये की जो जीव प्रबल मुक्ति इच्छुक है, उनको तो समस्त पिण्ड ब्रह्मांड कि आसक्ती त्याज्य है। सद भक्तों के लिये आगे कहा ही गया है, और कुछ यहाँ भी कहते हैं। सद सज्जन भक्तों को चाहिए की उपर कहे गए बातों को जी जान से अपना कर निज कामयाब करें, तिसके साथ २ सद् भक्तों को चाहिए कि देह व्यवहार और कुल, कुटुंब, नात, बात आये गए, अतिथ, अभ्यागत, और (सन्त गुरू) का सेवा-सम्मान होते जाय, बस इतना ही कार्य व्यवहार

इनसे रहित सतमग रहस, मानव धर्म सत है जवन
हे ऊँच निच हे नारि नर, चलिये ये सद्मत है तवन
ऊपर कहे अघ कर्म से, बैराग्य हो करना सही
बैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चही ॥२॥
तन मन बचन दुख देय से, बैराग्य हो करिये सदा
मदिरा शराब के पेय से, मन त्याग ही धरिये सदा
फिर मांस मच्छी हड्डियों को, चूसना भी त्यागिये
पर खेत बारी काटना, घर फूकना से भागिये

के नाते सब गृहस्ती का कारज करना जानिए, तहां यह सब कार्य व्यवहार करते हुए, पारखी श्री सदगुरु संतका सत्संग करना उचित है। यानी यह नाश मान क्षण भंगुरदेह आदिक का निर्वाह चलाने के लिए, सब गृहस्ती की कारज करना है, और तिसके साथो साथ अपने अमर अबिनाशी चेतन जीवके लिए धर्म भक्ती सत्संग सच्चे बिचार-मान पारखी संतों का तन मन धन से सेवनकरना जरुरी है। क्यों कि कहा है, साखी—

वस्त्र अन्न जल से करे, सन्तन को सतकार।
जनम पाय जग में यही, नर देहीं को सार॥
तन मन धन से कीजीए, सतगुरु को सनमान।
नहिं उपकार बिसारिए, जब लग घटमां प्राण॥

पर मा बहन बेटी बहू में, राग करि बहना नहीं
बैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चही॥ ३॥
पुरुष को भागन चही, पर मा बहू के राग से
जितनी पराई नारि हैं, तिनसे रहे बैराग से

यों तो श्री सदगुरु सत्संग करके और भी जितनी खोटी खराब लत आदत हैं उनको त्यागकर उनसे मुक्त होना चाहिए। एवं जितने अधर्म कर्तव्य हैं, और जहाँ तक ना ना अमल आदिक हैं, इन सबसे तो इसी जीवन में, सद् सज्जन भक्तों को, जीते जीते ही सर्व लत आदतों को जी जान से

तैसे गृहस्ती नारि को, जितने पुरुष जग बीच हों
निज पुरुषसे संबन्ध, और को त्यागिदें लखि कीच हो
इस तरह गृह नारि नर, वैराग्य उर धरना चहो
वैराग्य सबही नारि नर को इस तरह करना चहो॥४॥
चोरी छिनारो औ जुआरी, व्यभिचारी को करन
यह पाप सब जब मनबसै, तब जान लो निजको मरन
यह सर्व कुकर्म हे नरो, जब जब हि आवै सामने
तब तब लखो ये नर्क सम, मनमें न लावै आपने
दुर्गुणा में लखि दुख दोषदृष्टी, भूलि कर गहना नहीं
वैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चहो॥५॥
झगड़ा लड़ाई मार गारी, और खोंटा काम जो
रेरे करे तू कारना, औरो फलनवा नाम जो

जीत कर, मुक्त हो जाना चाहिये । और श्रीपारखी सदगुरु सन्तों में दिनों दिन प्रेम निष्ठा बढ़ाना चाहिये, क्यों कि यही सद भक्त, सज्जन, सर्व नर-नारी का असली मुख्य कर्तव्य है । और इन्हीं

खोटा कर्म छोटा बचन, नहिं भूलि गहना चाहिये
हंकार गर्भीला बचन, नहिं भूलि कहना चाहिये
तनमन औ बचसे जित बुराई, त्याग कर रहना चहो
बैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चहो॥६॥
गहना अभूषण औ सोन्हौला, बस्त्र फैसन त्याग कर
ए सर्व अनर्थ मल, औ दुख रूप ऐसा जान कर
इस हेतु सादा शुद्ध सीधा, बस्त्र कपड़ा चाहिये
दाया छमा संतोष सदगुण, रूप गहना पाहिये*
तन की अमीरी त्यागि, सदगुरु सेय भव तरना चही
दुख रूप जगके भोग, तेहिको भूलि कर गहना नहीं॥७॥
सूर्ती तमाखू पान बीड़ी, आदि जो नाना अमल
हे नारि नर इन सबसे करि, बैराग्य हो जाना बिमल
यह सब नकिष्टिक चीज, दुर्गन्धी न खाना भूलकर
आज ही से त्यागि यहि, नीदग रहाना उम्र भर

* पहिनिये ।

सच्चे श्री सद्गुरु संतो का ध्यान भी करना चाहिये,
गुरु संतों के चरणों का पूजा भी करना चाहिये, श्री

नाना अमलपन दुर्व्यसन में, बन्ध हो गहना नहीं
वैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चही ॥८॥
मद मान इर्षा छल कपट, औ डाह निन्दा ठानना
हे नारि नर सब भूल कर, इस लगावो बान ना
क्रोध करि दुर बचन कहि, ना कहो तन बाखान कर
औरौं जिते खोटे बचन, तेहि ना गहो दुख जान कर
इन सर्व दुर्गुण दोष से, वैराग्य उर धरना सही
वैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चही ॥९॥
संसर्ग नारि से पुरुष को, हरदम न गहना चाहिये
तैसेभि नारि को पुरुष में, यकदम न रहना चाहिये
हाव भाव काटक्ष करना, असंन्जमिक बर्ताव सब
नाना तरह मुस्कारना, तिरछी नजर अच्छा तजब
बेढंग किरिया चाल से, वैराग्य ही भरना सही
वैराग्य सबही नारि नर को, इस तरह करना चही ॥१०॥
बाहर* वो भीतर† के समय, सब नारि नर को चाहिये
जल मिट्टियाँ से हाथ धो, यह याद सब को चाहिये

* टट्टी मैदान † बाल बच्चों के टट्टी आदि के समयों पर।

पारखी सद्गुरुदेव का सत्य अमृत वचन हो सर्व मन्त्रों में महाँ मन्त्र है। जिस पारख ज्ञान गुरु

लोटा को मलि पग हाथ धो, दतुइन वो कुल्ला को करो
यह मुक्ति सीढ़ो जानकर, इसको नहीं भूला करो
कपड़ा बदन का साफ करि, तन को सफा स्नान से
बरतन औ गगरा की सफाई, माजकर खुब ध्यानसे ११
साग भांजी दाल चाउर की, अमनियाँ कीजिये
भेवना गर धान अदहन, छानि, जल नित पीजिये
घी आदि को भी छानि, दूध दही आदि जमाईये
हे नारि नर यहि काम करन में, ना असक्ती लाईये
जल छानि २ के पीजीये, गुरु जानि जानिके कीजीये
दोनों क फल हे नारिनर, अमृत अमर पद लीजीये १२
झारू बहारू लीप पोति के, घर सफाना चाहिये
लकड़ी औ कन्डा झारि, चूल्हे में लगाना चाहिये
भोजन जहाँ बनता रहे, कपड़ा तनाना चाहिये
जेंवत में लोटा जूठ हो, फिरसे सफाना चाहिये
यह कार्य करने में न घबड़ावो, सर्व सुख आयगा
अतःकरण हो साफ जब, उजड़ा चमन खिल जायगा
जौने से सुख शान्ती मिलै, अतः करण शुद्धो करो
त्रय खानि के दुख ना मिलै, एसी हृदय बुद्धी धरो

मुख वाणीको सुनते ही सारा भ्रम भूल चुर्ण होकर

ऊंच नीच वो नारि नर, सबके हितारथ ज्ञान यह
संत गुरु को सेय कर, कीजै प्रमारथ ध्यान यह
अमृत भरा इन आचरण में, नारि नर धारण करो
मुक्ती धरा इन कार्य में, हे नारि नर पारण* करो
संतोष धीर बिचार आदिक, धारिये ये शीलपन
काम क्रोध हंकार, आदिक मारिये कूटीलपन
सीधा सरल सद् आचरण, दाया छमा व्यंजन सही
यहि व्यंजनोंकोखाय बिन, कोइ व्यक्तिजग सुखियानहीं
इससे हे भ्राता वो बहन, इस को गहो दिल बीच में
इसको अगर कोई गहै, नहिं वो बहै फिर कीच में
यह पारखी गुरुदेव का, सच्चा निराला राह है
हे नारि नर धारण करो, इसमें कसाला काह है
सर्व आप का दुख छुटै, पदवी अमर के वास्ते
सुख शान्ति मुक्ती सब मिलै, आओ अगर ये रास्ते
हो आप सब अजरा अमर, पर दुःख पाये हो कड़ा
खानी औ बानी मानि कर, चक्कर हि खाये हो बड़ा
यह जोर जालिम जक्त है, इसके न दुख का थाहहै
पर दुःख यह छुटने के हित, सीधासरल गुरु राह है

---

* ग्रहण-

नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। तासे वही गुरु वानी को ही सर्वश्रेष्ट महाँ मन्त्र जानना चाहिये, और उसीको

हम भी तिसी में था दुखी, गुरु ने प्रखा दीन्हा छुड़ा
आपके दुख छूट हित, गुरु न्याय ये कहना पड़ा
हे जीव क्यों सोते पड़े, कुछ होश करके जाग अब
सदगुणसे करिके राग, अरु दुर्गुणसे करु वैराग्य सब
यहिधारि सद सुखिया बनो, धन धाम तन सबनाशहै
जेहि में मोहा गाफिल पड़े, आखिर में छूटै खाश है
दुरगुण कभी होवे नहीं, ये ख्याल में राखो सदा
निर्णय सहित मीठा बचन, गुरु न्याय से भाखोसदा
सत मग रहो सद गुण गहो, कूमग कदम धरना नहीं
वैराग्य सबही नरि नर को, इस तरह करनो चहीं
होने है लायक आज ही, नर देह में सब कार्य ये
खोने है लायक यह नही, नर देह ही से सार्य* ये
लेकर सहारा संत गुरु से, लेव कर हे नारि नर
जीवन में सुख शान्ती मिलै, ये हंस रहनी धारि कर
संत शरण ने आप सबके, जान कर हितकर कहा
धारण करो धारण करो, धारण करो नर नारि हाँ

---

* यानी नर देह ही में, सर्य नाम हो सकता है अन्य खानि में नहीं

जी जान से ग्रहण भी करना चाहिये। और भी श्री सदगुरु संत के, प्रतिकूल उलटा काम को नहीं करना चाहिये। बल्कि जहाँ तक हो सके, सर्व भक्त, सज्जन, नर नारियों को चाहिये, की आप श्री सदगुरु साहेब जैसी अमृत मार्ग पर चलने कि आज्ञा देवें उसी अनुसार करना, धरना, चलना चाहिये, हरदम यह खूब ध्यान रहे, की कभी भी आप श्री सदगुरु साहिब के विरुद्ध खराब बर्ताव, या खराब काम ना होने पावे, जासे अपने ऊपर श्री पारखी सदगुरू की दया दृष्टि बनी रहे। हर वक्त यह अमृत निर्णयपद सन्मुख रखना चाहिये,

॥ श्लोक ॥

ध्यानं मूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजा मलं गुरोः पदम्।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा॥
गुरूर्देवो गुरूर्धर्मों, गुरुनिष्ठाः परन्तपः।
गुरोः परतरं नास्ति, नास्तितत्वं गुरोः परम्॥

सारांश— गुरू०—

इस संसार में सर्व ध्यानों से बढ़कर, सर्वोत्तम श्रेष्ट ध्यानों में मूल, परम श्रेष्ट ध्यान मुख्य एक

पारखी श्री सदगुरु के ज्ञान मूर्तिका, या पारख गुरूपद का है। तथा सर्व पुजावों से बढ़ करके मूल मुख्य श्रेष्ट पूजा श्री पारखी सदगुरुदेव के चरण कमलों का है। इस जगत में सर्व मन्त्रों से बढ़कर, परम श्रेष्ट मन्त्र मूल मुख्य गुरू मन्त्र, विवेकी पारखी श्री सदगुरू के उपदेश रूप निर्णय अमृत वाक्य ही हैं। एवं मोक्ष होनेमें मुख्य मूल कारण, पारखी श्री सदगुरूदेव का कृपाद्रिष्टि ही है। समस्त जग में सर्व देवों से बढ़कर, परम पारखी, दाता पारख बोध देने वाले सर्वो से श्रेष्ट श्री सदगुरू ही प्रत्यक्ष पूज्य परम इष्ट देवता हैं। श्रीसदगुरू का कहा हुआ जो अमृत बचन उपदेश है, वही ही सत्य सर्व धर्मों में धर्म है। और सांचे सदगुरु सन्तों में सत्य, भाव, प्रेमनिष्ठा ही सर्व जप तप यज्ञादि से बढ़ करके तप सदगुरु में प्रेम भाव रखना है, एवं गुरु पद की निष्ठा ही परम तपस्या है। इस नाते पारखी श्री सद्गुरु सन्त से परे और कुछ नहीं, सब मिथ्या

जाल धोखा है। यह कारण की उपर कहे के अनुसार, गुरुपद से परे 'नास्ति' कहिये कुछ नहीं है। ऐसा जानिये, और हे कल्याणेच्छुक नर नारी सद् भक्त जिज्ञासु जन, इसी सर्वोपरि अमर पद गुरुपद को ही अपनावो, और जगत जालों से पार होवो। यों तो इस काम* क्रोध, लोभ, मोह, हङ्कार, आदि दुशमनों को, गुरुसत्संग पारख प्रताप से, समूलता से इनको जरि सहित जीतकर शान्ति होईये। हाँ यह जो काम क्रोधादि शत्रुवोंको जीतना दुस्तर या कठिन मालूम हो रहा

*टि०—जीव ही आप अपने पद से भूल भटक कर दुखी हो रहा है, तहां सद्गुरु संत के सत्संग करके बिबेक ब्यराग द्वारा कामादि दुशमनोको जीतना चाहिये। और कुछ—

यहां विचारो

॥ सोरठा ॥

जीव शक्ति से काम, जीव न जानत शक्ति मम
सहत सदा बदनाम, फिर फिर तेहि के होत बस ॥ १॥

है, तहाँ मुख्य कारण पारखी श्री सदगुरु संतों के सत्सङ्ग विमुखता ही से है नहीं तो यह काम क्रोधादि

जाहि अमर सारूप, अहो हाय लाचार कस
आप आप खुद भूप, सो बिललाता जग्त में ॥२॥
पर यह छूटै दुःख, शिघ्र गहै पारख अगर
मिलै अचल पद सुःख, फिर न बहै भव धारमें ॥३॥
नर य होय कोइ नारि, चहै शान्ति सुख से रहन
देय काम खल मारि, अमर अमर आपै रहे ॥४॥
है पारख नजदीक, आज मनुष्य के देह में
करो सही तसदीक, कहत आप के हितय का ॥५॥
हे मम प्यारे जीव, चाहु अगर कल्यान निज
कहौं सत्य तूं सीव, अमर अमिय पावन परम ॥६॥
करले खूब तू गौर, ठौर ठौर सत्संग करि
जीव परे नहिं और, दौर दौर देखा सकल ॥७॥
मंत्र यन्त्र औ तंत्र, सकल बेवस्था देखि करि
जीवे स्वयं स्वतंत्र, होय पतंत दुख पावता ॥८॥
इसमें कारण भाय, सांचे गुरुसे बिमुखता
जीव रहा बौआय, हाय हाय दुख है दुसह ॥९॥
अहो पियारे मोर, तोर अमित दुख देखकर
हुआ कष्ट मोहिं जोर, ताते कहत उपाय तोहि॥१०॥

जड़ और हम अखँड अमर ज्ञान स्वरूप हैं, इस

मानु मानु कहनाय, गुरु पारख से ले परखि
तेरे परे कोउ नांय, सत्य २ में सत्य तूं ॥११॥
जैस अमर हौ आप, तैस करौ ठहराव खुद
देखो अपन प्रताप, कस न पार तू होय भल ॥१२॥
भला कहो क्या देर, करन कि इसमें बात है
उठ २ अबहिं सबेर, मुक्ति लेव सबको परखि ॥१३॥
यदी यहाँ चुकि जाव, मनुष्य देह को पाय के
फिर न मिले अस दाव, घाव सहो त्रय खानि का॥१४॥
सुनो हमारे मीत, हीत तुम्हारे की कहौं
लेव काम रिपु जीत, तीत* होव संशय नहीं ॥१५॥
गुरु गुरु पारख देखु, स्वयं मुक्त प्रत्यक्ष हैं
कस न फन्द फिर फेंकु, मुक्त होय जग सिंधु से ॥१६॥
नहीं देर की बात, जात समय सब बीत है
कवन शक्ति है तात, जात स्वांस आवै नहीं ॥१७॥
निकलि गये पर स्वांस, आय सकत वह फिर कहां
परे चक्र शिर फांस, चूकि जाय का फल यहै ॥१८॥
सुसुकि सुसुकि दिन जाय, रक्त आंसु रोवन परै
असह† कष्ट अति पाय, तहां छुड़ईया कोई नहिं॥१९॥

* पार † सहने योग्य नहीं ।

प्रकार सद्गुरु सत्संग से जानने पर, कामादि शत्रु शिघ्र नष्ट हो जायंगे, सर्व सुख शान्ति इच्छुक को यही बनाना चाहिये—

अब रह गयें हमारे भूले भाई जन, जो इस जगत में सदगुरु सत्संग से बिलकुल विमुख होकर जहर ही को अमृत, दुख ही को सुःख, मान लिये

सो दुख अगम अपार, कहने माफिक का नहीं
बहे नैन जल धार, रोय रोय सब दिन बितै ॥२०॥
वहां न कब्जा मोर, लागि सकै तोरो नहीं
आज यहां है जोर, चेतु चेतु चित में समुझि २१
जल्द जल्द तय्यार, होय आव गुरु मग तरफ
गहौ परख उजियार, खोय जाय जन्मृत सकल २२
चमन रूप सत्संग, अमन सदा मन से रहित
सकल होत दुख भंग*, रंग लगत सतसंग के ॥२३॥
अभी अभी हो मुक्त, युक्ति देंय गुरुदेव अस
परख सार यहि उक्त†, नशे जनम झंझट न फिर।२४।
संत शरण मन फेर, कहां पड़ा बेकार में
कहत सदगुरू टेर, परख २ पद अमर निज ॥२५॥

* नाश † उपाय ।

हैं और मुक्त को नर्क, औ नर्क ही, को मुक्ति, मान बैठे हैं। जिन सबों की बुद्धी वा समझ, बिलकुल बिपरीत उल्टी हो उल्टी* जा रही है। जो की सर्वोत्तम मोक्ष-भूमिका को पाकर और परम सुन्दर स्वच्छ पवित्र मानुष ऐसा नाम धरा के या कहा के भी—कुत्ता, सियार, सूकर, लोमड़ी, बिल्ली, और गिद्ध, कागड़ा, चिल्होर, बकुला,

---

*टि०—संत गुरुसे बिमुख होने से सब जीव कैसे किस तरह उल्टे चल रहे हैं। ताको नीचे दो छन्दो से बिचारिये।

॥ हरी गीत छंद ॥

सब जीव उल्टे जा रहे ॥ टेक ॥

दाया छमा संतोष, रहनी हंस की सब छोड़कर
सद् बिबेकी पारखी, गुरु संग से मन मोड़ कर
सज्जन वो सतसंगत को तजि,बेकार चहुँदिश धा रहे
व्यापी कुमति संसार में, सब जीव उल्टे जा रहे १
सुन्ते कहीं पर संत तो, जाना वहाँ दुख मानते
दर्शन तो करना दूर, बल्की और इर्षा ठानते

आदि के समान ही बने बैठे हैं। उन हमारे भोले भाले भूले भाईयों को भी हितयकर चेतावनी है— कि हे भाईयों आप सब अपने अबिनाशी अमर जीव को क्यों महान नर्क सागर में, या जलते

अमृत बाणी त्याग कर, विष का तराना गा रहे
कागा कि बुद्धी धार कर, सब जीव उल्टे जा रहे २
छा रुपईया सेर सब, सुर्ती तमाखू खावते
दुरगन्ध अंतःकरण, काला दांत भी हो जावते
चारो तरफ थुकना पड़े, पन स्वच्छता सब जा रहे
फिर भी तिसे नहिं छोड़ते, सब जीव उल्टेजा रहे ॥३॥
चार रुपया सेर घी, तिसको न खाया जात है
जिससे बिमल होवै बदन, बल और ही बढ जात है
सब तन्दुरुस्ती ठीक तिसको, भूलकर नहिं खा रहे
ए भूल कैसा है घुसा, सब जीव उल्टे जा रहे॥४॥
दारू के बोतल एक का, दो तीन कीमत* दे रहे
पीकर नशा में चूर हो, दुनियाँ में अपयश ले रहे
खोते रकम होते नकम, लज्जा शर्म जहंड़ा रहे
बौरान कुत्ता के तौर, सब जीव उल्टे जा रहे ॥५॥

* रुपया

हुए प्रचन्डाग्नि में ही झोंक रहे हो। अरे भाईयों कुछ तो होश करके जागो, और धर्म भक्ती सत्संग में लागो—देखो गुरू न्याय कैसा कह रहा है—

छन्द

होश करो होश करो, क्यों ये पड़े हो।
कुछ होश करके खोज करो, क्यों ये पड़े हो॥
दुख ही को सुःख जानके, क्यों मान पड़े हो।
ऐसी नबुद्धि धारि के, नदान बड़े हो॥
छप्पन तरह के भोजन, हम सबके लिये हो।
मेवा मिष्टान ब्यंजन, हम सबके लिये हो॥१॥

दूध रुपयो एक में, दो सेर मिलता है सही
देह ताकत वर बने, तिसको कभी खाते नहीं
चाउर को तज भूसी चबा, नाना तरह दुख पा रहे
कैसे सुखी होवें भला, जब मार्ग उल्टा जा रहे॥६॥
आभचछ भोजन हिंसकी, जो न्याय से बिपरीत है
गरहण न करने योग्य जो, तिससे किये सब हीत हैं
मानुष्य करतब त्याग कर, राक्षस हि होते जा रहे
चीलह कउआ गिद्ध सम, सब जीव उल्टे जा रहे॥७॥

दूध दही घी खोवा, लड्डु औ सोहारी।
अंगूर सेव औ अनार, और छोहारी॥
मिश्री गरी औ चिन्नी, खिशमिश बदाम है।
फल फूल भांति भांति के, अनगिन्त नाम है॥
जिस भोजनो के वास्ते, देवते तर्स रहे।
वह हम सबों के वास्ते, निशदिन वर्स रहे॥२॥
हे भाय जिसकी नाम न, गिन्ते है बनारी।
ऐसो अमुल्य अमृत, भोजन है हमारी॥
तेहि को हे भाय त्याग के, बिष काहे खात हो।
पक्की सड़क को छाड़ि के, कुराहे जात हो॥
मल मुत्र पीब रक्त औ, हड्डी चबात हो।
नर्कील चीज खावना, अच्छी न बातहो॥३॥

अपने के सम नहिं दूसरे का, दर्द पीरा दीखते
पर दीन जीवों को सता, जीभों से हड्डी चीखते
निज* बाल बच्चों पर दया, दूसरे को कत्ल करा रहे
खुद† कत्ल यक दिन होयँगे, यश जीव उलटे जा रहे॥८॥
आठ पैसा सेर, कोदो धान जव सब बेचते
करते हैं मेला धूम से, नाटक तमासा देखते

* अपने † आप ही

मच्छी औ मांस देख लो, मुर्दों से नीच है ।
मदिरा शराब लेख लो, मुत्रों से कांच है ॥
बिचार करके देख लो, प्रत्यक्ष की नहीं ।
निरवार करके पेख लो, है बात की नहीं ॥
अब ठीक है जो बात तो, मानो हे भाईयों ।
नहिं दुःख है त्रय खानि को, जानो हे भाइयो ॥४॥
यह संत शरण आपके, हितकर हि बताता ।
अंतः करण से आपसे, लिखकर हि सुनाता ॥
हे प्राण पियारे हमारे, भाय जन सुनो ।
कहता हूँ पुकारे हमारे, भाय मन गुनो ॥
लखि लखि ये दशा आप की, आती है रोवाई ।
जिससे हो अच्छा आपकी, कहता सो बुझाई ॥५॥

द्वादस्स* आना पाव ले, नकली मिठाई खा रहे
बेहोश कैसे नर बने, यक दम ही उल्टे जा रहे ॥६॥
घर में तो लरिके खाय बिन, हर एक दिन भूखा मरें
पर होय चाहे जौन, मेला में रकम खर्चा करे
आखिर में पाछे हो दुखी, नाना यतन फैला रहे
पर क्या करे लाचार बन, सब जीव उल्टे जा रहे ॥१०॥

*बारह

हिंसा कर्म को छोड़ि, अहिंसा को धारिये ।
मदिरा से मनको तोड़ि, पवित्रा सम्हारिये ॥
हिंसा शराब खान पान, त्याग करो जी ।
इतना ही मात्र जान से, बैराग्य करो जी ॥
दाया छमादि सदगुण, हृदय में बसावो ।
नहिं भूलि अपने जीव को, हत्यामें फंसावो ॥६॥

स्वादो से जिभ्भा रोकना, मुशकिल हुआ नर जीव से
जीभ के चट्टू बने, दुख पावते सादीव से
मद मस्त हो चिखना में, पर का मांस तक भी खा रहे
मद पी दिवाना हैं बने, सब जीव उल्टे जा रहे ॥११॥
गाली बचन कटु बोल कर, दुख दूसरे को देत हैं
छल बल जबरियन करके भी, धन और को हरि लेत है
इस हेतु से सब हो दुखी, त्रय खानियों में जा रहे
करते हैं नाना अघकर्म, सब जीव उल्टे जा रहे ॥१२॥
माता बहन बेटी बहू का, ख्याल कुछ करते नहीं
मन इन्द्रियों के हो बशी, बेभिचार में मरते सही
आजा पिता बूढों बड़ों को, एक दम ठुकरा रहे
गुरु संत से तो हो बिमुख, सब जीव उल्टे जा रहे।१३।

गुरु संत भक्त सज्जन कि, संग करो जी।
यह मंत्र सर्व सज्जन कि, अंग धरो जी॥
नेम प्रेम संतन में, ग्रंथन में धार।
त्रिशूल तीन खानी हो, कष्टन से पार॥
नर तन मिला है औसर, लीजै तिसे सम्हारि।
यह बैन कहा अक्सर* कीजै हृदयमें धारि॥७॥

जाति में तो ऊँच सबसे बन रहे की पांति हूँ
हूँ मान्यवर सारी जगह औ रूप में भी कान्ति† हूँ
पर देखिये कर्तव्य तो नीचो नीचे जा रहे
तब है कहां पर उच्च पन जब मार्ग उलटे जा रहे॥१४॥
कश्यप वो रावण कंस आदि जो ऊँच में सरदार थे
कौरों कुटुम वो जांति में हरदम भरे हंकार थे
ए सब भी जांति औ पांतिवों धन धाम में भरपूर थे
सति न्याय औ सद्धर्म से यक दम ही मन से कूर थे १५
संत को औ सब तरह से मारते फटकारते
सुन लेंय संत को जो कहूँ तो जा उन्हें हटकारते
काम क्रोध में मस्त हो शुभ‡ संत का निन्दा करे
दाया धर्म से हीन हो अपकर्म को करते फिरे॥१६॥

*एक मात्र आपके कल्याण के लिये। † सुन्दर ‡ सच्चे और अच्छे।

रिषी मुनी आगे, जितने हुये रहे।
जीवो पे दया धारो, यह ही कहे रहे॥
ब्रह्मा वो बिष्णु संकर आदिक ने बताया।
राम कृष्ण आदिक ने यह ही चेताया॥
जीवों पे दया राखो हे नारि नर सभी।
सत मिष्ट बचन भाखो हे नारि नर सभी॥८॥

चोरी वो हिंसा लूट में जिव मारि के खाते रहे
भूल कर सत्संग में नहिं स्वपन में जाते रहे
पर बीर जब परघट हुये तब कीन्ह उनका नाश है
संत बिमुख क फल यही नर्कों में कीन्हा बास है १७
संत सेवन धर्म ना करने क देखो हाल है
जो आज गुरु से है बिमुख वो दुःख में बेहाल हैं
नर देह मुक्ती हित मिला सो खोय धोखा खा रहें
कैसा बने पशु बैल सम नित २ ही उल्टा जा रहे १८
नाभा बिदुर सेवरी रही केवट ये जाति के हीन थे
सत न्याय वा सत्संग गुरुके भक्ति में लव लीन थे
धन से रहे दारिद्र वै औ जाति पांति से नीच ते
हिसा औ मारकाट तजि दाया अहिंसा सींचते १९

सब श्रेष्ट महानो का सम्मत यही लखो ।
बस एष्ट दया जानो नर्कश नहीं चखो ॥
है सर्व श्रेष्ट न्याय तो मानन हृदंय चही ।
हैं जीव दुखी भाइयों जानन हृदंय चही ॥
सदगुरु श्री कबीर आप मन्त्र सुनाये ।
दोउ दीन दया राखो यही संत जनाये ॥६॥

नम्र वे रहते रहे नित साधु गुरु में प्रेम था
सत धर्म में अडिग रहे अरु सत्य पालन नेम था
हरदम वो रहते चैन से बैकुंठ में बासा किये
हर तरह उनको सुख मिला जग नाम ऊजासा किये२०
आज जो ब्रतमान में गुरु भक्ति सेवा कर रहे
सुख शान्ति उनको प्राप्त है आगे को मेवा धर रहे
सत्संग कर गुरु साधु का आगे कदम बढ़ा रहे ।
मोक्ष हित संस्कार पुष्टी को बढ़ाते जा रहे ॥ २१ ॥
ऊँच नीच औ नारि नर भक्ती धर्म में लागि हैं ।
वै ही सुफल जीवन किये गुरु भक्ति में जो जागि हैं ॥
नाहीं तो चाहे हो कोई सत मार्ग से जो हीन है ।
पशु कीट बिच्छू सर्प सम नर जन्म पाय क कीन है ।२२।

हिन्दू तो दया धारो मुसलिम मेहर धरो।
नहिं भलि जीव मारो असली धरम करो॥
अति श्रेष्ट न्याय आपने हृदय से खोल दी।
सबकी हितैषी गाय आप बोल बोल दी॥
नर नारि ऊँच नीच कोई गहै अगर जो।
सुख शान्ति ताहि होई जो लहै डगर वो॥१०॥

इसलिये हे हमारे प्रिय मित्र जनो, भला अपने अन्दर में विचार कर देखो सही या गलत है की, गौर से देखने पर मालुम ही हो जायगा, देखो जैसे यह अपनी शरीर रजबीर्ज से बनी हुई

सत्संग में जो नर गये गरहण किये सद् ज्ञान है।
सत्संग के परताप अपना कर लिये कल्यान हैं॥
संत गुरु के सेव से छूटैंगे यम के जाल से।
मुक्ति स्थित पाय कर छूटैं कर्म औ काल से॥२३॥
हे नारि नर सुनि लीजीये सत्संग का परताप है।
गुरु संत संग गुनि कीजिये फिर ना मिले दुख ताप है॥
संत शरण तु पतित हो गुरु साधु से मुख फेरता।
जिससे मिलै वह अटलपद सो ठौर क्यों नहिं हेरता॥२४॥

है। बस उसी रजबीर्ज से खसी, बकरी, मुर्गी, मछरी, यानी जहाँ तक जीव धारी हैं, वो सबों का शरीर उसी पीब रक्त मल मूत्र हाड़ चाम दुर्गन्धी, रजै बीजों से बना है, तहाँ ऐसा ना ख्याल कर, आप सब ऐसी कम अक्लपन अपनी बुद्धी बना लिये हो की अपनी ही सरीखा मुत्र गन्दों से सब जीवों की शरीरें बनी है तहां तुम अपना मलमुत्र छोड़ कर पराये दीन जीवों के हाड़ मांस चिचोर ने में सुख मान्ते हो—अहो ठीक २ बिचारने से इस जग* जीवों की कैस उल्टीमती हो रही है,

* ॥ छन्द ॥

जग की मती उल्टा भया ॥ टेक ॥

मानुष्य हो हो कर सभी पशुवों से बन्ते छोट हैं।
अपना धर्म सब छोड़कर कर्तब्य करते खोट है॥
सत न्याय सच्चा बोलना सबों के दिल से उठ गया।
कुकरम कमाते रैन दिन जग का मती उल्टा भया॥१॥
भूलि कर गुरु साधु के सत्संग में नहिं जात है।
संत गुरु से हो बिमुख अधरम करे दिन रात है॥

क्या कहें कुछ कहते नहीं बनता है। हे भूले भाईयों जरा अपने दिल में यह बिचारोकी जैसे आखिर में हम अपने सम दूसरे जीवों का पीरा वा दुख दर्द न जान कर उन्हें खा लेते हैं—तहां आप सब यह नहीं विचारते हो की आखिर में जिन जिन जीवों को हम मारि मारि खाते हैं—वे सब जीव भी तो हमारे ही सामान हैं, यों तो हममें कितनी महा भूलभरी है, की हम अपने मल-मुत्रों से तो घृणा मानते हैं, और दूसरे जीवों के मलमुत्रों को अपने जीभों से उठा उठा के खा जाते हैं, तो हमारे समान नीच इस संसार में कौन होगा—ऐसा अपने दिल के बीच में बिचारो, और सर्ब जीवों पर दया धारो—जाते सर्ब प्रकार सुख होवो, ताते हमारे सर्ब भाईयों को चाहिये कि

करते न इतना ख्याल तक किस हेतु मैं नर तन लिया।
खोये जनम पशु भोग में जग का मती उल्टा भया॥२॥
संत गुरु को देखकर मनमें उड़ाते मस्करी।
हंसते ठठाय ठठाय के गुरु संत की निन्दा करी॥

आप सब इन तुच्छ मीन मास मदिरा आदि को छोड़कर सुखी हो जावो—देखो प्यारे भाईयों यह आप ही के सुखकर बचन है, ताको धारण करो, मानलो आप समस्त मनोमय आसक्ती त्याग कर मुक्त नहीं हो सकते हो तो, कम से कम इन मास मदिरा से तो मुक्ती ले लेव, इसमें क्या बड़ी बात है—इसलिये हे भाईयों अब अंतिमी यही शिक्षा है की सर्व अभक्ष नकीला चीजों को छोड़ते हुए और भी चोरी बेभिचारी आदि नाना अघ-पाप कर्मों से इसी जीवन में मुक्ती लै लो।

भाता है चोरी औ जुवारी बेभिचारी वेहया।
ठग घूस खोरी धुर्त पन जग का मतो उल्टा भया॥ ३॥
घर के अगर पालिवार कोई संतके लग जाय है।
घर भर कहैं पगला गया औ देखिके अनखाय है॥
सब लोग उसको घेर कर कहते हैं कस कुल्टा भया।
अब काम अस करना नहीं साधु के लग जाता है क्या॥ ४
साधू नहीं दुनिया के ठग बदमास इनको जान लो।
जाना न इनके संग कभि मेरा कहा अब मान लो॥

यानी जैसे कोई २ संत हो जाते हैं, तो सारा संसार से अपने घर कुल कुटुम्बी-आदि से दृढ़ बैराग्य करते हैं। तैसे मानलो आप सब, संसार भर का और कुल कुटुम्बी आदि से बैराग नहीं कर सकते हो, तो भला इन मदिरा मछरी आदि से तो दृढ़ पक्का बैराग्य करो। और जो आप सब गुरू सत्संग रूपी निज घर छोड़ कर, गड़ही पोखरा,

---

कह करके ऐसे बैन को गुरु ऐन* से सब खींचते।
शुभ संस्कार को तोड़ कर गुरु साधु संग से हींचते ।५।
भोजन औ छाजन भोग में करते सदा आराम हैं॥
भय मोह निन्द्रा में बिताते सब सुबह औ शाम हैं।
इस पशू के भोग में सब लोग नित फंसता गया॥
गुरु साधु संगत हीन हो जग का मतो उल्टा भया ६
इतने करम के अन्दरैं संसार भर तल्लीन हैं।
तब जान लो हे भाइयों पशुओं से भी नर हीन हैं॥
जो मोक्ष होने हित मिला सो भोग में खोया गया।
तब तो समझ लो हे मनुष्य बेकार में नर तन भया ७

* कानून से

तालाब, डोई, नदी, नारा, कुलवा, कुसंग, और अनेकों जगह सिवानो में राग या मोह प्रेम करके, मछलिओं के यहां घर बना लिये हो। सो उस झूंठे मन मानिन्दी रूपी घर की आसक्ती त्याग कर उससे बैराग्य करो, यों तो इंन गढ़ही पोखरादि घर से भाग कर और सच्चे संत गुरू सद भक्त सज्जन आदि संग रूपी घर में लाग कर सुखी

इस बात पर संका करो को मुक्त हम नहिं होयेंगे।
मुक्ती बड़ी भारी कठिन हम करि न ताहिं सकोंयगे॥
उसका सुनो उत्तर ये है मुक्ती नहीं चाहो अगर।
देंह सुख संसार सुख को ख्वाहिशो तो है मगर ८
पहिले जनम में धर्म भक्ती दान पुन्य किहे रह्यो।
सो आज पाये हौ वही पंहिले जो कुच्छ दिहेरह्यो॥
अगिले जनमके वास्ते भक्ती धर्म करिलेव कुछ।
जौने से आगे भी मिले इस हेतु से भी देव कुछ।९।
जो आज कुछ नहि देवगे आगे भी पावोगे नहो।
भूखा सदा रहना पड़े जो अन्न खावोगे नहीं॥
दृष्टाँत इस पर एक है सो ध्यान से सुन लीजीये।
हीतार्थ आपै के कहा भावै सो मन में कीजिये १०

होवो, क्यों कि सदगुरु सत्संग ही सच्चा निज घर जानो वही सांचे सत्संग रूपी घर में जाने से सुखी हो जावगे—और जो तुम सब इन खसी बकरी मुर्गी और नाना तरह तरह का मछरियों के नामों के घर २ के उन सबमें अपनें पलिवारों से बढ़-कर प्रेम रखते

जैसे कोई किसान घर अपना नहीं छा पाय है।
थोरै दिनो के बाद में बर्सा समय नगिचाय है॥
बर्सा अधिक होने लगा नर भीजने से होष की।
हा हाय घर छाया नही हमने बड़ा ये धोखा को ११
आन्ही औ पानी जोर से अब भीज दुख पाये बहुत।
बहु भांति सहिकै कष्ट को रोये औ चिल्लाये बहुत॥
पर क्या करे लाचार हो अब बस तो कुछ चलता नही
खोजे अनेको भांति से कहुँ ठौर है मिलता नही १२
कैसे भला पावैं ठौर घर अपना जब छाया नहीं।
भोजन कहो कैसे मिलै तनसे जो कमाया नहीं॥
अब रोय रोय औ तलफ कर वो नर बिकल मनमे हुआ
जाड़ा औ ठन्डी खाय कर आखिर को तन तज करमुआ
दृष्टाँत यह पूरा हुआ सिधान्त इसका अब सुनो।
हे भाइयों बीचार कर धरण करो मनमें गुनो॥

हो सो मिथ्या झूंठा जानकरके त्यागो-तहां कुटुम्ब पलिवारों से बढ़कर उन मछरियों में मोह या प्रेम रखने का यही प्रत्यक्ष प्रमाण है, की संसार में सब अपने अपने माने हुए हित मित्र नाता कुल कुटुम्बी में प्रेम रखते हैं, और हर तरह से सुख भी पहुंचाते हैं। लेकिन यह सब होते हुए ऐसा नहीं है की

नर रूप तो यह जीव है छप्पर धर्म भक्ती अहै।
परलोक जाना जानलो बर्सात का दिन वह अहै १४
जो धरम भक्ती को करन जानो वो घर का छावना।
थोरे दिनै के बाद में परलोक आखिर जावना॥
जो जीव भक्ती धर्म सेवा कुछ नही कर पाव है।
परलोक में तब जाय कर करना पड़े पछताव है १५
जैसे वो मनुष्य घर बिना कतहूँ न पाता ठौर था।
तैसे दशा परलोक मे यह बात समझो गौर का॥
धर्म रूपी घर बिना परलोक में रोना पड़े।
जब आज कुछ दीहो नही भूखे हि तब सोना पड़े १६
शिरधुनि के तब पछतावगे परलोक के बरसात में।
सुख साज भोजन क्या मिले जब कुछ नही है पासमें

कोई अपने सगे सबन्धी प्रेमी ही को खा लेवे-ऐसा तो कहीं देखने में नहीं आता है, परंतु आप सब तो उन सगे कुल कुटुम्बी से भी ज्यादा प्रेम व मोह इन सब अनेक मछरी आदिक जन्तुवों से कर रक्खे हो, की मारे प्रेम व मोह-के उनको खा भी लेते हो। अरे भईया कुछ बिचार करो और यह प्रेम से बचो–हे भाईयों यह कोई सच्चा प्रेम नहीं है, कि मारे प्रेम के उनके बाल बच्चों को और उनको सेंक भूज या चउंक बघार के-उनके

तब राय राय के अन्न जल बिन सब कटैगा दिन तेरा
भक्ती धरम कीन्हो नहीं परलोक मे तब क्या धरा १७
तब अन्न जल खाये बिना भूंखे वहां मरना पड़े।
नहि संत गुरु को सुख दियो इससे वहां जरना पड़े॥
सहि सहि के नाना कष्ट को सब दिन बिताना जानलो
देये बिना पावो नहीं सच्चा बचन परमान लो १८
आखिर को सहि सब दुरदशा चल भी वहां से देवगे
पूरब में जब कुछ न दियो तब क्या वहां पे लेवगे॥
इस लिये हे मानवी प्यारे धर्म कर लेव तुम।
आगन्त में जो फिर मिलै इस हेतु से करसेव तुम १९

सारे शरीर धजा को खाय चबाय कर स्वाहा कर देय- हे भाई जन आप-ही सब विचार कर देखो-यह कोई अच्छी प्रेम नहीं है। और जो यह प्रेम में पड़कर नाना सुख मान रहे हो, खुब धूम धाम से आप सब सुख के नाते जीवादि मार-मार के खा रहे हो, तो यह कोई सुख का काम नहीं है। और सुख का—अरे भाईयों आप सब अपने हकमें या अपने लिये बल्कि, अपने ही हाथों से आप सब दुसह दुःख का बीज बो रहे हो जिससे की आगे २ दुख का अधिकारी बने रहोगे। यों तो

जो नाश तन धनकुल कुटुम परिवारयक दिन होयगा।
उसके हि पालन औ फिकर में उम्र अपना खोयगा॥
हे भाय कुछ दिल सोच कर अपने लिये भक्ती धरम।
कर लेव हे कर लेव हे अपने लिये अच्छो करम॥२०
नाना तरह के फैलसूफी में पड़ बेहोश हो।
जाना है यक दिन आपको उठकर करो कुछ होश हो
कैसा पड़े हैरान नाना गप सड़ाका में फंसे।
ऐसा बड़े दिवान काना जा बिपति घर में धसे॥२१

मद मासादि से इसी जीवन में जीते जी मुक्ती लै लो, और सारा दुष्कर्म बुराईयों को छोड़ते हुए इसके साथ-साथ सच्चे सदगुरु सज्जन सन्तों के सत्संग में आओ, जावो, सत्त धर्म नम्रता-आदि सीखते हुए उस पर चलो—तहाँ सांचे सज्जन सद

शादी औ गौना नाच गाना भांग बीड़ी पान में।
जो नाश क्षण भंगुर दुखद रहते हो नित गल्तान में
जिसमे पड़े अलमस्तहो यक दिन सभी छुटिजायगे
इसका नतीजा हो यही त्रय खानि संकट पांयगे॥
तब कुल कुटुम्बी नारि सुत साथी न कोई होंयगे।
इनमे फंसें निशदिन रहे फल रक्त आंसु रोंयगे॥
इससे मवक्का आज है हे यार कर लीजै जरा।
बीते पे दुखका साज है नहि वार* अब कीजैजरा॥
ए संत शरण ने जानि मौका कह दिया है मोत है।
कर लीजीये कर लीजीये जाता समय अब बीत है॥
यम खड़ा गम† कर रहा आयु खतम हो खायगा।
भक्ती धर्म तरसंग कर जिससे स्वतः पद पायगा॥

* देरी † सोच

भक्तों का संसर्ग रक्खो, हे प्यारे भाईयों देखो इस संसार में एक संत गुरु ही संकट से बचाने वाले हैं, ऐसा जानो। और भजन में मनन करो।

॥ भजन ॥

देखो देखो हे मित्रों हृदय में सही ॥
संत गुरु सम हितैषी कोई जग नहीं ॥ टेक ॥
नर नारि जग जोई अहैं दुख के लहर में झोरते।
जिस दुःख में ब्याकुल वही दुख के कहर में बोरते॥
लेजा लेजा के छोड़े दुखै के महीं ॥१॥ देखो २...
मास मदिरा नीच का आहार करते हैं सभी ॥
छल पाप नाना नीच अत्याचार करते हैं सभी ॥
स्वप्न में तो वो शुभ मग सुझावै नहीं॥२॥ देखो २...
लटका जो फांसी पे खुदै कैसे छुड़ा सकता भला ॥
सत मग तरफ ले जाय कब जो नित जबा करता गला।
ऐसे जीवों से बंच कर सदैं से चही ॥३॥ देखो २...
संत गुरु सत में सहारा दे रहे सब जीव को ॥
सद मंत्र सारा दे रहे दाया सर्ब ही तीव को ॥
ताते गुरु साधु जगमें सर्ब श्रेष्ट ही ॥४॥ देखो २...

संत शरण संत गुरु आप कृपालू ॥
जीवन के रच्छ करते परम आप दयालू ॥
तिनके सतसंग में जाये सदैं सुःख ही ॥५॥ देखो २
देखो २ हे मित्रों हृदय में सही ॥

रहस युत बैराग्य पर

॥ गजल ॥

जिसने समझ लिया बैराग, किया सब त्याग,
गहा पद सारा है ॥
जिसने परख लिया जग राग, तिसे तजि भाग,
सोई भव पारा हैं ॥ टेक ॥
सबसे तजि द्रोह निर्मोह होके ॥
जग से तजि छोह अरु मोह खोके ॥
सबसे होके उदास, रहैं नैरास्य, सदैं निरधारा हैं ॥१॥
धन की तजि चाह निर्लोभ धारे,
जनकी पर वाह तजि के किनारे ॥
जगको सपना लखैं, तनको तजना लखैं,
निशवारा हैं ॥ २ ॥

होके निष्काम कामो को मारैं,
होके अक्रोध क्रोधो सहारैं,
नारि नर को लखैं काल नागा, तिन्हैं तजि भागा,
बमन वत डारा है ॥ ३ ॥
तनके अभिमान को चूर करते,
बनके निर्मान वच क्रूर कहते,
नम्र कोमल बचन सबसे कहते, निर्मद होके रहते,
तजैं आसारा हैं ॥ ४ ॥
जितने हैं जीव जग के मझारा,
मान्ते उनको प्राणों से प्यारा,
कोई जीवों पे नहिं घाव करते, छमा भाव बरतें,
सम्ता पद धारा है ॥ ५ ॥
जक्त भोगों में दुखड़ा निहारैं,
बासना बीज को नित्त जारैं ॥
भूलकर भूलते नहिं कुमग में, रहैं वे सजग में,
पृथक तजि भारा है ॥ ६ ॥
अपने मन इन्द्रियां रिपु को जीतें,
तन बचन मन चलावैं स्वरीते ॥

जड़ से चैतन्य को भिन्न मानैं, अमर दोऊ जानैं,
करैं निरवारा हैं ॥ ७ ॥
पृथवी जल अग्नि बाशु ये चारा,
दर्वं, आकाश यकदम असारा,
पांच तत्वों को जीवे जनईया, पृथक ही रहईया,
स्वतः अविकारा हैं ॥ ८ ॥
जड़ तो जड़ गुण धर्म जड़ के रूपा,
सर्व चैतन्य ज्ञान स्वरूपा।
सब अहैं भिन्न अगड़ित अनन्ता, स्वतंत्र रहन्ता,
सदां निर्बकारा हैं ॥ ९ ॥
पारखी जब तलक नहिं मिलैंगे,
तब तलक बासना बस भ्रमैंगे।
पर वो पारख जिसी वक्त पावैं, तो बन्धन नशावैं,
बहैं न फिर धारा हैं ॥ १० ॥
नाश जाये बरम जक्त धोखा,
मुक्त पारख मिलै पद अनोखा ॥
है अटल नित्य निज में रहावै,
न फिर बन्ध आवै खुदै खुद* रहारा हैं ॥ ११॥

* अपने आप

है यही न्याय कब्बीर गुरु का
मुक्ति परत्यक्ष दिखलाय जिव का ॥
इसको धारैं वही नर सुभागे, न फिर दुख में लागे,
अमर सबसे न्यारा हैं ॥ १२ ॥
संत शरण दीन जिव यक दुखारी,
तिसको पारख गुरू ने उबारी ॥
जन्मरण फन्द नाशे कराला, किये मालो माला,
मुक्त होय पारा है ॥ १३ ॥
है यही पार्ख पद की बड़ाई,
जिसको गहते हि द्वन्दी नशाई ॥
हे मेरे प्रांण प्यारे मनुष सब, गहो पद यहो अब,
मिटै दुःख सारा है ॥ १४ ॥
श्री पारखी सदगुरु के दया से, सत्तम,

प्रसंग समाप्त

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

अष्टम प्रसङ्ग प्रारम्भः

हर एक उत्तम मध्यम नारियों के लिये

हितकारी और श्रम हारी, अमृत पान, अमर मुक्ति की स्वतः स्थान, और सांचा पद निर्भय जान, ग्रहण करने लायक शुभ संदेश वर्णन

पारख दाता, बन्ध नशाता, मुक्त बिधाता, पारखी श्री सद गुरु की बन्दना—

॥ सोरठा ॥

बन्दों पारख रूप, स्वयं प्रकाश कबीर गुरु ॥
जाहि हिये धरि रूप❀, कूप परन संशयनहीं ॥१॥
युगन २ जरि मल, खानि बानि बिकराल का ॥
जाहि कृपा भय धूल, हूल हटा यम फन्द सब ॥२॥
मग मन काल कराल, यही द्वन्द भव पोर का ॥
तेहि मेटत तत काल, जय दयाल जय २ अहो ॥३॥

❀ रहस्य—वा बिचार पारख

सकल पारखी सन्त, अकल दीन भव पारक ॥
तिन्हें नमन तजि हन्त, दास सदा चरणन परत ।४।
परम कृपालू आप, मरम लखाये मुक्ति का ॥
परख उजालू थाप, आप आप संशय रहित ॥५॥
निहसंशय पद दीन, जाहि पाय फिर दुख नहीं ॥
जन्म मरण क्षय कीन, तेहि ते बन्दों भांति बहु ॥६॥
स्वतः शाँति में धीर, धन्य नरायण देव हो ॥
संत शरण के पीर, हरि लीना देके दरश ॥७ ॥
कृपा द्रिष्टि तव धारि, नारि हितयकर मग कहौं ॥
सुनि कंटक सब टारि, शान्ति होंय हृदय में धरि ।८।

प्रारथना

पारख दाता गुरुवर तुमको, जै नमोंनमों जै नमोंनमों ।
तारक दाता प्रभुवर तुमको, जैनमों नमों जै नमोंनमों ।
हम हीन मलीन पतित होकर, दुख जनम जनम से पाय रहा । दुख टारक दाता वर तुमको, जै नमों नमों जै नमों नमों ॥ १ ॥ दर्शन देकर दुख नाश कियो, अपना पारख परकाश कियो ॥ मुक्ती के विधाता कर तुमको, जै नमों नमों जै

नमों नमों ॥ २ ॥ जग ब्रह्म कि पर्दा टार दिये,
जड़ चेतन का निरवार किये ॥ भ्रम भूत कि कांटा
हर तुमको, जै नमों नमों जै नमों नमों ॥ ३ ॥
जितना रहनी संतों का है, जित सद गहनी हंसों
का है ॥ मम हृदय में दीना भर तुमको, जै नमों
नमों जै नमों नमों ॥ ४ ॥

बन्धनमुक्ती दरशायदिये, जीवनमुक्ती ठहराय दिये।
जड़ग्रन्थि नशाता गुरु तुमको, जैनमों २ जैनमों २।५।
इन्द्रीमन जग तजिरहना है, निज स्वयंपरस्वपद गहना है
प्रभु कृपा दृष्टि यह सब तुमको, जैनमों २ जैनमों २।६
यह संत शरण करजोरगुरू, तवचरणमेंशोश झुकाता है
नित २ ध्याता है प्रभु तुमको, जैनमों २ जै नमों २।७।

अब यहाँ से सर्व नारी बर्गों के लिये परम-हितैषी, शिच्छा अमृत प्रारम्भ हो रहा है ॥ की जिस अमृत शिच्छा रूपी ब्यंजनको पान करने से नारी जनों का सर्व दुसह दुःख नष्ट भ्रष्ट होकर-स्वतंत्र शान्ति सुख वा अजाद पद में-बिराजैंगी-कथा शुरु,—

एक छोटा सा शहर के समीप गांव था—उस गांव में सतसंगी और ब्रह्मचारणी तीन नारियाँ, थीं। जिन्हों का नाम यह था, एक का सत्यावती, दूसरे का धर्मावती, और तीसरे का नाम दयावंती, था—ये तीनों संतों के सतसंगी, तथा साधु गुरुके सेवा, प्रेम, भाव में सच्चीनिष्ठवंत थीं। परन्तु तीनों में—कुछ-कुछ भेद था, जिसका नाम सत्यावती था वह पारखी शदगुरु संतों के रहस्य को सत्संग-द्वारा अच्छी तरह भली भांति से जानछी थी, और चलती भी थी। यों तो पुर्णरीत से ऊसे पारख ज्ञान, का बोध हो गया रहा, वह केवल सच्चे बैराग्यवान—पारखी संतों के सतसंग प्रताप से, जड़ चेतन, तथा बन्ध मोक्ष का पूरा हाल समझ चुकी थी। यह पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश पांचों जड़ हैं, इंन जड़ तत्वों से अलग सर्ब चेतन जीव अजर-अमर, अखंड, और अनन्त हैं, सो सब अपने-अपने मनोमय बासना ही से चारो खानीमें, जनम मरण का चक्र खा रहे हैं। सो आज-इस नर शरीर में

सांचे श्री सतगुरु पारखी का सत्संग करके और समग्र मनो वासना को त्याग, औ अपना चैतन्य स्वरूप जानकर ठहरने से इस अमर जीव का आवागमन रूपी दुख द्वन्द वा रहट चक्कर बन्द हो जाता है। और मनुष्य का क्या करतव है तथा-किस-किस आचरण से मनुष्य कहा जाता है, इन सब बातों को सत्यावती ठीक ठीक जान्ती और जी जान से आरूढ़ होकर चलती भी थी। धर्मावती और दयावंती सत्संग के निछुक तो ये भी रहीं, पर उसी शहर में एक सन्यासी और दूसरे बैष्णव का स्थान था, यथायोग्य वहां भी सत संग चर्चा होता था, यों तो धर्मावती विशेष करके सन्यासीजी के स्थानों पर आती जाती और कुछ सत संगादि भी सुनती रही। इसी प्रकार दयावंती भी बिशेषतह बैष्णव जी के स्थानों पर आया करती थी, औ कुछ धार्मिक चर्चा आदि सुन्ती रही, यानी धर्मावती और दयावंती ये दोनों पूरे-पूरे कल्याण इच्छुक तो रहीं, परंतु क्या हो बिना

सच्चे पारखी सद्गुरु के संगत किये ठीक-ठीक ज्ञान भी कहाँ से होवे। क्योंकि कहा है कि—दोहा॥

जल परमाने माछरी, कुल परमाने सुद्ध॥
जाको जैसा गुरु मिला, ताको तैसी बुद्ध॥१॥

इसी सत्य न्याय वाक्य के अनुसार ही उन दोनों को बुद्धी रही, एवं सत्संग और संतों में प्रेम औ श्रधा भाव तीनो का रहा-मुक्ति इच्छुक तो तीनो रहीं, पर रह गया उत्तम मध्यम कनिष्ट के सरीखे ही शमझिये। हाँ एक यह बात इन्हों में जरूर था, की कभी कभी ये तीनो मिलान करके सत्संग ज्ञान बिचार का चर्चा आपस में किया करती थीं, तीनो में प्रेम भाव खुब रहा-तीनो में सर्वोत्तम ज्ञान वा समझ सत्यावती को ही था, क्योंकि वह सच्चे पारखी सदगुरु संतों का सत्संगी थी, उसे सब प्रकार का ज्ञान हो चुका था, वह दोनो से श्रेष्ठ बुद्धि और समता भाव वाली भी थी। यों तो सत्संगी यह दोनो भी रहीं, परंतु जैसा संग-वैसा रंग के अनुसार। एक दिन का

बात है कि दस बजे के टाइम में ये तीनो भोजनादि करके और सब प्रकार से तंदुरुस्त होकर, एक अच्छे बृक्ष छाया के नीचे-आकर मिलान किया, औ आपस में तीनो डंडवत बन्दगी करके बैठ गईं औ धर्मावती दयावंती ये दोनो के मनमें यही था, की आज बहन सत्यावती के मुखारबिन्द से सतसंग अमृत ज्ञान चर्चा सुनूँगी, इसी अभिलाषा में दोनो थीं, कि इतने में उस शहर के तरफ़ से दश पन्द्रह माहिलायें आ गईं, और सब नमस्कार करके बैठ गईं। सत्यावती इंन सबों को सोस्त चित बैठे देखकर गुरु ज्ञान चर्चा करना चाहती ही थी, कि एक सहेली हाथ जोर कर बोली, की हे बहन जी मैं सुना हूँ की कभी आप सत्संग में यह शिक्षा दे रहीं थीं, की इस संसार के आराम भोगों से दूर रहना चाहिये, और सब बिषय सुखादि से अपने-अपने मनको रोकना चाहिये। तो हे बहन मैं आप से पूछती हूँ कि ये सब चीजें किसके लिए बना है, और इंन भोगों

को भोगने में क्या हानी है, इसके-त्यागने से क्या लाभ है, सो कहो-लेकिन हमारे समझ से तो इंन भोगों के तरफ से मनको रोकना ही महान दुख है, और आराम से सब भोगों को भोगना ही महा सुख है। परंतु आप कहती हो दुख है, तो अच्छा बतावो किस कारण से और कैसे भोगों में दुख है, सो हे वहन मेरे को, दया करके आप समझा दो। इस तरह का बचन सुनकर सत्यावती कुछ सोचते हुए थोड़ी देर के बाद बोलना चाहा कि चार छा सहेलियाँ ग्राम से आ पहुँची, और मीठे स्वरों से नमस्कार करके यथा योग्य सब नारियाँ बैठ गईं। सबको स्थिर बैठे देख धर्मावती ऊँचे स्वरों से सब महिलाओं से बोली, कि देखो वहनों अब सदज्ञान अमृत कथा होने जा रहा है, ऐसे कुछ घरी हल बलाहट वा चंचल छोड़ करके और शांति स्थिरबृत्ती से सतसंग सुन लो, क्योंकि कि आज हम सबों का धन्य धन्य भाग्य है, और पूर्व का पुन्य शुभ संस्कार जगि आया है, जोतसंसग

सुनने को मिला है, ऐसा सबसे कहते हुए सत्यावती के तरफ इशारा करते हुए धर्मावती बोली, कि हाँ बहन अब आप कुछ गुरु ज्ञान चर्चा सुनाईये वा दर्शाईये।

तब सत्यावती सबको यकाग्र जानकर श्री सदगुरु का प्रारथना आरंभ किया उसी को सब नारियाँ मिल गावने लगीं—

निज सत्य द्रिष्टि दरशाय दिये, पारख गुरुवर २॥
मिथ्या जग लक्ष्य हटाय दिये, पारख गुरुवर २ ॥ टेक
जग भरमि २ दुख पाये हम, फिर, २ वहि मार्ग में धाये हम
सो करिके दया सकझाय दिये, पारख गुरुवर २॥१॥
बुद्धो दुर बुद्धि बने थे हम, मद क्रोध लोभ में सनें थे हम
सदगुण रहनी बतलाय दिये, पारख गुरुवर २ ॥२॥
हे कृपा सिंधु गुरुदेव मेरे, कर रहा विनय चरणोंमें तेरे।
हम दीनदुखी पर ख्याल किये, पारख गुरुवर २॥३॥
जै २ गुरुवर जै २ गुरुवर, तवकृप द्रिष्टि दुख गायगुरुवर,
धनि सांच झूठ परखाय दिये, पारख गुरुवर २॥४॥

धनिधन्यकबीरदयासागरगुरुदेवनारायणगुण आगर
यह संत शरण हरखाय लिये पारख गुरवर २॥५॥

इस प्रकार से श्री सदगुरु की प्रार्थना करके सत्यावती ने गुरुज्ञान अमृत कथा कहना शुरू किया—जिन सहेली ने यह कहा था, कि जग भोगों में आराम है और तिसको त्याग ने में दुःख है—तिनको सत्यावती ने समझाया, कि इसका उत्तर पाछे से समझाऊँगी अभी इस दुःख संसार का तुम्हें ठीक २ बोध न होने से ही इस जग भोगों में नाना दुसह दुःख होते हुए भी सुख मालूम हो रहा है, तिसका अच्छे प्रकार से, खुलाशा करके आगे कहूँ गी—अभी जो गुरु कथा होने जा—रहा है इस पर ध्यान दो—

मधुर मीठा नम्र और सत न्याय से सनी हुई अमृत बचनो से सत्यावती ने सर्व बहनावों को समुझाते हुए बोली की देखो बहनो यह संसार सदा से है, और कभी इस संसार का नाश नहीं होता है, ताते यह—जगत अनादी है। ऐसा अपने २

अंतः करण में पक्का जानो—इसके बाद देखो बहनों जो यह हमारा, तुम्हार, चेतन जीव है वह भी सदा काल से अनादी हैं, औ अजर अमर अखंड है, नाश से रहित अविनाशी है—यानी इस जगत भर में जितने जींव धारी नर या नारी और पशु पन्छी, वा कृमि कीटादि जहाँ तक हीलते-डोलते, खाते पीते, सोते जागते जीव हैं, सो सब अखंड जीव अपने अपने स्वरूप से, अजर, अमर, है, और एक नहीं बल्कि वे सब जीव अपने स्वतः रूप से अनन्त हैं। उन सब जीवों का भोग साज जैसे की भोजन, छाजन, मैथुन, मोह, निन्द्रा, और भय। अब यही भोग सुख है,। सो समस्त सब चारो खानियों के जीवों को इन भोगों का सुख सब का एकसा है। ऐसा जानो, क्यों कि देखो बहनों जैसे हमारे नर नारियाँ जातियों में, अपने अपने बाल बच्चों में या नाना प्रकार के सुख भोगों में हर तरह खुशी से सुःख मनाते या मान्ते हैं। देखो तिसी प्रकार से—पशु पन्छी आदि अपने

अपने बाल बच्चों में, तथा चिड़ियायें भी अपने अपने अंडो बच्चों में कितनी मोह रखती हैं ! और कितना हंसी खुशी मनाती हैं। औ नाना तरह से खेल कूद कर कलोल भी करती हैं,। और अपने अपने खानियों के अनुसार भोग पदार्थों में, सब सुख भी मान्ती हैं। तो कहने का मतलब यह है कि बाल बच्चों में प्रेम आनन्द मोहों का सुख, और सर्ब भोगों के पदार्थों में का सुख—सकल नर नारी, पशु, पन्छी, कृमि, कीटादियों में सब चाहते ही हैं—हे बहनावों अपने मन में बिचार करके देखो तो कूकर, सूकर, सियारादि, अपने अपने बच्चों में कितने चाव चपट से प्रेम करते हैं, और भांति भांति से मन में खुशी होकर चूमते चाटते रहते हैं, यों तो उंन अपने २ बच्चावों में प्रेम कर नाना तरह से, मनमें अनुमोदित होकर, आनन्द सुख मान्ते रहते हैं। तातपर्य यह है की—सर्ब जीवों के खानी अनुसार, अपने अपने बच्चों और सुख भोग पदार्थों में, तथा काम, क्रोध, लोभ

मोह, हंकार, और भय, आदि, क्या नर, नारि, मनुष्यों में—क्या पशु, पन्छियों में, और क्या कुत्ता, कुत्ती, सूकर, बिल्ली, सियार, लोमड़ी, आदि हर एक खानियों में, बाल बच्चा आदि का सुख प्रेम—एक ही समान है, और देंह तथा इन्द्रियों के भोगों में भी वही हाल है। देखो बहने, आराम भोगों का सुख, और पूर्व कहे हुए सर्व—पदार्थों का सुख, चींटी से हस्ती तलक औ नर नारि जितने जीव हैं, सब एक ही सामान चाहते हैं। इसके बारे में विशेष कहना क्या प्रत्यक्ष ही देख लो—परंतु रह गया बात यह है, कि जो वह तीन खानी है, जैसे पिन्डज में पशु आदि, औ अंडज में चिड़िया चिड़ंगनादि, और उष्मज में कृमि-कीटादि, इन सब खानियों में सिर्फ भोगों को भोगने ही तक ज्ञान है। अथवा भोगने के ही लिये हैं, यानी परवस रूप हैं, और लाचार भी हैं, क्यों कि कुछ शुभाशुभ कर्तव्य, व कर्म, वे नहीं कर सकते हैं। ताते वो तीन खानी जेलखाना ही के समान जानो।

अब रह गया चौथा मनुष्य खानि, जो नर, नारि, आदि हैं, ये सब—स्वतंत्र हैं,। और उन तीन खानी से, यह मानुष खानि सर्वोत्तम उँच्च हैं, क्यो कि यहाँ ही पाप पुन्य और शुभाशुभ, कर्म करने या सोचने की मौका है, यानी सर्व प्रकार का कर्तव्य बना लेने का इसी नर देंह में अपने हाथ है। अब यही शरीर में चहे तो नाना पाप करके नरक का कीड़ा बन कर दुख भोगिये औ चाहे तो इसी शरीर से अच्छा अच्छा पुन्य या शुभ कर्म बना कर शान्ति सुख भोगिये। यों तो शुभाशुभ दोनों कर्मों का योग्य, ये नर देंह ही है। इसलिये हे प्यारे बहनो आज इसी देंह में सारी बुराईयाँ कर्म छोड़कर, सत कर्म करने में ध्यान दो,। तभी हम सबों का यह तन पाना सुफल है। देखो बहनो इही नरतन के मध्य में धर्म, भक्ती, सांचे कर्म, औ साधु गुरु संत संग के तरफ अपने मनको लगाकर, जीवन सुफल करना चाहिये—और ऐसा नहीं कि सारा उमर पाप, अनाचार ही में गवाँया, या

बिताया, जाय—देखो बहनो, इस बचनों पर ख्याल करो, कि मान लो आज यह शरीर से, सदगुरु भक्ती आदि से बिमुख हो, दुष्कर्म ही के ओर मन बढ़ा कर, कुछ रोज चहे खुब मनमानी बरताव करके शरीर इन्द्रियो के भोगो ही को भोग लो परंतु सोचो, कि यह शरीर छुटने बाद, आखिर मे नर्क डंड ही तो भोगना पड़ेगा, । तो इन मनमानी सुख भोगों से क्या फायदा-निकला-बिचार करके सोचो तो सही—ताते यह क्षणिक सुख भोग के, वास्ते हम सबको यह शरीर नहीं मिला है—बल्कि इन भोगो से रहित निर्भोगी बनकर, सदगुरु सत्संग भक्ति मे लगकर, और सांचा पद गह कर—इस भवसिंधु रूपी संसार सागर से पार होने के लिये ही मिला है—देखो बहनों हम सबको यह शरीर जो मिला है सो इस जगत से पार होने ही के लिये—अब हम सबको इस संसार सागर से खेय कर पार उतारने वाला, सदगुरु कि सांची भक्ती ही है, यों तो सत्संग और सर्व सदगुण शुद्ध चाल

ही जहाज है। तहां इस जहाज को खेय कर पार करने वाले, सच्चे बिचार मान पारखी सदगुरु और सन्त ही हैं। हे हमारे प्यारे वहनावों तिन्ही सदगुरु के चरण, शरण, होकर, हम सवों को अपना-अपना कल्यान करना चाहिये। देखो बहन, बार-बार यह नर शरीर मिलने का नहीं है। ताते हुशियार हो जावो, और सदगुरु सत्संग, और भक्ती रूप नांवका पर चढ़ कर, इस संसार समुद्र से पार हो ले वो। नहीं तो चूक जाने पर पछताना ही पड़ैगा। और भी ध्यान से सुनो। हम सव इस चेतन हंस जीव का सराहना, वा खूबी करते हुए, सत्य न्यायी संत श्री सदगुरु देव, श्री कबीर साहेब कह रहे हैं। साखी—हंसा तू सुबंण बर्ण, क्या बर्णों मैं तोंहि। तरिवर पाय पहेलि हो, तबै सराहों तोहिं ॥ १ ॥ हंसा तू तो सबल था, हल की आपन चाल ॥ रंग कुरंगे रंगिया, तैं किया और लगवार ॥२॥ सारंश श्रीगुरुदेव कबीर साहेब कहते हैं, की हे हंस जीव तू सुबर्ण रूप है। सुबर्ण कहिये

सर्व बर्णन का निर्णय कर्ता, सुबर्ण कहिये सत्य शुद्ध ज्ञान वर्ण को, औ वर्ण कहिये, सर्व ज्ञानों के वर्णन कर्ता या निर्णय कर्ता को, सो गुरु कहते हैं, कि हे हंस जीव सर्व सांच, झूंठ, असल, नकल, का वर्णन करने वाला स्वंय तू हीं है—और तुम्हारे बाद सब मिथ्या धौखा कुछ नहीं है। औ कुबर्ण कहिये, चक्षु गोचर, यानी नेत्र वा आंख इन्द्री को, जो हर एक प्रकार के रूपों को देखने वा चरने वाला है। श्रवण गोचर कहिये कान इन्द्री को, जो सर्व प्रकार के शब्दों को सुनने वाला है। त्वचा गोचर कहिये, शरीर में चमड़ा इन्द्री को जो र्स्पश द्वारा सर्व भोगों को जानने वाला है। घ्रांण गोचर कहिये, नाक इन्द्री को, जो नाना गंध सुगंधों को सुघने वाला है। जीभ गोचर कहिये. जो नाना खट्टा, मिट्टा, आदि को जानने वाला है। और भी चित्त, मन बुद्धो, अहंकार, अंतः करण, गोचर, ये सर्व कुबर्ण जड़, और इन सबों का जानने वाला ज्ञान करने वाला शुद्ध चैतन्य सुवर्ण, सो ता कुबर्णो

का निर्णय वा वर्णन कर्ता है हंस जीव तूँ ही है—सुवर्ण। ताते समस्त जड़ वर्णों का वर्णन करने वाला, तू हंस वर्ण, औ तेरा वर्णन करने वाला कोई नहीं, । ताते जो सर्व कुछजमा रूप है सो मात्र तू हीं है, और तुम्हारे बाद सब खर्च मिथ्या धोखा—ये अभिप्राय—तरिवर कहिये मनुष्य देह को, सो हे हंस जीव ऐसो मनुष्य तन पाय के सकल सांच असांच का परिचा करिके सर्व बानी को पहिले बूझि हो । देंह इन्द्री आदिक नाना बानी बन्धन बूझके, पारख पद को प्राप्त होई हो । तबै सराहों तोंहि गुरु कहते हैं, हे हंस जीव, इस मानुष्य तन पाके, तुम्हारी पारख स्थिति भई, तो तारीफ ही है । नहीं तो जैसे बैल, पशु, तैसे नरादि, ये सारंश—ताते फिर हमको गुरु उपदेश करते हैं, सो सुनो—

गुरुदेव कहते हैं कि हे हंसा तूं सबल कहिये सर्व शक्ति-मान स्वरूप ही है, वा था, जो तेरी सत्ता मात्र से संपूर्ण जगत चार खानी चौरासी लक्ष योनी पैदा

भई, औ नाना वैचित्र रूप सोई देख के तू अपने स्वतः अमर स्वरूप को भूला, और जड़ देह ही को सत्यमान के, तिस मन इन्द्रिय के विषयन में असक्त भया—हे हंस जीव येही अपनी चाल हलकी है, जो आप ही अपनी कल्पना से देह, गृह, पुत्र पुत्री, आदि सृष्टि पैदा की, औ आप ही ताके वश भया, हीन, दीन, लाचार, भया।—हे चैतन्य जीव, तूं खुद अमर, अविनाशी, मुक्त, रूप होते हुए भी तुम्हारी संपूर्ण बल सत्ता जायके निर्बल आसक्त भया, तेहि कारण है—अमर चेतन, तुझे नाना प्रकार के दुःख की प्राप्ती भई। या पर एक दृष्टान्त जैसे राजा अपने मंत्रिन के वश भया ताते सब मंत्री प्रबल भये। औ राजा की आज्ञा नहीं मानते, सब रैयतन को बहकाय दिये तब सब रैयत राजा का हुकुम अदूल किया, तब राजा बेकाम आपही हुआ, तब राजा खुद आपही सब रैयत को बिन्ती करके खुशामद करने लगा, लाचार औ दीन बन कर। तिसी प्रकार ये जीव आप ही राजा होते

हुए अपने किये हुए कर्तव्य के बस होके निर्बल लाचार हुआ, औ मन इन्द्रिन की आज्ञा में रहने वा चलने लगा। यह चेतन हंस ने ये ही अपनी हलकी चाल से नाना दुसह दुःख को प्राप्त भया—इस प्रकार जब जीव को नाना दुःख हुआ तब दुख सुख का अपना कर्ता मालिक कोई और है, ऐसी मिथ्या मानिन्दी या कल्पना जीवों के अतःकरण में पैदा भई, तब नाना प्रकार-प्रकार के कर्मउपासना योग आदि उत्पन्न भये, और ज्ञान, विज्ञान, आदिक भी भर्म खड़ा भया, हे हंस जीव—सोई रंग कुरंगमें, तू आपही रंग गया, औ अपना स्वतः पदको भूलकर तू अपना दूसरा मालिक लगवार कोई है, ऐसा कायम किया। फिर तो नाना अनुमान करके जो तुमने माना, सो ही, हे हंस जीव तुम्हारा कठिन बन्धन है। सोई मन मानिन्दी के बन्धनमें, आप पर गया, ताते नाना दूरगत्ती तुमको प्राप्ती हुई। सो गुरु—कहते हैं कि हे हंस जीव, तू आप ही अपनी चालसे असह दुःखों को पावता है। ताते

तू-बारबार इंन जड़ इन्द्री मन के बश हो रहा है, औ नाना अनुमान कल्पना मिथ्या धोखा के बश हो हो कर दुखिया हो रहा है–सो हे हंस जीव तू अपनी हलकी चाल को छोड़ दे ? औ अपने अमर पारख स्वरूप को तू समझ कर, आवा गवन से रहित-हो जा-नहीं तो अबकी नर शरीर में चूक जाने पर, फिर २ त्रय खानि के गर्भांच में जलना पड़ैगा ! यों तो तुम्हारा बचावा फिर कभी होने का नहीं है। इतना अमृत गुरु पद सुनाते हुए सत्यावती सर्व नारी जनों को समझा रही है, कि देखो बहनावों जैसे अपने को कोई कष्ट व दुख नहीं चाहती हो, तैसे पराये जीवों को बचाते हुए सत धर्म में लगो, यों तो सर्व बहनों को चाहिये की मांस, मच्छी, औ मदिरा, शराब, आदिसे बचते हुए, छोटे, बड़े, जीवों को हिंसा ना हो। जा से अपने को भी सुख मिले। इसलिये दया, शील, सन्तोष, बिचार, क्षमा, धीरज, आदि सद गुण गहते चलो। देखो बहनो मैं बार-बार कहती

हूँ कि जो कुछ अन्जान से हुआ सो हुआ, पर अब आज से जान बूझकर, किसी जीव को दुःख न होने पावै, यह दया स्वभाव अपने २ हृदयों में याद राखना। यही हम सब नारियों का धर्म है— इसी को पालन करने से हम सबों का कल्याण व भलाई है, ऐसा जानो। और देखो–हमारी नारि जातियों में यह बहुत भारी भूल की बात चल रही है,। कानि कितनी हमारे महिलायें अमल भी खाती पीती हैं, और नाना प्रकार का फैसन भी किया करती हैं। यह सब न्याय बिरुद्ध ही है। औ यही कुचाल व कुमार्ग का रास्ता है। जैसे की बीड़ी, सिगरेट, सुर्ती, तमाकू, दोहरा, पान, कसैली, और बहुत से तो मुख लाल करने के लिए, कभी-कभी रंगादि भी लगा लेती हैं। यह सब वाहियात बेकार नाना अमलों में पड़कर, हमारी नारियाँ खराब हो रही हैं।देखो बहनें, इसी कारण से हमारीं बहनायें, इस संसार में निन्दित कर्म कर नीचे गिर जाती वा हैं गिर ही रही हैं

कारण की यही अमलखोरी बीडी पानादि में पड़ कर कुसंगति धारण कर लेती हैं जब कुसंगति में गई औ बुद्धि भरभष्ट हुआ, तब सर्व लाज शर्म—छोड़कर बेहया हो जाती हैं। यों तो फिर लोक परलोक का ना ख्याल कर, बस यही इन्द्रियों और मनके भोगों में ए अमुल्य जीवन नष्ट कर डालती हैं। इसलिये आज यहां हमारा कहना यही है, की जो जो हमारी बहनायें, आपना कल्यान, वा अपना जीवन सुधारना चाहती हैं, यानी सारे दुख द्वन्दों से छूटने का जिनके इच्छा है, और सुख सान्ती मुक्ती गती चाहती हैं। तो ये नाना अमल आदि दुर्गन्धमय पदार्थों को त्याग कर, शुद्ध निर्मल हो जायँ। देखो बहने इंन अमल खोरों के संगति भी छोड़ दो। गजेड़ी, भगेड़ी, नाना अमलियों से सदा सर्वदा दूर ही रहा करो। इन से रहित सच्चे सज्जन, भक्तों, का संग या जहां साँचे सद गुरु सन्त हों वहां से ही निर्छल प्रेम भाव रक्खो। और समय समय से उनका सतसंग कर—यथा

योग्य तन मन धन से सेवा कर, उनसे अमृत रूपी ज्ञान पद वा साँचा पारख बिचार लेकर—अपना उद्धार करो। इसके बाद हे बहनो नाना तरह के फैसनों में भी ना भूलो। जैसे कि नाटक, शिनेमा नौटंकी, और नाना प्रकार के गाना, बजाना, राग, तान, में, या रंग, बिरंग, फोटू, तसवीर, आदि में। यह अपना रतन समय मत खोवो—इन सबों से अपने दिल को हटा लो। और भी एक बात हमारे बहनावों को ख्याल राखना चाहिए की चाल चलन, रहन, सहन, सुद्ध, सादगी, ही बिताना चाहिये—नाना प्रकार के आभूषण गहना या किसिम २ के कपड़े मखमल, रेस्मी, रंग, बिरंगों से अपने मन को सदा सर्वदा रोकते रहो, देखो बहन यही सब अनर्थों का मूल है। ऐसा जानकर तिसे त्यागो और सद गुरु के भक्ती सत्संग मे लागो—बहन देखो इश शब्द पर ख्याल करो—

नारी जनो के हितार्थ, भजन

हे प्यारे बहनों भक्ती में मन को लगावो॥
हमारे बहनों वृथा न जीवन गंवावो॥ टेक॥

दोहा

मद्‌ मांस खावो नहीं, इसमें भारी पाप ॥
निज सम जानो जीव सब, मिटै सकल संताप ॥
हे प्यारे बहनों भूलि न जीव सतावो ॥ १ ॥

दोहा

पान कसैला सूर्ती, बीड़ी सिगरेट जेत ॥
ये सब दुरगुण रूप है, इनसे करो न हेत ॥
हमारे बहनों अमल से, बिमल हो जावो ॥ २ ॥

दोहा

छल चुगुली चोरी करम, अधरम चाल कुचाल ॥
और सकल बेभिचार तजि, चलो सुमग सूचाल ॥
हे प्यारे बहनों निन्दित कर्म बहावो ॥३ ॥

दोहा

नाच शनेमा देखना, घूमन शहर बजार ॥
मेला ठेला त्याग दो. ये सब नीचा कार ॥
हमारे बहनों दुनियाँ से दिल को हटावो ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

पति होवे तो न्याय से, बर्ति करो जिव काम ॥

ना पति होवे भोग तजि, सदा रहो उपराम ॥
हे प्यारे बहनों जीवन चर्य बनावो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

ना पति हो या हो अगर, है मुक्ती की चाह ॥
मन इन्द्री वश में करो, छोड़ि जगत की राह ॥
हमारे बहनों सत्संग का नियम बनावो ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

चाउर दाल विचारि के, सदा पियो जल छानि ॥
यह रहनी गुरुदेव का, लेव हृदय में मानि ॥
हे प्यारे बहनों भोजन सदा स्वच्छ पावो ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चीलर खटमल लीख जो, भूलि न मारो ताहि ॥
दया जीव पर जानि के, दूरि बहावो वाहि ॥
हमारे बहनों झाड़ु दे चौका लगावो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

घर आवै कोई अगर, यथा योग्य कर सेव ॥
नंग होय वस्तर देवै, भूखे अन्न को देव ॥
हे प्यारे बहनों धन को धर्म में लगावो ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

दया छमा संतोष सत, शील बिचार को अंग ॥
यह रहनी गहि हंस की, सब दुर्गुण करि भंग ॥
हमारे बहनों मन के कुचाल हटावो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जड़ चेतन निर्णय करो, पारख अपना रूप ॥
जड़ धोखा को त्याग कर, हो खुद मुक्त स्वरूप ॥
हे प्यारे बहनो भक्ती से मुक्ती कमावो ॥११॥

॥ दोहा ॥

निष्ठा रखि गुरु साधु में, जीवन करो बेतीत ॥
मोक्ष वासना त्याग से, है यह बचन अभीत ॥
हमारे बहनो जन्मरणों से तरि जावो ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

संत शरण औसर मिलब, दुस्तर दूजो बार ॥
संत गुरू पद सेय कै, होउ जगत से पार ॥
हे प्यारे बहनों फिर से क्यों दुःख उठावो ॥१३॥

हमारे बहनों भक्ती में मन को लगावो, यह सत्य शब्द कहते हुए सत्यावती सबको समझा रही

है, कि देखो बहनों समय थोरा है। यह चार दिन का जीवन है, जिनको आज देखो तो काल्ह नहीं, औ जिनको काल्ह देखो उनको परसों नहीं, इस तरीका का चार खानियों में सब का आवा जाही लगा है—अपना यह शरीर भी एक दिन छूटने वाली है। इसका कुछ आशा भरोसा नहीं है, और तन धाम धन सब, यहीं का यहीं रहने वाला है। धर्म कर्म भक्ती ही अपने साथ जाने वाला है —इस लिये जल्दी से जल्दी धर्म भक्ती करो। तन मन को परख के जगत से तरो।—अच्छा अब जो बहन यह कहती रहीं की संसार भोग ही में आराम है और तिसके त्यागने में ही महा दुख है। उसका उत्तर अब यहां होने जा रहा है, देखो बहनों खुब अच्छे से कान लगा के सुनना और मन में घबड़ाना नहीं—अब यहां मुख्य देह का भोग कहिये शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध को बस इसी के अन्दर संसार के समस्त सुख भोग आ जाते हैं। और यही इस चेतन जीव का महान

बिकट बन्धन है। सो इसी को यहां संक्षेप रूप में कहती हूँ। सुनो—१ प्रथम भोग—शब्द है, तो जिन जिन शब्दों को, सुन सुन कर स्त्री या पुरुष दोनो मोह में आसक्त हो जांय, वह-वह बचन बन्धन है उसको त्यागना चाहिये—२ दूसरे भोग—र्स्पश है, सो इस तरह बन्धन है। की जिन-जिन बस्तुवों को शरीरँग में लगने से, काम बिकार उत्पन्न हो, तिस में मुख्य तन की चमड़ा ही र्स्पश का बन्धन है। इस का भी आसक्ती हितकारी जीवों को, निकारना चाहिये—३ तीसरे—रूप है, चाहे स्त्री का हो या पुरुष का हो, दोनो रूप बन्धन है। तिसमें रूपों को देख कर मोह या लोभ कर उसी में भूल जाना, यह ही रूप की आसक्ती बिकराल बन्धन है। इसको भी त्यागने में भलाई है। ४—चौथे-स्वाद रस है—देखो बहनों हमारी नारियां जाति की बुद्धी न समझ होती है। बहुत सी हमारे बहने तो यह कहा करती हैं, कि अभी थोरै उमर बीती है। याते भक्त न हो कन्ठी मत पहनो, अरे ना

जाने ये जीभ औ मन किस-किस पर चला जाय— ऐसा सोच कर बहुत से हमारी नारियाँ धर्म भक्ती से रुक गई हैं। इसके बाद खट्टा, मिट्ठा, चरफरा, तीखा, तीत, नमकीन आदि जिन २ स्वादों से इस जीभ का, स्वभाव या चाल बिगड़ जाय, या जिभचटोरी स्वभाव पड़ जाय, सो सो चीजों को हमारे हित इच्छुक बहनों को त्यागना चाहिये। यदि मन चलै तो मन को रोक कर सुखी होना चाहिये। नहीं तो जिभचटेरू आदत पड़ जाने से यही सर्व अनर्थों का मूल है। इन्हीं नीच स्वभावों से केतने हमारे बहनायें अपने सत्य पद से नष्ट भ्रष्ट हो गइ हैं। औ होती ही हैं, इस लिये इस रस को आसक्ती भी त्यागना चाहिये—

५ पांचवे गंध है—जो कि नकुना द्वार सूँघा जाता है जैसे जुही, चमेली, बेयइली, गुलाब, केवड़ा, इतर, आदि नाना प्रकार के सुगंधीदार तेलैं हैं, जिसमें जीव गाफिल होकर बन्धनों में जकड़ जाता है। इस लिये हे प्रिये बांहनावो इन बन्धन दायक

पदार्थों को, त्यागना जरूरी है। देखो बहनें यही बात जो आगे कह आई हूँ, वही इस देह का भोग है, और यही नाना दुख संत्तापों का शोग है, फिर तो इस जीव के लिये वही जनम मरण का रोग है। भला अपने मन में विचार कर देखो, की इन सर्व भोगों में कौन सा बड़ा भारी आराम वा सुख है—विचार से देखो तो सुख नहीं बल्कि यही जो भोग है, इसके वश हो जानें पर चारो खानियों में नाना ठोकरें खाना पड़ता है। और नीच ऊँच योनियों में भी नाचना पड़ता है। इस लिये सुख के बदले यही महा भारी दुख है ऐसा जान कर सर्व बहनों को चाहिये कि इन भोगों से दूर होवें, और इनसे रहित सत्संग विचार का आश्रय लेते हुए, शुद्ध गुण रूपी सत्यलोक में निवास वा विश्राम करें देखो बहनो सावधान होकर गम्भीरता से विचारो —और सब बात तो हई है। तिसको यथा योग्य त्यागना ही चाहिये—प्रन्तु रह गया सबसे

बड़ो भारी बात एक यह की जिसमे पड़के, लोक परलोक धर्म कर्म का, औ-लाज शर्म सबका ख्याल छोड़ कर, हमारी माहिलायें बेधड़क, विना विचारे बह जाती हैं। वह क्या है, तो वह काम क्रीड़ ही हैं की—जिसमें पड़ने से यह अमर जीव रसातल चला जाता है। फिर तिस जीव का कहीं भी-ठिकाना नहीं मिलता है। कुत्ते,बिल्ली,सियार माकरों के योनियोंमें जा जाकर नाना दंड उठाताहै। इस लिये देखो बहनो हरदम ख्याल रहे--कि इस दुराचरणके तर्फ कदम ना जाने पावै। गृह नारियों को सावधानी यह रखना है। कि पराये पुरुष पे कुद्रिष्टी स्वपन में भी न जाने पावै। और जो हमारी उत्तम बर्ग की बाहनायें हैं, जो कि मुक्ति के अभिलाषी हैं। उन्हें तो सर्ब पुरुषों से दोष द्रिष्टी राखना है। क्यों की उन्हें इस संसार सागर से तरना है। ताते सब ओर से अपने को सम्हारना है। और समय समय से, सत्य न्याई विबेकी सत पुरुष का सत्संग किया करें और धुर्त लम्पटो और

बकवादी बंचकों से। तो दूर ही रहें, क्यों कि उनके संग से सांचा कल्याण होने का नहीं— क्यों की कहा है—

॥ साखी ॥

पूरा साहेब सेईये, सब विधि पूरा होय।
ओछे से नेह लगाय के, मूलहु आवै खाय ॥ १ ॥
सांचा साहेब सेवा लावै।
बकवादी के निकट न जावै ॥
संगति कीजै साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगति कूर की, आठों पहर उपाधि ॥ २ ॥
बीजक

इस गुरु न्यायालय के अनुसार चलना हम सबों का मुख्य कर्तव्य है—देखो बहन पारखी गुरु देव के अलावां इस दुखालय संसार से, कोई और नही बंचा सकता। ऐसा जानकर—

॥ चौपाई ॥

(१)

उन्हींकपूजा, उन्हींकध्यान, उन्हीकादर्शन, उन्हीकगान
उन्ही क शर्णगहो हे बहना, भवदुख नहीं पड़ैगासहना

फिर नहिं कष्ट परैगी प्यारी, कर सद्गुन से सच्चो यारी
भाग २ भरमिक लोगोंसे, त्यागि भाग जगके भोगों से
करले गुरू पारखी सच्चा, तजदे सकल स्वारथी कच्चा
कच्चे से क्या बनेगा प्यारी, जरा हृद्यमें करो बिचारी
मान २ कहनाय मेरा अब, काम बनै बहनाय तेरा सब
मिलै सुःख दुख छुटै तुमारा, गहो अगर पारख उजियारा
आव २ सतसंग बीच में, पांव नहीं अब छोडु कीच में
अमनचैन होजावआजबश, परखस्वतःपा जावराज अस

(२)

ऐसो देश परख पद बांकी, तीनलोक नहिं पटतर जाको
जबऐसापद मिला निराला, तब कहंजावछोड़िपदआला।
आखिरमें जहं जहां जावगी, भरम भूलही वहां पावगी
जक्त छोड़ि जो ब्रह्म बनोगी, जनम मरणमें फेरि सनोगी
छुटै गर्भ संकट नहिं बहनों, यहितेपरखअमरपट पहनों*
अगर जनमना नहीं मरण है, गहोगहो गुरुपरखशरण है
तरो २ भवसिंधु धार से, करो २ सतसंग प्यार से
मिला समयअनमोलअनोखा, खिला २ गुरुज्ञानभि चोखा
साज २ चलो २ बहनावों, सद्गुनसुमतिपहिन गहनावों
मिला २ कस अमृत रस्ता, दाम नाम नहिं बिलकुल सस्ता

* धारण करो।

(३)

मन इन्द्रिनकी तजो कुचाली, नाम गुरूकी भजो तुहाली
प्यारे वहन कहन अब मानो, रहनगहन सद्गुरुकी जानो
समुझिलेव पदकरि सत्संगा, छूटिजाय जन्मृतकी दंगा
अहो कहां पड़ि गइउ भूलिकै, बड़ा२ तहं गयो हूलिकै
अभो कुशल है कहा मान ले, सही २ प्रत्यत्त जान ले
भलीभांति करिलेव परीत्ता, लगै सांचतबमानो शिक्षा
जोर जुलुम जबरियन न कोई, तेरे हितयकी बात कहोई
समुझिबूझिदिलमें खुब लीजै, भवै अगरमनमें तबकीजै
सांचसाच दरबार यहां है, सांच बिना इतबार कहां है
सत्य २ सद्गुरु दरशाते, नित्य २ निज रूप बताते

(४)

झूठझुठक्कर बात नहींहै, यहां बात खुद सहीसही है
सद्गुरु असल २ ही गहते, नकलबात सपनेनहिंकहते
सुनो सुनो महिलाएँ मेरी, गुनो गुनो बहिनांये मेरी
दया छमा गहिये संतोषा, क्रोधवचन कहिये नहिंरोषा
झगड़ानिन्दा गालीताना, कभी न इसको तनमें लाना
सत्य शील बीचार गहो हो, मन इन्द्रीको मार रहो हो
जीवन थोरबीत वह जाता, चलन२ की औसरआता
यहितेभक्तिगुरूकोकरलो, गहिकेभक्तिपदअजरअमरलो

आनाजाना कहींनफिरहो, स्वतः रहाना पारख थिर हो
तनमनइन्द्री धार न बहना, अमरस्वयंपदसारहिगहना

(५)

कहा बुझाके अमृत बानी, गहो २ तजिके मनमानी
मनमतितजो गुरूमतिधारो,मनसिज कामक्रोधकोजारो
हटो २ जग भोग जाल से, बचो २ त्रप करम कालसे
तीनलोक तनधारी जेते, दुखलित परख गुरू बिन तेते
सुनो २ हे बहनों बैना, परख गुरू की पकड़ो ऐना
छोड़ु २ जग भोग भयावन,तोड़ु २ सब लोग लुगावन
समुझि२मन देखु सयानी,नहीं कोई जगमध्य अपानी
मई भतीज भ्रात भौजाई, प्रेमी हित्र मित्र जो भाई
सोसबप्रेम स्वार्थही तक है, स्वार्थबिनानहिंबातबतक है
ये सब प्रेम झुंठ जग केरा, सुनोबहनसच कहौं निबेरा

(६)

जगमें झांकि २ के देखो, स्वार्थ बिना कहु काहु गनेको
यहिते समुझि बुझिलो अच्छे,कहौं करो लागे जो सच्चे
पहिले चालसुधारो अपनी, त्यागो इधर उधरकी झपनी
गुरुपद ज्ञान सुनो मन लाके,फूलो नही ये तन धन पाके
साधु गुरू सत्संगत बीना, धृक २ हैं इस जगमें जीना
लानत थुड़ी बुद्धि तेहि आगी,जोतनपाय न गुरुपद लागी

जेहितनमांहिमुक्तिबनिजावै,फिरनहिं गर्भबीच सो आवै
सो तन पाय भोग में खोवे,भरमि २ चव खानिमें रोवे
उनकरदुःख कहौं क्यामुखसे,पलकमात्रनहिंसोवैंसुखसे

॥ दोहा ॥

यहिते औसर आज है, करो बहिन यह काम।
सांचा पद पारख गहो, लेव गुरू का नाम ॥१॥
पारख गुरु बिन मुक्ति नहिं,सुनो युक्ति बहनाय।
यहिते सांचा सेव गुरु, भूल भरम जहंनाय ॥२॥

॥ चौपाई ॥

(१)

गहो बहन यह अमृत बैना,जाहिगहे भ्रम भूल रहैना
गुरू २ जगमें अधिकारा, पारख गुरू सबनसे न्यारा
जक्त ब्रह्म तक सबकि दौरहै, परखगुरू कुछ और २ है
पारख गुरू गुरू हैं जगमें, औरसकल भ्रमावैंमगमें
यहितेकरिपहिचानतगुरू का, शरणगहोवहिसन्तप्रभूका
वोई बंचायेंगे संकट से, जीव छुड़ायेंगे कंटक से
पार आप सोइ पार लगावैं, जक्तजालधोखा दिखलावैं
सकल भरमगढ़ तोड़ै वोही, परख अमर में जोड़ै वोही
सो धन देंय जाहिको पाये, जक्त ब्रह्म दुबिधाछुटिजाये

(२)

जो निजरूप भूलिजगमांहीं, बहुतबार जग ब्रह्म बनाहीं
पर बिन पारख गुरुको पाये, जन्म २ धोखै मन लाये
पर वह धोखा कौन लखावै, पारखगुरु बिन कौन छुड़ावै
हां सो धोख मिटै ततकाला, गहौअगर पारखपद आला
तो वह पारख मिलै कहांपर, रहैं पारखी गुरू जहांपर
या तिनके सत्संगी जहंवां, मिलै सहीपारखपद वहंवां
मिलो २ जिव वहाँ जायकर, अमरसुखीपद अमर पायकर
जहां गये जरना नहिं जगमें, जाहिपये मरनानहिं जगमें
गहो २ सद्गुन वह बहना, यहही गुरु कबीरका कहना

दि०—कबीर धनि २ श्री आप सद्गुरु, लखाये सकल खानि बानी के झुठ फुर। सकल भ्रम परदा को टारी दिये हो, प्रथा मोक्षका आपजारी किये हो॥ आओ यही मगमें बहनो हमारी, मिटै दुख खरष्टक सकल अब तुमारी। अजर वो अमर पद मिलै धन्य धनिये, गहो सर्व सद्गुन परम*हंस बनिये॥ १॥

इस प्रकार का सदामृत बचन सुनाते हुए, सत्यावती ने उत्तम ब्रह्मचारिणी नारियों के तर्फ

---

* श्रेष्ठ।

इशारा करके कि बोली, कि देखो बहनों, हम सबको इसी जीवन में चाहिये, की जक्त, क्या, और हम क्या हैं। जगत का स्वरूप, वा लक्षण क्या है। और हम सब चेतन जीवों का, क्या लक्षण वा गुण है, बन्धन क्या है। तिन सब बन्धनों से हम कैसे छुटेंगे, और इस जक्त का कोई कर्ता है, कि नहीं है। इसका भी भेद ठीक तौर से जानें, अगर इस जगत की कर्ता या देवी, भवानी, शक्ति कोई है। तो दिखाता क्यों नहीं, वह कहां छिपा बेठा है। जरा दर्शन क्यों नहीं देता है, इन सब बातोंको अच्छी प्रकार से जानो समझो बूझो, अच्छा बहनों इन सब बातों का वर्णन आगे होगा, अब समय थोरी है। इस एक गुरु प्रार्थना को सुनलो तब, अपने मुकामों पर चलो, देखो बहनों ध्यान धरके सुनना।

॥ भजन ॥

जगत दुख टार्‍यो, जगत दुख टार्‍यो।
धनि गुरु पारख, जगत दुख टार्‍यो ॥ टेक ॥

काम क्रोध से खींच लियो गुरु।
शांत बोध से सींच दियो गुरु॥
खेलन कू मार्‍यो, खलन कू मार्‍यो।
दै पद पारख, खलन कू मार्‍यो ॥ धनि ॥१॥
जब से दरश गुरु दीनो दया करि।
तब से हरष पद चीन्हों दया धरि॥
धरत सुख कार्‍यो, धरत सुख कार्‍यो।
दे मग तारक, धरत सुख कार्‍यो ॥ धनि ॥२॥
भाग्य उदय गुरु तब गुण गाकर।
जात सदय दिन मग सुख पाकर॥
अजर पद धार्‍यो, अमर पद धार्‍यों।
भय तन सारथ, अमरपद धार्‍यों॥ धनि ॥३॥
ऐसे शुभ जीवन गुजर जाय बस।
शांति रहीवन अमर गाय अस॥
अरिन को मार्‍यों, अरिन को मार्‍यों।
गहि परमारथ, अरिन को मारथों ॥ धनि ॥४॥

इस प्रकार सद्गुरु की अस्तुति करके, सत्यावती ने सर्व नारी जनो को अज्ञा दिया, कि अच्छा बहनों अब इस गुरु ज्ञान का मनन करते २

अपने २ घर जावो, और समता सुमति से कारज सम्हारो—

सत्यावती के ऐसे वचनों को सुनकर, सर्व माहिलांये, हर्ष सम्मेत श्रधा भाव से, नमस्कार वन्दगी कर कर के, हाथ जोर धर्मावती और दया वंती आदि सब मिल । कर, सत्यावती से अर्जी करने लगीं—धन्य धन्य बहन जी आप को, सौ वार धन्यबाद है। जो हम सब ज्ञान विचार से हीन, अनारी अज्ञानिन पर—आपने महान दया दिष्टि करके निर्मल बिमल ज्ञान रूपी चसमा दे दिये हो। कि जिससे हम सबों की—अज्ञनेत्र वो अज्ञानता की तिमिरि अन्हियारी नाश होकर उजाला ही उजाला दिखा रहा है—धन्य धन्य बहन तुमको है। जो हम सब अबुध नारियों के लिये आप ने ऐसा गुरु ज्ञान अमृत का वर्सा, वर्साय दियो हो कि जिस सुधामृत को पान करने से—हम सबका जनम जन्मों का प्यास बुझ रही है। परंतु हे बहन हम सबों की एक अर्जी है कि

दया द्रिष्टि रखियेगा। और कोई ऐसा दिन रख कर मुकर्र कर दीजिये, की हम सब माहिलांये, उसी दिन पर आकर, आप के मुखार बिन्द से इस गुरु ज्ञानामृत कथा को सुनूं। ऐसी अर्ज भरी बचन सुन कर, सत्यावती मधुर बैनों में कहने लगी, कि देखो बहने जो यह ज्ञानामृत व्यंजन कहा गया है। वह सब परखी गुरुदेव श्री सदगुरु संतों की कृपा द्रिष्टि का ही फल है। और मेरे में क्या शक्ती सामर्थ था, कि इस गुरु निर्णय अमृत बाणी को कहूँ। क्यों कि मैं भी तो इसी भव बन्धन में पड़ी थी, परंतु कोटिशः धन्यबाद उन पारखी श्री सदगुरु की है। जो ऐसे बिकराल जगत के कठिन जाल से दया करके निकाल दिये हैं। और अपने चरण के शरण में ले लिये हैं। उन्ही सद-गुरु की दया द्रिष्टी का यह फल है ऐसा जानो— पर हाँ जो आप सबों का सरधाभाव है। सुनने की तो पुर्णवासी के दिन आप सब आओ, और गुरु ज्ञान अमृत सतसंग चर्चा सुनो। इतना बचन

सत्यावती का सुनकर सर्ब नारियाँ नमस्कार बन्दगी कर २ के चलने लगीं। तो जो बहन यह दावा किये रहीं, की देह सुख ही सब कुछ सुख है—उनके हृदय की अज्ञान रूपी पट्टी खुल गया, औ देह के सुख भोगों में दुख जंच गई। और सत्यावती के चरणों पर शिर धर के हाथ जोड़ कर बोली—बहन आपका यह ज्ञान सुनकर मेरा अभिमान या अज्ञानता चूर-चूर हो दूर हो गया,। बहन धन्य २ आप के बानी सुनने की फल है— पर मेरे अपराधिन पे कृपा कीजियेगा, और यह गुरु ज्ञान चरचा मेरे को अमृत सा लग रहा है— सत्यावती चलने का इशारा करते हुए बोली अच्छा बहन जो जो निर्णय बचन सुने हो, उसके ग्रहण करने पर तययार हो जावो—और गुरु ज्ञान सुनने का चाह है तो पुर्णवासी के :दिन आना,। इस प्रकार बैन सुन सर्ब नारियाँ चलते भई और इधर सत्यावतीं भी शांति हुई—

धर्मावती और दयावंती आपस में बात-चीत

करने लगीं—धर्मावती बोली बहन सत्यावती को धन्य है। जो हम सबों को बहते, नौका मिलने के, समान ही मिल गई हैं। देखो दयावंती जी अपने मनमें, ख्याल करो कि जितना अमृत कथा बहन सत्यवती जी ने सुनाया है, इतना सत्संग ज्ञान-कथा तो हमारे स्वामी महाराज जी के, स्थान पर कभी भी नहीं होता है। इतना सुनकर दयावंती बोली—हाँ हाँ बहन तुम्हारा कहना सच-सच है की जैसा परम मनोहर गुरु ज्ञान का अमृत बांणी और सतन्याय कारी, सुहावन, सुन्दर, दुरगुंण हर, औसद गुंणकर, निर्मल बिमल वचन बहन जी ने सुनाया है—वैसा मैं पुजारी बाबा के यहां बहुत ही दिनों से आती जाती हूँ। परन्तु ऐसा सदज्ञान तो कभी नहीं सुना। धन्य२ क्या तारीफ करना। बहन जितना अमृत बचन आज सुना गया है उतना तो करोड़ों लाखों रुपया देने पर नहीं सुनने को मिलेगा। देखो बहन इनके यहां सदगुरु श्री पारखी गुरुसंत आते हैं। तासे इनका

भी निर्मल ज्ञान है और हम सबके लिये भी कल्यान है।

इतना सुन कर धर्मावती बोली—

॥ व० त० छन्द ॥

दयावन्ती जों ये कह रही हों बचन, सत्य मे है बहन सत्य में है बहन॥ क्योंकि सत्यावती ने सुना ज्ञान धन, सारे दुरगुंण हृदय की दिया कर दहन ॥ अब तो आता है यह बात दिल बीच में, सत्यावती को गुरू रूप में जान कर॥ इनका सत्संग करिये हमेशा बहन, सत्य ही देवता रूप मे मान कर। मुख से करके बड़ाई कर क्या बहुत, जों सुना ये बचन आज है कान से॥ और जिसके सुने दिब्य चक्षू खुला, ये तो सुनने है लायक सही ध्यान से॥ जों है निर्णय बचन सत्य मे सार ही, उसके गहने मे हम सब न देरी करें॥ आज घत ज्ञान चरचा सुना ना गया, इससे सुनने मे भी ना अबेरी करें॥१॥

इस प्रकार धर्मावती दयावन्ती से कह रही है कि देखो बहन इन ही के द्वारे हम सबको सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ है, इसलिये आज से बहन सत्यावती ही को गुरू रूप जानना। क्योंकि इतना सांचा निर्णय ज्ञान तो गुरु महाराज से भी नहीं मिला है, ना—इस प्रकार दयावन्ती से बात चीत करते हुए दोनों अपने अपने मुकामों पर पहुँच कर आराम किया।

इधर सर्व महिलायें भी सत्यावती की सराहना करते २ निज २ घरों पर जा पहुंची और यथा-योग्य स्वार्थ ब्योहार का कार्य सम्हार कर शांति से जीवन बिताने लगीं।

दूसरा समस्या ब्रह्मचारणी नारी जनों के लिये प्रारम्भ—

एक समय सत्यावती तन के सर्व ब्योहारों से दुरुस्त हो कर, शांति चित से आसन पर बैठी थी, कि इतने मे एक स्त्री पदमावती नाम की आई। उसका पती नवयुबक अवस्था मे ही घर से निकल

कर, सांचे सदगुरु के शरण होकर, केवल मुक्ती ही का कार्य कर रहे थे और यह पदमावती सत-ज्ञान से हीन थी, इसलिये पति को साधु हो जाने पर, इसको बड़ा दुःख मालुम हुआ और आकर सत्यावती के चरणों पर गिर कर कहने लगी कि हे बहन हमको तो बहुत दुःख है, क्योंकि मेरे आगे पीछे एक बाल-बच्चा भी नहीं है, और संसार का आराम सुख भी गया, अहो हाय हे बहन बतावो कैसे जीवन बिताऊँ। मुझे कुछ उपाय दया करके बता दीजै। इतना वचन सुन कर सत्यावती सब उसका भेद जानकर, कहने लगी। हे बहन पदमावती तुम हक नाहक मनमें सोच करती हो, देखो बहन तुम्हारा भाग्य धन्य है। जो तुम्हारे पती साधु हो गये हैं। बहन तुम धन्य धन्य हो, और तुम्हारे पती तो धन्य २ के स्वरूप ही हैं। देखो बहन ध्यान देकर सुनो—

॥ पद ॥

धनि धन्यहै बहना भाग तेरा, जोपतिबैराग क कामकिये
जगनर्क कुन्डको त्यागन कर, अमृत मुक्तिका धामलिये

जस त्याग-कियेपतितेरे हैं,तस त्याग बनावोप्यारीतुम
निज काम बनै जल्दीजल्दी,बचमानो बहन हमारीतुम
तुमसोचतजो गुरुदेव भजो,जग नर्क भोगकोछोड़ोअब
लखिकुन्ड नरकनरनारिभोग,दुनियाँसेदिलकोतोड़ोअब
अच्छामौका कस आया है,यहे तन ना बृथागवांवोजी
सच्चा सौदा परखाया है, यह जीवन सुफलबनावो जी
हे बहन करो सत्संग सदा, मनरंग मिटादो पारख से
हें बहन धरो सत अंग सदा,सबदंगमिटालोपारखसे
तुम देख जगत में चमक रहा,गुरुज्ञान पारखीसंतोंका
सद्गुनसुगंधसम गमक रहा, धरध्यानपारखीसंतोंका

फांसला—इतना कह कर सत्यावती—पद्मावती से फिर कहती है, हे बहन अच्छे, कान लगा सुन—मासला—कर बहन सत्संगसदा, अरु मुक्ति अधिकारी बनो ॥

आओ चरण गुरु के शरण, गुरु भक्ति की प्यारीबनो

॥ ५८ ॥

हत भाग्य वही नरनारि बहन,जो इन्द्री सुखमेंभूलेहैं
वे तुच्छ नरक तन इन्द्री में,पड़ कर दुख भूलाभूलेहैं
परतेरा उत्तमभाग्य बहन,अब सोचजरा मन करनाना
संसार जहरके भोगों में,तुम भूलि कभी पग धरनाना

कूकर सूकर सम देख बहन,जग नर नारी कसमाते हैं
परत्यच्छ देखतो नरक भार,प्रांणी नित शीशउठाते हैं
नरनारि अवदशा देखि २ दिल हटा हटादे बहना तू
सतसंग वो सद्गुन सज्जन में,दिल डटा२ के रहना तू
करके बिचार तो देख जरा नर नारि पड़े कम रोते हैं
मद काम क्रोधमें भराभरा, मर मारि गर्भ में सोते हैं
यसजानिके भागोभोगों से, तबअमरशांतिसुखपावोगी
निजरूपहैचेयन सार तेरा,यस जानिमुक्त हो जावोगी
स्वातंत्र सुखीगर होना है, तो जग चहला मेंपरोनहीं
तनमन इन्द्रींदुखदाई हैं इनका कहना अब करो नहीं
यह तेरे हितैकर ज्ञान कहा, सद्गुरू पारखी दाया से
नित शांति २ सुख बरस रहा,उनगुरू पारखी दायासे

इस प्रकार से पद सुनाकर, सत्यावती समझाती है। कि देखो बहन पदमावती हमारे बचनों को ख्याल से सुनना—और भी शांति होकर सुनो तो सही, अरे जो तुम बाल-बच्चों बिना अपने मनमें दुःख मानती हो तो यह तुम्हारा गलत ख्याल है। कुछ जरा बिचार तो कर और देख, जो जो हमारी बहनायें आज बाल-बच्चा, या

पुरुषों में पड़ कर बभ्क गई हैं। उनकी पहिले दशा तो देखो, कि क्या क्या हालत हो रहा है। अरे प्रथम तो शुद्ध विचार या पवित्रता तो उनके मे देखने में नहीं आता है और अति दुरगंध पनाके वजा से सहो २ प्रत्यक्ष में भंगिन से बेहतर बन जाती हैं। औ भाड़ा-पेशाब मलमुत्रादि उठाते उठाते और धोते धोते कभी भी उन्हें छुट्टी नहीं मिलता है। इसपर भी उन बहनों से कोई प्रकार से शुद्धता तो बनता ही नहीं। बहन इन सब बातों को तुम ही विचारो और देखो। यह सब बात तो रहा ही परन्तु जिस पुत्र पुत्री के होने से सब बड़ा खुसियाली औ सुख मानते हैं। तहाँ उस विषय में यहाँ आगे बचनों पर गौर करो की जिस समय बाल-बच्चे पेटों में रहते हैं। तो नौ महीना तक उस बच्चे का सारा भार लिहे लिहे नारियों जनों को ढोना पड़ता है और उसके भी ऊपर से नाना प्रकार—किसिम-किसिम के दुसह दुःख होता रहता है। जिसका कोई थाह ही नहीं है।

पुर्व कहे हुए नाना दंड वा कष्ट होते हुए भी, तिस पर देखो बहन जबकी वह बच्चा नौ दश महीना के अन्तरगत पूर होकर, जिस समय उसका जनम होता है। तब इतनी असह बेदनांये होती है की क्या कहा जाय, यानी इतना महान जोर से कष्ट वा पीरा होता है। की अग्नि में जरि के मर जाना अच्छा है। औ जल में डूब कर मर जाना अच्छा है। या कोई मूड़ काट लेवे तो भी अच्छा हैं। लेकिन वह महा प्रचंड़ दुःख नहीं सहन होता है। इतनी इतनी सब कलेश वा दुख सह कर, जो बच्चा उत्पन्न हुआ, तो मानो मरण संकट से जान बचा। या जैसे मर कर जिन्दा होने के समान समझौ। और कानि कितना या कानि केतने हमारे बहनाये, तो इसीं पीरा में मर ही जाती हैं। उनका जीवन ही चला जाता है। तो भला सोचो बहन बाल बच्चावों में कहां कौन सा बड़ा सुख आराम है, सो हमको बतावो तो जरा—

ऐसे बचनों को सुन कर औ सोचते हुए

पदमावती बोली की हां-हां बहन जी आपका कहना तो बिलकुल सत्य ही सच है, कि बाल बच्चों में कोई भी सुख नहीं है, बल्कि पहाड़ के माफिक, या पहाड़ से भारी दुख है—परंतु हे बहन इस संसार का यह रिवाज है। कि जिनके कोई बाल बच्चे नहीं हैं, उन्हें सब तुच्छ या अभागी समझते हैं। यानी नीच मानते हैं। इतना सुनकर सत्यावती बोली—देख बहन पदमावती जो कोई यह कहै, कि जिसके बाल बच्चादि नहीं है। वे अभागे पापी या नीच है, और जिनके पुत्र पुत्रियां हैं वै ही बड़े सुभाग्यवान हैं—तो अच्छी प्रकार से कान लगा कर सुन तो जरा—अरे विचार करके देखो जों अधिक अधिक बाल बच्चा वाला ही श्रेष्ट सुकृतवान है, । तो सूवरी, कूकरी, बिल्ली, औ सियारिन, लोहखड़ी, कऊआ, गिद्ध, और भी बकरी, मुर्गी, चिड़िया, चिड़न्गन, आदि, तथा पशुवावों को औ मधु, मच्छी, मख्खी, आदिक, इन सबों के बहतेक बाल बच्चे हैं। तो

इनको सबसे उत्तमवान या भाग्यवान जानना चाहिये। और जो कोई बहुत ही, पुत्र पुत्री वाला हो जायगा। तो वो क्या सुवरी, कुकरी, मुर्गी, आदिकों से भी, अधिक थोड़े बढ़ जायगा। जो कि दश-दश, बारा २ बच्चा, एक ही दफे गर्भ होने से पैदा करती है। और जिनके पलिवार या बाल बच्चाओं की संख्या नहीं किया जा सकता है, यानी गिनाया नहीं जा सकता है—तो क्या इन सबों को बड़ा भाग्यशाली या सुकृतवान थोड़े माना जायगा? तो नहीं २ ये कभी भी नहीं सुकृतवान मानने योग्य हैं। न इनको भाग्यमान माना ही जायगा—तैसेही जो जो नारियाँ आदि धर्म भक्ती सत्संग और दुखी दीन जीवों का या सांचे सद्गुरु का सेवना छोड़ कर, पुत्र पुत्रियों के ही अधिकता में, मस्त गर गाफ होकर पड़ी हैं, उन्हे सेयार बिल्ली के समान ही जानो—परंतु अब रह गया बात यह, कि बिचार कर देखो हे बहन, तो ना कोई बाल बच्चों से भाग्यवान

होंगी, और ना तो कोई बिना पुत्र पुत्रियां के अभाग्यवान या भाग्यवान होवेंगी—अब यहाँ न्याय विचार से देखो, तो सबों से श्रेष्ठ, औ सबसे उत्तम, भाग्यमान या सुकृतवान, हमारे वही बांहनाये हैं। जो पुत्र पुत्री की फिकरि चिन्तावों को त्याग कर, और भी सब भोग सुख आरामों से अपने मनको मोड़ कर, औ सांचा सदगुरु के सत्संग द्वारा, निर्णय करके अपने चैतन्य रमईया राम को जान कर, और सारा संसार भरका आशा भरोसा छोड़ कर, अपने अमर पद में ही शांति होकर निशचिन्त हो गई हैं। वें हरदम, श्री पारखी सदगुरु संतों में, या अपने चेतन सत्य अमर स्व-स्वरूप में ही प्रेम रखतीं हैं, और मन इन्द्रियों के कुचालों को भी छोड़ दिये हीं। वही बहनें हमारी सुखी और स्वतंत्र हैं। औ वोंई बहनांये मुक्त भी हो सक्ती हैं। ऐसा निश्चय करके जानो—नहीं तो ख्याल करके देखो बहन पद्मावती, तो इस संसार भर में और जितनी नारियां हैं, वे सब

प्रत्यक्ष में महान घोर नर्क का दुख भोग रहीं हैं, की नहीं—इतना सुनकर पदमावती बोली–हां-हां बहन आपका बात रत्ती भर भी झूँठ नहीं है। उन उत्तम ब्रम्हचारणीं बहनावों को छोड़ कर, बाकी और सब बहनाये तो सही सही नर्क दंड ही भोग रही हैं। हे बहन अब आपका बचनामृत सुनकर, हमको भी ज्ञान हो गया, की संसारिक भोगों में, या बाल बच्चों में, तथा तन मन इन्द्रियों के भोगों में, कही जड़ा भर रंचक मात्र भी शांति सुख नहीं है। औरो बल्कि दुख ही दुख भरा है। यह बात आपके कृपासे मेरे समझ में आ गया—परन्तु हे बहन देखती हूँ तो संसार के सब स्त्री पुरुष उन्ही आराम भोग के तर्फ ही जा रहे हैं। यानी यही दुख रूपी भोगो में ही सारा संसार बढ़ रहा है, और आपके कहने मुताबिक तो बहन कोई २ बिरले ही बिरले देखने या सुनने में आते हैं। सोई धन्य २ जीव हैं—पदमावती के इन बचनों को सुनकर सत्यावती बोली—की सुन २

बहन देख तो–जैसे नर्क का कीड़ा है, उसको सर्व सुख उसी नर्क ही में मालुम पड़ता है। औ नर्क ही में अच्छा लगता है। अगर उस कीड़ा को नर्क से निकालो, तो वह तल मलाने लगता है। यानी उसको बड़ी तकलीफों व कष्ट होता है, जैसे मानो प्राण निकल रहा है। वह कीड़ा सारा सुख उसी नर्क ही में जानता है—तैसे ही जगत के जीवों का हाल है। अरे नर्क कहिये संसार के भोग–यानी जिन २ भोगो को भोंगने से, जनम मरण की दुख बढ़ि जाय, औ चौरासी का कीड़ा बनना पड़े। वह २ आराम, और वह २ सुख भोग को, नरक ही जानना चाहिये—इस प्रकार संसार भरका जितना भोग सुख है, सो सब नर्क रूप ही है। अब जो २ उस नरक भोगों पड़े हैं, या उसी में आसक्त हैं—उन सबों को प्रत्यत्त में कीड़ा रूप जानिये। वे जीव कीड़ा से तनिक फर्क नहीं है–बहन पदमावती बहुत कहां तक कहूँ जो गुरू बिचार से देखो तो–ब्राह्मण, क्षत्री, बैस्य,

शुद्र, सब कोई, और राजा, प्रजा, हाकिम, हुकुम, सेठ, साहूकार, धनी, लखपती, करोड़पती, हों, या दरिद्र, दीन, गरीब, अमीर, बादशाह, हों, य चहे नेम, रानी, महारानी, या पटरानी, हों। चाहे सब सुख से भरी ही क्यों न हों। औ कंचन के भवन में ही आराम करती हों। बहन बहुत वर्णन करके क्या कहूँ, चाहे कोई कर्मी, उपासक, योगी, ज्ञानी, विज्ञानी, ही क्यों न होवें। तथा मौनी, उदासी, तपसी, हों, चाहे कोई बेद, सास्त्र, पुराण, चौदह, विद्या, नव ब्याकरण, आदि सब कुछ पढ़े हो। समस्त विद्यावोंका ज्ञाता, महान बिद्वान या सारे बिस्व का मालिक ही क्यों न होवे। यों तो जैसा आगे कह आई हूँ। औ ऐसा होय तो भी, अगर संसार के भोग आसक्ती में फसे हैं। यानी जो इंन नर्क रूपी भोगों में गाफिल होकर पड़े हैं। तो वे कुछ भी होवे, परंतु गुरुन्याय से देखिये तो कीड़ा रूप ही वे प्रत्यक्ष बने हैं। अरे बहन पदमावती तुम गौर से देखो, तो इस महा घोर नर्क रूपी

दुख भोगों में, समस्त संसार के प्राणी बूड़ि रहे हैं। या अथाह अप्रबल संकटों में सर्ब नर नारियाँ नाना दुरगत्ती वा दुख भोग-भोग कर, और तलफ तलफ कर, बिकल हो रहे हैं अब इंन सब महान दुःखों से कोंई कोई बिरले भाग्यवान या भाग्य-शाली नर नारी बच सक्ते हैं। और जो इस क्रोध लोभ मोह हँकारादि भयानक कालों से बच जाते हैं उन्ही सुकृत वान जीव का सारा क्लेष व व पीरा या नरकरूपी दुःख मिट जाता है। यों तो हर तरह का दुख दाई कष्ट, ऐसे जीवों का छूट ही जाता है। तो देखो बहन इस महा घोर दुख से वोई बचते हैं, जो संसार भोगों को त्याग कर बैराग्य लिया है। औ परम पारखी श्री गुरुदेव के चरण शरण होकर पुर्ण बैराग्य वान बन गये है। उन्ही सत्यबादी जीव की जनम मरण भव शूल दुःख वा कष्ट छुट जाती है। और वें पुरुष इस संसार सागर से मुक्त हो जाते हैं, वे ही सब नर नारियों में सर्ब शिर मौर हैं—या श्रेष्ट उत्तम

भाग्यवान पुरुष हैं। हे बहन ऐसे बैराग्यवानों को कोटिशः धन्यबाद है–तहां इसके बारे में देखो बहन 'सदगुरु श्री पूरण साहेब जी' कहे हैं की बिना बाहर भीतर से पक्का असली बैराग्य धारण किये, सब कोई दुखी ही दुखी हुए हैं और आगे होयेंगे। हाँ जिन पुरुष ने समस्त जगत ब्रह्म का सुख भोग को तृण तुच्छ नर्क रूप या कौवा के बिष्टा समान जान कर त्याग दिया है, वही धीर बीर गंभीर पारखी पुरुष त्रय लोक में बिजई हैं? या वही बैराग्यवान सारे कंटकों से बच कर जीते जी जीवन्मुक्त हो जाते हैं, या हो रहे हैं–अब सदगुरु का कहा हुआ निर्णय बचन यहां दश दोहोंमें कहती हूँ–देखो पदमावती ध्यान देकर सुनो–और गुनो,

॥ दोहा ॥

काल पीर तिनकी मिटी, जिनके दृढ बैराग।
तेहिबिनजिवसबदुखित अति, पचि२ मरहिंअभाग।१।
इन्द्र दुखी ब्रह्मा दुखी, दुखी विष्णु सब देव।
शिव, शेशादिक दुखित हैं, बिन बैराग न भेव ॥२॥

राजा दुखी परजा दुखी, दुखी रंक प्रभु भेष ।
धनवन्त औ निर्धन दुखी, निर्णय करिके देख ॥३॥
तनधरि सुखिया कोइनहीं, सब कोइ दुखिया लोग ।
बिन बैराग्य ठहरै नहीं, कहा ज्ञान कहा योग ॥४॥
बिन बैराग्य न मुक्ति है, बिन बैराग्य न ज्ञान ।
बिन बैराग्य न भक्ति है, बिन बैराग्य न शान ॥५॥
ताते मुख्य प्रधान है, सबको यह बैराग ।
गुरू कृपा जापर भई, ते पावत बड़ भाग ॥६॥
जासु मोह सब जीवको, डर उपजत है जान ।
सो देही छिन भंग है, ठहरै नाहिं निदान ॥७॥
नाश मान जो बस्तु है, सो तो ठहरै नाहिं ।
तासों लोभ न कीजिये, यह निश्चय मन माहिं ॥८॥
अबिनाशी चैतन्य जो, सबको जानन हार ।
सो तू निश्चय धारिले सुखमय अवनि बिहार ॥९॥
प्रकाशी परकाशते, सबको जानन हार ।
ना काहू सों काम है, ताको सुमुझि बिचार ॥१०॥

इस प्रकार कह कर सत्यावती पदमावती को समझा रही है, कि देखो बहन, यह जो गुरु ज्ञान

अमृत बचन है, सो समस्त नर नारी के हितय कर न्याय है,परन्तु इसी गुरु न्यायको ना ग्रहण करने से सारा खलक दुखी हैं, सो जब तक इस गुरनिर्णय को सब जीव नहीं अपनायेंगे, तबतक इसी जनम मरण में पड़े पड़े चवखानियों में भ्रमा करैंगे, यों तो बिना मोक्ष दाता सद्गुरु श्री पारखी गुरुदेव के, और कोई भी इस संसार में नहीं है जो इस जीवको जनममरण चक्करसे बचा लेवे,ताते श्रीसद्गुरु पारखी की शरण ग्रहण करना जरूरी है—देखो पदमावती यह वैराग्य पद सर्व दुःखों को हरण करने वाला है, और जो यह श्री पारखी गुरूकी सद्भक्ती है,यही इस जीव के जनम जनमान्तरों का सारा संकट छुड़ाने वाला है, और आजाद स्वतंत्र शांति सुख देने वाला है। औ इतनै नहीं अगर कोई भी स्त्री पुरुष हो सांचे पारखी श्री सद्गुरु सत्संग सद्ग्रंथ द्वारा सत्य,असत्य, असल, नकल का पहचान करें,तो इसी जीवन में वो सब निहाल हो जायेंगे इसमें शक नहीं है—देखो बहन पदमावती, उन पारखी श्री गुरुदेव के सत्संग भक्ती का ऐसा प्रताप है,कि

जिसको करते करते ही, जैसा यह जीव अपने स्वरूप से अजर अमर अखंड अविनाशी है औ नूर अंश अंशी रहित स्वतः स्वतंत्र सत्य मुक्त रूप है, तैसा साफ साफ दिखने लगता है। अहो, जिस अमृत स्वरूप को हम सब अनादी काल से भुलाकर दुखी भयें हैं, वह अपने अमृत स्वरूप को श्री पारखी गुरु के दरबार में जाते जाते ही प्राप्त हो जाता है। धन्य धन्य पारख प्रताप की महिमा को, कुछ मुख से कहते बनता नहीं—अरे बिशेस क्या कहूँ, देखो बहन पदमावती श्री पारखी गुरु के कृपा से, जैसा हमारा औ तुमारा यह अमर चैतन्य पारख स्वरूप है सो आज ही देखने में आकर, खुलाशा २ मुक्ति पद दर्शित हो जाता है—परंतु इस अमर अपने पदवी को पाने के लिये कुछ संयम करना पड़ेगा, जिसको आगे कहती हूँ—देखो बहन ध्यान से सुनना—हम सब कल्याण इच्छुक को चाहिये की पहिले तो जितने खराब चाल चलने वाले नर नारी हैं तिनके संगत से दूर ही रहैं, कभी

भूल कर भी उनका संग ना करना चाहिये—दूसरे दयालू जीव सदाचारी भक्त सज्जनों का और समय समय पर पारखी श्री सदगुरु का दर्शन पर्शन यथायोग्य सेवा सत्संग करते रहना, हम सबों को जरूरी है—तीसरे इस मन का कहा ना मान कर रहना चाहिये, औ वाहियात बेकार में इधर उधर बहुत घूमना विचरना या टहरना भी नहीं चाहिये चौथे—श्री सदगुरु न्यायालय अन्कूल दया छमा धीर आदि गहि कर स्थिर बुद्धि से एकी जगह पर अश्रमी बन कर रहना चाहिये—पंचये झूठ बोलना निन्दा गारी ताना वरहना या कटु बचन, नही कहना चाहिये। छंठये—अगर कोई भी अपना खराब स्वभाव बना कर, हमको असोहात गारी दे रहा या निन्दा ताना वरहना कटु बचन कह रहा है तिसको खुसी से मन मारके सह लेना चाहिये, जो कोई कहै कि का जान के सहना चाहिये, तो यह जान कर सह लेना चाहिये कि वह अज्ञानी अबुझ है अविचारी है, औ अनारी नादान है वह अपने

हिताहित का बिचार ही नहीं जान्ता है, इसलिये पागल या बावला है। और हम तो श्री सदगुरु दया से जानदार या समझदार हूँ, हमारा चैतन्य स्वरूप अजर अमर अबिनाशी है, औ गारी निन्दा दुःख सुखों से पार है—जो कोई मुझे गारी आदि कुछ कह रहा है वह अपने ही लिये कह रहा है उससे मेरा किंचित भी हानी नहीं है, ऐसा जानकर सबका सब कुछ कहा हुआ सह लेना चाहिये-औ अपने को गुरु पद पटरी से डिगना नहीं चाहिये, अडिग्य होकर शहनशीलता धारण करना चाहिये सतयें-सब जीवों पे औ कुटुम्बी सबंधी आदि से समता भाव से बर्तना चाहिये, औ सबसे अधिक मोहो भी नही करना चाहिये-अठयें-शरीर के निबांह में गरीबी चाल औ भोंजन छाजन शुद्ध स्वातकी होकर शुद्धता से आचार बिचार और समयक ज्ञान रखना चाहिये-नवयें-मनके कुचाल काम क्रोध लोभ मोह आदिक दुसमनों से सजगता भी रखना चाहिये-दशयें-जो मुक्ती दाता, पाप

नशाता–पारखी श्री गुरु संत हैं, उनमें सत्यता से सत्यनिष्ठा औ सांचा भाव निर्छल रूप से रखना चाहिये–और श्रेष्ट सदगुण धारी भक्त सज्जन तथा सदगुरु संतों से अदब भाव रखकर, बोली बचन नम्र मीठा मधुर कोमल सरल स्वभाव से रखना चाहिये–देखो पदमावती जो यह दश लक्षण ऊपर कहा गया है, वह ही अपने अमर पारख मुक्ति में चलने का संदेश जानो और जी जानसे इसे ग्रहण करो–देखो बहन सद रहस्य बैराग्य अमृत पद तभी मिलती है, जब सद गुरु श्री पारखी सन्त की दया द्रिष्टी होंती है, और अपना शुभ संस्कार उत्तम होता है तभी ऐसा सर्वोत्तम कोटि का सद बिचार पारख कोई नर नारी के हृदय में उत्पन्न होता है, ऐसा अपने मन मे निश्चय जानो– और अब एक इस श्रेष्ठ सत्य सार बचन कहती हूँ उसे गौर से सुनो जिसको सुनि गुनि धारण करने पर फिर इस दुखालय संसार का दर्शन नहीं होगा, ऐसा यह अमर पद है—

पदमावती बोली—धन्य धन्य बहन तुमको

है जो हमारा अज्ञान पना हरण कर रही हो औ हमारा पुर्व का भाग्य उदय हो गया जो आपका दर्शन हुआ, अब आप का वचन हमे अमृत व्यंजन तुल्य लग रहा है बहन दया करके सुनावो—

सत्यावती, अच्छा तो खुब ध्यान से सुनो,

॥ छन्द ॥

कहती हुँ वचन सुन के बहन ध्यान दीजिये ।
चैतन्य जड़ असार सार ज्ञान कीजिये ॥
यहि कहन सुनन मनन से दुख सर्व जायगा ।
इसके ग्रहण किहे से सुःख सर्व आयगा ॥ १ ॥
यह सद्गुरू श्री पारखी गुरुवर क कहा है ।
गुनिके हृदयमें जो गहे फिर भव न बहा है ॥
चैतन्य अमर जीव सर्वहुँ क सार है ।
वह है अनन्त अजर तत्व जड़ से पार है ॥ २ ॥
सब जीव भिन्न-भिन्न कर्म स्वयं बनाते ।
अनुसार कर्म के सदा दुख सुःख वो पाते ॥
अपना चैतन्य पनको छोड़ि जड़ में भुलाते ।
कारण यही से जन्म जन्म कष्ट उठाते ॥ ३ ॥

कर्ता चैतन्य आप सर्बहूं क जनैया।
खानी औ बानी कल्पना को आप मनैया॥
सबको है सत्य मान मान श्रेष्ट बताता।
पड़ करके सबके बीच में आपो भि दुखाता॥ ४॥
अपने ये जीव भूलि भूलि जाल बिछाता।
अनुमान से बहु देव दैत्य भूत बताता॥
भैरव भवानी जिंद मानि तिन में अटकता।
अपने स्वयं बनाय तिसपे शिरको पटकता॥ ५।
चैतन्य होके जड़ को मानि २ लटकता।
आखिर बेचारा भूलि भूलि खुदहि भटकता॥
सबको बना बना के आप भी अरुझ रहा।
सबको बनाता श्रेष्ठ आप बन अबुझ रहा॥ ६॥
कैसा ये हाय भूल सर्ब जिव में घुसी है।
अपना स्वरूप भूलि कल्पना में खुसी है॥
कैसा अनाथ जीव अपने पद से हो रहा।
गुर ज्ञान बिना और और फस के रो रहा॥ ७॥
नारि पुरुष कुल कुटुम्ब मानि भूल है।
तेहि बीच पड़ा जीव कठिन पायशूल है॥
मात पिता भाई भौजाई भतीजा।
इन सब में बझ के जीव कि बिगड़ी है नतीजा। ८॥

चाचा वो नाना मामा मानि २ बन्ध है।
नाती पनाती औ छनाती मानि अन्ध है॥
सारी तो उमर बीत गयी तन जिरण भया।
पर और और चाहना मन की नहीं गया॥ ६॥
यक दिन तो काल आय अचानक में खायगा।
भक्ती बिना ये जीव भयानक में जायगा॥
घर दुवार खेत बारि मानि फंसा था।
झूंठा सपन के खेल में सत जानि धंसा था॥१०॥
जीवन में कभी संत गुरू संग ना किया।
दाया छमादि हंस को अंग ना लिया॥
धाया पिचाश सम सदा धन धाम के लिए।
काया खराब कर दिया मन बाम के लिए॥११॥
दांत टूट नेत्र हीन कान बन्द है।
तन थर थराय रातदिना ना अनन्द है॥
घर भर यही मनावते कब स्वास बन्द हो।
कर कर बचन सुनावते हरदम्म जंग हो॥१२॥
अब तो कहो क्या देर है मौतै भि आगया।
घर भर के राय जो रहा बातै वही भया॥
जब मौत आय रोय रोय सबको छोड़िया।
भक्ती धर्म से हीन नर्क खाय कोड़िया॥१३॥

शेखी औ शान धन गुमान धूल हो गया।
कहता है जीव रोय बड़ा भूल हो गया॥
बस कुछ तो वहाँ ना चले पछताव मात्र है।
गुरु संत सेव चूकि बना दुख क पात्र है॥१४॥
देखो हे बहन अमर जीव अपने भूलिके।
सुत नारि सभन मानि दुःख पाव शूलिके॥
देखो हे पुरुष कौन नारि जीव अमर है।
निज स्वयम रूप को बिसारि बंध धंसर है॥१५॥
नर नारि रूप भर्म मर्म जान लो बहन।
अमृत स्वरूप जीव सब क मान लो बहन॥
मन इन्द्रियों के भोग में पड़ि के दुखी हुआ।
त्रयं खानि भ्रमता है कभी ना सुखी हुआ॥१६॥
जन्म जन्म गर्भ आंच बीच जली हो।
सोच समझ के बचो गर आप भली हो॥
तन का चरित्र देख लो कैसा ये नर्क है।
डांगर औ ढोर नीच से तनिको न फर्क है॥१७॥
जौने शरीर मांहि भांति भांति सुखारी।
हा हाय वह तो नर्क से बढ़ करके दुखारी॥
जिस मुख में सुःख मानती वो मांस से भरा।
नकुंना औ कान आंख में मलमूत्र सब धरा॥१८॥

ठौर ठौर पीव रक्त का भन्डार है।
और और बीच दुःख का अंगार है॥
थुक खेखार लार कीच नीच देह में।
हाड़ हाड़ ही से मिढ़ा बीच देह में॥१६॥
भीतर रक्त औ पीब उपर चाम तना है।
मानो ये देह नर्क का यक घर हि बना है॥
कच मास हाड़ नाड़ी भीतर कि ठाट है।
ऊपर से बिछाया है चाम जैसे टाट है॥२०॥
ठौर ठौर देह में नर्कों कि नली है।
बिचारिये बहना जरा तन में क्या भली है॥
यह चार तत्व देह तत्व हीसे पली है।
भीतर नर्क की कुन्ड देखने में कली है॥२१॥
प्रत्यक्ष देखिये ये देह दुःख खजाना।
तन नर्क दुःखमे न भूलि सुःख मनाना॥
काम क्रोध लोभ मोह डाकु जबर हैं।
इन सब ने मिलके जीवको करते बे खबर है॥२२॥
अभिमान शान औ गुमान काल रूप है।
राग द्वेष छल प्रपंच जाल रूप है॥
तृष्णा कराल बीकराल काल बली है।
इन सबने मिलके आप अमर जिवको दली है॥२३॥

यह चोर डाकुवों ने लूटि जीव को लिए।
लाचार दीन जीव हो रोता हिये हिये॥
ऐसे अनादि काल से दुख भार उठाया।
पाजी ये मन से जीव बहुत बार ठगाया॥२४॥
जो जो मिले सहायक उसही में गड़े थे।
मद काम लोभ आदि ये मन ही में अड़े थे॥
पर आप बहि रहे सो कैसे के बचावैं।
जो आप गहि रहे थे सोई में नचावैं॥२५॥
उन सब में पड़ि के हम सबों ने दुःख उठाया।
ऐसा जकड़ि के हम सबो ने दुख में तपाया॥
पर अब तो सहारा मिला गुरुवर कबीर का।
यह ज्ञान करारा मिला अव्वल फकीर का॥२६॥
दाया छमा संतोष बीरता को धार कर।
बैराग्य परख खन्ड से दुश्मन को मार कर॥
सत्य शील धीर से शत्रु हरायँगे।
डंका बिजय निशान कि झंडा फहरायँगे॥२१॥
पारख बिबेक ढाल से दुश्मन क नाश हो।
बैराग्य बांण हाथ में रंचक न त्राश हो॥
नैराशता औ शांति गहि स्वतंत्र अमर हो।
मुक्ती स्वराज धाम जहँ न काल असर हो॥२८॥

बहनों लखो मग कैसा गुरुवर कबीर की।
इसको गहो हमैशा फिर भव न पीर को॥
कोई हो नीच ऊंचा नर नारियां अगर।
इस नित अखन्ड पद को जो धारियां मगर॥२९॥
फिर वो न बहै भव के खांच आंच छूटि हैं।
पद्वी मिले अजांच सांच मुक्ति जूटि हैं॥
देखो बहन गुरू का चोखा ये तीर है।
धारण इसे जोई करै रण धीर बीर है॥३०॥

करना है दुःख नाश तो सद्गुण यही धरो।
मन चाल परखि त्यागिके जन्मो न फिर मरो॥
गुरुग्यान मनमेंध्यान करिनिशदिन सुखी रहो।
सत निज स्वरूप ज्ञानि के जग में न फिर बहो॥३१॥

अंतिम यही है कहना बहनो सुनो सुनो।
पद्वी अमर है गहना बहनो सुनो सुनो॥
तेरे हितार्थ के लिए गुरु वाक्य सुनाया।
पद्मावती सम्हार ले गुरुवर ने चेताया॥३२॥

इस प्रकार कहते हुए सत्यावती कहती है कि देखो बहन पद्मावती इन अमृत वचनों पर ध्यान

रक्खो, और सुनो, धन्य धन्य उन पारखी गुरुदेव की क्या महिमा करूँ। देख बहन, जिस तन मन इन्द्रियों के बस होकर, या जिस काम क्रोध लोभ मोह हंकार आदि के वसी हो हो कर अंडज पिंडज और उष्मज खानियों में नाचती थी। औ इसी मनुष्य देह ही में जब तक श्री गुरुवर नहीं मिले थे, तब तक कुल कुटुम्बी पलिवारों में, और आपस में सब सम्बन्धी आदि या टोला परोसियों में हम सब भूल व अज्ञान बस अपने घर ही में, इर्षा डाह कलह मचाये रहती थी और रात दिन झगड़ा लड़ाई मार गारी, हिंसका पटैती, यही सब ना ना आफतों में पड़कर दुख सहती रहीं औ इन दुखों से बचने का कहीं उपाय भी नहीं मिलता रहा, देखो बहन जिस दुसह दुख में हम सब अनादि से गोता या डुबकी लगा रहीं थी, औ आज तक उन पूर्व दुखों से बचने का उपाय नहीं सूझता रहा। परंतु हे बहन धन्य धन्य उन पारखी श्री सदगुरु की है जो ऐसे महान कष्टों से छुड़ा लिये हैं—धन्य उनके

पारख ज्ञान विचार और भक्ती को है। जिसको अपने हृदय में ग्रहण करते ही, यानी जिन गुरुदेव के ज्ञान विचार भक्ति आदि सतसंग को, हृदय में धरते धरते ही सारा कंटक तथा सर्ब दोष दुर्गुण निकल कर सफाई हो जाती है, औ इस जीव का सर्ब दुख छूट कर, स्वतः मुक्त स्वतंत्र और शांति अमृत सुख प्राप्त हो जाती है। धन्य धन्य ऐसे गुरु नामों पर, और धन्य धन्य उनके ज्ञानों पर, जिससे यह जीव सर्ब दुखों से छूट कर सुखी हुआ।

है न बहन पदमावती—यह सुन कर पदमावती बोली—हां हां बहन जी, धन्य धन्य गुरुदेव के ऐसे अमृत ज्ञानों और नामों पर, जिसको सुन कर मेरा अज्ञान पर्दा हट गया।

ऐसा कह कर दोनों गुरुदेव की बन्दना करने लगीं—

॥ प्रार्थना ॥

गुरुदेव तुम्हारे नामों पर, बलिहारी है बलिहारी है
गुरुदेव तुम्हारे ज्ञानोपर, बलिहारी है बलिहारी है ।टेक।

गुरुनामसेसबसुखमिलताहै, गुरुज्ञानसेसबदुखटलताहै
सर्वोत्तम दोनों नामोंपर, बलिहारी है बलिहारी है ।१।
जेहिपायनफिरसेचाहकोई, अपनाय जिसे न भिखारहोई
गुरुवर के ऐसे दानो पर, बलिहारी है बलिहारी है ।२।
जेहिकोमहिमाअति भारी है, जिनकोबिनजीव दुखारी है
ऐसे प्रभुके अहसानोंपर, बलिहारी है बलिहारी है ।३।
जिनके संगतसे भरमफटै, जन्मरण कि भारी कष्टहटै
ऐसे पारखपरमानो पर, बलिहारी है बलिहारी है ॥४॥
जेहिसत्य आचरणसदगुनधन, जेहिकामहैमारै इन्द्रीमन
हितकर सब के तेहि ज्ञानो पर, बलिहारी है २ ॥५॥
संतशरण गहे जिनकीरहनी भव पार २ अब होता है
ऐसे सिधान्त महानोंपर, बलिहारी है बलिहारी है ।६।

इस प्रकार श्री सदगुरु का प्रार्थना करके, दोनों आपस में बन्दगी कर शांति रहीं, कुछ देरी बाद सत्यावती ने कहा की अच्छा बहन अब तुम अपने मुकाम पर जावो, और जो ये गुरुदेव का ज्ञान अमृत कहा गया है। इसको खूब प्रेम के साथ अपाने हृदय में धारण करना, देखो बहन

जैसे भूंख मिटाने के लिये रोज रोजाना भोजन पाया जाता है—उसी प्रकार से यह जनम मरण रूपी भूंख मिटाने के लिये इस गुरु ज्ञान रूपी अमृत सत्संग रूपी भोजन को रोज-रोज या नित्य २ पाना, नाम धारण करना चाहिये, यानी जब तक यह शरीर है तब तक यह सद्ज्ञान सतसंग रूपी व्यंजन हर हमेशा, पावना नाम करना चाहिये, तभी सर्व दुःखों से छूट कर सुखी स्वतंत्र हो जावोगी, ऐसा दृढ़ पक्का से निश्चय करके जानो—इस तरह का वचन सुनकर, पद्मावती ने, सत्यावती के चरणों में नमस्कार करके और श्रीगुरुदेव के श्रेष्ट पारख ज्ञान का धन्य २ मनाते हुए यह कहती भई। की हे बहन जी अब मैं इस गुरु ज्ञान को ग्रहण करूँगी, और इन मन इन्द्रियोंके या जगतके सकामी नर नारियों या कुसंगियों से हरदम फरक ही रह कर अपनी जीवन व्यतीत करूँगी। अच्छा बहन अब दया दृष्टि करिये मैं भी चलूँगी, और आप भी शयन

करें। हे बहन आप हमारे पापिन पर बड़ा कृपा किया है, जो ऐसे सर्वोत्तम गुरु ज्ञान, चर्चा को सुनायो है। परंतु हे बहन मैं हाथ जोड़कर कहती हूँ की फिन कोई समय पर इस गुरु ज्ञान चरचा सुनाने का कृपा कीजीयेगा—सत्यावती, हाँ-हाँ बहन पद्मावती वह दिन मुक्कर्र हो गया है, देखो पुरणवासी के दिन सर्व माहिलांये आवैंगी, और उसी दिन तुम भी आना, गुरु सतसंग कथा जरूर होवैगा, भूलना ना, आना अवस्य, ऐसा कहकर पदमावती को जाने के लिये आज्ञा दिया तब पदमावती बन्दगी करके, और अपने मनमें धन्य-धन्य मनाते हुये चल दिया—और इधर सत्यावती भी शयन किया—

फांसला-श्री पारखी गुरु संत की अखँड पारख ज्ञान धन, सत्यावती के द्वारे सत्संगसे पाकर, और उसको मनन करके सर्व नारियाँ जन परम शांति सुख को प्राप्त भईं—इस प्रकार धीरे २ से थोरे ही दिन के बाद में, पुर्णमा का दिन आगया,

औ सरब माहिलांये, अपने २ घर से भोजनादि करके निकल पड़ीं, सबके सब नारियाँ शुद्ध सफाई के साथ चलती भई —इधर सत्यावती भी समय का हाल जानकर, और देह व्यवहारों से निश्चिन्त होकर, आसन पर बैठकर, शांति चितसे, श्रीसदगुरु देव का ध्यान धरके पारख स्वरूप का निरन्तर मनन कर रही थी—की थोरी घरी के बादमें सर्व माहिलांये आ पहुची—और सत्यावती को नमस्कार बन्दगी कर करके बैठ गईं—धर्मावती दयावंती तथा पद्मावती आदि और सब ब्रह्मचारणी भर एक तर्फ बन्दगी करके बैठ गईं। इन सर्व माहिलांवों को बैठे देखकर और२ भी बहुत सीनारियाँ आ गईं उन सबको आते जानकर, सत्यावती ने बैठने का इसारा दिया, इसारा पाकर सब नारियाँ बैठ गईं। सबको शाँती ही शाँति चितसे बैठे देखकर सत्यावती-श्रीगुरुदेव को जय जय कार मनाते हुए, प्रथमे श्री सदगुरु का अस्तुति, इस भांति से करने लगीं—

॥ गजल ॥

संत गुरू संत गुरू, धन्य हमारे ।
हम सब बहे हुए को, डूबते से निकारे ॥ टेक ॥

तन मन ये काल जाल में हम नित्य फंसे थे ।
त्रयखानि नर्क कुन्ड में हम नित्य धंसे थे ॥
मेरे न ये उम्मीद रहा होंगे सुखारे ॥ संत ॥१॥

ऐसो बेहाल हाल मेरा जग्त में रहा ।
जीवन ये जन्म जन्म नष्ट भ्रष्ट मे रहा ॥
पर संत गुरू धन्य असह्य कष्ट निवारे ॥ संत ॥२॥

जब से ये दीन जीव को पारख प्रभू मिले ।
इस जग महान सिंधु सो तारक प्रभू मिले ॥
संकट बिकट है टूट गया तब से हमारे ॥ संत ॥३॥

ऐसा बिमल है ज्ञाम दान अमर तुम्हारा ।
दीन्हा मिटाय सर्ब झगर रगर हमारा ॥
अब शांतिशांति पद मिला आपीके सहारे ॥ संत ॥४॥

जय जय दयाल संत गुरू ज्ञान आप का ।
हमजीव दुखारो के गया दुःख ताप का ॥
महिमा तुम्हारी है अमित कहते न बनारे ॥संत॥५॥

देखो महान ज्ञान बहन संत सेव का।
होता अज्ञान दहन दर्श संत देव का॥
जिनके बचन गहन से होत सुःख अपारे॥ संत॥६॥

सद् ज्ञान दान देय कर शरणों में लगाते।
सब पाप ताप मेट कर भ्रम जी के भगाते॥
इससे हमारे संत गुरू प्राण पियारे॥ संत॥७॥

संत शरण एक दुखी को सुखी किये।
सबसे छुड़ाय करके चरण में खुदी लिए॥
नमस्कार बार बार संत तुम्हारे।
संत गुरू संत गुरू धन्य हमारे॥८॥

इस प्रकार गुरुदेव का प्रार्थना करके सत्यावती, ने सब नारियों को इसारा किया की हे बहनो देखो श्री गुरुदेव की भक्ती करने से, अजर अमर अखंड अबिनाशी पद तथा परम आजाद स्वतंत्र शांति सुख मिलता है। धन्य धन्य गुरु भक्ती का फल और गुरु संत की भक्ती ना करने से, सब संसार-सुख भोग भोगते हुए भी, मधु माखी या बिल्ली कुत्तादि के तरह दारुण दुसह दुःख मिलता रहता

है, सो तो जगत मे प्रत्यक्ष ही है, और उसी के बारे में यहाँ एक दृष्टाँत आया है—उसे कहती हूँ ध्यान पुर्बक सुनो—इसके सुनने से गुरु भक्ती के तरफ अन्तःकरण झुकैगा, और अपने पारख स्वरूप का ज्ञान भी सुझैगा, औ नित्य शान्ति सुख की प्राप्ती होगी

॥ दृष्टांत प्रारम्भः ॥

एक छोटा सा शहर था, उस शहर में संत सेवी एक नम्रावती नाम की ब्रह्मचारिणी रहती थी, पारखी संतों में उसका अतियंत प्रेम था, और उसके सेवा भक्ती की महिमा शहर में तो था ही बल्कि उसके सेवा भक्ति कि चार्चा दश-पंद्रह कोसों तक होती थी। ऐसी वह साधु गुरु में निष्टवंत रही। यों तो पारखी गुरुदेव के सतसंग प्रताप से वह, सार-असार, जड़ चैतन्य का भिन्न भिन्न ज्ञान, और चेतन जीव इन्द्री मन आदि के कल्पना से, नाना बासना बस हो खानी बानी में भ्रमता रहता है। सो आज नर देही में पारखी गुरु से यथार्थ ज्ञान

जान लेने से, औ विषय बासना जगत ब्रह्म की समस्त आसक्ती मिटने से जीव मुक्त हो जाता है। इस प्रकार सत्य असत्य, और निज स्थिति का ठीक ठीक ज्ञान सदगुरु सत्संग प्रताप से उस नम्रावती को हो गया रहा। उसके और दूसरा कोई सम्बन्धी भी नहीं था, कुछ थोड़ा बहुत खाश तनसे परिश्रम करके युक्तिपूर्बक अपने शरीर तथा आये हुए संत गुरु अतिथ अभ्यागत का यथायोग्य सेवा सम्मान किया करती थी। सब लोगों के देखने में तो वह बहुत ही दीन दरिद्र दुखी देखाई देती थी, परंतु वह पारखी सदगुरु संत के सत्संग से शील औ छमा रूप संतोषामृत का पान करके वह सदा स्वतंत्र सुखी शांति रहती थी—सर्ब संसारिक की नाना चाहना कामना आदि को हटाकर, श्री सदगुरु ध्यान में या अपने स्वरूप बिचार में ही हर हमेशा शांति रहा करती थी, औ बिशेश बिना कार्य का आना जाना भी नहीं रखती। बल्कि घर ही पे अस्थाई रूप से, हर हमेशा सदबिचार

पूर्बक रहती रही, इस प्रकार से वह नम्रावती, गुरू कृपा से नित्य शान्ति सुखी रहती थी। परन्तु उसी शहर में एक रानी जी रहती थी, जो की सर्बभोग सामिगृयों और आराम सुखों से अतियंत हरीभरी थी, वह रानी उसी भांति भांतिके देह सुखोंमें और अनेकों भोग आरामों में अलमस्त हो गरगाफ रहती थी, इस प्रकार अनन्त सुख होते हुए भी तृष्णा चक्र में पड़कर वह रानी हरदम दुखी ही रहती रही। उस रानी जी में एक बात और था, की वह गंगापर स्नान करने के लिये डोला पर चढ़के नित्य २ जाया करती थी, जिस रास्ते से रानी स्नान करने जाती रही, उसी रास्ते में नम्रावती का घर भी पड़ता था। रानी जी उसी रास्ते आते जाते कभी कभी संतों का समागम होते भी देखती रही, उन सदगुरु संतों को देख कर रानी अपने मनमें यही सोचती बिचारती रही, की यह नम्रावती बड़ी कम अक्ल है। जो इन ढोंगियों को अपना सब धन माल खिला देती है। ऐसा वह रानी अपने मनों में सोचा

करती थीं। एक दिन की बात है कि समयसंयोग्य से वह गंगा पर से स्नान करके आती थी, और इधर नम्रावती भी घर द्वार बाहर भीतर सफाई करके औ स्नान बनाकर एक चटाई पर बैठी— इतने में रानी भी आ पहुँची, और अपने डोले से उतर कर जहाँ नम्रावती बैठी रही, रानी वहाँ जाकर और ठाढ़ ही ठाढ़ ऐसी बचन कहती भई—देखो नम्रावती तुम तो बहुत कम अक्ल हो, जो इन झुठ्ठे साधुवों को खिलाती पिलाती हो, अरे भला इन साधुवों से तेरा क्या सम्बन्ध है, अहो हक नाहक तू अपना धन द्रब्य खर्च रही है। इसी से तो तुम्हारे घर में धन भी नहीं बटुरता है, मैं देखती हूँ कि हर हमेशा दरिद्रता छाये रहती है—नम्रावती तुमारे में एक बात और बड़ी भूल है कि संसार के ऐस आराम भोग को छोड़ कर और भी शरीरिक के सुन्दर सुन्दर भोग पदार्थों में जसे भांति भांति के कपड़ा आदि और भी भांति २ के अभूषण गहना आदि, इन सब

सुख सामिग्रियों को त्याग कर, तुम अपना जीवन बेकार निरर्थक मिथ्याही न गवांती हो, तुम तो यह बड़ी कम अकल की काम कर रही हो। परन्तु और बात तो बात ही है लेकिन अच्छा भला यह तो बतलावो कि तुम कानि कितने दिनों से इन निठ्ठलों की सेवा कर रही हो, तो उनके सेवादि से तुम्हे क्या फल मिला। भला उसको तो बतावो—रानी जी का इस प्रकार वचन सुनकर नम्रावती समझ गई कि ये महारानी जी अपने इन्द्रिय आराम सुख भोग ही में मद मस्त हैं। और इन्हे धर्म भक्ती आदि का ज्ञान तो हैं नहीं इसी नाते से ये ऐसा कह रही हैं, तो ठीक है अब इनके मुख ही से न्याय की बातें समझें समझावें तो कदाचित इनकी दृष्टि खुले। ऐसा अपने मनमें सोंच विचार कर नम्रावती रानी से मधुर बचनों द्वारा कहती भई। की हाँ हाँ बहन जी आपका कहना तो बिल्कुल सत्य औ सही है, की मैं बहुत ही कम अकल हूँ, इसमें कोई सक्क नहीं है,

और सद गुरु संतों के सेवा से जौन जौन सुख वा लाभ तथा अमृत शाँति पद मिलता है, वह अभी आप से क्या कहूँ। उसको तो मैं ही जान्ती हूँ कि तो जो जो सतगुरु संत के सत्संगी होंयगे वैही जानैंगें और मैं अभी आप से क्या कहूँ, पर हाँ यह तो आपका कहना सही है कि,मैं तो संसार के आराम भोग सुखों से बंचित अवश्य हूँ-परन्तु आप को तो संसार का सर्ब प्रकार के आराम सुख भोग प्राप्त ही है। यानी संसारिक सुख भोग तो आप को हई है। किसी हालत में ती कमी नही न है। और भी अनन्त काल से सर्ब प्रकार का सुख भोग भोगते आई हो, या इस जनम में भी नाना तरह का आराम सुख भोग भोगही रही हो। तो मान लो हमें संसारिक भोग प्राप्त ही नहीं है, तासे हमको दुखी कहती हो तो अच्छा ठीक ही है-लेकिन हे बहन मैं आप से सच सच पूँछती हूँ कि आप सब सुख भोग कर रही हो, हर हालत से सुखी ही सुखी हो-तो यह बतावो की आप

को तो किसी भी प्रकार का दुःख व कष्ट नही होगा सो सत्य रूप से मेरे से कहो तो सही-की दुख है कि नहीं-नम्रावती का इतना बचन सुन कर रानी कहने लगी, की अरे बहन मेरे दुसह दुःख का कुछ हाल पूछो मत-जितना कष्ठ वा दुःख हमको होता है, उसे तो मैं ही जानती हूँ-उस अपने दुखकों दूसरे से क्या कहूँ-अच्छा जो आप कहती हो तो मैं थोड़ा सा अपने दुख का बृतान्त कहके सुनाती हूँ। यों तो रानी कहती भई, की हे बहन नम्राबती जब तक तो सुख भोग आराम वाली चीज नहीं रहता है, तब तक तो मुझे वह असह कष्ट होता है जो कि सहने माफिक नहीं है,इस प्रकार क्षणभर भी कल चैन नहीं पड़ता है। उस समय इतनी जोरों से वे कामनायें सताती या दुखाती है, कि मुझे पल मात्र भी बिश्राम शान्ति नहीं मिलता—क्या कहूँ बहन उस समय जैसा दुख हमें होता है, वह वर्णन करते नहीं बनता है, यानी जब तक वह भोग्य वस्तुयें नहीं

मिलती तब तक पल पल, छिन छिन, काटना मानो हज्जार बर्स हो जाता है, और उस समय तो यही दिल मे होता है, कि वह सब भोग सामिग्रयाँ, कब मिलै कब मिले, औ कब भोगूँ सुखी होऊँ। बस यही चिन्तन वा फिक्र हरदम सवार रहती है, फिर तो हर घड़ी उसी अशान्ति धारा में बहा करती हूँ, अहो क्या कहूँ एक निमिषमात्र भी शान्ति नहीं पाती हूँ—देखो इस प्रकार से हे बहन जो नाना तरह का उधापन करके, इसके बाद जब कोई उपाय से भोग्य पदार्थ मिल भी जाता है या पा जाती हूँ तब तो यही जी चाहता है कि हर तौर से निरन्तर बरसात झड़ी के समान सर्व भोगों को भोगा ही करूँ। पर बड़ा भारी अफशोश यह है, क्या कहूँ बहन जितना ही जितना भोगों को भोगता जाती हूँ उतना ही उतना चित्त की चाहनायें और और चौगुना बढ़ती जाती हैं? और मन तो यही कहता है की सब भोग सामिग्रियों को बटोरि के एक ही बार अन्दर में रख लूँ। पर हे बहन जितना मन कहता

है, उतना भोग्य पदार्थ मिलता भी नहीं, और जो भोग्य भोगती हूँ, उन उन भोगों से तृष्णा बुझने के सिवाय, और और तृष्णा अग्नि बढ़कर प्रचंड ही होती जाती है औ जिन जिन भोगों को भोगते भोगते थकाहट हो जाती है, यानी इन्द्रिया रुक जाती हैं तो भी तो उन उन भोगों को मन और और चाहता ही रहता है। अहो यह नीच मन तो यही चाहता रहता है की ज्यों ज्यों सन्मुख भोग्य पदार्थ आवें त्यों त्यों धका धक यका तार से उन भोगों को भोगा ही करूँ। परंतु इस मन के कहे इतना भोग्य भी नहीं मिलता, क्या करूँ इसी नाते से बिबश होकर दुखी ही रह जाती हूँ? पर भोगो से जी नहीं बुझता है। इस प्रकार से तृष्णा चक्र के बशी होकर सब भोगों को भोगते हुए, जब भोग्य पदार्थों की परिवर्तन होने लगता है। यानी सब भोग्य पदार्थ नाश या खतम होने लगता है। तब उस समय इतना दुसह दुःख होता है, कि मानो प्रान निकल जा रहा है। क्या कहें

बहन, जी तो यही चाहता है की उन भोग्य पदार्थों से कभी भी बिछुड़ना ना हो, पर ना चाहते हुए वो क्षण भंगी नस्वर भोग पदार्थ, ज्यों का त्यों इधर उधर नष्ट भ्रष्ट हो ही जाते हैं, तब उस घरी कामना दुःख से तड़फड़ाते हुए मन को मारि मारि के रहना पड़ता है–देखो बहन नम्रावती उस समय इतना अथाह शूल व भारी कष्ट पीड़ा होता है कि जिसका थाह नहीं, पर क्या हो आखिर में झँख पछताके, मन ही मन मुर्झि मुर्झि रहना पड़ता है। बस इन्ही सब नाना प्रचँड दुखोंमें पड़कर मैं इंन महान भयंकर कष्ट को भोग रही हूँ–इतना सुन कर नम्रावती बोली कि देखिये रानी जी आप का तो यही दशा है, कि जैसे कोई हो, और जलते हुए प्रचंड अग्नि में पैरा पताई झोकते जाय य भभकते हुए भट्ठी में, उसे बुझने के लिए कोई पिट्रौल झोकते जावै तो वह और और प्रबल होने के सिवाय, कभी वह बुझ भी सक्ता है। कभी नहीं। और भी जैसे किसी के अंग अंग खुब अग्नि में

झुलस गया हो औ सारे बदन में असह ज्वाला उठता हो। अब वह अंजान जीव उस तपन ज्वाला बुझाने अर्थ, जलते हुए प्रचंड अग्नि में कूद पड़े तो वह जल कर भस्म होने के वजाय, भला बच भी सक्ता है। कदापि नहीं बच सक्ता है, बल्कि और वह उसी प्रचंड अग्नि उछल उछलकर जल ही मरैगा- बस जैसे यह सब उल्टी क्रिया करने से और और अग्नियाँ धधक या भभक कर, और और वह ज्वाला प्रचंड होती जायँगी, कभी बुझने का नहीं- बस बहन बिचार से देखो तो आप का प्रत्यक्ष गती ऐसे ही है। अरे जरा अपने दिल के अन्दर सोंचो, कि जिन जिन भोगों में सुख मान्ती हो, वह महांन ज्वालामय प्रचंड अगिनी के समान ही दुख रूप है, तो भला उस महां घोर दुःख में सुख कहां से पा सक्ती हो। सिवा दुख ही दुख पाने के सिवाय, इस लिये देखो रानी जो आपका बात तो हमको वैसे मालुम हो रहा है, जैसे कोई पागल मनुष्य हो और वह अपने जलने के लिए

चारों तरफ से अग्नि लगा लिया हो, और अपने वह उस अग्नि के बीच में बैठ कर जलने के लिए तैयार हो, फिर कोई से वह पागल कहै को आओ मेरे ही समान तुमहू इस अग्नि में बैठकर जल मरो। तो उस बौरहा का वचन कोई सुन कर औ मान कर भला जरैगा, कभी नहीं—बस इसी प्रकार से एक तो तुमही इस सुख भोग रूपी अग्नि में पड़कर जल बल रही हो, और नाना बिपत्ति दुःख भोग रही हो। तो क्या अपाने समान वैसे हमको भी करना चाहती हो। तो भला मैं जान बूझकर उस दुख रूप, सुख भोग अग्नि में काहे परूँगी। जब की मुझे—श्री सदगुरु के कृपा से स्वतंत्र शांति सुख प्राप्त है तब मैं आप के समान आफति में क्यों पड़ूँ, कदापि नहीं ? मुझे पड़ने की जरूरी ही क्या है—देखो रानी यहाँ सदगुरु के प्रताप से, बिना यह आराम सुख भोग भोगे ही सर्बस इच्छायें पूर्ण हो रही है, और भी सब प्रकार का चिन्ता का ज्वाला नष्ट भ्रष्ट हो रहा है। क्योंकि

पारखी सदगुरु संतों का सेवा सत्संग, औ दया क्षमा सत्य बिचार आदि के धारण करने का यही अमर फल है—नम्रावती के इंन बचनों को सुन कर रानी का अज्ञान पर्दा हट कर खुल गया, और हाथ जोर कर कहने लगी, की हे बहन नम्रावती आगे जो कुछ भूल या या चूक से खिलाफ दुर-बचन कह आई हूँ उस मेरे मुर्खता पर ध्यान ना करियेगा, क्योंकि मैं भूल व अज्ञान बस आप को कम अकल भी बना दिया है, सो उस मेरे भूलों को छमा कीजीयेगा। धन्य धन्य आप को है, जो ऐसे परम पवित्र बिचार पर ठहर रही हो, अहो मैं तो अज्ञानता से भूल कर सच्चे संत गुरू को भी कुवाक्य कह दिया हूँ। यों तो मेरे समान अप-राधिन इस संसार मे कौन होगा—कोई नहीं। हे बहन नम्रावती अब आप का बचन सुन कर हमें यह ज्ञान हो गया कि भोग सुखों में दुख हीं दुख भरा है। और उसी सुखी भोग रूपी अग्नि में पड़ कर मैं अब तक जलते ही आई हूँ—पर आज

अब से उस दुसह दुख से बचने की कोई उपाय हमे भी बतावो। और दया करके मुझे इस महान घोर संकट से बचावो, तो मेरे ऊपर आत का बड़ा कृपा द्रीष्टी होयगा–रानी के इस बचनों को सुन कर, नम्रावती ने जाना कि इनका शुभ संस्कार उत्तम भाग्य जाग गया है, अब इनको सत मार्गका कुछ रास्ता बता देना, चाहिये, ऐसा सोचकर नम्रावती रानी से कहने लगी, कि हे रानी जी देखो अब आपके कल्यान का बात कहती हूँ। उसे ध्यान देकर सुन कर धारण करो तो अवस्य दुखों से छूट जावोगी। तहाँ प्रथमे आप कुचाली चाल चलने वाले की संगत छोड़ दो, यानी खराब मनुष्यों का संग छोड़ देने ही से सुख शांति होगा, और दूसरे सांचे सदगुरु संत सज्जन भक्तो का सत्संगत करो, और उनके बानी बचनों को श्रधा से सुनो औ धारण करो। तीसरे कुखाद पदार्थ को छोड़ो, जैसे की मछरी मासादि और दारू शराब अन्डा आदि ये सब खाना पीना त्याग दो। इसके बाद अंकुरज

से उत्पन्न हुआ शुद्ध मात्र अमनियाँ से विचार के पावो ? और जल गर्माना, अदहन दैना तथा पीना आदि सब कार्य छानि-छानि करना चाहिये । चौथे सद्ग्रन्थ भी पढ़ा करो, औ सज्जन भक्तों का संग भी किया करो हमारे यहाँ भी आया जाया करो । पंचये अपने दुशमन काम क्रोध आदि और मन इन्द्रियों को जोता, यों तो कुचालों के तरफ मत जाने दो—छठंयेदया छमा सत्य धीर विचारशील संतोष आदि सद्गुणों को धारण कर पूरा हंस बन जावो ? सतयें सार क्या है, असार क्या है इसको भी जानो, और सत्य ग्रहण असत्य का त्यागकरो ? अठयें हर प्रकार के दुरगुणों को त्यागो, सद्गुरु सत्संग भक्ती में लागो और जग भोगों से भागों । इस प्रकार से कहते हुये, नम्रावती समझाया, कि देखो रानी जी धीरे धीरे इन परम पवित्र गुरु विचारों को अपनावो, बस आपका सारा दुःख औ कंटक छूट जायेगी, और खुद स्वतंत्र शांति सुखी हो जावोगी । इस प्रकार का नम्रावती की

बचन सुन कर रानी उसी पर चलने लगी । थोड़ेहि रोज में रानी का भक्ती अंग चमक गया, और उन्हीं के देखी देखा बहुत से नारियाँ भी सुधर गइं, यों तो नित्य नित्य सदगुरु सत्संग और भक्ती बिचार आदि कर २ के अपने अपने जीवन को सुफल किया । इस प्रकार दृष्टांत सुनाते हुए सत्यावती सर्व बहनावों को इशारा दिया, कि देखो बहनो वह रानी जैसे अति बिगाड़ाऊ स्वभाव की रहीं और नम्रावती के सत्संग करने से अपनी बिगड़ी दशा को सुधार लिया, और साथो साथ बहुतेक नारियां भी सुधर गइं, अब उन सबों के घरों में रोज रोज सतसंग बिचार होने लगा, और सुखी स्वतंत्र शांति हुई । बश इसी प्रकार हमारे सर्व बहनावों को चाहिये, कि संत गुरु के शरण होकर उनकी अमृत रूपी भक्ती करके अपना अपना जीवन सुफल बनाना चाहिये ।

देखो बहन ये कैसा बचन है—इस पर गौर करो ।

॥ साखी ॥

नारि नीच भक्ती बिना, कतहुँ न पवैं ठौर ।
कूकर सूकर योनि में, टूक न पावै कौर ॥१॥
ताते भक्ती सब करो, ऊँच नीच नर नारि ।
अमृत सुख पावो तभी, सब दुख मयलत टारि ॥
भक्ती सद्गुरु का किहे, मुक्ती भो मिल जाय ।
जनम २ संकट टरै, जीव अमर पद पाय ॥३॥
याते भक्ती करन में, बहन न करिये देर ।
मानुष तन अनमोल है, चेत जा अबहीं सबेर ॥

ऐसा कह कर फिर एक भजन भक्ती प्रेरक कहने लगी—

॥ गजल ॥

वही सुखिया जगतमें है, जो गुरुको भक्ती करता है ।
नहीं दुखिया वो जगमें है, न फिर भवमेंभि परता है ।टे०।
सकल दुख चाहना डाइन न फिरउसको सतापाती ।
वही सुखिया है जीवों में, जो गुरुकी मुक्ति गहता है ।१।
भक्ति गुरुवर की देखो जगत में दुख दूर करता है ।
जिसे पाये न फिर दुखिया, अमन चैनों से रहता है ।२।
करो गुरु भक्ति बहनावों तरो भव सिंधु सागर से ।
छुटैजगसर्ब झंझटिया, न दुख दल २ में बहता है ।३।

अमर पदमुक्ति भक्ती से चहे लो देख करके ही।
संत शरण गुरुके भक्तिसे जगत भवपार चहता है।४।

इस प्रकार का शब्द सुनाकर सत्यावती सबको समझाती हुई कहती है कि देखो बहने जो कुछ भूल या चूक से हो गई सो हो गई, पर अब आज से अपने उसका सब फिक्र तज कर अपना जीवन सुफल बनावो, और आज से सर्व दोष दुर्गुणों को अपने हृदय से कूरा करकट या कचड़ा कनई रूप जान कर, उसे श्री सदगुरु के पारख ज्ञान बिचार रूपी झाडूसे बुहार बुहारकर सफाईसे खुब चिक्कन चमना चमन कर दो? यों तो काम क्रोधादि कूरा करकटों को अपने अंतः करण से निकाल कर फेक दो, और अपने मन मन्दिर रूपी इस शरीर घरका, खुब अच्छे से शुद्ध सफाई कर डालो, फिर तो ना ना प्रकार के छल, कपट, इर्षा, प्रपंच, राग, द्वेष, डाह, ममता, चुगुली, निन्दा, कटुबचन, गारी, मार, आदि इन दुशमनों को अपने जीव का असली शत्रु जान कर, श्री गुरु पारख ज्ञान रूपी अग्नि से जला

कर भस्म कर दो। यानी गुरु ज्ञान से परख परख के तिसका नाश कर डालो। बस तो इस प्रकार से सर्व कुचाल,कुमार्ग,कूकर्तव्य,कुकर्म,कुभावना,को हटा हटा कर, अपने रमैया राम का ध्यान धरो, अथवा सर्व श्रेष्ठ श्री रामरूप चेतन देव गुरु सन्त राम का भी ध्यान करो जिससे कि अपने चेतन रमईया राम का यथार्थ बोध होवै ? यानी इस शरीर रूप घर में स्वयम चैतन्य पारख रूप ज्ञान, स्वरूप राम बिराज रहा है, तिसको पांच तत्व जड़ से, और सर्व तन मन इन्द्रियों से अलग पहिचान कर उसी पर ठहरो, बस तुम्हारा जनमों जनम का संकट वा कंटक सब चूर धूर होकर दूर हो जायगा एवं इस महा घोर दुखालय संसार से बच कर या छूट कर मुक्त हो रहोगे। इस प्रकार समझाते हुए सत्यावती बोली कि देखो बहनों, धन्य धन्य उन पारख दाता सदगुरु की अमर भक्ती है जो सर्व दुसह दुःख हरण करने वाला है और स्वतंत्र आजाद सुख देने वाला है? एवं तो सदगुरु कि भक्ति ही

जन्म मरण संकट से बचाने वाला है। ऐसो सर्व श्रेष्ठ गुरु भक्ति को अपने अपने हृदय में धारण करो, और इस तन मन के घोर दुःखों से बचो? अब यहाँ जो जो हमारी बहनें श्री सदगुरु सत्संग से विमुख हो, अपने अमृत स्वरूप को नहीं चीन्हती हैं, और नाना तरह के अनुमान कल्पना पाखंड में पड़ गई हैं। उनको यथार्थ बोध न होने का ही कारण है। तासे वे सब चाहे जिस किसी को भी जान मान कर सत्य सत्य कर्तव्य धारण करें, औ असत्य असत्य का त्यागन करें, यों तो शुद्ध संस्कार और पवित्र बुद्धि बनाना चाहिये? सो किसी भी प्रकार से शुद्धाचरण धारण करना परम श्रेष्ठ है। तहाँ कोई भी तरह सत्य मार्ग में चलने के साथ साथ पारखी सदगुरु संत सज्जन भक्तों का आश्रय लेते रहना, औ सांच झूंठ की बिबेक से निर्णय करते रहना? जाते, अपने सच्चे स्वरूप कि बोध होवे, और सर्व भ्रम भूल की जड़ मूल से चूर धूर होवे। तब सांचा सांचा पद जानने में आकर,

झूंठी मन मानिन्दी छूट ही जायगी, और अपने जीव के कल्याण का ठीक ठीक रास्ता भी प्राप्त हो जायगा, यह तो मध्यम बहनों के प्रति है। परन्तु अब हमारे उत्तम ज्ञानवान, बहनों को इस बातों का हरदम ख्याल राखना चाहिये, की हम सब चैतन्यजीव भिन्न२ अपने अपने स्वरूप से अजर, अमर अखँड अविनाशी हैं, तहाँ मनुष्य, पशु, पन्छी, उष्मज, आदि इन चारो खानियां छोड़ कर और कहीं जीवधारी की बाशा नहीं है। यों तो चेतन जीव के परे, और कोई कहीं, काली, डिउहार, कोटही मरी, मशान, भैरव, भवानी, जिंद, चुड़ैल, चन्डी, ईश, ब्रह्म, भूत, प्रेत आदि झुंठा मिथ्या भ्रम मात्र, हैं नहीं--सो सब इस चेतन जीव ही के मन मानिन्दी का मिथ्या अनुमान कल्पना मात्र है। परंतु इस भरम भूल को सदगुरु संत सज्जन से सत्संग कर करके और परख परख त्यागना चाहिये। और सचौटीसे अपने अमर सत्य चेतन पारख स्वरूप में ठहरना चाहिये। बस तो दया छमादि गह कर यही अभ्यास करते करते,

सर्ब दुख द्वन्द सै छूट कर मुक्त हो जावोगी? और सारा झंझट मिट ही जायगा--देखो बहन यह सत्य सारंश वारता आप मुक्त इच्छुक के ही लिये कहे हूँ उसे सुनो--

॥ सत्य सार ॥

जन्मरण छुटने के लिये औरो कहीं युक्ती नहीं।
पारख गुरू चैतन्य जड़ समझे बिना मुक्ती नहीं॥
जड़ देह तत्व ये चार का अनादि ये जड़ रूप हैं।
चैतन्य अगणित हैं अमर पारख स्वयं सारूप हैं॥
चौ तत्व देंह कि बासना नाशे से मुक्ती होयगा।
चौरासि चक्कर जन्मरण फांसे से छुट्टी होयगा॥
इससे हे बहनों इस अमर पारख गुरूपद जानकर।
जल्दी गहो जल्दी गहो सबों से उत्तम मानकर॥

ऐसा कह कर सत्यावती कहने लगी देखों बहनों इस सर्वोपरि सदगुरु के पारख सद मंत्र को अपनावो फिर तो सर्ब दुर्गुण छोड़ कर मुक्त ही हो। इस प्रकार कह कर सत्यावती सर्ब नारियों को जाने का अज्ञा दिया, बाद सर्ब नारियाँ नमस्कार या प्रणाम बन्दगी कर-कर के चल दिया।

॥ सार शिच्छा ॥

इस प्रकार सर्व नर नारियों को श्री सदगुरु सत्संग धर्म भक्ति करना चाहिये तभी ये नर तन सुफल है, नहीं तो धर्म भक्ती से हीन नर-नारि वैसे हैं को जैसे सेमर का फूल देखने में अच्छा सुन्दर और सुभायमान परंतु सुगंधी बिना कुफल ही है। तैसे ही दया दान धर्म भक्ती रूपी सुगंधी बिना यह नर तन कुफल ही है।

॥ जड़ और चैतन्य का ॥

यथार्थ ज्ञान न होने से सब जीव भ्रमिक हो रहे हैं, तिस भर्म अज्ञान का खंडन, और सांचे चैतन्य देव का मंडन, प्रारंभः—

॥ छन्द ॥

चैतन्य जड़ के ज्ञान बिन सब जीव भटका खा रहे।
प्रत्यच्छ पारख ज्ञान बिन भ्रम* ही में लटका जा रहे॥
सत्संग बिन अज्ञान में दिन-दिन ही उल्टा जा रहे।
संत गुरु से हो बिमुख दुख हीमें धंसता जा रहे॥१॥

---

* भरम बढ़ा तिहुँ लोक में, भरम मण्डा सब ठांव।
कहहिं कबीर पुकारि के, तुम बसेउ भरम के गांव॥

बहु कल्पना अनुमान करि बहु देव देबी मानते ।
पत्ते पत्ते इस खुदा दोउ दीन योंहिं बखान्ते ॥
औरों अनेकों पन्थ जग भ्रमि २ बिकल सब हो रहे ।
मन मत्त के पक्छी बने जीवन बिफल सब खो रहे ॥२॥
बहुतक बिषय को सत्य कहि मदमस्त रहते भोगमें ।
करि २ बहुत बेभिचारियाँ रहते हमेशा शोगमें ॥
उन्मत्त हो हाथी के सम मतवाल होकर झूमते ।
बिषयों कि ख्वाहिश में सदा बीबी कदमको चूमते ३
कितने बरहना पीर पैगम्मर औलिया मानकर ।
भेड़ा खशी मुर्गी को नित लेजा उन्हे बलिदानकर ॥
करते हैं काफिर काम को कहते खुदा का हुकुम है ।
जब सब खुदा के नूर हैं तब जीव बधना जुल्म है ४
सब नूर मेरे अंश, ऐसा खुदा का फरमान है ।
उस बचन को मेट तुम जिव क्यों करो कुरबान है ॥
रहम बिन हे भाईयो दोजक कि पावोगे सजा ।
जीवों कि गर्दन रेतते तब तुम भी होवोगे जबा ५
नहिं तो अपाने पीर सम जानो पराई पीर है ।
पर पीर को जाने बिना वह जाहिली काफीर है ॥
जीव पर करिये दया जिन्नत को भी पा जावगे ।
मैं साफ कहता बिन दया नर्कों में जा पछतावगे ६

कितने तो चुड़ैल भूत जिन्द वो मानि मरीमशानको।
बैताल भैरव प्रेत देवी पूजते शैतान को॥
भ्रम चक्र के मक्कर में पड़ि मारैं पराये जान को।
कहते चढ़ाता देव को क्या कहें ये हैवान को ७
कहते हमारे कुलमें सब पुर्खा चढ़ाते आये हैं।
ये सब मेरे कुल पुज्य मैं का नया आज चढ़ाये हैं॥
यन ही मेरे पलिवार को रच्छा हमेशा करत हैं।
पूजा सनातन से चढ़ै हम नया आज न करत हैं ८
झूंठा ये जड़ की आंड़ ले बधते हैं चेतन जीव को।
देवी औ देहरा भ्रम ना वे मागते हैं जीव को॥
ये झूंट मिथ्या बात सब सांचा तो यक चैतन्य है।
दैव कर्ता कल्पना जिव से परे नहिं अन्य है ६
चेतन अमर जाने बिना सबही भरम में चूर हैं।
बिन बिवेक बिचार सब चैतन्य पद से दूर हैं॥
चैतन्य पद को छोड़ कर झूठा बजाते गाल हैं।
कल्पना अनुमान में फिरता सदा बेहाल है १०
बहुदेव देवी मान कर आसक्त होना भूल है।
परतछ बिचारो बात कुछ ये जीव सबका मूल है॥
डिउहार कोटही और काली मान कर जो पूजते।
सत्संग ज्ञान बिचार बिन अज्ञान में ही जूझते ११

करिये जरा बिचार कुछ अपने हृदय के बीच में।
चैतन्य देव को छोड़ कर क्यों जा रहे हो कीच में॥
हे मा बहन हे नारि नर मेरा बचन सुन लीजीये।
आपके मनमें जचै तो सीख उत्तम कीजोये १२
पहिले जरा बीचार लो अच्छा लगे तब्बै करो।
गुरु संत से जाने बिना काहे को धोखा में परो॥
चाउर औ लावा दूध घी को जब चढ़ाते थान पर।
प्रत्यक्ष तो कोई उन्हें खाते न देखा आन कर १३
कुत्ता वो कऊवा आय करके खाय लेते हैं सही।
खा करके लघु शंका करै टट्टो भि कर देवे वहीं॥
देवता कि शक्ती रंच भर वहं पर दिखाता है नहीं।
है अगर देवता कहीं प्रत्यक्ष खाता क्यों नहीं १४
कुत्ता औ कउवा हांकने को शक्ति नहीं उनमें चला।
तो दुख छुड़ाये जायकर घर आपके कैसे भला॥
इस बात को हे नारि नर दिलमें जरा बीचार लो।
सत न्याय दृष्टिसे देखके गुरुज्ञान सच्चा सारलो १५
औरो अजब यक है तमाशा वो सुनो अब ध्यान से।
कोई निमित भेड़ा खशी हाथी वो घोड़ा मानते॥
जो स्वाद जिभ्या की मिलै खर्चा लगे कम दाम है।
जिन्दा चढ़ाते हैं उसे खाकर करैं आराम है १६

पर दाम जिसमें है अधिक अरु मांस भी नहिं खावते ।
उसको सुनो कुम्हार से मिट्टी कि बनवा लावते ॥
भेड़ा खसी को जान से वो मारते हैं लोग सब ।
हाथी घोड़ा मिट्टी किला करते सरासर ढोंग सब १७
इसमें तो देवी देवता कोई न सनमुख आवते ।
हमसे चलांकी क्यों करो ऐसा वो नहीं बतावते ॥
दिलमें समझ लो भाईयो कैसा लिहक्कड़ बात है ।
भूलै भरम है सरबसर सत्यैं खिलक्कड़ तात है १८
ये भर्म अन्हियारी महां सब जक्त जिव हयरान हैं ।
बुद्धी ठिकाने है कहां सब अक्ल के हेवान हैं ॥
ये जीभ चट्टू बिन बिचारे मारते हैं जान से ।
है झूंठ देवी देव पीछे बात के परमान से १९
भैरव भवानी हैं नहीं ये जीभ चट्ट कि स्वाद है ।
भूले हैं अहमक जीव सब शिरपे चढ़ा उनमाद है ॥
सब देव से बढ़ करके चैतन्य ही यक देव हैं ।
उनसे तो बढ़ के भाईयो औरो न जगमें केव है २०
जो संत सच्चे पारखी वै ही बचायेंगे तुम्हें ।
सब भांति उनको पूजीये दुख से छुड़ायेंगे तुम्हें ॥
सब कामना से हैं परे बास्तवमें वे ही राम हैं ।
सब देव से वे श्रेष्ट हैं औ मुक्त के भी धाम हैं २१

जो चाहते सुख शांति को इस लोक या परलोक में ।
तो संत गुरु के हो शरण क्यों जन्म खोते शोक में ॥
छोड़ो सकल पाखँड को कर प्रेम चेतन सांच में ।
बिन बिवेक बिचार के परना चही ना खाँच में २२
सत्संग ज्ञान बिचार प्रथमे संत से कर लीजीये ।
असली नकल सोना वो पीतल की परिच्छा कीजीये ॥
जानै में अच्छा माल सच्चा बूझलो खुब अक्ल में ।
जल्दी करो उस काम को क्यों दौड़ते हो नकल में २३
आमुल्य ये समया मिली धोखे में काहे खोवते ।
ये जालियों के जाल में पड़ करके काहे रोवते ॥
सोखा औ ओझा अउर नाउत झूठ जाल बिछावते ।
अपने तो मरते दुःख में छल करके द्र्ब कमावते २४
अपने अनेको रोग में होकर फिरैं लाचार है ।
पर दाम ठगने के लिये करते फिरैं मक्कार है ॥
हे भाय जन मानो कहा इनसे हटो अब आज से ।
आकर मिलो गुरुदेव बन्दी छोर गरीब निवाज से २५
परत्यच्छ देव में श्रेष्ट हैं अरु राम ईस्वर ब्रह्म हैं ।
भेद सारा खोल कर तोड़े सकल निज भ्रम है ॥
सब भ्रम का खंडन किये मंडन किये निज रूप का ।
जिस सत्य पद का पायकर संशय नहीं भवकूप का २६

हा धन्य हा हा धन्य हे सदगुरु हर्‍यो मम पीर को।
सारा भरम नाशन कियो धनि धन्य आप फकीरको॥
स्थूल सुक्ष्म और कारण औ महा कारण सकल।
केवल्य पांचो देह का सब भेद दर्शाये हो भल २७
कर्म योग उपासना औ ज्ञान औ विज्ञान का।
अज्ञान पंच कलेश त्रिबिधि दुख नष्ट पंच अभिमानका॥
यह सब नशाये उर बसाये शांति पद प्रकाश का।
प्रत्यक्ष पारख में डटा द्वन्दी मिटाये भास का २८
खट २ मिटा द्वे* जालका झट२ स्वतः पारख मिला
खल बल अनादी कालका हट २ गया हुल भुल किला॥
हे जीव उन गुरुदेव के परताप तेरा दुख गया।
निजरूप शांती पायसे तुझको घनेरा सुख भया २९
जो बन्दी खाना से छुड़ाते जीव दाया जान के।
जल्दी चलो तिनके शरण सबों से बढ़कर मानके॥
हमभी तो निजको भूलकर सबमें फंसा दुख भोगिया।
हयरान जनमोसे रहा क्या २ सहा नहि सोगिया३०
तिन जालियों के फँदमें पड़कर बहुत दुखिया हुआ।
गुरुवर नरायण ली बंचा संतशरणयक सुखिया हुआ
गुरु संत आप जबसे मिले परखाये सबही जाल है।
सब जालियोंसे खींचकर कर दीन मालोमाल है॥३१

* खानी बानी। सदगुरु के दया से, नारि शिच्छा अष्टम प्रसंग समाप्त

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

नवम प्रसंग प्रारंभः

मन माया पर विजय, चैतन्य सरकार का। मुक्ति की खोज और अन्तिम स्थिति का,

रहस्य वर्णन

॥ विनय छन्द ॥

हे सदगुरू हे सदगुरू हे सदगुरू हे सदगुरू ॥
संकट हरो संकट हरो इसके लिये बन्दन करूँ ।
पारखी गुरु पारखी गुरु के चरण शिर मैं धरूँ ॥
बन्धन हरो बन्धन हरो इस हेतु से चरणन परूँ ।
सहते अनन्तों दुरदशा जग भोग मे कब से बहे ॥
मन इन्द्रियों के चक्र मे पड़ कर उपाधी सब सहे ।
गणना नहीं जिसका अहे सो सब किये हम दोष हैं ॥
वो सदगुरू करके छमा करते हमेशा पोष हैं ॥१॥

॥ सोरठा ॥

गुरु गुरु सुमिरों जीव, छुटै फन्द जग जाल सब ।
जक्त भार तजि दीव, रहि कर यक रस आप मे ॥
हे गुरु दीना नाथ, धन्य २ महिमा तेरो ॥
कीन्ह्यो मोहिं सनाथ, निज स्थिति दे दास को ।

॥ दोहा ॥

पारख गुरुवर के चरण, बार बार धरि शीश ॥
भरमाज नशि निजमें रहूँ, देव यही बकशीश ॥१॥
खानि बानि भरमत रह्यों, मानि २ दुख धार ।
सो परखाय छुड़ाय गुरु, दीन अछय पद सार ॥२

॥ हरी गीत छन्द ॥

अहों संत गुरु एक अर्जी यही है ॥टेक॥
जगत सिंधु भारी महां है भयावन ।
सकल नर औ नारी जहां हैं फसावन ॥
छुटूँ उनके फांसों से गर्जी यही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१॥
सकल जीव मन बस बिकल हो रहे हैं ।
महा घोर अज्ञान में सो रहे हैं ॥

बिना आप के अवगती हो रही है।
अहो संत गुरु एक अर्जी यही है ॥२॥
उन्हीं सबके घेरे में घेरा पड़ा हूँ।
धधकती हुई अग्नि अन्दर खड़ा हूँ ॥
अब अंग मेरा सर्व जल रहा है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३॥
अहो हाय अब तड़फड़ाता सदा हूँ।
कठिन पाश बन्दों में परवश पड़ा हूँ ॥
अनादी से यह गति मेरी हो रही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४॥
बहुत भूलते इसमें टक्कर भया हूँ।
मनोमय के भूला में चक्कर खया हूँ ॥
हरो शूल मेरा मैं रोकर कही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५॥
मेरे हाल के ऊपर नजर फेर दीजे।
अहो हाय मरता न अब देर कीजे ॥
छुड़ाओ गुरु करिये मर्जी यही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥६॥

अरे हाय अब चैन आता नहीं है ।
कोई दुख हरईया दिखाता नहीं है ॥
इसी से गुरू शरण तेरी गही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥७॥
पड़ा हूँ शरण बीच आके तुम्हारे ।
और कोई रच्छक नही है हमारे ॥
न तो पास बचने कि युक्ती कोई है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥८॥
हुआ हाल बेहाल मेरा है अबतर ।
धरा भार आपार शिर पे है खरबर ॥
कठिन बीच संकट मेरी जिन्दगी है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥९॥
सकल सन्त गुरु से अर्ज यह हमारी ।
पुरा दीजिये बस गर्ज यह हमारी ॥
कटै फन्द खानी औ बानी यही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१०॥
बड़ी भाग्य है आप दर्शन दिये हो ।
मेरा पाप औ ताप सब हर लिये हो ॥

अहो सन्त प्यारे हमारे तुम्हीं हैं।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥११॥
मेरा दोष दुर्गुण हरईया तुम्हीं हो।
रहस हंस का सब भरईया तुम्हीं हो॥
यही जान कर बांह तेरी गही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१२॥
दाया छमा शील संतोष सदगुन।
बीचार औ सत्य सारा रहस गुन॥
सकल साधु संपत्ति दिजै प्रभु यही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१३॥
तन मन जगत भोग सुख चाहे छूटे।
पर आप से नाथ नाता न टूटे॥
प्रभु आप मुझसे भुलावो नहीं है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१४॥
हे नाथ अस प्रेरणा दीजिये कर।
पुर्ण मुक्ति के साज को दीजिये भर॥
सकल सन्त गुण अंग में बस रही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१५॥

आमान आकाम निष्काम कर दो ।
बिबेक बैराग्य गुरु भक्ति भर दो ॥
दिनो दिन मेरा ध्येय कम अब नहीं है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१६॥
निर्मान निर्मद निरहंकार हरदम ।
साहस वो हिम्मत बढ़े अब न हो कम ॥
हटाऊँ कदम मैं पिछाड़ी नहीं है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१७॥
निष्क्रोध निरलोभ निर्मोह होऊँ ।
कठिन जो पड़े दुःख स्थिति न खोऊँ ॥
सदा सर्बदा मागना बस यही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१८॥
उदास निराश निर्चाह जग से ।
रहें आदि से अन्त तक हम निदग से ॥
कभी होऊँ निज मगसे बिचलित नहीं है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥१६॥
धीरज और बीरता को गहूँ मैं ।
सदा होके निर्बाद निज में रहूँ मैं ॥

गुरू आप से हम यही बर चही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२०॥
करिये हे प्रभु श्रेष्ट सद गुन कि रहनी।
पुजापा जगत की नहीं मन में चहनी ॥
नहीं मान मर्याद रंचक चही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२१॥
प्रबल जोश पारख का तन में करा दो।
सकल बासना ज्ञान बल से जरा दो ॥
न भव बीच फिर से दुबारा बही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२२॥
ऐसा शक्ति शाली भरो शक्ति गुरुवर।
जगत ब्रह्म टाली तरों जल्द प्रभुवर ॥
सकल आश बासा सुखाशा दही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२३॥
सकल इन्द्रियां मन तृण सम उखाड़ूँ।
मनसिज मदन शत्रुवों को पछाड़ूँ ॥
धरूँ ना कदम ना टरूँ कब्बहीं है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२४॥

प्रभू आप दानी मैं भिच्छुक बहुत हूँ ।
विनय करके हर बार यह ही कहत हूँ ॥
अहो दान दाता दयामय तुम्हीं हैं ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२५॥
जगत ओर से घोर दुख द्रिष्टि दर्शे ।
परख रूप में नित्य सुख द्रिष्टि सरशे ॥
ये दोउ धार हिय में सदंय बस रही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२६॥
घुमा लक्ष जग से परख मांहि ठहरें ।
लखैं जक्त को तो लखैं दुःख लहरें ॥
प्रबल जोर दुख धार जग दिख रही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२७॥
ये चित मन बसी प्राणियों से घुमाऊँ ।
श्री पारखी सन्त गुरु ध्यान लाऊँ ॥
या निज रूप पारख मनन बस यही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२८॥
ये तन भोग मन भोग जग भोग छोड़ूँ ।
ये मद लोभ अरु क्रोध सब शोग तोड़ूँ ॥

पुरा हो अटल ध्येय मेरा यही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥२६॥
कोई हमको जाने न जाने जगत में।
कोई मुझको माने न माने जगत में ॥
सर्व से निराला परख पद गही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३०॥
नहीं ख्वाहिशी मान जग की बड़ाई।
सदा स्थिति अज अमर में रहाई ॥
अटल मुक्त पारख परख पद गही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३१॥
तजा जक्त का जाल जालिम प्रपंची।
गहा फक्त गुरु ज्ञान जो निष्प्रपंची ॥
हटा भार ज़ग सार ही सार ही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३२॥
नही जाति औ पांति कुल की बड़ाई।
नही धन वैभव की न महिमा बढ़ाई ॥
सरब से पृथक मुक्त चैतन्य ही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३३॥

नहीं देह ज्वानी युवा की चमक है।
नहीं नेह नारी रमण की दमक है॥
ये सब नर्क ज्वाला घृणित सुख नहीं है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है॥३४॥
नहीं रूप सुन्दर छटा है निराला।
सभी जा रहा देखते काल गाला॥
यही जान कर इसका ममता नहीं है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है॥३५॥
नहीं अब हमारा परारा कोई है।
वृथा जग असारा पसारा होई है॥
कोई से न कुछ वास्ता अब रही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है॥३६॥
नहीं चाह धन स्त्री पुत्र का है।
नहीं खल बिदंभ ब्रह्म ही सुत्र का है॥
दोउ भास कल्पित मैं खुद हंस ही हैं।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है॥३७॥
नहीं तीर्थ अरसठ भरमना है प्यारे।
नहीं कोटि तैंतिस करमना हमारे॥

गुरू के कृपा सब लखा भ्रम ही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३८॥
नहीं पिन्ड ब्राह्मंड भोगों कि आशा।
सकल चाहना चित्त से है विनाशा॥
मेरा खाश बाशा परख मे रही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥३९॥
सबँ का जनइया मैं सबसे हूँ न्यारा।
जड़ पांच तत्व से सदा हूँ मैं पारा॥
स्वयं ज्ञान पारख परख मुक्त ही है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४०॥
सकल भास अध्यास भ्रांती ढहा है।
गुरू के कृपा शांती पद गहा है॥
जरा भर भी संशय हृदय में नहीं है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४१॥
पारख गुरू हैं मिले जीव को जो।
परम श्रेष्ट हैं वें स्वयं शीव ही सों॥
नहीं उनके सम जग्त में अब कोई है।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४२॥

जनम जन्म का कल्पना सब बिनाशी ।
गुरू के दया पद मिला जब अनाशी ॥
कमी अब किसी बात की भी नही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४३॥
जिसके लिये वेद सास्त्रों मझाया ।
किये सर्व कुछ पर नहीं हाथ आया ॥
वो पाया श्री पारखी से सही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४४॥
बिकल जिसके बिन युग युगन से रहाना ।
मिला श्रेष्ट सो जब कि निज रूप जाना ॥
स्वयं जीव पारख मैं प्रत्यक्ष ही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४५॥
जिस हित उपासन कर्म कीन्ह नाना ।
सरब कुछ भि करते नहीं सो दिखाना ॥
परख गुरु से पाया सो खुद आज ही है ।
सब कुछ मिला जब कि निज रुप सही है ॥४६॥
बाकी नहीं कुछ है पारख को पाये ।
जिवन्मुक्त खुद आज ही से रहाये ॥

स्वयं शांति ही शांति ही शांति ही है ।
स्वयं शांति ही शांति ही शांति ही है ॥४७॥
गुरु देव से रूप चैतन्य जाना ।
तो मानो बरम ईश से भी भेटाना ॥
परख जीव पाये मिटा द्वन्द ही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४८॥
गुरू पद बिना हम लगाते थे चक्कर ।
जगत ब्रम्ह में पड़ि उठाते थे तक्कर ॥
सो सब छुटा पारखी मिल्त ही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥४९॥
सोई सद गुरू बिन सर्व जिव दुखारी ।
लखो हाय सब कस बने हैं अनारी ॥
दशा देख कर तर्श दिल हो रही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५०॥
बिना पाये पारख जहां रो रहा है ।
वृथा कुछ नहीं जा तहां सो रहा है ॥
कैसी कम अकल पन जगत हो रही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५१॥

मगर अपने कों भूलि चहे जहँ पे टेरें ।
पारख गुरू तजि कहीं जाय हेरें ॥
परख गुरु औ निज बिन तो मुक्ती नहीं है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५२॥
चहै जब कोई मुक्ति चाहै अपाने ।
तो पारख गुरू रूप चैतन्य जाने ॥
तबै अपनी मुक्ती वो पावे सही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५३॥
सन्त शरण कष्ट बहुते उठाया ।
किया जत्न लाखों नहीं मुक्ति पाया ॥
मिले सत्य सद गुरु किये मुक्त ही हैं ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५४॥
अनादी क सारा है झंझट छुटा अब ।
सकल जन्मरण दुःख कंटक टुटा सब ॥
ये जीवन अमर मुक्त मे बित रही है ।
अहो सन्त गुरु एक अर्जी यही है ॥५५॥
ये प्रताप पारख प्रभू की दया है ।
नरायण श्री गुरु की कृपा भया है ॥

अहो धन्य धन पा गये हम अमर ही ।
अमर हीं अमर हम अमर ही अमर ही ॥५६॥

ये तन का धर्म नाश होगा भले रे ।
विराजो गुरू मन के मन्दिर में मेरे ॥
मेरा जोर कर प्रभु से अर्जीं यही है ।
सिवा आप के कोइ से गर्जीं नही है ॥५७॥

पारख गुरू सत्य चैतन्य रूपा ।
सेवे अगर तो नशै अन्ध कूपा ॥
उन्हें आना जाना जगत में नहीं है ।
श्री सन्त गुरु के कृपा फल यही है ॥५८॥

॥ चौपाई ॥

गुरुबिन कौन बचावन हारा, जन्म २ दुख मिला करारा
स्वतः रूपतजिजगमें भूल्यों, तेहितेदुख खानिनमें झूल्यों
रोय २ सबदिवसबितायों, कबहुँशांतिसपन्योंन हिंपायों
छण२विकलरह्योंजगमाहीं, दुखहिदुःखसपन्योंसुखनाहीं
सुख२ससुझिफिरयोंचवखानी, जहँगयोंतहँदुखअगुवानी
अहो अमर मैं मरा विषयमें, युगन२ से परा इसय में

॥ दोहा ॥

पांच विषय चव तत्व के, शब्द रूप रस गंध ।
शर्पश सुख मे लपटि के, भयों हाय मैं अन्ध ॥१॥
इनसे दुख कुछ और नहिं, यही भंवर अति जोर ।
जीवन को बन्धन यही, कठिन बड़ा बर जोर ॥२॥

॥ चौपाई ॥

जगमें सुखकाठौरनदेखा, जहँ लखे तहँदुःखहिं देखा
राजारंकअमीर घरन में, हहरि हहरि दुख सहैं जरनमे
कोई ठांवठिक ठौर नहींहै, देखु देखु दुख सही सही है
भरम भयावनभोगअपारा, महासिंधुजगविषयकि धारा
लहर २ दुखही लहराता, ताहिबीचबहि जिवदुखपाता
दुख धारा में जिव बहता है,पर सुखहेतु वही गहताहै

॥ दोहा ॥

सुख हित भूलत भोगमे, पर दुख होत अपार ।
तेहिते रोवत शोग मे, जिव अति होत लचार ॥३॥
वही धार के बीच में, भार गह्यो मैं भूल ।
यहिते दिन २ था दुखी, पाय शूल अति हूल ॥४॥

॥ चौपाई ॥

काह कहौं अपनी मैं करनी, सुखै हेतु हमहूँ तहं परनी

ताहि धार में धरि२ देंहा. सुखै हेत मैं कियों सनेहा
परसुखकौनकहेदुखभौना,निमिषमात्रसुखशांतिमिलौना
परदुखका तो लगो पहाड़ा, नित २ नया २ दुख बाढ़ा
अहो हाय क्या करौं उपाया,भोगि२ दुख;धाम उठाया
तेहिकेबोचनोचमैं परिकै,सबबिधिदुखीजन्मिमरि करिकै

॥ सोरठा ॥

दुख दुख पाय अपार, असह सहा नहि जाय है ।
तबहुँ न खाय पछार, अस बुद्धी मति मंद भय ॥१॥
अमर अमर निज रूप, सही सही परत्यत्त है ।
ताहि खोय भव कूप, है अनूप भरमयों सही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नाना कर्मसुखनातेकीन्हा, जक्त भारखरवत धरिलीन्हा
सोसुखभोगसोगभयजिवको,जन्मर२ दुखरोगहै जिवको
यह अश्चर्यबने नहिंकहते,दुखै सुःखलखिपुनि२ गहते
जेहिबिचजरतजर्त में आयों, वही २ को फिरअपनायों
अहोमारि मति गईहमारा,मदहिसेनशामदहिफिरधारा
जहर उतारन जहरै खावों,तपनिनिवारनअग्निजलावों

॥ दोहा ॥

मति उल्टी उल्टी सो गति, भई हाल बिपरीत ।
ठीकठौर नहि भय कतहूँ, दुखै दुःख दिन बीत ॥५॥

तेहि कारण निज काह है, राह तजे कहँ सुःख।
सदगुणकी नहि गाह है, ताते लहि बहु दुःख ॥६॥

॥ चौपाई ॥

कष्टजायहितकाटोंतनको, यसबिपरीतअहैनिजमनको।
यहसवकामभयोजसउल्टा, तेहिमिसालसबरच्योंमैंपुल्टा
जहंशिरपटकि२नित रोयों, निजहिहाथपुनिरवहि पोयों
अपनेहाथबनायोंरसरी, सोइरसरीअपनेनगलफंसरी १४
गल फंसिकेदुखभयोमहाहै, अहोहायनहिजायसहा है
पर अब दोष काहि को दीजै, जैसकर्मतैसेफललीजै १५

॥ सोरठा ॥

अहो हाय कस शूल, भूलि २ मैं ली बना।
फिर फिर वही कबूल, घूमि २ करतब करौं ॥
पश्चताप की बात, घात निजै की कर रहा।
चहौं तहैं कुशलात, यह अज्ञान अपार मम ॥४॥

दोहा

निज शक्ता दे २ सदा, काम क्रोध मद पाल।
सो दुशमन होकर मेरा, खींच रहे हैं खाल ॥७॥
है यह भारी भूल की, बात सयाने लोग।
तनै चक्र मे वक्र हैं, कठिन २ दुख भोग ॥८॥

॥ चौपाई ॥

तनमनबचनकालके साथा, दिनन २ से भयों अनाथा
तीनोकेसाथी बरियारा, जन्तुभयावन हैं घरियारा १६
अहोहायतिनसंगमेंपरिके,सांसतिसह्योंजनमिऔमरिके
फिर २ पालि २ उनहींको,वैदुखघालिदीनहमहींको १७
कामक्रोधमद मोह लोभमें, जीवनअर्पण किह्यों छोभमें
छलहंकारकपट अभिमाना, रागद्वेषपरपंच कमाना १८

दोहा

भहर भहर भभकै सदा, अति प्रचंड अज्ञान।
उलटि पुलटि झुलसै सदा, मति अति भया अजान।
दुरस्वभाव दुर्गुण सकल, जीव दुखी कर दीन ॥
खौलत दिन औ रात, जिव दुखी २ है छीन ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

छलबलकपटअनेकन भांती, जीवसंग कीन्हउ उत्पाती
यहसबदुशमनअहैंहमारे, इनहिंराखिहमभयेदुखारे१६
इनकेसहायकदुइ छलिया हैं, रेचपेंचमें अति बलिया हैं
चाहराछसी तृष्णा डांइन, घूमि२हमहींको खांइन २०
खूनचूसिममहाड़चबावैं, सबबिधिभच्छिकेहमहिं नशावैं
यहसबकटक कामरिपु केरा, कावादै चेतनको घेरा २१

जीवक शत्रु मनो है भाई, उहोजीवपरकिहिसिचढ़ाई
मनसंगमेंयकबड़ीलड़ाका, कइउजीवफांकैयकफाका २२
जीव अहार करै दिनराती, पर भर पेट जीव नहिं पाती
यहितेभूंखिभुखरैहिजावै,नित २ मारिजीवहीखाव२३

॥ सोरठा ॥

अटर पटर जेहि चाल, मन माया दुइ सिंह का।
जीवहिं करै बेहाल, जेहिते दुख पावे अमित ॥५॥
अहै निशाचर रूप, धाय धाय जिव खाति है।
डारि देय अन्धकूप, अजब हाय यह काल हो ॥६॥

॥ चौपाई ॥

वहिकरनाम पिचाशिनजानो,मनतेहिअगुवामालिकमानो
यहबिकरालकालसैनासब,सजिधजिकेतयारभयेअब२४
चली शत्रुदल शोर भये हैं, हम चेतनको घेर लिये हैं
अस्त्रसस्त्रसेकरिमोहिघायल,समरबीचहमभयेमरायल२५
हाय २ मैं मरा २ बस, तलमलाय मुर्छाय गिरा अस
यकतोदुखीदखै दुखपायों, दुसरेवहोपिचाशिनआयो२६
कइउजीवकोदेखतै खाइश, पुनिहमरे लग पैर बढ़ाइश
रूप भयंकर दांत निकारे, खांव २ की शब्द उचारे २७

चलीहहासवान्हिहमरे पर, दांतपीशश्री कटकटाय कर
आंखलालकरितिरछैताकी, जानिपरैयकै बेर फाकी २८
जीभनिकारिबायमुहदौरिस, बड़ेजोरमोंहिंपकरि मरौरिस
खालचिचोरि २ चबाइस, सबचबायमांसोपरधाइस२६
अंग २ में दांत गड़ाइस, काढ़ि कलेजा ग्रास उठाइस
लिहिसिखायमोहिंमुर्दाकीन्हेसिमहांअपरबलसंकटदीन्हेसि

दोहा

अहो मित्र उस समय का, हाल कहा नहि जाय।
परे परे संकट कठिन, भोगि भोगि पछिताय ॥११॥
अमर रहे से नहि मरें, मरे से कष्ट अपार।
हाय पिचाशिन जीवको, बहुत खिलाइश मार ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

यहदुखसे अतिदुखी रहेथे, दुशमनदलकहियही रहे थे
खाव २ जिव मारि २ के, अग्निबीचखुबजारि२के ३१
यतनावचनपिचाशिनसुनिके, दौरी भूख २ भुँख धुनिके
तेहिबिचएकउपायबनाइश, महांप्रचन्डअग्निसुलगाइश२
वहिमेंभूजि २ भुलसावै, उलटिपलटिमोहिंखाकबनावै
अहोहायअबहाय २ दुख, भूजि२अबभूजिखायखुब३३

अतिशयदुखपायोंतेहिकाला, बहुतजोरसेभयोंबेहाला
डुहुँकि२रोयोंचिल्लायों,डाकिनमनकुछतरसनआयो३४
हैजगमेंप्रत्यक्षयह नारी, यही भच्छिनी सबहिं बिडारी
नारिरूपसोइमहापिचाशिन,जीवअहारनितैनितखातिन
खाय २ गर्भग्नी जारै, अहो अनादि से जीवन मारै
परतछकालसरिसयह दर्शै, सर्बजीवकोसबंस गर्शै ३६
तबो जीव नहिं त्यागन चाहै, बेरि २ वहि ओर पराहै
अहोभूलयहकठिनकराला, जानि२कै दुशमनपाला ३७
हाय २ में सबदिनगयऊ, जीव काज रंचकनहिं भयऊ
यहिबिधि युगन२से जरतै, गर्भग्नीत्रयतापमेंपरतै ३८
यहिठगियासेबहुतठगायों,युग २ झुलसि २ दुखपायों
मातापिता अरुकुटुम कबीले,बामधाम धनसबकुछमीले
सब सुखमिल्योदुखनकर मूला,झुलसि२ मैंभयों बबूला
तेहि मेनारि रैनि अन्हियारी, मोंहिमोंहिममप्रान निकारी
सोचिसोचिमैं गिराधरनिमे हाय हायदिन बिताजरनिमे
मिलाअपरबलसंकट भारी तलफि सबदिवसगुजारी ४१
तब पछतायमलौंकरमनमे भयोअसहदारुँणदुख तनमे
उठैउलहरिचिन्ताकीऐसी,कौनभांतिदुखबिकटटरैसी४२

यहिप्रकारदुखबढ़अतिजोरे, तेहिबिचसकलकुटुमझकझोरे
नारिफारिमुखग्रासनचाहै, हुमरिहुमरिमोंहिनासनचाहै४३
अन्दरकामक्रोधकोगांसो, सबमिलिघेरिदीन्हमोंहि फांसी
सबनबीचमैं सोहौंकैसे, बाघिनबीच बछरु रह जैसे।४४
डाइनबीचरहेजसबालक, तेहिप्रकारसबमिलिमोंहिघालत
देतदुसह दुख लेत न पारी, हायहाय मैंबहुत दुखारी४५

॥ दोहा ॥

महा अपर्बल दुख कठिन, सहे नहीं सहि जात ।
अहो मित्र मैं क्या कहूँ, कहे नहीं कहि जात ॥१३॥
रोय रोय भोगत रह्यों, खोजत रह्यों सहाय ।
है कोइ दाता जक्त में, दुख से लेय छुड़ाय ॥१४॥

॥ चौपाई ॥

यहि प्रकार बीत्यो कुछकाला । चित्त फाटि मन भयो मलाला
इतने में इक हंस असाला । आय गयो गुरु संत दयाला ॥
शांति शांति की शब्द उचारे । सदगुण रहस हृदय बिच डारे॥
बोधामृत मोंहि तुरत पियाये । सबसे छीन निज शरण लगाये॥
पारख अमृत छिड़कउ जबही । सकल घाव पूरा मम तबहीं ॥
गुरु पारख पारख के बल से । लीन्ह छुड़ाय सहज ही कल से॥

॥ दोहा ॥

अमृत बोध पियाय के, कहिन ठहर हे भ्रात ।
लेव बिजय कर सस्त्र को, दुशमन होंय निपात ॥१५॥

अस कहि सद गुरु देव जी, दीन अटल औजार।
जाहि गहत दुख सब दहत, लहत स्वतः निज द्वार ।१६

॥ चौपाई ॥

दीन्ह एक वैराग्य कृपाना । लिहे ताहि सब विघ्न नशाना ॥
औ विवेक बख्तर पहिनायो । जेहिं पहिने सब वार बचायों ॥
सत्य रूप शिर मौर मौर है । जेहि सन्मुख सबमिटा दौर है ॥
गुरुवर धीर धनुष जब दीन्हा । अरि को जीत विजय पद लीन्हा ॥
दोष दृष्टि तलवार दिये हैं । बैरिन मारि स्वराज लिये हैं ॥
और बीरता बाना धारे । शत्रुनि डपटि डपटि के मारे ॥
सब सद्गुन उन गुरुवर दीना । हर्ष सहित हम तेहि धरि लीना ॥
इत सद गुन सैना अति जोरे । उत सैना दुरगुण नहिं थोरे ॥
दोनों दल सजि धजिके खड़ा है । तन रण क्षेत्र में आय अँड़ा है ॥
इत जिव भूप आप ललकारे । उत मन दूत भि करत पकारे ॥
समर भुमि में भै भिड़ान अब । दोनो दल की भै मिलान अब ॥
भिड़े परस्पर दोनो बीरा । लड़े एक यक करि २ भीरा ॥

॥ दोहा ॥

समर भुमि तन चेत्र मे, भिड़े दोऊ रण बीर।
नहीं पछारा खात कोइ, अहैं दोऊ बड़ धीर ।१८।
इधर जीव जोधा खड़ा, गुरु बल अति बलवान।
धरि ललकारा शत्रु को, बीच समर मैंदान ।१६।

उधर शत्रु सैना प्रबल, टूटि पड़े ततकाल।
दोनों दल का सामना, करते युद्ध मलाल ।२०।

॥ छन्द ॥

दोनो सुभट सैना बड़े, ललकारते निज २ तरफ।
होता कटक घमसान खुब, पीछे न कोई पग धरत ॥
इधर सद् गुण दल बड़े बलवंत पाछे नहिं टरत।
उधर दुर्गुण सैन भी हिम्मत न रंचक कम करत ॥
कभि जीव का होता विजय दुर्गुण सकल भग जावते
इन्द्रि मन का बेग भरि फिर समर मे लग जावते।
ना ना तरह के रेच पेंच से युद्ध दोनों कर रहे ॥
ना ना चपल अवरेब करि अति क्रुद्ध होके लर रहे ॥
मन फौज मे यक काम जोधा जीव को घायल किया
ई दशा लखि बैराग्य बीर ने काम पर धावा किया ॥
काम रिपु को काटि शिर जिव को सुखी करके कहा
हे भूप चेतन हो सजग हम शत्रु दल देंगे ढहा।
इधर मन देखा कि दल मे काम ने मारा परा ॥
हंकार क्रोध वो लोभ मोह ये साथियों को ले भिरा।
इस तरह मन फौज सब जिव फौजपर धावा किये ॥
चारो तरफ लै लै कटक जिव भूप तन घावा किये।
यह देख कर चैतन्य भूपति गुरू पारख तेगसे ॥

अक्रोध निरहंकार वो निर्लोभ वो निर्मोह से।
इन सब सुभट जोधा को लै कीन्हा कैद दल शत्रु का।
सब पर बिजय प्राप्ती किये धनि धन्य पारखसस्त्र का।
धन्य सद्गुरु के दया दलि मलि गये शत्रू सभी॥
अब हटि गये दुशमन सकल भय है जरा नारंच भी
अब हटि गये दुशमन सकल भय है जरा नारंच भी
मन इन्द्रियां सब थिर भईं तेहि मिटगया दुरचाल है
गुरुवर नरायण के कृपा पाया बिजय हर हाल हैं॥

॥ सोरठा ॥

कैद भया मन बीर, साथी सब तेहिके मरे।
धन्य गुरू पद थीर, बिजय हुआ चैतन्य का॥७॥
हुआ अशात्रु स्वरूप, सत्रु रहित स्वातंत्र सुख।
पारख अचल अनूप, जीव भूप बीराजता॥८॥

॥ दोहा ॥

गुरु पारख परताप से, हुआ शत्रु का नाश।
और मिटा कंटक कठिन, जन्म मरण का त्राश।१७
सद गुन सैना आय कर, जीव भूप दरबार।
रच्छा में तल्लीन हैं, लगत न आंच बयार॥१२॥

॥ चौपाई ॥

लइकै बल पारख सदगुण की । नाशी फौज सकल दुरगुण की ॥
जब अपनायों सदगुन सैना । समर बीच कोइ शत्रु अड़ैना ॥

चैतन्य सरकार का मन माया पर विजय प्राप्ती होकर, मुक्ति की साज और अन्तिमी हाल वर्णन

॥ सोरठा ॥

धीर बीर गम्भीर, अचल सिंहासन चलनहीं ।
अन्तिम काम अखीर, मिला मुक्ति पद साज अब ६
सब सदगुण से पूर, गहै हंस की चाल सब ।
सर्व बासना दूर, करिके राजे आपमें ॥१०॥
तब पदमिलै अमोल, मोल न जिसका जक्त में ।
पारख स्वतः अडोल, मिलै अटल सम्राज निज ११
तब क्या कहना बात, जहाँ परख पद प्राप्ती ।
वहाँ दिवस नहि रात, आप आप खुद आप है १२
फिर नहिं तेहि को आव, होय मनोमय सृष्टि मे ।
मिटा अनादी घाव, राव रंक जेहि सम नहीं ।१३।
तेहि पटतर नहि कोय, होय सकत जग ब्रह्म तक ।
खानि बानि मल खोय, धोय भया निर्मल बिमल १४

जीव भया निर्बन्ध, फन्द नहीं फिर ताहि को ।
जक्त ब्रह्म नहिं गंध, भय स्वच्छन्द सब द्वन्दसे १५
पाय गयो निज राज, जिसे पाय कमती नहीं ।
स्वयं स्वतंत्र बिराज, सकल आपदा नष्ट भै १६॥
गुरू कृपा वह जीव, शीव स्वयं परत्यक्ष हैं।
ताहि नही कोइ पीव, इष्ट देव गुरु सन्त हो १७॥

॥ दोहा ॥

दया क्षमा संतोष सत, धीरज शील बिचार ।
अरु बिबेक बैराग पुनि, गुरू भक्ति हियधार १३॥
समता नमता दीनता, सजग बीरता धारि ।
गहि अक्रोध निष्कामता, काम क्रोध खल मारि १४॥
है अमान निर्मान बनि, तजै सकल दुर चाल ।
अहँकार अभिमान हनि, धरै शाँति उर माल १५॥
चाल हंस की सब गहै, बहै न तन मन धार ।
लीन रहै गुरु पद महैं, सहज होय भव पार १६॥
तनमन इन्द्री मन बशो, जीव सकल जग कोय ।
फन्द न आवै इन कभी, सदैं पृथक तजि होय १७॥

॥ छन्द ॥

इस तरह सब धारि सदगुण, दुर्गड़ों को छोड़कर ।
इन्द्रियां मन रिपु सकल कों, एक दम मुख फोड़कर
एक रस करि संगठन, सदगुण गुणन मे राजिये
हे जीव प्यारे हर वखत, अब मुक्त सेज बिराजिये
सबचलबिचलतजि,होअचलअबिचलसदानिजमेंरहो
सब अरिदलोंकोदलि, अदलगहिके अलगसबसेरहो
अब इस तरह ता उम्र तक, हे मित्र जीवन राखिये
मुक्ती अमर अमृत कि ब्यंजन, हर हमेशा चाखिये
फिर कभी दुखिया न प्यारे, होवगे कोइ काल में
अब हो रहो सुखिया, अपाने स्थिती के चाल में
फिर क्या कमी किस बात की, जब सदगुणोंसे पूर हैं
मन इन्द्रियां जब थीर की, निज पदमें आप जरूर हैं
अतुलित बली निज सैनदल, जो धीर शांति बिचार हैं
यहि रच्छि निश दिन आप, अपने रूपसे निरधार हैं
जब छुट गयाजग लच्छ, तबतो स्वच्छ खुद आपी रहें
हरदम अमर हरदम अमर, अब मुक्त में आपी रहें

॥ चौपाई ॥

सदगुण सस्त्र सरा सर फेर्‍यों । दुरगुण सकल परख बल घेर्‍यों ॥
मन इन्द्री हनि दीन नशाई । शान्ति स्वयम पद लीन बसाई ॥
जब से बांह गहे सदगुन सब । तबसे नाश भये दुरगुन सब ॥
भगे सकल रिपु पता न लागे । चेतन भूप लड़्यो बढ़ि आगे ॥
छिन्न भिन्न करि अरि नहिं छोड़ौं । एक एक को गहि शिर फोड़ौं॥
दुशमन बीन बीन के मार्‍यों । मन को पकरि कैद में डार्‍यों ॥
सब शत्रुन की हार भयो है । सुखाध्यास रिपु मार गयो है ॥
बिजय बिजय अब बिजय हुआ है । चेतन की अब बिजय हुआ है ॥
शान्ति स्वयं सरकार भये हैं । नित्य नित्य सुख नये नये हैं ॥
घोर अविद्या हटी हटी अब । माया पर्दा फटी फटी सब ॥
श्री गुरु देव दया परतापै । शहन्शाह जिव पारख आपै ॥
अब निर्शङ्क नहिं संक काल की । कनक कामिनी वंक नाल की ॥
यह सब नश्यो बस्यो पद पारख । कमी काह जहँ साँच यथार्थ ॥
अब तो अदल अदल दल दल से । श्री गुरुदेव परख के बल से ॥
अब स्वतंत्र स्वराज राज है । जिवन्मुक्ति पद साज साज है ॥
शत्रु हटे निज राज मिला है । दुशमन की टुटि गया किला है ॥
बिजय निशान कि डंका बाजा । तख्त बिराज्यो चेतन राजा ॥
पारख पलँग भूप जिव सोवै । मुक्त प्रत्यक्ष मृत्यु जन खोवै ॥
अमृत अमर राज जहँ दरशे । जग कर दुःख लेश नहिं परशे ॥
सुख स्वराज्य में जीव विराजै । अमर पाय अमरै में छाजै ॥

सो सुख शान्ति जाय नहिं बरणा। शत्रु न त्रास जन्म नहि मरणा॥
हार हार अब हार हुआ है। दुशमन दलका हार* हुआ है॥
दुख कंटक सब नाशि गया है। अमर अकंटक राज भया है॥
सब मन्त्रों में परख मन्त्र है। सब जन्त्रों में परख जन्त्र है॥
जंत्र मंत्र सब एक परख है। परख परख गहि भव न परत हैं॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा। नशे सकल पारख परतापा॥
पद अनाशि अब मिला अजर है। अमर अमर बस अमर अमर हैं॥
चैतन की जयकार हुआ है। सुखी सुखी दरबार हुआ है॥
अब अघाट आगर्ज गर्ज से। अब केहु से नहिं माग अर्ज से॥
जब अखँड पद मिला आज है। भिच्छुक पन की कौन काज है॥

---

* ॥ बिरत्व—गजल ॥

गुरू पारख कि बल लेके, शत्रु सैन हरायेंगे।
कैद दुशमन कि दल करके, समर विजई कहायेंगे।टेक।
न रक्खैंगे कदम पीछे कभी रण क्षेत्र अन्दर से।
रिपू दल को हतन करके, बिजय डँका बजायेंगे।१।
सुभट रण बांकुरा योधा सर्व सद्गुन परख मग का।
तिन्हीं फौजों के जोरों से, सकल दुशमन हटायेंगे।२।
कठिन से कठिन ले मुर्चा लड़ैंगे शत्रु से अड़ कर।
फतें संग्राम में करके, प्रबल शत्रू नशायेंगे।३।
परख चतन्य शक्ती, से मनोमय नाश कर करके।
प्रबल बराग्य तेगा, से रिपू दल को गिरायेंगे।४।

॥ दोहा ॥

शहन्शाह पद आज है, कमी काहु की नाहिं।
जहाँ परख अखंड धन, शांति नितै सरसाहिं १३
जो धन तीनों लोक नहिं, पारख मिला अमोल।
सदां एकरस मुक्त खुद, कबहुँ न डामा डोल १४

॥ सोरठा ॥

सुख स्वतंत्र औ शांति, जहाँ न रंचक लेश दुख।
जनम २ की भ्रांति, परख मंत्र से ढहि गयो १८
अमर अमर निज रूप, जाहि पाय नहिं पावना।
नहीं फन्द भव कूप, शांति सुखी निज रूपमें १६

॥ चौपाई ॥

शांति शांति सरसै दिन राती। निर्मल कांति स्वरूप सुहाती ॥
अब कुछ करन धरन को नाहीं। निज स्वरूप में मुक्त रहाहीं ॥

हरैला और कादर पन को तजि हिम्मत न छोड़ेंगे।
करोंड़ो बिघ्न बाधा पर, सजग साहस बढ़ायेंगे।५।
मेरे शिर मौर सदगुरु देव बल धारी सहायक हैं।
विजय अरि से न फिर क्यों हो जो निज रहनी बनायेंगे॥
यही संत शरण का प्रण है कि दुशमन को दमन करके।
जन्म जन्मों क झगड़ा खत्म कर शांती रहायेंगे।७।

लेन देन तजना नहिं गहना । परख परख पारख पर रहना ॥
अटल थीर पद टलै न कबहूँ । मुक्त मुक्त बस मुक्त अमर हूँ ॥
अस रज धानि बिराजत राजा । लेश मात्र नहि दुख कर साजा ॥
राज तिलक शोभा मस्तक पर । चेतन सोहत परख तख्त पर ॥
अहो मिला ऐसा पद जबकी । फिर क्या कमी पूछना तबकी ॥
जन्न मरण दुख छूट गया है । पुर्ण पुर्ण निज काज भया है ॥
नाश्यो जनम जनम की दुरघट । गुरु के कृपा मुक्त हूँ परगट ॥
नशि गर्भाग्नि नश्यो त्रय तापा । पारख गुरुवर के परतापा ॥
जो पद मिला रहा नहिं कबहीं । श्री गुरु कृपा मिला सो अजहीं ॥
श्री गुरु देव नरायण के बल । संत शरण भव पार भयो भल ॥
धनि २ गुरुवर धन्य धन्य हो । तुम समान मोहि नहीं अन्य हो ॥
अहो धन्य गुरु चरण कि सेवा । जेहि को सेय अमृत पद लेवा ॥
जनम युगन मैं भ्रमि पुकारा । दैव देव निर्कारा सकारा ॥
यह सब करत न पायों युक्ती । देखि परा परत्यक्ष न मुक्ती ॥
गुरुवर मिले दिखाये खाशी । चेतन मुक्त परख प्रकाशी ॥
तेहि ते ईस राम गुरु मेरे । हैं प्रत्यक्ष परघट गुण तेरे ॥
ओं ब्रह्म गुरु देव को जानों । हौ प्रत्यक्ष बहु काव बखानों ॥
गुरु पटतर में और न दूजा । ज्ञान ध्यान गुरुवर की पूजा ॥
तीन लोक में मिला नहीं जो । परख गुरू से मिला सही सो ॥
गुरु समान कोइ और नहीं है । ईस ब्रह्म बतकही कही है ।
गुरु कृपा अब मुक्ति मिला है । युगन युगन की द्वन्द जला है ॥
जाग भाग जग नाश भये से । परख अमर पद पाय गये से ॥

॥ दोहा ॥

मुक्ति हेतु लाखो जतन, किह्यों करोंड़ो भांति।
जग्त ब्रह्म तल्लास की,पर न नश्यो जिव भ्रांति१५
कोटि कोटि कोटानि बर, भयों जग्त से ब्रह्म।
प्रबल परख प्रकाश बिन,पर न मिटा मम भ्रम १६

॥ सोरठा ॥

सह्यों सकल बिाध शोक, जगमें नाना कर्म करि।
गया न निज को धोक, बिनगुरुपारख ज्ञानके २०
भरम महा अन्हेर, पर जब पारख प्राप्त; भय।
तबहीं जान सबेर, बिन तेहि दीन दरिद्र सब २१

॥ चौपाई ॥

ठौर ठौर भरमै में अरुझा। बिन गुरु कृपा न सत मग सुरझा॥
भूल भुलकर भूलि गया मैं। खानि बानि में भूलि भया मैं॥
पूजा पाठ नेम आचारा। और किह्यों मैं बिबिधि प्रकारा॥
जग में है सिधान्त अनेका। किह्यों सकल राख्यों नहिं टेका॥
थकि थकि गयँउ कर्म सब करिके। मिटा न ताप जन्यों बरुपरिके॥
छवो शास्त्र चौ बेद मझारन्य। दशो आठ नौ सब पढ़ि डारन्य॥
कथा भागवत भाँतिन भाँती। पूजा पाठ किहन दिन राती॥
सूर्य बर्त चन्द्रायंण नाना। ब्रह्म बिष्णु शिव यज्ञहिं ठाना॥

औरो भाँति भाँति पवहारा । संयम नियम विविधि करिडारा ॥
सब विधान करि तेहि संयुक्ता । बहुत भाँति कुल करि करि भुक्ता ॥
औरों बहुत साधना कीन्हे । सकल छोड़ि यक ब्रह्म को चीन्हे ॥
जग से ब्रह्म ब्रह्म से पुनि जग । अमर होय भरमचों यहि दुइ मग ॥
थके सकल करि २ कर्तव्या । मिटे नहीं मनके मनतव्या ॥
यह सब करत करत दिन बीता । पर कबहूँ नहिं भयों सुभीता ॥
तनत तनत यह ही सब ताना । पर अकाज मे दिनै सिराना ॥
जीव क काज भयो नहिं रंचक । वृथा भयो सवही परपंचक ॥
जिवन बितायों यहि कलेश से । भेंट भया नहिं मुक्ति देश से ॥
यह सब करि २ जो नहिं पाये । सो गुरुवर प्रत्यक्ष दिखाये ॥
दीन परख अम्मर गुरुदेवा । कीन जनम मृत्यु संशय छेवा ॥
युगन युगन जो मिला न भाई । पारख प्रभु परत्यक्ष दिखाई ॥
यहि से गुरुवर सम ना कोई । देव दनुज नर पति जो होई ॥
काल जाल से लीन बचाई । गुरु सम कौन जक्त मे भाई ॥
गुरु पारख तुलना नहिं जग में । जीव उबारण तारण जग में ॥
जन्म जन्म संशयन जला है । गुरु समान कहो कौन भला है ॥

स्वतन्त्र हमारा स्वरूप ॥ चौपाई ॥

निर्मल विमल अमल मल २ से । अटल अखँड अचल चंचल से ॥
परम पवित्र अकाम काम से । निदग २ निर्मान मान से ॥
खुद स्वतंत्र अरु शांति रूप है । परख आप चैतन्य भूप है ॥
मुक्त स्वतः चेतन अबिनाशी । अदल अचाह खाश परकासी ॥

परम प्रकाश खाश चेतन है। स्वयं स्वधाम न दुख लेशन है॥
पारख रूप आपही आपा। परखि परखि पारख ही जापा॥
अंस रहित निर्अंश हंस है। ब्रह्म भास सब ध्यास ध्वंस है॥
परखि परखि द्वै भास वहावै। मुक्त भये जड़ देश न आवै॥
चेतन बिना भर्म सब झूँठे। जक्त ब्रह्म कहि २ पुनि घूँटे॥
स्वबस जीव परबस रहता है। जक्त ब्रह्म आपै बनता है॥
चेतन जीव भुलावा कैसे। निजै छोड़ि खुद जाल फँसैसे॥
पर यह बात परख बिन को है। पारख प्राप्त नहीं जिनको है॥
वै सब जीव भुलाय रहइया। परख बिना कहुँ ठौर न पइया॥
भूलि २ खानी बानी में। सहत दुःख रहि परेशानी में॥
आप छोड़ि ढूढ़त है औरे। यहि विधि जन्म २ से दौरे॥
पर दौरब नहि मिटत मिटाये। खानि बानि युगयुगन पिटाये॥
हेत मिटन पारख गुरु संगा। शरण आय नाशे सब दंगा॥
मिटै दंग निज अंग को पावै। स्वयं पारखी हंस कहवै॥
तब तेहि कहँ आन नहिं जाना। जसै रूप तस खुदै रहाना॥
फिर नहि भीर पड़े जड़ केरा। आप आप में सदैं बसेरा॥

॥ दोहा ॥

धन्य धन्य गुरुदेव को, परखायो सब जाल।
खानि बानि सब कल्पना, टारिके कीन निहाल १७
धरि चर्णन में माथ को, नाथ विन्य यह मोर।
जक्त ब्रह्म अध्यास को, परख दृष्टि दे तोर १८

॥ सोरठा ॥

नमो नमो गुरु राय, काय वचन मनसे नमा ।
परों चरण में धाय,जाय कष्ट कलिमल सकल २२
धन्य कबीर दयाल, परख प्रगट जीवन चितय ।
कीन अनूपम ख्याल, दाता है को आप सम २३

चौपाई

धनि कबीर पारख प्रकाश पद । जाहि गहे आजाद जाद पद ॥
जहाँ कमी का नाम नहीं है । अमी अमी पद धाम सही है ॥
पारख जहाँ कहाँ भव बन्धन । सूरज जहाँ तहाँ नहिं अन्धन ॥
पारख प्रबल प्रकाश खाश है । काल फाँस सब गाँस नाश है ॥
जिवन्मुक्ति परत्यक्ष पाश है । पाँच तत्व जड़ कौन आश ॥
प्रारब्ध तक देह वास है । पूर भये सो खुदै नाश है ॥
अमर परख चैतन्य देश है । आप आप तहँ आप शेष है ॥
वहाँ न जड़ तम रंच लेश है । जहाँ नहीं दुख पंच कलेश है ॥
खान पान ना जाग सोवन है । जड़ उपाधिका काज कवन है ॥
बोल चाल परचार नहीं है । इन्द्रिन का संचार नहीं है ॥
कहन सुनन आवन नहिं जावन । देखब सुँघब पर्श नहिं खावन ॥
देश विदेश न अपन गैर है । राग न रोष न क्रोध वैर है ॥
जीव जन्तु भय रहित अभय है । निभ्रांति निर्द्वन्द सदंय है ॥
मन इन्द्री की द्वन्द कहाँ है । निज स्वरूप परत्यक्ष जहाँ है ॥
अचल रूप चल विचल से न्यारा । ऐसा पारख देश हमारा ॥

पाँच तत्व भौतिक से पारा । खानि बानि जहँतक बिस्तारा ।
पिण्ड सकल सकलो ब्रह्मण्डा । विषयानन्द और ब्रह्मनन्दा ॥
इन से भिन्न परख परकाशी । चेतन स्वयं स्वतः सुखराशी ॥
पारख परख अनूप रूप है । आप आप खुद स्वयं भूप है ॥
भय नहिं गर्भ योनि संकट का । निज स्वरूपलखि मिटसबखटका
बस स्वतन्त्र खुद हुआ आज मैं । परख मंत्र गहि किया काज मैं
जस स्वरूप तस जानि मिला है । मुक्ति राज सुखसाजि खिला है

॥ दोहा ॥

ऐसो पारख देश मम, जड़ देशन से पार ।
चेतन दृष्टा आप हूँ, मुक्तस्वतः निरधार ॥ १६ ॥
कहा हाल बीदेह का, देह रहित यहि हाल ।
परख द्रिष्टि पारख परखि, परख२ यहि चाल ॥२०॥
थीर हो निज रूप मे खुद मुक्त ही प्रत्यच्छ है ।
कहना मेरा हे भाईयों अन्तिम यही बस लच्छ है ॥

॥ हरी गीत छन्द ॥

कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ॥टेक॥
माता नहीं पीता नहीं नहिं कोई बन्धू यार है ।
नाता वो गोता कुल नहीं नहिं कोई कन्धू भार ॥
सुत पुत्र नारी भी नहीं नहिं कोइ सगा ससुरारि है
हित मित्र कारी भी नहीं नहिं कोइ जगा नर नारि हैं

बादसा राजा प्रजा निर्धन धनी न अमीर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ॥१॥
खेत बारी महल अटारी जगह जिमदारी नहीं।
डिप्टी कलट्टर जज अरु वहदा भि कोइ भारी नहीं ॥
मत पन्थ नाना भेष नहिं गृह में भि घरबारी नहीं
ना घर क हूँ ना बन क हूँ मुलजिम भि सरकारी नहीं।
यह देश के वह देश के नहिं कोई दार जगीर हूँ ॥
कोई न साथी है मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ॥२॥
ब्राम्हण क्षत्री बैस शुद्रों मे भी मैं कोई नहीं।
मुस्लिम ईसाई जैन हिन्दू आदि भी कोई नहीं ॥
पशु आदि पन्छी जानवर कृमि कीट मैं होई नहीं।
औरो जिते जग मान्यवर तिसमे के मैं कोई नहीं ॥
मानुष्य पशु अन्डज औ उष्मज आदिसे मैं तीर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ॥३॥
योगी कबीस्वर हूँ नहीं ज्ञानी औ बिज्ञानी नहीं।
रिषिओ मुनीस्वर हूँ नहीं तपसी और ध्यानी नहीं ॥
पृथवी औ जलअग्नी नहीं औरो भि मैं पानी नहीं।
हंकार कामऔ क्रोध नहिं मदभी औ अभिमानी नहीं
देह के सबंन्ध तक मानो मैं एक फकीर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ॥४॥

फक्कीर के भी चिन्ह मे कोई नही मैं जानलो।
कन्ठी तिलक अचला नही ऐसा हमें पहिचानलो॥
लुँचित न मुन्डित ना जटा कौपीन अलफी भी नही
सब तरह के भेष में रोटी लगोंटी भी नहीं॥
बैरागी संन्यासी उदासी ना मैं औघड़ पीर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ॥५॥
दाया छमा संतोष नहि ना ज्ञान ना बैराग मैं।
सत शील आदि बिचार नहिं राग ना हूँ त्याग मैं॥
यह सर्व सद्गुण रूप मे कोई नही मैं जानिये।
इन सर्व का हूँ जानुका ये हूँ नहीं मैं मानिये॥
दुरगुण नहीं सद्गुण नहीं दोनों क द्रष्टा वीर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ॥६॥
स्वर्ग को नहिं चाहता विष्णू पुरी चाहूँ नहीं।
बैकुण्ठ भी नहि चाहता औ शिव पुरी चाहूँ नहीं॥
इन्द्र पद नहि चाहता ना चार मुक्ती चाहता।
ब्रम्ह लोक में ब्रम्ह भी बन कर न जाना चाहता॥
सरब जग जो चाहते वो मैं न चहता रींर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ॥७॥
सुर भी नहीं नर भी नहीं राछछ न पापी कंस हूँ।
पिन्ड ना ब्राम्हंड ना ना ईश ही ना अंश हूँ॥

*राई रत्ती भर भी नहीं।

ना जक्त हूँ ना ब्रम्ह हूँ सब भ्रम कू मैं पारखी ।
तत्वमसी कर्म उपासना सट क्रम कू मैं पारखी ॥
सबको परखता जान्ता औ त्यागता निज थीर हूँ ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ॥८॥
इस देंह के भी बीच में मैं देह हो सक्ता नहीं ।
ना कान हूँ ना आंख हूँ ना जीभ मुख बक्ता नहीं ॥
ना हाथ हूँ ना पाव हूँ ना नाक हूँ ना दांत हूँ ।
दश इन्द्रि प्रकृत्ती नहीं ना आवता ना जात हूँ ॥
काला व गोरा सावरा दुबला औ पतला भी नहीं ।
जागृत स्वपन सुषोप्ति नहि दुख सुख में हूँ पकड़ा नहीं ।९।
है नाम ना कोई मेरा ना ग्राम कोई जानिये ।
सब नाम ग्रामो से पृथक पारख स्वयं परमानिये ॥
सब को परख कर जान्ता औ जान करके त्यागता ।
परखे से पारख मात्र हूँ पारख ही पारख राखता ॥
जड़ तत्व के दरम्यान जो सबको परखि के थीर हूँ ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद स्वतः अस्थीर हूँ ।१०।
देंह के प्रारब्ध तक परखन प्रखाना कार है ।
चैतन्य जड़ अलगाय कर थिर हूँ यही निज प्यार है ॥
जड़ जड़ लखूँ पिरथक रहूँ यह ही रहा ब्योहार है ।
प्रारब्ध होते पूर सब हो जाय झंझट छार है ॥

तब आप आप में थिर रहूँ पारख स्वयं आभीर हूँ।
कोई नहीं साथी मेरा मैं खुद् स्वतः अस्थीर हूँ ।११।

शांति मुक्त रूप ही सरकार स्वयं जीव है—

विनय ॥ सोरठा ॥

सन्त गुरू तब नाम, गुण अथाह जाहीर जग।
जक्त मध्य सरनाम, जीवनके दुख हर तुम्ही ॥२४॥
प्रबल शक्ति परकाश,पारख देते जीव को ।
जनम मरण सब त्राश, हरत शीघ्रता शिघ्र ही ॥२५॥
एक महां मालीन, दीन हीन मैं जीव था ।
देखि कृपा प्रभु कीन, तुरत लगायो चरण में ॥२६॥
धन्य नरायण देव, काढ़ि लियो मोहिं बूड़ते ।
ज्ञान यान से खेव, दियो मुक्ति पथ परख का ॥२७॥
और सहायक संत, दीन सहारा दया करि ।
तिनके चरण नमंत,बार बार कर जोरि के ॥२८॥
दिह्यो मुक्ति का साज, आज काज पूरण भया।
बन्दी छोर निवाज,तन मन अर्पत दास यह ॥२९॥
संत शरण के और, नहीं कोई तजि आपको ।
थक्यों देखि करिगौर,युगन युगन युगमे बिचरि॥३०॥

जो न मिला कोइ काल, अथक परिश्रम करि थके।
तौन परख धन माल, सहज दियो गुरु संत हो॥३१॥
पूर होय नहिं कर्ज, गर्ज मिटायो जक्त से।
बेर बेर मम अर्ज, कर्जदार होकर कहूँ॥३२॥
चरण गुलामी देव, शरण बीच में राखि के।
अटल टलै नहिं धेव, यही अन्तिमी है बिनय॥३३॥

॥ छन्द ॥

गुरु संतका उपकार कहना क्या न जिसका अंत हो।
जगधार अगम अपार तेहि से पार करते संत हो॥
पुनि मनो मय बेग दलते देत करि स्वातंत्र हैं।
फिर जीव गर्भ न होय यहि हित देत पारख मंत्र हैं॥
गुरु संत का उपकार कहना शक्ति के बाहर मेरे।
प्रत्यक्ष मुक्ति देत कर इस हेतु चरणन मे तेरे॥
जग जहर दुख का लहर तिससे बचाते आप हो।
पारख स्वदृष्टी खास मुक्ती को जंचाते आप हो॥
मानस शैनिको को पछारन में सुभट वर बीर हो।
काया कसर माया असर सो हनन में रणधीर हो॥
संत शरण पड़िके चरण करता बिनय धरि माथ हो।
तिसको उबारो दे सहारो आप मेरे नाथ हो॥

कर जोंर कर, सद्गुरु श्री पारखी गुरु सन्तों की
॥ आरती ॥
श्री गुरु सन्त हमारे, जय श्री गुरु सन्त हमारे ॥टे॥
श्री गुरु सन्त हमारे, जीवन हितकारे।
प्रभु जीवन हितकारे। ज्ञान अभय है तेरो।
ज्ञान अभय है तेरो, सरबस दुख टारे ॥श्री ॥१॥
खानि बानिके बीच जीवदुखी, सारेगुरुजीव दुखीसारे
तेहि से आप उबारक, तेहि से आप उबारक।
ज्ञान यान तारे ॥ श्री गुरु सन्त० ॥ २ ॥
काम क्रोध परचरान्ड जोर शत्रू अति भारे।
गुरु शत्रू अति भारे। तिन से आप बचावत ॥
तिन से आप बचावत पारख परखारे ॥ श्री ॥३॥
सत्य शील संतोष छमा, बीचार दया धारे।
गुरू बीचार दया धारे, हंस रहनि नित रहते।
हंस रहनि नित रहते, निर्मल मल जारे ॥ श्री०॥४॥
निर्भ्रांति आकाटय अमर अबिचल निरधारे।
गुरु अबिचल निरधारे, धनि२ धन्य दयालू।
धनि२ धन्य दयालू, हो सबसे पारे ॥श्री०॥५॥

पद कबीर आबाध्य बाध्य से, अहै अजर अविकारे ।
गुरू अजर अविकारे, सो सब आप में छाजत ।
सो सब आप में छाजत, भाजत भय सारे ॥श्री०॥६
है प्रसिद्ध पद पारख तारक टारत दुख सारे ।
गुरु टारत दुख सारे, जो अपनावै सोई ।
जो अपनावै सोई, फिर न बहे धारे ॥श्री०॥७॥
निज स्वरूप लखि पारख, काया कसर निकारे ।
गुरु काया कसर निकारे, हैं कबीर सो परतछ,
हैं कबीर सो परतछ, जीवन ऊबारे ॥श्री०॥८॥
अष्ट अहं मद नाशै, गुरु पद अपनारे ।
निजपद अपनारे, जनम मरण की संशय ।
जनम मरण को संशय होवत सब छारे ॥श्री०॥९॥
धनि२ गुरुवर हितकर पारख पूकारे ।
गुरु पारख पूकारे, को अस समर्थ दूजा ।
को अस समरथ दूजा, जो जीवन तारे ॥श्री०॥१०
सत्य न्याय पद दर्शित शोध बोध न्यारे,
गुरु शोध बोध न्यारे, श्री गुरुदेव नरायण ।
श्री गुरुदेव नरायण, हम सम जन तारे ॥श्री०॥११॥

है प्रत्यक्ष गुरु बोधक संत गुरू प्यारे,
प्रभु संत गुरू प्यारे, संत शरण को बूड़त,
संत शरण को बूड़त, भवसे नीकारे ॥श्री०॥१२

॥ दोहा ॥

शरण शरण गुरु शरण में चरण पड़यों मैं आय।
तरण तरण तारण गुरू, बन्दौं शीश नवाय ॥१॥
हरन हरन भव भय हरन, करन मोक्ष हो आप।
अरज अरज मेरी अरज, गरज यही हरु ताप ॥२॥
सन्त गुरू मम इष्ट हो, श्रेष्ट बरेष्ट महान।
सृष्टि नष्ट मनसिज किओ, कष्ट कराल दहान ॥३॥
अन्त २ को भेद कहि, दृष्टी दियो अजांच।
दृष्टा दृश्यको भिन्न करि, पदवी दीन्ह्यो सांच ४॥
संत गुरू उपकार तव, हृदय बीच में राखि।
गुरू कबीर बंधन हर्‍यो, परख अचल पद भाखि ५॥
जीवन हित परत्यक्ष से, मुक्ती दियो दिखाय।
धन्य २ हैं आप को, सार असार लखाय ॥६॥

पारखी श्री सद्गुरु के दया से, नौवम प्रसंग
मुक्ति की साज और अंतिमि हाल समाप्त।

❀ श्री सद्गुरुवे नमः ❀

दशम प्रसंग प्रारंभः

वैराग्य अमृत जीवन

चैतन्य रमैया राम का कर्म फल अपने आप पर निश्चय है उसी का वर्णन

जो अनन्त सर्व जोनियों में अपने निज स्वरूप के भूल वस रमि रहा है। प्रत्यक्ष में वही चैतन्य जीव ही असल रूप से रमईया राम हैं, परंतु वह रमईया राम अपने स्वरूपको ना जान कर कुछका कुछ अनुमान कर बैठा है, और दुख सुखका दाता कोई और ही है, ऐसा मान लिया है परंतु यह मानना सर्वथा भ्रम भूल ही है, इसी को ठीक ठीक से विधान करिके सत्य न्याय पूर्वक दृष्टान्त सिद्धान्त द्वारा घटा कर आगे दर्शाया गया है

जिससे प्रांय—हमारे सर्व भाईयोंको सरलता से अपने अमर चेतन रमईया रामका वासना बस कर्म फल कि निश्चय असली ज्ञान हो ऐसा जान कर यहां सहज रूपमें सुगमसे सुगमकरके सत्यसार रूपमें प्रतिपादन किया गया है। ऐसा जानो।

पक्का पक्का फांसला

आरंभः

एक जगह पर सत्य शिक्षक संत शिक्षा दे रहे थे, औ सर्व भक्त सज्जन जन सुन रहे थे। उस समय शिक्षा में, श्री मान संतजी के मुखारबिंद से, यह सत्य निर्णय बचन निकला, कि यह चेतन जीव ही, अपने स्वयम कर्म करता है, और उसी किये हुए कर्म रूपी लीला में, फंस-फंस के दुःख सुःख पाता रहता है। इन बचन को सुनकर, एक मनुष्य बोला कि हे संत महाराज जी, इस जीव को दुख सुख देने वाला मालिक कोई जरूर ही होगा। परन्तु जो यह आप कहते हो कि यह जीव स्वयं कर्म करता है, और स्वयं भोगता है। तो इसमें मुझ शंका हो रहा है कि बिना किसो के दुख सुख दिहे, ई जीव, कैसे अपने से स्वयम कर्म करता भोगता है। सो आप दया करके, हे सन्त भगवनजी अब हमें समझा दिया जाय, जिससे मेरा भी भ्रम दूर हो। इतना

सुनकर संत बोले कि देखो भईया इन बातों को तो तुम ही सब विचार कर समझ सकते हो, तिसका सही सही प्रत्यक्ष प्रमाण तो ऐसा है कि देखो, जैसे किसान हैं, जिस चीज का बीज अपाने खेत में बोता है, तो वही जामता है, और वही फुलाता, फरता है, यों तो वही पैदा भी होता है। इससे दूसरा नहीं होता। यानी कहने का मतलब यह है, कि धान बो देने से, जुवारी नहीं हो जाता, या कोदो, गेहूँ नहीं होता, जौ, ओसहन नहीं होता। और भी आम, अमरूद नहीं फरता। या कटहल केला नहीं होता है। भाटा, बड़हर नहीं हो जाता। विचार करके देखो तो ऐसा कहीं सुना नहीं गया है, और देखा भी नहीं गया है, औ होता भी नहीं। अरे भाई कहा भी है कि—
जो बोवेगा, वो काटेगा। इस बात से यह साबित हुआ कि जो बीज अपाने खेत में बोयगा, वहीं भी काटेगा। औ जो बीज अपाने खेत में नहीं बोयगा वो क्या, कहां से काटैगा। पूर्वोक्त बातों

से प्रत्यक्ष ही प्रत्यक्ष प्रमाण हो रहा है कि ऊपर बातों के अनुसार यहां अपने अंतःकरण रूपी खेत में शुभ या अशुभ, पाप या पुन्य, जो बोया जायगा वही शुभ, अशुभ, पाप, पुन्य जमैगा भी, यानी इस अटल बात से पृथक कुछ दूसरा नहीं हो सकता है। और भी कहता हूँ ध्यान देकर सुनो, और विचारो सही है कि नहीं। जो कि इस संसार में प्रत्यक्ष ही दिख रहा है।

देखो कोई के तो इतना अथाह धन है, कि खाये नही वोराता है, औ उनके घरके अन्दर कोई खवईया हो नही है, परंतु मारे धन के अजा गञ्ज हो रहा है। और कोई के तो धन बिलकुल कुछ नहीं है, वे बेचारे खाने बिना मर रहे हैं, उसे तो धन बिना इतनी दिक्कत हो रही है, कि ई-जून से ऊ जून तक निबाहना दुस्तर हो रहा है। उसके घर में खवईया अधिक हैं, और अन्न धन घरमें कुछ है नहीं। अब वे बेचारे, सुतारे, दो तीन दिन पर भी पेट भर भोजन नहीं पाते हैं। बड़ी मुश-

किसी से वे अपना दिन काट रहे हैं। और भी देखो कोई कोई तो धन संपत्ति बढ़ाने के लिये, बेकिम्मों मेहनत परिश्रम करते रहते हैं, यों तो वे धन के लिये यहां तक करते हैं, कि झूठी गवाही, बहुत २ बेइमानी, नाना तरह का चोरी, इधर उधर की चुगली, अत्याचार, घात, हिंसा, बैर, छल, कपट, दम्भ, नाना ढोंग, पाखन्ड, आपस में कलह, मार, गारी, झगड़ा, लड़ाई, और २ बहुत से अनर्थ लोग धन के लिये कर डालते हैं, यहां तक कि दिन का दिन, और रात का रात, नहीं गिन्ते हैं। और खाने पीने में भी काटा-कूटी किया करते हैं, सुतारे पेट भर भोजन नहीं खाते हैं। अहो कहां तक कहा जाय, वे पूरा शैतान वा पिशाच ही हो जाते हैं। यानी कोई कर्म वे बाकी नहीं राखते हैं, मात्र धन के लिये, फिर तो यह सब नाना प्रकार का उपाय करते हुए भी उनकी दरिद्री पना नहीं छूटती है। और वह निर्धन का निर्धन बना ही रहता है। और उसका सब मेहनत परिश्रम निष्फल

ही हो जाता है, आखिर में वह मन ही मन मुर्भि-मुर्भि के, औ माथा कूटते कूटते ही रह जाता है। और कोई २ तो थोड़े ही परिश्रम से बहुत ही धन कमा लेता है, या बहुतों को तो ऐसे ही अनायास बिना मेहनत परिश्रम किये ही बहुत धन प्राप्त हो जाता है, या मिल जाता है। एवं ऐसा संसार में देखा भी जाता है।

और बहुत से लोग तो कोठी, भरोठी, आदि भारी २ ऊँचा २ महल वा मकान बनवाते हैं, या कोई २ चार तल्ला, तो कोई आठ तल्ला, और भी कोई बारह तल्ला, का भाँति २ से बनवाकर, तिसको अनेको प्रकार से सजावट कर, किसिम किसिम के सुन्दर-सुन्दर नाना रंग, विरंग, तरह तरह के चित्र-बिचित्र, कि कीमती कीमती कोठियां बनवाते हैं, और उसी में हर तरह से मनानन्द में मस्त होकर परम सुख मानते हैं। और कोई तो बेचारे ऐसे हैं, कि सुतारे फूस ही का घर नहीं छाय पाते हैं, बहुत सँगहां पँगहां जोहवा कर, बड़ी

मुश्किल से छपरा का घर छा पाते हैं। और भी गौर करके देखो, इस संसार में बहुतों के तो स्त्री, पुत्र, पुत्रियां, नाती, पोते, यानी परिवारों से उनका घर भरा रहता है, और कोई प्रकार से कमी न होकर, बल्कि दूध पूत आदि से खूब चकाचक रहता है। कोई के सब कुछ है तो स्त्री नहीं है, तो वे रात दिन उसी स्त्री ही के चिन्ता में आकुल व्याकुल रहा करते हैं, एवं हर तरह से एक नारी के बिना वे दुखी ही दुखी रहते हैं। और कोई के जो स्त्री है तो कोई बाल बच्चे नहीं हैं, अब वे बेचारे रात दिन यही चिन्तानल व शोकाग्नि में जलते रहते हैं, वे यही सोचते हैं कि कोई उपाय से एक बच्चा हो जाता तो हमारे कुल का नाम तो रहता। हमारे न रहने पर दिया गुल ही है, बेचारे ऐसा सोचकर पुत्रादि होने के लिये कितने लोग दूसरी तीसरी स्त्री लाकर भी नाना प्रकार का उपाय करते रहते हैं। कोई २ कहूँ २ तो पंडित, गुनिया, से कहूं मौलवी, मियां, से पुत्र, पुत्रियां,

होने का हाल पूछते रहते हैं, बहुतेक तो भ्रम भूल बस कहूं सोखा, ओझा, से कहूं नाउत, बैदों, आदिकों से दिखाते सुनाते हैं, और मानते दानते रहते हैं। कहते हैं कि जो एक बच्चा हो जाय, तो यह चढ़ावेंगे, वह चढ़ावेंगे, यानि यहां तक कि, कानि कितने तो महा अज्ञानता के कारण पुत्र, पुत्रियां होने के नाते, पराये जीवों का बलिदान तक कर डालते हैं। देखो इनके अज्ञान का कहां हद है। यह सब करते तो भी पुत्र आदि नहीं होते हैं। परन्तु हे भाई सोचने विचारने की बात है, कि जो मनुष्य पूर्व में बाल बच्चे, होने का कर्तब्य नहीं किया है, वो आज कैसे बाल बच्चा पा सकता है। संसार में कितने लोग, इन्द्रजाल आदि द्वारानाना मंत्र, यंत्र, तंत्र, रिद्धि-सिद्धि, तरह २ की साधनायें किया करते हैं। पर कुछ कामयाब ना होकर सब निष्फल ही हो जाता है। लेकिन जिनके कर्म में बाल बच्चे आदि नहीं है, तो कोटियों उपाय करने से नहीं होगा। यह पक्का अटल बात

हैं। और भी बहुत लोगों के तो बाल बच्चे होते भी हैं, तो जीते नहीं, कितने बच्चे हो होके मर जाते हैं। एवं कोइ सुखी, तो कोइ दुखी, कोइ राजा, कोइ भिच्छुक, कोइ धनी, तो कोइ निर्धनी, कोइ रोगी, तो कोइ निरोगी, कोइ भोगी, तो तो कोइ शोगी, कोइ साहू, तो कोइ चोर, कोइ ठग, तो कोइ बरुवार, कोइ रागी, तो कोइ त्यागी, कोइ पुन्य, तो कोइ पाप, कोइ अच्छा, तो कोइ खराब, कोइ दानी, तो कोइ मानी, कोइ निर्मानी, तो कोइ अभिमानी, कोइ ज्ञानी, तो कोइ अज्ञानी, कोइ निर्छली, तो कोइ छली, कोइ निर्बली, तो कोइ बली, कोइ अचारी, कोइ पापाचारी, तो कोइ अत्याचारी, कोइ अपकारी, तो कोइ हत्यारी, कोइ हितकारी, तो कोइ उपकारी, कोइ दोषी, तो कोइ निर्दोषी, कोइ रोषी कोइ संतोषी, कोइ होषी, तो कोइ बेहोषी, कोइ निष्क्रोधी, तो कोइ लोभी, कोइ काल, तो कोइ दयाल, कोइ अन्याई, तो कोइ न्याई, कोइ भक्त, तो कोइ अभक्त, कोइ सज्जन, तो कोइ

असज्जन, कोइ हिंसकी, तो कोइ अहिंसकी, कोइ रच्छक, तो कोइ भच्छक, कोइ मानव, तो कोइ दानव, कोइ सीधा, तो कोइ टेड़ा, कोइ सिरी, तो कोइ पागल, कोइ उल्लू, तो कोइ बागल, कोइ लूला, तो कोइ लगड़ा, कोइ लड़ाई, तो कोइ झगड़ा, कोइ बचाऊँ, तो कोइ रगड़ा, कोइ छूटा तो कोइ पकड़ा, कोइ पछड़ा, तो कोइ अगड़ा, कोइ नकड़ा, तो कोइ नखड़ा, कोइ सत्य, तो कोइ झूठ, कोइ मार, तो कोइ गारी, कोइ जीता, तो कोइ हारी, कोइ पीछा, तो कोइ अगारी, कोइ छोटा, तो कोइ भारी, कोइ बसा, तो कोइ उजारी, कोइ बूड़ा, तो कोइ उतरा, कोइ सुन्दर, तो कोइ भयंकर, कोइ गूगा, तो कोइ बावला, कोइ कोढ़ी, तो कोइ अपया, कोइ मोही, तो कोइ निर्मोही, कोइ रजगुण, तो कोइ सतगुण, कोइ तमगुण, तो कोइ नमगुण, कोइ ब्रह्मण, तो कोइ चत्री, कोइ बैस्य, तो कोइ शुद्र, कोइ हिंदू, तो कोइ मुस्लमान, कोइ जैनी, तो कोइ कृस्तान, कोइ सांचा, तो कोइ

बिद्वान्,कोइ दुर्गुणी,तो कोइ हेवान, कोइ षटगुणी, तो कोइ नादान, कोइ जाता, तो कोइ आन, कोइ बिछुड़ा, तो कोइ मिलान, कोइ अपना, तो कोइ परान, कोइ नीचा, तो कोइ महान, कोइ जान, तो कोइ अजान, कोइ रोता, तो कोइ गान कोइ पाया, तो कोइ हेरान, कोइ छाया, तो कोइ घाम, कोइ सताया, तो कोइ दबान, कोइ बालक, तो कोइ जवान, कोइ अधड़ा, तो कोइ बुढ़ान, कोइ राजी, तो कोइ रिसान, कोइ काजी, तो कोइ पठान, कोइ बेद,तो कोइ कुरान, कोइ सास्त्र, तो कोइ पुरान, कोइ जनेऊ, तो कोइ शुन्नत, कोइ स्वर्ग, तो कोइ जिन्नत, कोइ अहमक, तो कोइ अजमत, कोइ अकाश, तो कोइ पताल, कोइ बिमान, तो कोइ असमान, कोइ गान, तो कोइ बेगान, कोइ ईश, तो कोइ ब्रह्म, कोइ अकर्म, तो कोइ कर्म, कोइ भूल, तो कोइ भ्रम, कोइ नर्म, तो कोइ गर्म, कोइ योगी, तो कोइ अयोगी, कोइ तपसी, तो कोइ मौनी, कोइ जलहारी, तो कोइ

फलहारी, कोइ दूबाहारी, तो कोइ दूधाहारी, कोइ जटाधारी, तो कोइ सबांकारी, कोइ लुंचित, तो कोइ मुंडित, कोइ बिषयानन्द, तो कोइ योगानन्द, तो कोइ भोगानन्द, कोइ सर्बानन्द, तो कोइ ब्रह्मानन्द, कोइ सच्चिदानन्द,तो कोइ महाआनन्द, कोइ ओहं, तो कोइ सोहं, कोइ शिवोहं, तो कोइ कोहं, कोइ तोहं, तो कोइ मोहं, कोइ अनोमियोहं, तो कोइ निरंजन,कोइ कर्ता,कोइ धर्ता, कोइ मर्ता, तो कोइ जरता, कोइ परता,तो कोइ तरता, कोइ घरका, तो कोइ बनका, कोइ मनका, तो कोइ तनका,कोइ जनका,तो कोइ गनका, कोइ बिचार-वान, तो कोइ अबिचारवान, कोइ बकुला, तो कोइ हंस, कोइ असंत, तो कोइ सन्त, कोइ मुक्त, तो कोइ बन्ध, कोइ मूक, तो कोइ अन्ध, कोइ असल, तो कोइ नकल, इस प्रकार से हे भाईयों अनेकानेक तरह के स्वभाव, वा अपनी अपनी, बासना बश सर्ब नर जीव दिखाई पड़ते हैं, तो अपने २ करमै बश,की और कोई बात है, प्रत्यक्ष

सत्य न्यायसे दृष्टि खोलकर, देख लीजीये तो सही अरे भाई बिना समझे बूझे, क्यों अंधा धुन्ध में पड़े जा रहे हो, जरा कुछ होश करके देखो । की नाना कर्म जीवही आप स्वयम बनाता है । औ जो कुछ भला बुरा बनाता, सो आपही स्वयं पाता है । इसलिये कोई सुख दुख का कहीं दाता है नहीं, जीवही जो कर्म कर्ता सोई पाता है। हे तात जन और भी ध्यान देकर सुनो औ गौर करो, देखो कैसा निर्णय युत बचन है । जैसे की—

कबीर कमाई आपनी, कभी न निष्फल जाय ।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय ॥

और भी

तुलसी यह तन खेत है, मन बच कर्म किसान ।
पाप पुन्य दुइ बीज है, बोवै सो लहै निदान ॥१॥
पुन्य पाप से मिलत है, सुख दुख सबको आय ।
भोग न छूटे कर्म के, कीन्हे कोटि उपाय ॥२॥
देन हार यह जगत में, सुख दुख को नहिं कोय ।
कर्मन के अनुसार ही, भलो बुरो सब होय ॥३॥

स्वयं कर्म करोत्यात्मा, स्वयं तत्फल मशनुते।
स्वयं भ्रमान्ति संसारे, स्वयं तद् विमुच्यते ॥४॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत्य कर्म भोग सुन भ्राता ॥५॥

इस अमृत निर्णय बानीको सुनाते हुए सन्त बोले को देखो भाईयो.पूर्वोक्त सब बातों से तो साफ २ जाहिर हो रहा है। की चेतन जीव आप स्वयं ही कर्म करता है। और स्वयं ही भोगता। यहां इसके बारे में एक दृष्टांत कहता हूँ। उसे ध्यान से सुनो, और सुनके मनमें गुनो, तब सब बातें ठीक २ से समझने में आ जायगा—

यह चेतन जीव रमईया राम, स्वयं अपनी लीला में फंसकर, दुखी सुखी होता रहता है॥

इस पर एक पक्का प्रमाण रूप से दृष्टांत—

चैनपुर नाम का एक बहुत भारी शहर था, वहां के राजा बड़े प्रतापी थे। वे तीन वर्षों के बीतने पर, एक बड़ा भारी रामलीला कराते थे जो कि बहुत धूम धाम के साथ वह मेला लगता था। और उस राम-

लीला का समय जब आता था, तब उस चैनपुर के बासियों को बहुत खुशियाली होती थी ' क्योंकि एक तो वह मेला तिसाला होता रहा। दूसरे भांति भांति के नाना प्रकार का खेल तमाशा, आला से आला, अजीब से अजीब, अच्छा से अच्छा, सुन्दर से सुन्दर, मन सुहावन की क़िलक़त वा खिलकत होता था। तीसरे वह मेला खूब भीड़ भाड़ के साथ जमता था। वह रामलीला सब के लिये ऐसा एक खेल का दिन था कि सर्व चैनपुर प्राणियों के मन भावन था। चौथे वहां के राजा को भी मेला करवाने का उत्साह था। इसलिए वह रामलीला बहुत जोर-शोर से होता था। परन्तु जब तक तो वह मेला रहता था, तब तक उन नर नारियों को बहुत ही आराम या आनन्द सुख होता रहा, लेकिन जब वह मेला होकर खत्म या बंद हो जाता था, तब उस चैनपुर के बासियों को उदासीनता आ जाती थी। यानी वह मेला बीत जाने पर तीन साल के लिए वहां के लोग दुखी हो जाते थे। पर करें तो क्या करें, अपना बस तो वहां चलता न था। क्योंकि वह रामलीला नियम के अनुसार तिसाला

होता था। इसलिए मेला बन्द होने पर वहां के नर नारी लोग दुःख से व्याकुल हो जाते थे। परन्तु एक उपाय से वह प्राणी कुछ-कुछ सुखी होते रहे। जिस जिस प्रकार से वह रामलीला का खेल तमाशा होता रहा, वैसे २ फोटू अपने २ मन में सोच २ कर थोड़ा थोड़ा सुखी होते रहे। पर सुखी क्या, और दुखी ही जानो। परन्तु कुछ भी हो. लेकिन वही सब खेल तमासा को सोच २ या याद कर २ के दिल को बहलाते थे, यानी जी को बुझाते थे। एवं इसी प्रकार कभी सुखी कभी दुखी होते रहे। इस प्रकार तो उन चैनपुर सब प्राणियों का हाल था। और उस रामलीला में कौन २ खेल, किस २ प्रकार कैसे २ होता था, सो आगे वर्णन किया जाता है। जैसे कि इतनी दूर तक खेल होगा। यहां राजा, रानी, नौकर, चाकर, आदि रहेंगे, या इस तरफ नर, नारियां, लड़के आदि रहेंगे। और कुछ जगह खाली मैदान था, जहां कि सब कोई जा सकता था, यानी वह सभी जनताओं के लिए खुला ही रक्खा गया था। जिससे कि सब लोग टहल कर हवा बयार खांय, या आराम करें। इस प्रकार वहां का इन्तजाम था। अब नियम इस

प्रकार था, कि जो शक्स जहां पर हैं, वे वहां से दूसरे जगह पर नहीं जा सकते थे। मय राजा रंक से अमीर गरीब भिच्छुक तक के लिये यह पक्का नियम बनाया गया था। जौने सब अपने २ घेरा के अन्दर ही रहैं, कोई भो एक दूसरे के घेरा में न जायं, और न जा सकते थे।

इस प्रकार सब घेरा को अलान अलान से, लाइन २ कारके बनाये थे। समस्त जन्तावों भर के लिये तो यह नियम था। परन्तु जो तमाशा दिखाने वाले थे, उनके लिये हर तरह से खुला ही खुला था, वे जहां चाहें तहां आनैं जांय, क्योंकि वो सब तमाशा वाले ठहरे, इसलिए उन्हें रोक नहीं था। इस प्रकार वहां का नियम था। और तमाशगीर, जो तमाशा दिखलाते थे, उनका पोसाग या साज इस तरह था, बहुतों का फोटू तो अच्छे २ राजावों के सरीखा था, जिसको देखते ही बनता था, बहुत कहने से क्या। और बहुतों का फोटू तो हाथी, घोड़ा, ऊंट, बैल, आदि के तरह था। और बहुतों का फोटू तो सिंह, बाघ, बीग, भालू, आदि के भांति था, जिसका नाम ही सुन कर दली-दली हो जाती है। इस प्रकार

तो उन तमाशावालों का पोसाग था, जिससे कि वो लोग तमाशा दिखाते थे। परन्तु उन तमाशगीरों में के एक सर्बंजानक नाम के ज्ञाता थे, जो कि सब तमाशावालों के ऊपर दर्जे के थे, जिनसे कि उस तमाशे से कोई मतलब नहीं था, यानी थे तो उन तमाशावालों के ही तरफ के, परन्तु उनसे और उस तमाशा से कोई ताल्लुक नहीं था। वे उस तमाशे का सब भेद जान कर, उस तमाशे से अलग ही रहा करते थे। हां एक बात तो था कि चाहे जो कोई व्यक्ति उनके पास जाता, और उस तमाशे का हाल जानना चाहता औ बूझता, तो वे सहज रूप में उस तमाशे का सारा भेद खोल कर दिखाते थे, यानी बता देते थे। क्योंकि वे उस तमाशे का सब पूरा हाल जानते थे। इसलिये सरलता से बता भी देते थे। परन्तु ऐसे मनुष्य कम २ थे, जो उस तमाशे का भेद जानना चाहें, क्योंकि सब लोग उस तमाशे को देखने में गर गाफ हो रहे हैं। अब कौन उसका हाल मर्म जानना चाहता है, यानी उस तमाशे को जानने बूझने की परवाह कौन करता है, जब कि सब कोई उस तमाशे को देखने में गड़क हो रहे हैं। पर

हां जो कोई वहां सर्व जानक नाम के पास जाता, और बिनय पूर्वक जाचता तो वे सरलता से सब बातों को जना देते थे। याते वह भी तमासा का मर्म भेद जान कर स्वतन्त्र हो जाता था। एवं इस प्रकार का वहां का सब समाचार था। अब यहां से दृष्टांत पूरा हो गया।

इसका सार सिधान्त कहा जाता है गौर से सुनो—

चैनपुर शहर कहिये इस संसार को और राजा कहिये, जो सर्व प्राणियों के ऊपर अति प्रबल रूप से जो बासना है, वही राजा है। और तेजस्वी है, तेजस्वी का मतलब यह है कि सर्व नर जीवों के शिरों पर वह बासना, राजा रूप होकर अतियंत तेजी के साथ बिराजता है, या बिराज रहा है। इसलिये वह राजा है। क्योंकि प्रत्यक्ष देखा जाता है, कि इस संसार में जितने प्राणी हैं, सो सब उसी बासना के, बेग पर चलते हैं, यानी वह बासना रूप राजा, जहां२ ले जाता है। तहां२ सब प्राणी दौड़े२ जाते हैं। यह नाते से ये

बासना एक महा प्रतापी राजा रूप होकर, सबके शिरों पर भोग कर रहा है। और अब यहां तीन साल कहिये, अंडज, पिन्डज, उष्मज, तीन खानी को, यानी इसी तीन खानी को, तीन साल जानिये। और राम लीला कहिये, जो चैतन्य रूप राम है। उसी चेतन जीव रूपी राम की लीला हर जगह पर प्रकाशित हो रहा है। यानी जो यह जीव सर्ब योनियों में रमि रहा है, औ सब में, सब जगह यह रमईया रमता फिरता रहता है, यों तो सर्ब जगह रमने से इस चेतन जीव को रमईया राम कहा जाता है, अब इसी चेतन रमईया राम को, चहे सर्गुण कहिये चहे निर्गुण कहिये। चहे ब्रह्म कहिये, चहे प्रमात्मा कहिये, यानी राम, कृष्ण, बिष्णु, शंकर ब्रह्मा, नारायण आदि एक जिस किसी भी नाम से कहिये। परन्तु सर्ब का जानक, मानक, पिन्ड, ब्रम्हाड, आदि का, मूल सार वा मूल मन्त्र, यह चेतन राम ही है। इसलिये इस चेतन रमईया राम ही का लीला अनादि काल

युग युगों से प्रकाशित होते आ रहा है। आज इस समय भी है। और आगे भी इस चेतन राम का लीला प्रकाशित होते ही रहेगा। यह अटल अचल पुर्ण पक्का २ यर्थाथ सत्य निर्णय है। इस लिये यह चेतन जीव जब जब मनुष्य शरीर में आता है, तब२ स्वयम अपनी लीला मे अरुझ२ कर नाचता है, इस हेतु से ये चैतन्य के लीला को ही, राम लीला जानना चाहिये, परन्तु बासना राजा जब तीन खानी मे सब जीवों को भ्रमाय होता है। तब एक बार मानुष शरीर धारण कराता है—अब वही मनुष्य शरीर को पाना ही, राम लीला होना जानिये। यानी बासना राजा तिसाला रूप तीन खानी बीतने पर एक बार नर शरीर देता है, या मिलता है। बस इसी नर तन पाने ही को, चैतन्य लीला मानिये, या राम लीला कहिये। और सत्य मे ऐसे है ही। अब इसी मनुष्य शरीर से अनेकानेक, कर्म अन्य अन्य खानियों में जाने के लिये, सर्ब जीव स्वयम

अपना२ कर्तव्य कर लेते या बना लेते हैं। यह बात तो सच सच मे सबको जाहीर ही है, इसके बारे मे विशेष कहना क्या। यानी यह नर शरीर रूप मेला लगने से सब जीव अपने २ मनोमय द्वारा, उत्साह के साथ दुसरे दुसरे खानियों में जाने का कर्म स्वयं कर लेते हैं. यह बात पक्का निश्चय है। औ सब खानियों में जाने का संयोग इसी नर शरीर से ही होता है, इसलिये नर शरीर को ही कर्म चेत्र या कर्म भुमिका भी जानना चाहिये। यों तो मनुष्य तन से चुकने पर, तीन खानी भोग कर तब फिर कहूं मनुष्य तन मिलता है। बस यही नर तन मिलना ही खूब धूम धाम से मेला लगना जानिये, और इसी नर शरीर में सब जीव खुसी के साथ, हर एक कर्म स्वयं रच लेते या बना लेते हैं। यही खुसियाली है कि बिना किसी के कहे सुने ही, सर्व जीव अपने २ मन इन्द्री द्वारा स्वयं अपना २ कर्म, आप ही बना डारते हैं। क्योंकि देखा भी जाता है।

नाना कर्म, भांति२ का कर्तव्य ये नर जीव ही बनाते जाते हैं स्वयं यह। खुसियाली समझिये, यानी तीन खानी में भोगने का कर्म, सब जीव इसी नर तन में बना लेते हैं। क्योंकि तीन खानी भोग कर, तब ये जीव नर तन रूपी मेला में आये हैं। फिर जब मनुष्य तन मेला भोग लेंगे, या खतम होगा। यां तो जब तन रूपी मेला भोग कर बीत जायगा। तब फिर तीन खानी में भोगे बिना मनुष्य तन पाना दुस्तर है। अब तीन खानी भोगे बिना नर तन मेला न मिलने के वजह से। उस तीन खानी में भोगने का कर्म सर्व जीव खुद ही खूब गाढ़े रूप से बना लेते हैं। परन्तु जब तक यह देह मेला मे सब जीव हैं। तब तक इस चैनपुर संसार मे खूब मौज के साथ अमन चैन मे रहता है। जैसे की संसार के तरह२ भोग बिहार मे, औ ना२ प्रकार के शौक सिंगार में मेला हाट शहर बाजार में, सुन्दर २ नर-नारियों के गुलजार में, मन इन्द्रियों के भोग व्यपार में,

नाटक सिनेमा ताश शतरंज के खेलवार में, जुवा पास आदि हर तरह के किलकार में, और भी खसी, भेड़ा, मछरी, मास, मुर्ग, अण्डा, खरगोश, कबूतर, आदि के खाने में, तिसके ऊपर मदिरा शराब दारू ताड़ियों के पीने में तहां और भी पान बीड़ी सिगरेट सुर्ती तम्बाखू आदि के पीने खाने में। और पर स्त्री बेस्या गमन नाना रमड़ियों के रमण में, औ चोरी, डाका, सेन्ह, नकब, काटने आदि हिंसा बेभिचारियों में। अरे भाय कहां तक कहा जाय,पुरबोक्त यही सब मन रंजनों में सब जीव अपना २ अमुल्य समया नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं। और २ भी संसार के नाना भोगों में यह जीव मदमस्त हो, अलमस्त रहता है। यों तो यही सब जगदासक्त जीवों का हालत हो रहा है।

परन्तु जिस समय जीवों का प्रारब्ध भोग कर खतम हो जाता है। तब तन छूटने पर जानो मेला बन्द हो जाता है। यानी जो जीव तन रूपी मेला का सुख भोग कर तीन खानी में चले जाते

हैं, तो मानों उनके लिये तीन साल भर मेला बन्द ही है। क्योंकि जब तक तीन खानी वह जीव भोग नहीं लेगा तब तक नरतन मेला पायेंगे नहीं। लेकिन जब यह तन रूप मेला ये जीव से छूट जाता है, तब यह जीव अपने मनमें बहुत दुख मानता है, औ बहुत उदासीन होकर झंखता पछ-ताता है। क्योंकि अब तीन खानी भोगे बिना नरतन मिलने का नहीं। यह नाते से वे जीव बहुत ही दुखी हो जाते हैं। पर क्या हो अपना कोई बस तो वहाँ चलता नहीं, सब विधि से दीन हीन लचार होकर फक्त पछतावा मात्र ही हाथ आता है। क्योंकि कोई दूसरा उपाय तो वहाँ चलता नहीं।

अहो अब क्या हो, अब क्या करें—कोई आगे पाछे सहायक दिखाता नहीं। तब उस समय सब जीव अनन्त पीड़ा में, घायल होकर—बिलख २ कर दुःख ही दुःख पाते रहते हैं। यों तो वहाँ महान प्रचन्डाग्नि में जलने के समान, नाना प्रकार के असह कष्ट जो कि वर्णन करने योग्य नहीं है।

यों तो, नाना तरह से भयंकर दुरदशा, तिन जीव को भोगना पड़ता है, क्योंकि वहां न तो कोई दूसरा उपाय है, और न तो कोई दूसरा वहां सहायक ही है। अब क्या हो, सब जीव मारे दुसह दुःख के, बिल बिलाते रहते हैं। परंतु अब हो तो, क्या हो, क्योंकि बिना तीन खानी के दुख भोगे, नरतन तो मिलने का नहीं। इसलिये सब जीव वहाँ परबश होकर, औ मनही मन रोकर मर रहे हैं। वहाँ नाना दुःख पाय, औ भांति २ की बिपत्तियाँ, या संकटों को सह रहे हैं।

अब वहाँ कोई प्रकार से दुख ना छूटने के वजह से, उन सब जीवों को, इस प्रकार से थोड़ा २ सुख प्रतीत होता है। जैसे कि जब मनुष्य तन मेला में वे सब जीव रहें, तब जो २ आराम सुख वे भोगे रहें, अब उसी अनुसार से वे सब अपने २ अंतः करण में, दुख सुखों को फोटूवत, जमा रक्खे थे, या अपने २ मनोमय के अन्दर में टिकाये थे। अब वही जो २ अंतःकरण में टिकाये रहें, उसी के

अनुसार, निज २ मनोमय द्वारा, सब जीव कुछ २ सुख दुख का अनुभव कर रहे हैं। यानी कहीं थोड़ा सा मन अनकूल कुछ मिल गया, तो उसी में उन्हें सुख हो गया।

परन्तु हे भाय विचारने की बात है, कि उनको वहाँ सुख काहे का, जब कि जेहली के समान, परबश होकर उनका जीवन ब्यतीत हो रहा है। फिर वहाँ सुख कहाँ, औ कौन सा। तो कुछ नहीं।—सुख नहीं, और बल्कि दुख ही दुख है। अरे भाई विचारने कि बात है, जरा सोचिये तो सही—कि भला जो जहल के अन्दर, कैद य छेक जाते हैं। तो उन्हें कुछ न कुछ, उत्तम, मध्यम, भोजन अहार आदि मिलता ही है। परन्तु जो बेचारे तीन खानियों में पड़ गये हैं। अब उन्हें वहाँ कौन कहाँ खाना पीना पूछता है।

मान लो जिन २ जानवरों से, या जिन २ पन्छियों से, लोगों की मतलब निकलता, यानी काम चलता है, उन २ जानवरो औ पशुवों को

तो, वै खाने पीने का इन्तजाम करते ही हैं। क्योंकि उनसे उनका कार्य चलता है। तो उनको पालन पोषण भोजन आदि कराना, तो फर्ज ही है। परन्तु जिन २ जानवरों और पशु पन्छियों से लोगों का कुछ नहीं कारज चलता है तो उन्हें खाने का इन्तजाम कौन कहाँ करता है। बल्की जो संयोग बस, त्रयखानियों के जीवों को, ये नर तन धारी जन देख ही भर लें। कि तैसे ही उसके शिकारी बन जाते हैं, यानी उसके प्राण हतन करने के लिये, हर प्रकार से नाना युक्ती प्रयुक्ती करने लगते हैं। जिससे कि वह जानवर, बेचारे को, जीवन से मार डालना चाहते हैं। अब उस दुखी जानवर के पीछे लोग ऐसा हल्ला कर के दौड़ने लग जाते हैं। कि उसको भागते २ नाको दम या जान बचाने में आफत आ जाती है, तो-नेव: में बहतों को लोग मार ही कर छोड़ते हैं। कहूँ २ बिड़रै बेचारे भागते २ कहीं बच पाते हैं।

अहो उनके दुःखों को, क्या कहा जाय, कुछ

कहते बनता नहीं। एक तो हर तरह परवश दीन लाचार हैं। दूसरे जबसे जनम लिये, तबसे पेट भर खाने को नहीं पाये। तीसरे मनुष्यों से छिप २ कर रहते हैं। चौथे जों समुहे निकल पड़े तो जान से मारे जाते हैं। पंचये जाड़ा, ठन्डी, धूप, अति प्रचंड घाम, बर्सात, ओला, पाला, आदि नाना तरह २ का मुसीबत उन्हें झेलनी पड़ती है। अहो कांटा कुश, जिनको बिस्तरा है, औ, राति, बिराति, दिन दुपर, सांझ, सबेर, आदि जिनकी गिन्ती नहीं है। ऐसे २ सब संकटो को सहिके वे अपनी जिन्दगी बिताते हैं।

भला देखो अब उनको सुख कहाँ का। औ कैसा। जब कि राती दिन, हर हमेशा उन जीवों को, तलफि २ औ झँखि २ पछता के, मन ही मन मुर्झि २ के, या रो रोकर, जीवन बिताना पड़ता है। या बिता ही रहे हैं, प्रत्यच्त देख ही लीजीये। हाँ परन्तु रहा बात यह, कि जब वे सब जीव मनुष्य रूपो मेला में थे। तबै वे सब निज २ कर्म, और

दुख सुख का बेवस्था स्वयम ही बना लिये थे। तब जो बनाये रहे, अब वही भोग भी रहे हैं। तो वो कैसे निज २ कर्म स्वयं बनाये रहे, सो उसका, सारांश इस प्रकार का है।

जैसे कि जिस समय वे सब जीव, मानुष शरीर में थे, उसी समय वो सब रज, सत, तम, मई, चित, मन बुद्धियों और इन्द्रियों द्वारा, निज, कहिये अपना २ कर्म, वे अपने २ अंतःकरण के स्वभाव, अनुसार ही वो सब अपने २ हृदयान्तर गतमें सुक्ष्म बीज रूप से, बना या टिका रक्खे थे। जैसे कि जो २ जीव मनुष्य का कर्तव्य बनाये रहें। तो वो सब मानुष रूप में आकर उत्पन्न भये, बाकी और तीन खानियों का कर्म जो बना रखे थे, जैसे कि पशुओं में हाथी, ऊँट, घोड़ा, बैल, भस, गाय आदि। और अण्डज आदि जैसे कि सर्प, बीछी, चिड़िया, चिड़न्गन, सर्ब प्रकार के पन्छियाँ हैं। और उष्मज में ढीलो, चालर, माछी, मसा और और नाना प्रकार के कीयां फतरिन्गा आदि

इन तीन खानियों में जाने का कर्म, सर्व जीव स्वयं आप ही बना लिये हैं। इनको बनाने वाला दूसरा नहीं है।

अब पक्का नियम कहिये, कि जौन २ जीव जिस २ खानि में जनम धर लिये या पा गये हैं, वह २ जीव अपने २ उम्र भर, या प्रारब्ध भर किसी और दूसरे खानी में नहीं जा सकते हैं। यानी जब तक अपने खानि के उमर तक, पूरा २ भोग को भोगकर नहीं बिता लेंगे। तब तक वे दूसरे खानी का शरीर नहीं धारण कर सकेंगे। जैसे कि स्त्री पुरुष का तन नहीं बदल सकती, ना पुरुष स्त्री ही का शरीर धर सकता है। फिर जैसे नर तन धरने वाले मानुष्य हाथी घोड़ा बैलादि का शरीर नहीं धारण कर सकते हैं। तैसे ही हाथी घोड़ादि पन्छी चिड़िया चिड़ँगन आदि का शरीर नहीं धर सकते हैं। और पन्छी जानवर आदि उष्मजों का तन नहीं धारण कर सकते हैं। क्योंकि पुर्व रचित इन सबों का शरीर है, वह आज कोटियों

उपाय करने पर भी बदल सकते नहीं। यानी कहने का मतलब यह है कि जो २ जीव जहाँ २ जिस २ खानी मे वे अपना २ शरीर धारण कर लिये हैं। वे-वे जीव अपने खानी के अनुसार से विरुद्ध, उल्टा शरीर नहीं धारण कर सकते हैं। क्योंकि उनके शरीर भर तक भोगने के लिये, उनका प्रारब्ध बन गया है। अब बिना उस प्रारब्धिक रूपी शरीर को भोग कर खत्म किये, कोटियों उपाय भी करने पर प्रत्येक जीव एक दूसरे खानि का शरीर धारण कर सकते हैं नहीं। क्योंकि वे सब जीव अपने २ शरीर के प्रारब्ध तक रहेंगे अपने २ घेरा ही में। यानी प्रारब्ध भर अपने २ घेरा को छोड़ कर, कोई जीव भी एक दूसरे के घेरा अन्दर नहीं जा पायेंगे।

बस हे भाइयों, अब यह ही अलान २ या अलग २ घेरा समझिये और यही प्रारब्ध कि पक्का नियम जानिये यों तो ऐसे हैं भी। अब यहाँ तमाशा

गीर के रूप में सब मनुष्य प्राणी ही हैं। यानी जो तमाशा को रचने या करने वाले हैं, सो सब नर शरीर धारी जीव ही को जानिये। क्योंकि इसी मनुष्य खानी ही से, अगर कोई जीव चाहे, तो त्याग, वैराग्य भक्ती, बिवेक बिचार, आदि के रहस्य संयुक्त होकर मोक्ष भी हो सकते हैं। नाहीं तो चाहें धर्म, मार्ग में, आकर दान, पुन्य, भूखे, दूखे, नंगे को, अतिथि अभ्यागत, (सन्त गुरू) कि यथा योग्य सेवा सम्मान करके लोक परलोक में सुख शान्ति के अधिकारी बन जाव। औ नहीं तो चाहे पुर्व बातों रहित हो, नीच-नीच कर्म कमाई करके नर्कादि नीच-नीच योनियों में नाना दुःख भोग भोगें। यों तो पूर्वोक्त सब बातों को करने का स्वस्ता या मवक्का, यही नर शरीर ही में है। यानी बन्ध, मोक्ष, लोक, परलोक, धर्म, कर्म, स्वर्ग, नर्क, आदि में आने जाने में नर तन धारी ही को सब प्रकार से खुल्ला है। सो तो प्रत्यक्ष ही देख लीजीये। क्योंकि—

॥ चौपाई ॥

मानुष्यजन्मसदासुखदेनी, स्वर्गनर्कअपवर्ग निशेनी॥

देखो भाईयों यह निर्णय तो हुई है और भी स्पष्ट प्रमाण लो।

॥ दोहा ॥

मानुष राजा सर्व का, सब पर तेरा राज।
चहे करो घुर बीनिया, चहे धरो शिर ताज ॥१॥

और हे प्यारे देखो तुम कैसे अजाद रूप हो कि।

तुम ही सब पर श्रेष्ट हो, स्वबस स्वतंत्र महांन।
चहे मोक्ष सुख शांति लो, चहे गिरो चवखान॥२॥

यों तो हर प्रकार से, तुम्हारे पर ही दार—मदार है अब जो चाहो सो करो। क्योंकि

करने लायक सब तुम्हीं, बंध धन्ध अरु मोक्ष।
सो सब नैनन देखि लो, सहो सही अपरोक्ष ॥३॥
यही बेर सब लो परखि, हरखि लेव पद चीन्ह।
सन्त शरण भव पार हो, सत्त सत्त कहि दीन्ह ।४।

एवं सब प्रकार से हे मेरे प्रिये मित्र भाईयों जन, हर तरह से स्वबस्ता आज इस मनुज शरीर

में है। यानी यावत कर्म हैं, सो सब कुछ करने का भूमिका हम आप सबों को प्राप्त ही है। परन्तु देखिये मित्रों, यह हरदम ख्याल रहे, कि खराब कमाई करके कोई समय भी शाँति सुखी नहीं रह सकते हैं,बल्कि जहैं जिस खानी में रहैंगे, बुरा कर्म और खराब कमाई करने के नाते से, तहैं दुखै दुख उठाना होगा। इसलिये दुख ना चाहने वाले, सर्ब नर शरीर धारियों को चाहिये कि सुख शांति होने के लिये, सर्ब बुरे कर्म को छोड़ कर, अच्छे२ सुभ कर्म बनावैं। ताकी लोक परलोक आदि में हर तरह सुखी होवैं।

पुर्ब बातों को बिचारने पर स्पष्ट हो गया कि आज यहां, हम सब मनुष्य मात्र के लिये सर्ब कुछ करने का, खुल्ला ही खुल्ला है। यानी नर तन धारी हि सब कुछ करने के योग्य हैं। एसे जो चाहें वो कर सक्ते हैं। लेकिन जो ये तीन खानी के जीव हैं। जैसे कि पशु, पन्छी और उष्मज आदि ये सब बेचारे परवश रूप में हैं। यों तो

इन्हें भोग खानी ही जानिये, फिर तो इनको भोग ही तक ज्ञान है। यही भोगों को भोगने में ये सब परिपक्क है, तहाँ इसके आगे मुक्ती, गती, लोक, परलोक, या धर्म, कर्म, पाप, पुन्य का इनको कुछ खबर नहीं है। बस केवल भोग भोगने तक इन्हें जानिये एवं तीन खानी को भोग भूमिका ही समझिये। सो तो प्रत्यक्ष ही है, विशेष कहना ही क्या है। इन तीन खानियों से रहित, अब यहां इस मनुष्य शरीर में जो जो स्त्री, पुरुष, धर्म निष्ठ सत्यवादी और उच्च कोटि स्वभाव वाले, शुद्ध सतो गुणी और सद्रहस्य युक्त हैं। उन्हीं को सर्व नर शरीर धारिओं से श्रेष्ट उत्तम राजा रूप जानिये, यों तो वही जीव को सर्व जीवों में भाग्यवान वा सराहने योग्य हैं, ऐसा जानिये। फिर तो वो सब मनुष्य के बीच में शुभ गुण संयुक्त होने से सुभाय-मान राजा के रूप ही हैं।

और जो इन सबों के बाद रजो गुण स्वभाव के नर जीव हैं। वही २ मनुष्यों को जानिये कि

बैल, गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, ऊँट आदि के तुल्य हैं। यानी रजगुण संयुक्त सर्व नर नारियों को पुर्ब कहे अनुसार ही जानिये। और इनसे भिन्न जो२ प्राणी तमोगुण के संयुक्त हैं। उनको जानिये कि सिंह, भालू, बाघ बीग, चितवा, रीछ, सियार, लोमड़ी, कुत्ता, बिल्ली आदि के ही रूप बने हैं। ऐसा ये त्रिगुणमयी सर्व नर नारियों का रूप, रेखा वा साज, पोशाग, जानना चाहिये। और दर्शल रूप में ऐसे हैं भी, और हो ही रहा है। यहां स्वयं प्रत्यक्ष हीं आप जान या समझ बूझ लीजीये। यों तो सही२ हाल हजूर ही देख लीजीये, बहुत कहना ही क्या है।

और अब यहाँ सर्ब जानक नाम के ज्ञाता कहिये, उनको जो सर्बहूँ के जनईया या सर्ब के ज्ञान करने वाले, परम पारखी श्री सद्गुरुदेव ही हैं। जो कि सर्ब वेद, सास्त्र, पुराण, कुराण, बाईबिल आदिकों को और भी समस्त पिन्ड, ब्रह्मॉड, खानी, बानी के सर्ब तर तमाशे और खेलों

को जान कर सबसे पृथक हो गयें हैं। सर्व जानन हार, उन्ही पारखी श्री सद्गुरु देव का नाम, सर्व जानक ज्ञाता है। यों तो सबके जनईया श्रीगुरुदेव जी, इस सर्व तमाशे रूप संसार के सब खेल को जान बूझकर और उसे त्याग कर अलगी ही रहा करते हैं। यद्यपि सबके देखने में वे इस संसार ही में हैं और सबों के सदृष्य मालूम भी पड़ते हैं।

परन्तु उन विवेकवान पुरुष का, रहनी, रहस्य इन सर्व नर नारियों से बिलक्षण ही है। यानी देखने मात्र के लिये तो इस जगत में ही हैं, लेकिन वास्तव में तो वे इन संसारियो से बिलकुल निरा-निर, भिन्न ही भिन्न हैं। फिर तो इस संसार तमाशा को जान कर या समझ कर, औ परिक्षा करके और परखर कर त्यागते हुए हर क्षण सजग, सावधान, शांति होकर सबसे अलग ही रहा करते हैं। वे महा पुरुष इस समस्त असार, संसार का सकल आशा-भरोसा और चाहना, कामनावों को अपने अन्तः करण से बिलकुल सर्वथा त्याग कर,

जीवन मुक्त दशा में हर हमेशा तल्लीन व तत्पर रह कर, जीवन बिताते ह।

यानी इस संसार में रहते हुए भी वे पुरुष, अपने स्वरूप में निराधार स्वयं मुक्त रूप ही हैं। इस प्रकार वे सर्व जानक नाम से श्री गुरुदेव प्रत्यक्ष दर्शित हो रहे हैं। परन्तु हाँ अब यहाँ कोई भी प्राणी अगर इस संसार रूप तमाशे का भेद व मर्म जानना चाहैं और निर्मानी हो नम्रता युत उन श्री पारखी गुरुवर जी के सन्मुख आ जायँ, औ गर्जी बन कर जाच बूझै तो इस समस्त संसार के भेद को खोल कर अवश्य ही श्री गुरुदेव दिखला देंगे। यानी सकल पर्दा को सहज से सरलता में दर्शाय कर बता देंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है।

फांसला-यहाँ तक दृष्टांत सिधान्त सुनाते हुए, वो संत पूछने लगे, कहो भाईयों अब तो खुलाशा २ सब बात मालुम ही हो गई, होगी। सन्त के मुखारबिन्द से यह सब निर्णय बचनामृत

सुनकर, वह मनुष्य संत के चरणों पर अपने शीश को धरते हुए हाथ जोर कर कहने लगा। धन्य २ हे गुरु सन्त प्रभू, आपके कृपासे, अब हमारा शंका नष्ट हो गया। और अब यह पक्का २ निश्चय हो गया, कि यह अमर चेतन जीव स्वयं आप कर्म करता है, औ स्वयं आप ही उस कर्म का फल भी भोगता है। धन्य २ हे दीनानाथ, दयाल गुरु सन्त, बिना आपके, यह सांचा निर्णय कौन सुझावै-बुझावे—अहो मैं कितने भ्रम भूल में माता था, कि कुछ सच्चा २ निर्णय भी नहीं समझ पाता था। परन्तु हे कृपासागर, धन्य २ आपके दया दृष्टी का फल है, कि हम अज्ञानी को भी कुछ सूझ बूझ होगया। इतना कहकर वह मनुष्य, और सब श्रोताजन हाथ जोड़ कर नम्रतासे कहने लगे, हे दीनबन्धु स्वामी, सन्त सरकार, धन्य २ आज आप कैसा अमृत बचन का प्रकाश कर दिये हो। कि जिसको सुनकर हम सबों का अज्ञान कि भर्म पर्दा फट रहा है। अब कृपा करके, कुछ

और अमृत ज्ञान व शांति चरचा सुनाईये। और हम सबोंके अंतःकरणके भ्रमोंको नष्टकर दीजीये। सबकी इस प्रकार अरजी कि वचन सुनकर, सन्त बोले हे भाईयों हम सबोंको यह अमुल्य परम उत्तम चैतन्य मनुष्य का चोला जो मिला है। सो इस दुःख रूप संसार महा भयानक से पार होने ही के लिये है। कुछ ऐसा नहीं करने के लिये मिला है, कि संसारिक भोगों, और मन इन्द्रियों के सुखों में लोलुपी बनकर, जीवन नष्ट, भ्रष्ट किया जाय

परन्तु ऐसे जीव बहुत ही कम-कम है, जो कि इस संसार के सर्व भेदों को जानना चाहते हों। क्योंकि सब लोग तो उसी संसार के तमाशे में ही अलमस्त हो रहे हैं। यानी इस संसारिक भोगों में लीन हो, समस्त युवक, युवतियाँ एक मेक परस्पर काम क्रीड़ा ही के करने में अपना जीवन नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं। उन्हें तो इन्द्रियों के भोगों के भोगने के आगे और कुछ जंचता व सूझता ही नही। तो फिर क्या हो, जब कि वे

सब जीव नाना फैसनों में, या नाना अमल खोरियों में और हर एक प्रकार के गपाष्टक बाजियों में, यों तो तरह२ के चमक, दमक, राजस, तामस, आदि के शृंगारों में, औ भांति-भांति इन्द्रि मन चलित के अनन्त सुख भोगों ही में आसक्त होकर, फट फटाते फँसे पड़े हैं और अपना अपना अमुल्य जीवन नष्ट कर बरबाद कर रहे हैं।

फिर तो हे भाई ऐसे अनारी लोगों को क्या कहना सुनना है जब कि मन मानी भोगों ही में झुलस झुलस कर जल बल रहे हैं। अरे भाई जब इन लोगों को, बिचार मान सद्गुरु संतों के तनिक पास जाना और उनका सत्संग अमृत निर्णय बचन सुनना ही जहर का प्याला हो गया है, और उनके पास उठना बैठना तो मानो महान पातक लग जाने के समान ही मालुम पड़ रहा है। तो अब क्या किया जाय ? कौन उपाय, कौन युक्ती, कौन तरकीब, क्या कैसे, कौन भांति किया जाय।

अरे भाई बड़ी मुश्किल की बात तो यह है, कि ये सब जितना भडुँवों पतुरियों के गाने बजाने को सुनने में प्रेम उत्साह और खुशियाली मनाते हैं, उसका बीसवां अँश भी तो साधु गुरु के सत्-संग में नहीं आते जाते हैं। तब भला सच्ची सुख शांति की दृष्टि कैसे प्राप्त हो। क्यों कि जैसी कीजै संग, वैसी लागै रंग, अब जैसी लागे रंग, तैसी उपजै अंग, तो जैसी उपजै अंग, तैसी फल दशंग। इस प्रकार से जब इनका संग ही क्रूर का है, तो कैसे पूर अमर पद मिलै। इसलिये हे मेरे प्रिये मित्रजन प्रथमे साधु गुरु का जरा सत्संग तो कीजिये, जिससे कि यथार्थ बुद्धि तो प्राप्त हो जाय। और अपने असली अविनाशी शुद्ध स्वरूप का पता तो हो जाय। ये भूल भ्रम में अमुल्य अपनी जीवन क्यों वाहियात बिगो रहे हो।

अरे भाय जरा उठो श्री गुरु सत्संग चमन में तो आ जाओ। और सर्व दुख हारक, अमर पारख बूटी तो खा जावो। अहो अफसोस कि बात तो

यह है कि आप ऐसे श्रेष्ठ हंस होकर बकुला हो रहे हो। कुछ तो जरा अपने अमर चैतन्य पद का होश हवाश करो। क्यों ये भूल भुलक्कड़ में जकड़े जा रहे हो।

पर क्या हो कुसंग करने के नाते से, हितय कर बचन भी कडुई सी,लग रही है। क्योंकि सब जोवों का जो बुद्धी है, वह उल्टी हो रही है। कारण–कि सांचे गुरु संत से वे सदा दूर ही रहा करते हैं। इसलिये वे इसी संसारिक भोगों में ही सर्व सुख शांति मान कर रात दिन उसी में रमण करते हैं। अब इन भोगों के आगे,कौन इस संसार का मर्भ भेद जानना चाहता है। अहो ? हाय–परम हितैसी श्री सद्गुरु को भूल कर? सब उसी खानी. बानो, रूपी, काला नाग के जहर से सब अतियँत पीड़ित हो २ के,तड़फ २ कर मर रहे हैं।

एवं इसी खानी बानी के अन्दर में,सब बड़े बड़े घायल हो रहे हैं। जैसे कि छोटे, बड़े,राजा,बाबू, हाकिम, हुकुम,डिप्टी,कलक्टर,जज, आदि बादशाह

से लेकर भिच्छुक तक, इस खानी में जकड़े हैं। और बड़े २ ज्ञानी, विज्ञानी, योगी, जंगम, सेवड़ा, दरवेश, उदासी सन्यासी, आदि सब इसी बानी में जकड़े रो रहे हैं। अहो ?

एक सांचे पारख दाता श्री सद्गुरु सन्त को छोड़ कर, बाकी सब इस खानि बानि के जालोंमें भूल २ कर, जग्त, ब्रह्म, तक घूम २ कर, चक्कर काट रहे हैं। महा भयंकर इस के, विषधर सर्पों के विष में माते पड़े हैं। हाय ? हम सबों को ऐसा विकट दुःख होने का क्या कारण है। तो शोधने पर यही मालुम हो रहा है, कि हम सब, उन परम प्रियतम प्यारे पारखी सद्गुरू से बिमुख हो, हम आप, अपने २ अमर पारख स्वस्वरूप से पतित होकर, अलग ही फंसकर फट फटा रहे हैं। औ नाना प्रकार कि दुर्गती हो रही है।

परन्तु हे हमारे प्यारे भाईयों, जरा हम आप अपने २ दिलके अन्दर में सोचें विचारें तो सही। हे भाय जन हम सब अमर, अखंड, अबिनाशी,

होकर भी अनादि काल से इस संसार के खेल तमाशों में, भूल २ कर, औ अरुझ २ कर, इस जनम, मरण, चार खानी, चौरासी लाख योनियों में चक्र काटते काटते आ रहे हैं। यों तो अनन्त काल से इस मनोमय जग्त में, पड़कर, दुख ही दुख भोगा गया है। परन्तु आज अभी तक यह दुसह दारुण दुःख छुटा नहीं। बल्कि, जितनै जितना, सुख भोग भोगा गया, उतनै उतना दुगुना, प्रचंड दुख ज्वाला, और और बढ़तै ही गया। अहो हम सबों में महा भूल है, अफसोस २ अफसोस है।

परन्तु हे मित्र जन, अगर आज इस अनमोल मनुज शरीर में, हम सब, सच्चे बिचारमान, श्री पारखी सद्गुरु संतों के सतसंग में श्रधा, भाव, से चलकर के, और निर्णययुत सत्य, असत्य, बन्ध, (मोक्ष), का, पूरा २ हाल जानकर, औ बासना, कामना, आदि को त्याग कर, अपना (मोक्ष) ठहराव नहीं बनाय लेयँगे, तो फिर इसी संसार रहट चक्कर में पड़े पड़े, जन्मों जनम, महान भयँकर

पीड़ा को भोगा ही करेंगे। फिर तो कभी भी, इस दुसह दुख से छुटकारा नहीं होगा। इसलिये हे प्यारे, हमारे भाईयों, आज अभी इसी, मनुष शरीर में चेत कर, सर्वोपरि, सर्व शिर मौर, परम पारखी श्री सद्गुरू के चरण, शरण, होकर हर हमेशा, तन, मन, बचन, जी जान से सच्चाई के साथ उनका सेवा, भक्ती, सद्उपासना करके सच्चा सच्चा जड़, चेतन, असल, नकल, बन्ध, मोक्ष का पारख करके और सर्व-जगत, ब्रह्म, मन, इन्द्रियों को परख परख अपनी पारख पद पर गम्भीरता से ठहर जाइये, बस तो फिर आप स्वबश स्वतन्त्र होकर मुक्ति पद में शांतिपूर्बक बिराजिये।

देखो हे भाइयों अबकी इस नर शरीर में खूब अच्छा मौका मिल गया है। और जीवन मुक्त पारख दाता श्री सद्गुरु भी प्रत्यक्ष ही बिराजमान हैं, और हम सबको मुक्त होने कि सब साधन सामग्री भी मौजूद है। अब ऐसी परम शुभ अवसर में शिघ्रता शीघ्र श्री गुरु सन्त, चरण शरण

हो, जनम-जनमों का बिकट यम यातना संकट से अपने को छुड़ा लीजिये। अरे हे भ्रातावों जरा विचार करो कि श्री पारखी सद्गुरु देव से बिमुख होकर के हम सब अनादिकाल से, इस जनम मरण महा घोर संकट में पड़े हैं। अब आज ऐसी बांकी अमुल्य औसर में चूक जाओगे, तो फिर आगे यह दुख छूटने का नहीं ? और वर्तमान में जो पारखी श्री सद्गुरु हैं, इन्हें छोड़कर और दूसरा कोई इस महान् संसार समुद्र से पार भी नहीं कर सकता है।

एवं ऐसा दृढ़ पक्का निश्चय जानकर, सांचे श्री गुरु सन्त के प्रेम, भक्ती में लगकर इस संसार सागर से पार हो जाओ। हे प्यारे स्वयं सत्य दृष्टि से देखो कि जिस खानी, बानी, में सूखासक्ती मान कर अभी पड़े हो। देखो उसमें कौन, कहां कब सुखी हुआ है। अरे आगे जो बड़े २ राजे महाराजे, इस धरणी पर हो गये, वे भी तो पल मात्र शांति सुख का भुमिका नहीं पाये। और आज भी जो बड़े २ महिपति, या कोई भी जो

खानी बानी चहले में गिरे हैं, वा गिरते जा रहे हैं, वे बेचारे कहां शांति-पद हासिल किये वा कैसे पायेंगे। भला कोई चाहे कि हम समुन्दर के बीच धारा में कूद कर शांति स्थिर रहें, तो यह कैसे हो सकता है? न-न कदापि नहीं हो सकता है।

इसी प्रकार यह खानी बानी ही महा भयँकर समन्द्र कि अथाह धारा है। अब इस में यदि कोई चाहे कि हम शांति सुखी हो जायँ, तो भला कैसे हो सकते हैं। इसलिए हे प्यारे भाईयो अब समस्त स्त्री, पुत्र, धन, दौलत, कुल, कुटुम्ब, नाता, गोता, राज, काज, जगह, जिमदारी, कोठा, भरोठा, महल, अटारी आदि और ईस्वर, ब्रम्ह, भूत, प्रेत, देवी, देवता, काली, कोटही, डिउहार, मरी, मशान, चुड़ैल, जिन्नाद, आदि ये सर्व, भ्रम भूल को, श्री सद्गुरु सत्संग से, परखर कर त्याग कर दो और अमर पद में डट जावो। यानी अपने अमर चैतन्य स्वरूप के बाद पुर्वोक्त, सब नाश चणभंगुर छुटने ही वाले हैं। ताते सर्ब दुसह दुःखों से बचने के

लिये और जनम मरण सर्व दुख द्वन्दों से रहित होने के लिये। समस्त* पिन्ड, ब्रह्माँड का आशा, भरोशा, इच्छा, चाहना, कामना आदि को त्याग कर श्री सद्गुरु सन्त का यक मात्र सहारा पकड़ो।

और सब संसार को असार जानकर, तिसकी आसक्ती छोड़ दो। जिससे अखँड, अमर, मुक्ती पारख, धाम में अमनः चैन से, बिराजमान हो जावो। जहाँ दुःख-सुख का लेश नहीं है।—अहो उस समय का हाल क्या कहना है—

थ था थीर हुआपारख में, पीरमिटा भवसागरका।
अमरअमरपद मिलाआजबश,चेतनसारउजागरका॥
आना जाना कहीं नहींहै, आप आप में रहना है।
परखिपरखि मनथीर स्वयंहो, मुक्तिस्वतःपदगहनाहै१

---

* यहाँ समस्त का त्याग. मुक्ति इच्छुक के लिये ही कहा गया है और सद्गृहस्त, भक्त, सज्जनों को तो इसी में भलाई है, कि साँचे सद्गुरु के चरण, शरण होकर तन, मन, धन, जी जान से, सेवा सम्मान करके जीवन सुफल करना चाहिये। हाँ मिथ्या मत, पन्थ, भ्रम भूलों को त्यागना तो परम आवश्यक है।

इस प्रकार श्री गुरुदेव के सत्य सार शब्द, पारख ज्ञान बल से, सम्पुर्ण इस जगत बन्धनों को तोड़ कर निज स्वरूप ही में नित्य शांति पूर्वक, मुक्त हो रहना चाहिये ।

सम्बन्ध

यदपि सब व्यक्ति स्वतः पद के इच्छुक हैं । और उनका शांति स्वतः स्वरूप ही है—परंतु क्या हो आप आपने ही पद से गिर कर, और का और ही कुछ कर रहे हैं-इसी से तो माया जाल की आवरण में आप खिचने से ही, नाना बाद-बिबाद तर्क-कुतर्क करते रहते हो, और अपने सत्य स्वरूप पर भी पर्दा डालते रहते हो ।

इसलिये अब आप शिघ्र ही सावधान होवो, देखो—

हे मेरे प्रिय प्राण भाविक आप हित शिक्षा कही ।
मानो हे मानो मानलो सांचा असल शिक्षा यही ॥

॥ हरी गीत छन्द ॥

कुछ सार जब गहना नहीं बातोंसे तब क्याफायदा ।टेक।
बिद्या मदों में चूर हो मगरूर जो रहते सदा ।
गुरु संत भक्ति से दूर हो नित क्रूर पन गहते सदा ॥
तब मात्र बातों के बड़ा बनने से कुछ पा जायगा ।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा ।१।

चार बेदों को पढ़े छः शास्त्र के ज्ञाता हुए।
नौ व्याकरण चौदा अठारा पढ़ि के विख्याता हुए॥
सद्गुन रहनि औ भक्ति बिन बनि काग बिष्टा खायगा।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा।२।
बांचै महाभारत पुराणों का कथा खुब जानते।
बनते बड़ा सबसे रहे मन में भरे अभिमानते॥
सच्चे मनुष्य के गुण बिना कुत्ता हो ठोकर खायगा।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा।३।
बात बातों का अरथ करने में खुब हुशियार हैं।
करके बितन्डा बाद हार वो जीत में तद्कार है॥
पर संत गुरु के सेव बिन त्रय खानियों में जायगा।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा।४।
अपने चतुरई शान से नहिं दूसरे को कुछ गने।
सच्चे को भी नीचा दिखा अभिमान से ऊँचा बने॥
पर मोह मदिरा में पड़ा अभिमान सब ढहि जायगा।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा।५।
दस बीस के मालिक बने औ पर्टी बन्दी किये।
बेभिचार अत्याचार करि अंतःकरण गन्दी किये॥
उनको जिता उनको हरा अइसे में उम्र गवांयगा।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा।६।

पूजा फरचई भी रखो औ मास मछरी को भखो।
जिभ्भा के अपने स्वाद बस बहु जीव की हड्डी चखो॥
तब क्या बड़प्पा है भला सूअर औ गिद्ध में जायगा।
कुछ सार जब गहना नहीं बातों से तब क्या फायदा।७।
बनते हो ठीकेदार महतो घोड़ असवारी करो।
पर मा बहन त्रिया आदि साथमें जाय व्यभिचारी करो॥
मन में सदा जो फूलते वह गर्भ काम न आयगा।
नाना नर्क के योनि में दुख भोगि के पछतायगा।८।
खेत औ खरिहान धन माकान में जो फूलते।
ऊँची पदवी पाय के बहु दीन जीव को हूलते॥
आखिर में एक दिन नारि धन धाम सब छुटि जायगा।
छलबल जबरियन जो किहो सोताहिफलदुखपायगा।९।
जातियों में ऊंच हो प्रभुता भी फैली हो अगर।
गुरु संत का सेवा धर्म भक्ती नहीं कीन्हा मगर॥
तब नाब दाना काड़ से भी नीच गति को पावगे।
गुरुकेविमुखका फल यही ठोकरको सहि चिल्लावगे।१०।
गुमान करि जो संत सज्जन भक्त का निन्दा करे।
कामग्नि गर्भाग्नि के औ आंच में जा जा जरे॥
उसको भला संसार भर में को बचावन हार है।
संत बिमुख क फल यही वह नित बहे भवधार है।११।

विद्या औ बुद्धि सब चतुरई तब सुफल है जानिये।
सारा घमंड को छोड़ि कर जब संत सेवा ठानिये॥
गुरु संत सतसंगत गहै गुरु साधु से रहता वो नम।
यह रत्न लक्षण जिनमें नहिं राछछ अघोरी से न कम १२।
गुरु साधु के बचनों पे जिसका नहिं जरा सा ध्यान है।
ऐसे मनुष्य का स्यार बिल्ली कूकुरे सम ज्ञान है॥
व चारखानी खन्दकों में गिर सदा बिललायगे।
गुरु भक्ति बिमुख क फल इहै कब्बो नहीं सुख पायगे १३।
चह राजशाही बादशाही भोग सकलो भोगिये।
मोटर वो लारी गज सवारी में सकल दिन खो दिये॥
उम्र सारी ढहि गया पर चाहना चौगुन हुआ।
भक्ती धर्म रंचक नहीं जीवन में सब औगुन हुआ।१३।
नरी पियारी के रमन में सब जनम भर बित गया।
वहि पाप की सब बासना अंतःकरण में लिख गया॥
तनत्यागि के वहि पाप बस दुख नर्क नाना खावता।
गुरुपद बिमुखका फल यही नर्कोमे ठौर न पावता॥१५॥
गुरु संत से होकर बिमुख पद सांच मिल सक्ता नहीं।
उनसे कोई जो मद करै तो बात है अच्छा नहीं॥
क्यों की गुरू औ साधु बिना सत मार्ग पाना है कठिन।
सतमार्ग बिन इसजीव को जग पार जाना है कठिन १६

जग पार होने के लिये गुरु पारखी का सर्ण लो।
यदि जग्त सुख की चाहना तो भी गहौ गुरु चरण को॥
क्यों की सुखों का साज भी गुरु सेव बिन पावो नहीं।
किमि खेत मे पैदा मिलै जो बीज बोवावो नहीं ॥१७॥
तिमि बीज जानो धर्म भक्ती पैदा सुख का साज है।
आगे है सुख को पावना भक्ती धर्म कर आज है॥
जो आज सब सुख मिल रहा पूर्व धर्म भक्ती क फल।
भक्ती धर्म से अब चुको आगे क सुख होगा कुफल ।१८॥
इस हेतु से हे मित्र आवो धर्म भक्ती क्षेत्र में।
तन मन बचन जी जान श्रधा भाव कर गुरु श्रेष्ट में॥
ऐसा मव्वका पाय के देरी तो है करना नहीं।
परमार्थ रूपी क्षेत्र मे हे भाय ऊतरना चही॥ १९॥
जो दिल्लगी मे दिन गया सब भूल वा अज्ञान से।
उठ होस हो जल्दी करो भक्ती धर्म जी जान से॥
संत शरण औसर आज अच्छा लेव कर तो अपना।
औसर गये फिर ना बनै पावो बहुत तब सासना॥२०॥
सब नाश क्षण भंगुर दुखद भक्ती धर्मसुख साथ है।
भक्ती धर्म सुख साथ बिन आखिर पड़ै दुख माथ है॥
सो दुख निवारण कै लिये तूं संत गुरु मे प्रेम कर।
खर्चा समय तन मन वो धनसे संत सेवन नेम कर॥२१॥

कादर हरैला ना बनो संतों से मुख ना फेरिये।
क्योंकी भवन सुखसंत हैं तिनकी चरण नित हेरिये॥
जो फेरते मुखसंत से तिनको न सुखकोइ भांति हो।
जो हेरते गुरुसंत को तेहिसःख है औ शांति हो॥२२॥
यस जानि के नर नारि सब भक्ती गुरू की धारिये।
दुख सुःख दोनो पाय गुरुकी भक्ति ना बीसारिये॥
भक्ती हरइया दुःख को सुख की देवइया भक्ति है।
इस हेतुसब भक्तिकरो तनमन बचनदेशक्ति है॥२३॥
पर भक्ति करते भी हुये हंकार मन लावो नहीं।
निर्मान से भक्ती करो तो मोत्त पद पावो सही॥
दाया छमा सब जीव पर आमान हो भक्ती करो।
यह ध्येय ना छूटै कभी शरिरांत तक शक्ती धरो॥२४॥
कोई से कहना होय कुछ तो नम्र मीठा बैन हो।
अनमोल रहनी हंस का यह नित रहो गुरु ऐन हो॥
हंकार गर्भीला बचन नहिं भूलि कर बोलो कभी।
निंदा लड़ाई ना झगड़ दुख मोटरी खोलो कभी।२५।
आपस में सब मिलकर रहो गुरु भक्ति गुरु का कीजिये।
सद्गुरु को ईश्वर जान पूजा सदगुरू का कीजिये॥
गुरुदेव ईश्वर हैं सही दुख से छुड़ा मुक्ती दिये।
जग सिंधु तरने के लिये गुरुवर बड़ा युक्ती किये।२६।

सारा जनम का दुःख सद्‌गुरु आज हर लेते हैं सब।
युग २ अनादी काल हित सुख साज भर देते हैं सब ॥
हे मूढ़ जिव भूलै जो गुरु को तो बहुत दुख पायगा।
पल २ गुरूका नाम भज जिससे सुखी हो जायगा।२७।

और शांति होने के लिये इस यथेष्ट बचन का मनन कीजिये।

॥ गजल ॥१॥

ए तन यक दिन भस्म होगा, न कुछ इसकी भरोसा कर।
बनाये निज कर्म होगा, न कोई की भरोसा कर ॥टेक॥
कहां तूं फूलता मन में, कहां तूं भूलता जन में।
ये मन के सब अहै धोखा, गुरू का ज्ञान होखा कर १।
कहां फँसता है लोगों में, कहां पचता है भोगों में
ये तेरे शिर कि है बोझा, जरा अपने मे जोखा कर २
बहुत क्या ठाट ठटता है, ये तन सज धजके डटता है।
नशैंगे ये घड़ी पल में, सभी ज्यों बुन्द ओसा कर ॥३
ये जवानी काल के मुख में, इसे क्यों जानता सुखमें।
चन्द दिन में बदल होगा, चहे दिन रैन पोषाकर ॥४
दृश्य सन्मुख जो होते हैं, सभी पल में वो खोते हैं।
नहीं उसमें तु ओझा कर, पृथक निजको समूझाकर ५
अगर है मोक्ष का कॉछा, हृदय से छोड़ सब बॉछा।

बिषय पांचों खतम होगा, जो निजको नित्य तोषाकर ६
त्याग सब बासना प्यारे, शोध निज रूप अपना रे।
न उल्झन तब कोई होगा, मनन गुरु ज्ञान चोखाकर ७
न भूलो राग-द्वैषों में, न अरुझो मान जोशों में।
कामना सबशमनहोगा, जो निशदिननिजको होसाकर ८
वृथा के बोल ठोली में, फंसो ना अति कुबोली में।
तभी दिल में चमन होगा, जोनिजपदशाँति सोचा कर ९
न कर झगड़ा लड़ाई तूं, न कर कुकर्म बढ़ाई तूं।
परखमें नित रमन होगा, निकाला तन कि दोषाकर १०
न वृत्ती दूर फयलावो, परखि के थीर हो जावो।
जाय एकाँत तजि बोझा, परिच्छा अपनी शोधा कर ११
तजो सब दृश्य की आशा, लखो तब मुक्ति की बाशा।
निराला सबसे तब होगा, लखो बल जीव जोधाकर १२
कहनि कब्बीर गुरुवर की, गहनि तद्बीर गुरुवर की।
परखि थिरता रहनिहोगा, जो मनको नित गरोसा कर १३
संत शर्ण छोड़ जग रहिया, गुरू पारख कि मग गहिया
न जगमें आन फिर होगा, प्रबल बैराग्य बोधाकर १४

॥ चेतावनी भजन ॥

मोरि मान कही, मरख गवांर, मानुष जन्म नहिं बारबार
तज कामक्रोधतृष्णाअपार, अबपरखिदेखुटकसारसार

दुखरूप सकलयहहै प्रपंच, नहितौनकाम सुखजानुरंच
ताते तजुयहसबलखि असार,पद्परखिदेखुटकसारसार
वर्णाश्रमकोअभिमान धार, नहिकरत आत्माकोबिचार
यहिमलअवधिकोहै विकार, पद्परखि देखुटकसारसार
तन से चैतन्य निराला है, सब स्वयं परखने वाला है
वहि जाप जपे भवपार पार, अबपरखि देखु टकसारसार
तनकी अहँ ना करो कोय,जड़ चार तत्व की पिंड खोय
इनसे चैतन अमृत रहार,पद् परखि देखु टकसारसार
यहलोक लाज मर्यादफन्द,तजिकर्म धर्मसबहो स्वच्छन्द
नित्यअनित्यको करुबिचार, पद्परखि देखुटकसारसार
सुतमातुपिता त्रियाअनूप, सतिसुखीहोय लखि मूढ़भूप
ये स्वार्थके हैं दिना चार, पद परखि देखु टकसारसार
जिस रंग पतंगका नाशमान,तिमि यौवनको तू लेव जान
नहिं बिगरत लागततनिकबार,पद्परखिदेखुटकसारसार
बड़बड़े भयेसब गये बीत, हम सबको जाना है ये मीत
अबपारख गुरुसे लो सुधार,पद्परखि देखु टकसारसार
सतगुरु कबीर गुणगणगंभीर, दुखहरणहेतु धन्योशरीर
निर्दोह मोह दमनं बिकार, पद्परखि देखु टकसारसार
निज पारख पदमें हैं जो थीर,प्रत्यच्च रूप वो हैं कबीर
तेहि सेय लेवपद निर्बकार,पद्परखि देखु टकसारसार

॥ दोहा ॥

जीव बड़ा गुरु भजन कर, द्रव्य बड़ा कुछ देहि।
ज्ञान बड़ा उपदेश कर, जीवन का फल येहि ॥१॥

॥ चेतावनी ॥ भजन ३ ॥

त्यागो जगत कि आशा, सद्गुरु शरण में आओ।
यह जगत काल फांसा, इसको परखि हटाओ ॥टेक॥
भूले युगन युगन से, सुख ना लहे भोगन से।
जरिजरि गरभ के आंचा, काहेंको दुख उठाओ ॥१॥
औसर मिला है अबहीं, चेहो हे मित्र अजहीं।
नर तन गये न आता, ताते न अब भुलाओ ॥२॥
भूलो न भोग मग में, सद्गुण गहो सुमग में।
अनमोल तन ये जाता, प्यारे न देर लाओ ॥३॥
सुत नारि प्रांन प्यारी, क्षण ही में नाशकारी।
तिन से करो जो नाता, फल याहि दुखमें जाओ ॥४॥
इससे फरक हो प्यारे, निज काज को बनारे।
क्यों ब्यर्थ दिन बिताता, जल्दी इधर हो आओ ॥५॥
हाथी औ घोड़ राजा, जित भोग सुखको साजा।
पल में नशाय जाता, दिल से तिसे हटाओ ॥६॥
पक्का महल मकाना, धन से भरा खजाना।
खाली हि हाथ जाता, भक्ती धर्म कमाओ ॥७॥

गुरु ज्ञान यान चढ़कर, गुरु के शरण में रहकर।
जन्मरण काल गांसा, तिसको परखि बहाओ ॥८॥
गुरुदेव बिन सहारा, दूजा न जग मझारा।
संत शरण तिनसे नाता, करि मुक्तिपदको पाओ ॥९॥
परदेश में न रहना, दिन एक सबको चलना।
तन खोय के बेहाथा, काहे वृथा गवाँओ ॥१०॥

॥ शब्द विनय ४ ॥

हे सन्त गुरू दुख हर लीजै, यक दुखिया को सुखकर दीजै ॥टेक॥ जगमें जितने तन धारी हैं, स्वार्थ बस करते यारी हैं। उनमें न भुलूँ यह बरदीजै ॥हे सन्त०॥१॥ भ्राता सुत नारी मात पिता, सग्गा ससुरारी नात जिता। मम फांस हैं तिनसे किन्नर कीजै ॥हेसन्त०॥२॥ इनमें फँस कर दुख पाया हूँ, इससे यह अर्ज लगाया हूँ। हम दीन कि नाथ गुजर कीजै ॥हेसन्त०॥३॥ प्रभू आप हो दुख हरने वाले, सुख शांति में हो करने वाले। मोहिं जानि गरीब नजर कीजै ॥हेसन्त०॥४॥ तुम बन्द नशावन वाले हो, तुम फन्द प्रखावन वाले हो। मम बन्द औ फंद नसर दीजै ॥हेसन्त०॥५॥ हे सन्त गुरू आपी के चरण,

आकर के पड़ा यह सन्त शरण। इसको पद शांति अमर दीजै ॥हेसन्त०॥६॥ सब ओर कि चाह मिटा गुरुवर, अब आप कि राह मिला गुरुवर। दुखिया लखि करके बसर कीजै ॥हेसन्त०॥७॥

॥ शब्द ५॥

जगत में गुरु सम कवन कृपाल ।
पारख पद परखाय मेटेऽयो सकल भ्रमजाल ॥टेक॥
जरत जेहि बशि सुर असुर नर, प्रबल माया जाल ।
बर्सि अमृत ज्ञान घन प्रभु, दीन दलि मलि टाल ॥१॥
द्रोह मोह अपार तृष्णा, धार अति बिकराल ।
बहत जीवन पार कीन्ह्यों, मेटि सब जंजाल ॥२॥
दलन दल दारुण दुसह दुख, दीन बन्धु दयाल ।
चरण रज गहि अमर अज रहि, नशत सर्व बवाल ॥३॥
ध्यान सुन्दर मृदुल मुद मय, अघ हरण ततकाल ।
भव समुन्दर कबीर तारन, गुरु हो सेत बिशाल ॥४॥
जगत मध्य न अवर दर्शत, जो करै प्रति पाल ।
ताहि ते तव चरण रज बिच, बार बार सवाल ॥५॥
अँतिमो यहि अर्ज गुरुवर, शक्ति देहु कराल ।
तोड़ि मोह मनोज सकलौं, ठहरि परखि अजाल ॥६॥

❀ समाप्त ❀

॥ श्री पारखी गुरु संत स्तोत्रम् ॥

गुरुदयालम हौ निरालम, हंस चालम सोहितम् ।
प्रभु कृपालम हौ उजालम, संत पालम सोभितम् ॥ १ ॥
हौ उदारम दुख बिदारम, जिव उबारम होहितम् ।
मनकुँ टारम इन्द्रि मारम, भ्रम हारम सोधितम् ॥ २ ॥
संत रुपम हंस भूपम, फिर न कूपम भयावतम ।
हाँति नशतम शांति रहतम, काँत-काँत सुहावतम् ॥ ३ ॥
भ्रांति ढहतम क्राँति दहतम, हानि नहतम हौ बरम् ।
धीर गहतम बीर रहतम, थीर स्वयमम नित्यहम् ॥ ४ ॥
सत्यधरियम ब्रम्ह चरियम नितनिरन्तर धारतम् ।
छमागहियम शील रहियम, मदभिमाम जारतम् ॥ ५ ॥
अतं त्यागम हौ बिरागम, रंच रागम ना रमम् ।
बिषय पंचम क्रतम नष्टम, देंहध्यासम ना जमम् ॥ ६ ॥
संशयम सब जरम खाखम, पाप ताप बिनाशनम् ।
सबतरमतारम भवमपारम, छय बिकारम कारमम् ॥ ७ ॥
जयं बिजयम खानि बानिम, सर्ब द्वन्दम दूरिमम् ।
सकलं परखम स्वतः रहतम, नित्य २ निरन्तरम् ॥ ८ ॥
सर्बतः परखाव तम, निज स्वरूप चैतन्यम् ।
सोयँमअमरम परख रमनम, आप आपम हंसयम् ॥ ९ ॥

जगत मध्य मः, पार करतम गुरुवर्म ।
सकल सध्य मः, तार तरतम गुरुवर्म ॥ १० ॥
सकल दुर गुणाम, त्तार करतम गुरुवर्म् ।
अदल शुभ गुणाम, सार धरतम गुरुवर्म् ॥ ११ ॥
सर्बोपरम पार, परमेस्वरह सम् ।
सर्बोकरम कार, मोत्तेस्वरम सम् ॥ १२ ॥
सर्बोत्तमम तुम, समानम न कोयम् ।
जगतोमहम, सर्ब कूँ जाय टोयम् ॥ १३ ॥
पड़े अन्दरम, खानिबानिम मझारम् ।
गड़े खँदरम अन्धरम है हजारम् ॥ १४ ॥
नहीं सूझतम, निजस्वयं सत्य रूपम् ।
नहीं बूझतम, इंन परख ज्ञान ऊतम् ॥ १५ ॥
वही भाव तम, बेद सस्त्रम जो सूतम् ।
वहीं गावतम खेद, भ्रमम जो हूतम् ॥ १६ ॥
बणाम हो बणाम, कंम करतम कपूतम् ।
पणाम हो मणाम, बाम बोचम हो दूतम् ॥ १७ ॥
बने बंदरम फन्दरम, फन्द जातन् ।
हने हन्जरम, गर्भ आंचम सो आतम् ॥ १८ ॥
नहीं शुद्ध बुद्धम, न सुधि सार बातम् ।
नहीं सत्य उद्धम, निजै सार घातम् ॥ १९ ॥

न गुरु पारखम, सेवतम श्रद्ध सेतः ।
न सद्ग्रन्थन्म न्याय, दिखतम न धेतः ॥ २० ॥
यहं भूल किं, संत गुरुवम बिमुखम् ।
त्रियम ताप सहियम, अतं पाय दुखम् ॥ २१ ॥
गुरुवर नमों धन्य, चरणम तुम्हारेम् ।
गुरुवर नमों धन्य, शरणम तुम्हारेम् ॥ २२ ॥
गुरुवर दयम, द्रिष्ट तेरम तराणम् ।
गुरुवर हयम, पार केरम नराणम् ॥ २३ ॥
गुरुअम गुरू अम, हवम आप खाशम् ।
जुल मम जनम, मरणमम आप नाशम् ॥ २४ ॥
हरणम समस्तम, पिराणम करालम् ।
करणम परम मोच्च, अचलम निरालम् ॥ २५ ॥
सर्बम सुसोभम, स्त्र छाजम् स्त्र छाजम् ।
भर्मम भु भूलम भुं भाजम भुं भाजम् ॥ २६ ॥
हर मम कलेशम, परं हम चराणम् ।
अमरम स्त्रदेशम, न जन्मम मराणम् ॥ २७ ॥
शुभम श्रेष्टतम, सर्बोपम उच्च नामम् ।
पुर्म कर्न मम, जिव रहस्यम हमारम् ॥ २८ ॥
गुरु गुरुवर्म हो बर्म पद्द सुभाँगम् ।
अमलम मलम सँ से, रहितम सुहाँगम् ॥ २९ ॥

महंन दिंन्न दुखियम, हुँ हींनम पतीतम् ।
सकलम जनामम, यहम सम बेतीतम् ॥ ३० ॥
यकदम निक्कंमम, महंम पातिकम हम् ।
सबम नीचकम, नं कोई लाइकम हम् ॥ ३१ ॥
त्रिं लोक मध्यम, सहारम न दिखतम् ।
सबं बन्धमम, अन्ध तम सम्न दिखतम् ॥ ३२ ॥
इसं सं घुमम सर्बं सं तब्ब चरणम् ।
कर बंद्धतम बंद् तः, संत शरणम् ॥ ३३ ॥
गुरु साधु चरणम, बिनय बार बारम् ।
प्रभू आश चरणम, करौ पार पारम् ॥ ३४ ॥

॥ मुक्त जीव सत्य मनन ॥

जीव स्वच्छ मोक्ष है, जीव स्वच्छ मोक्ष है ।
जीव स्व अपरोक्ष है, जीव स्व अपरोक्ष है ॥ टेक॥
जीव २ हैं अनन्त, अन्त पार है नहीं ।
अजर अमर, अजर अमर, सत्यसार हैं सही ॥
पारख परतोक्ष हैं, पारख परतोक्ष हैं ॥१॥ जीव ॥
जीव बादि सब बिबादि, सत्य बाति है नहीं ।
जीव खास है प्रकाश, परख रास है सही ॥
निर्द्वन्द खुद सोक्ष है,निर्द्वन्द खुदसोक्ष है ॥२॥ जीव ॥

अजल अदह अवह आप, आप आप आप हैं।
अकट अघट अजह शांत,आप आप आप हैं ॥
स्वतः रहोत्त है, स्वतः रहोत्त है ॥३॥ जीव ॥
स्वयं सार स्वयं पार, स्वयम स्वतन्त्र है।
स्वयं आप स्वयं जाप, स्वयम स्वमन्त्र है ॥
सर्व से अपोत्त है, सर्व से अपोत्त है ॥४॥ जीव ॥
कल्पना अध्यास भास, गांस फांस है नहीं।
कामना वा चाह आह, कोई आश है नहीं ॥
दिव्य दिव्य ओत्त है,दिव्यदिव्यओत्त है ॥५॥ जीव ॥
सर्व भार से अभार, आप निराधार है।
सर्व पार* से अपार आप आप पार है ॥
पारख परोख है, पारख परोख है ॥६॥ जीव ॥
परख परख रूप है, परख परख रूप है।
स्वतः शान्ति भूप है, नहीं जगत कूप है ॥
सन्त शरण पाय जाहि,मुक्त २ होत्त है ॥ ७ ॥ जीव

सर्वोपरि मोत्तदाता पारखी सद्गुरुके कृपा द्रिष्टि से

सद् ग्रन्थ वैराग्य अमृत जीवन समाप्त।

---

* जगत, ब्रह्म।

॥ श्री सद्गुरु पारखी सन्त की आरती ॥

हे पारख दाता आपकी, आरती है आरती।
हे तारक दाता आपकी, आरती है आरती ॥ टेक ॥
जड़चेतनग्रान्थिअनादी है, तेहिभूलकिमूलप्रखादी है।
हे ग्रान्थि बिदारक आपकी, आरती है आरती ॥१॥
खानी बानी गढ़ भरी था, तेहिमे मैं बहुत दुखारी था।
हे दुख टारक आपकी, आरती है आरती ॥ २ ॥
तन मन माया मे मोहा था, अपने को करता सोहा था।
हे जलत उबारक आपकी, आरती है आरती ॥ ३ ॥
नरनारि जिते तनधारी हैं, मनबस हो सभी भिखारी हैं।
हे मन मारक आपकी, आरती है आरती ॥ ४ ॥
सत्यबिचार शील औ दाया, धीरज दे निजबीर बनाया।
हे दीन सम्हारक आपकी, आरती है आरती ॥ ५ ॥
गुरु मुक्तिदान के देवक हो, भवसिंधु धार से खेवक हो।
हे पार उतारक आपकी, आरती है आरती ॥ ६ ॥
देते हंसन की रहनी सब, खोते बन्धन की गहनी सब।
हे सत्य प्रचारक आपकी, आरती है आरती ॥ ७ ॥
सदगुरुकबीरकीध्येयअसल, हेदानबीरमोंहिंदीन सकल।
इससे हे उदारक आपकी, आरती है आरती ॥ ८ ॥
सबआशा पुरावनहारे हो, गुरुदेव नारायणप्यारे हो।
मम रहनि सुधारक आपकी, आरती है आरती ॥ ९ ॥

हमदीनन के गुरुरच्छकहो, हमलीननकेप्रभु सिच्छक हो।
दुःख द्वन्द्निवारक आपकी, आरती है आरती ॥ १० ॥
यक संतशरण है बालतेरा, दीजै दुख गुरुवरटाल मेरा।
हे पर्ण निबाहक आपकी, आरती है आरती ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

आरति गुरुवर देव की, करत सकल दुख छेव।
आरति आरनि आरती, करि सब आश पुरेव ॥ १ ॥
गुरु वर संत दयाल को, करौं आरती गान।
दीनन के प्रति पाल को, वारौं तन मन जान ॥ २ ॥
तव दाया की द्रिष्टि भौ, गौ सकलो दुख बीत*।
निज आशा अबपुर्ण भौ, चलौं येभवजल जीत ॥ ३ ॥
हुई दया सरकार की, मिटा सकल तकरार।
अचल अटल निज तख्तपर, जहां न द्खल परार ॥ ४ ॥
आन जाना मिट गया, पारख के परताप।
स्वतः ठिकान नितभया, दुख न लेश त्रय ताप ॥ ५ ॥

श्री गुरुदेव से कर बद्ध विनय—

गुरु लाज मेरी तब हाथ अहै, गुरु लाज मेरी तब हाथ अहै ॥टेक॥ हम भूलि अजान हुए बहुते, कहते न बने गुरुवर तुमते। निज काज को छोड़ि अकाज

---

* नष्ट भ्रष्ट हो गया।

फिरूँ, चरणों में तेरे मम माथ अहै ॥ मन इन्द्रिन के संग बेंचि गया, गर्भ अग्नि के अन्दर सेंकि गया। सब खानिके बीचमें ठेकि भया, पर अब तो परा तब हाथ अहे ॥२॥ अब करिये कृपा कि नजर गुरुवर, अब हरिये सगर दुख हे गुरुवर। अब आपको छोड़ि ठिकान कहाँ, प्रभु आय पड़ा तुम हाथ महैं ॥३॥ बहुदेखि लिया जगके अन्दर, सब नाचि रहे लटके बन्दर। जग ब्रम्ह में जाय सटे हैं मगर, पर सच्ची डगर से बे हाथ अहैं ॥४॥ यह संत शरण थ पड़ा वो गली, पर आप मिले भइ बात भली। अब तो दोउ खांच कि द्वन्द जली, धन्य२ तुम्हे गुरु नाथ अहै॥५॥ गुरुदेव नरायण धन्य तुझे, दुख बीच से काढ़ि लिये हो मुझे। अब तो हिये पारख ज्ञान सुझे, फिर से भव नाहिं ये तात बहे ॥६॥ लखि२ के हिये गुरु ज्ञान तेरा, चखि२ के गये लगि ध्यान मेरा। कहि२ के जिये अहसान तेरा, मुक्ती पथ पाय सनाथ अहे ॥७॥ अब करना नहीं कुछ कारज है, तेरे दर पे मिला सत कारड है। अब कोई से नहि कुछ गारज है, कब्बीर गुरू पथ माँहि रहैं ॥८॥

[खानि बानि की छूटी धार, श्री गुरुदेव कि जय२कार]

॥ फल रूप छन्द ॥

जो अमर चैतन्य अगणित औ अनन्त अपार हैं।
सोयम प्रकाशी ज्ञान राशी खुद स्वतः अबिकार हैं ॥
पांच तत्व बिजाति अलगै ताहि से नित पार हैं।
सद् परख रूपा यों अनूपा आप ही सरकार हैं ॥१॥
शांति निश्चल आप अबिचल सर्ब से आभार हैं।
जानैं सकल सब से अलग मुक्तै सदां निरधार हैं ॥
यहि नात खाशे कहि प्रकाशे सत्य निर्णय सार हैं।
धारै जो कोई भव न जोई आप आप सो पार हैं॥२॥
सब जन हितैषी राह ऐसी नाम कैसी सोभितम।
बैराग्य अमृत आप जीवन के सहायक होसिकम ॥
यह ग्रन्थ अमृत पंथ अमरै अमर ही परखावता।
सबदोषदुःख टलन्त भ्रम अनन्त भी दिखलावता॥३॥
यहि बार बार जो करि मनन नित शांतिर रहावता।
हृदय गहे अभ्यास युत भव बीच सो नहिंआवता ॥
इसको कहन कर जो गहन फिर सो न जगबिच आयगा।
यक रस सदैं धारण किहे सत्यैं अमर* होइजायगा॥
निष्ठा बढ़ै गुरु साधु में बैराग्य भक्ति कमायगा।
नित गाजते निज रूप में वह खुद स्वतः हो जायगा४

* अपने पारख स्वरूप मे, जन्मरण से रहित,

❁ चैतन्य अमर सार ❁

अहो भाय क्यों कर पड़े, त्यागि अभय सम्राज ।
गहौ आय क्यों कर न ये, साजि अहै पद राज ॥१

अहै शांति सुख पावना, तजि विक्षेप गहि लेव ।
सीढ़ी स्वतः स्वराज का, अहो मित्र चढ़ि लेव ॥२

मुक्ती का फाटक खुला, गुरु पारख के धाम ।
चहै कोई आवै चला, रोक टोक नहिं नाम ॥३

यहाँ खास पद मुक्ति का, युक्ति देंय गुरुदेव ।
जिसे चाहना होय अब, आय मुक्ति ह्वै लेव ॥४



मुद्रक-श्री विश्वेश्वर प्रेस, बुलानाला वाराणसी ।